Golden Jubilee
1 August 2018 - 31 July 2019

48 कोस कुरुक्षेत्र

एक साँस्कृतिक यात्रा

प्रकाशक

कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड

कुरुक्षेत्र, हरियाणा

सूर्य ग्रहण के अवसर पर ब्रह्म सरोवर, कुरुक्षेत्र का एक दृश्य

सत्यदेव नारायण आर्य
माननीय राज्यपाल, हरियाणा
एवं
अध्यक्ष, कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड

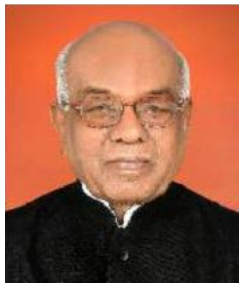

विश्व के जिन प्राचीन स्थलों में सर्वप्रथम मानव सभ्यता का उद्भव एवं विकास हुआ, उनमें कुरुक्षेत्र का एक विशिष्ट स्थान है। सरस्वती एवं दृषद्वती जैसी पुण्य सलिला नदियों के मध्य स्थित इस पावन भूमि को वैदिक सभ्यता की जन्मदात्री होने का गौरव प्राप्त है। यहीं भारतीय धर्म, दर्शन, चिन्तन, कला एवं साहित्य का प्रथम सृजन हुआ, जो कालान्तर में समस्त भारतवर्ष में फैला।

कुरुक्षेत्र शब्द का सर्वप्रथम स्पष्ट उल्लेख कृष्ण यजुर्वेद की मैत्रायणी शाखा में मिलता है। ऋग्वैदिक साक्ष्यों के अनुसार यह भूमि प्रमुख वैदिक जातियों, भरत एवं पुरुओं से सम्बन्धित रही है। परवर्ती काल में इन्हीं दोनों जातियों के सम्मिश्रण से कुरु नामक जाति का आविर्भाव हुआ। कुरुओं के इस स्थान पर निवास करने के कारण यह स्थान कुरुक्षेत्र के नाम से विख्यात हुआ। प्रचलित मान्यताओं के अनुसार महाराजा कुरु ने 48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि में ही सोने का हल चलाकर यहाँ आध्यात्मिक चिन्तन के बीज बोए थे। धर्म से जुड़े होने के कारण यह क्षेत्र धर्मक्षेत्र कहलाया।

इसी पवित्र भूमि में वेद, पुराण, श्रुति–स्मृति एवं ब्राह्मण ग्रन्थों का सृजन एवं संकलन हुआ। इसी कारण कुरुक्षेत्र को भारत के प्राचीनतम तीर्थों में गिना जाता है। यहीं पर महाभारत युद्ध से पूर्व मोहग्रस्त अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता का दिव्य उपदेश दिया गया था।

पौराणिक साहित्य तथा महाभारत में इस भूमि के अनेक तीर्थों का वर्णन उपलब्ध है। किन्तु कालांतर में अनेकानेक कारणों से बहुत से तीर्थ स्थल काल कवलित हो गए तथा सामान्य जन उनके नाम और स्थिति से भी अनभिज्ञ हो गए। कुरुक्षेत्र की 48 कोस भूमि में 360 तीर्थों की स्थिति बताई गई है। महाभारत काल में कुरुक्षेत्र को सर्वश्रेष्ठ तीर्थ माना जाता था। महाभारत के अनुसार भूमण्डल के निवासियों के लिए नैमिष, अन्तरिक्ष निवासियों के लिए पुष्कर और तीनों लोकों के निवासियों के लिए कुरुक्षेत्र विशिष्ट तीर्थ था। कुरुक्षेत्र में वायु द्वारा उड़ायी हुई धूल भी यदि अति पापी मनुष्य पर पड़ जाय तो उसे परमगति की प्राप्ति होती है। यहाँ यह भी कहा गया है कि जो व्यक्ति 'मैं कुरुक्षेत्र में जाऊँगा, कुरुक्षेत्र में निवास करूँगा' इतना भी कहता है वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है। कुरुक्षेत्र को ब्रह्मा की उत्तरवेदि, समन्तपंचक एवं ब्रह्मावर्त आदि नामों से भी पुकारा गया है। इस पुण्यक्षेत्र का ब्रह्मर्षिगण भी सेवन करते हैं। कहा जाता है कि जो मानव उसमें निवास करते हैं वह किसी प्रकार की शोकजनक अवस्था में नहीं पड़ते। महाभारत के अतिरिक्त वामन आदि अनेक पुराणों में भी कुरुक्षेत्र भूमि स्थित तीर्थों की महिमा का वर्णन मिलता है।

कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के गठन के पश्चात् 48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि के तीर्थों को चिह्नित करने का गम्भीर प्रयास आरम्भ हुआ। इस अभियान के चलते बोर्ड द्वारा इस भूमि के लगभग 134 तीर्थस्थलों को चिह्नित किया गया। ये सभी तीर्थ हरियाणा के वर्तमान 5 राजस्व जिलों–कुरुक्षेत्र, कैथल, करनाल, जींद एवं पानीपत में स्थित हैं जिसे 48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि कहा जाता है। देश–विदेश के तीर्थ यात्रियों, पर्यटकों तथा जिज्ञासुओं के ज्ञानवर्धन एवं मार्गदर्शन हेतु कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड द्वारा अपने स्वर्ण जयन्ती वर्ष में इन तीर्थों का विवरण '48 कोस कुरुक्षेत्र–एक सांस्कृतिक यात्रा' नामक कॉफी टेबल बुक के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है। इस पुस्तक में सभी तीर्थों का विवरण उनके महात्म्य एवं सांस्कृतिक विवरण सहित प्रस्तुत किया जा रहा है। पुस्तक में तीर्थ सरोवरों, घाटों, मन्दिरों के वास्तुशिल्प के अतिरिक्त यहाँ से मिलने वाली मूर्तियों एवं भित्ति चित्रों को भी प्रमुख स्थान दिया गया है। इसके अतिरिक्त जहाँ तक सम्भव है तीर्थों के निकट एवं आस–पास के पुरातात्विक निक्षेपों का उल्लेख भी पुस्तक में किया गया है।

कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के स्वर्ण जयंती वर्ष 2018 में बोर्ड द्वारा इस कॉफी टेबल बुक का प्रकाशन हरियाणा के स्वर्णिम अतीत से जनमानस को परिचित करवाने का एक अत्यंत सराहनीय एवं प्रशंसनीय प्रयास है। इस हेतु मैं इस कार्य में सहभागी सभी व्यक्तियों को हार्दिक बधाई एवं साधुवाद देता हूँ।

सत्यदेव नारायण आर्य

मनोहर लाल
माननीय मुख्यमंत्री
हरियाणा

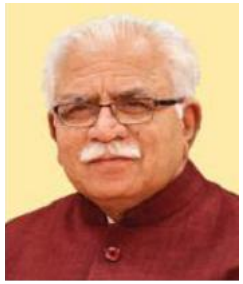

कुरुक्षेत्र की गणना विश्व के सबसे प्राचीनतम तीर्थ स्थलों में होती है। सरस्वती एवं दृषद्वती नदियों के मध्य स्थित कुरुक्षेत्र भूमि को वैदिक सभ्यता की जन्मस्थली होने का गौरव प्राप्त है। कुरुक्षेत्र का नामकरण राजा कुरु के नाम पर हुआ माना जाता है। कहा जाता है कि राजा कुरु ने 20 योजन में फैली इस भूमि को सोने का हल चला कर आध्यात्मिक कृषि के लिए तैयार किया था। महाभारत युद्ध की युगान्तकारी घटना इसी धरती पर हुई तथा युद्ध के आरम्भ में मोहग्रस्त अर्जुन को श्रीकृष्ण द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता का उपदेश भी इसी पावन धरा पर दिया गया। अतः यह भूमि न केवल भारतीय इतिहास अपितु विश्व इतिहास में एक अद्वितीय स्थान रखती है।

कुरुक्षेत्र भूमि का विस्तार 48 कोस में है, जो वर्तमान हरियाणा के पाँच राजस्व जिलों नागतः कुरुक्षेत्र, करनाल, कैथल, जींद तथा पानीपत तक फैली है। इस भूमि की सीमा बनाती हुई सरस्वती तथा दृषद्वती नदियों के तटों पर अनेक तीर्थ विद्यमान थे। ऐसे स्थानों के प्रति जनमानस के हृदय में आस्था, श्रद्धा एवं प्रेम होता है। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी तीर्थ लोगों की स्मृति में पीढ़ी दर पीढ़ी जीवन्त रहते हैं। प्राचीन काल से ही कुरुक्षेत्र भूमि के तीर्थों की महत्ता के कारण ही अनेक संत महात्माओं ने समय-समय पर कुरुक्षेत्र भूमि के तीर्थों की यात्रा कर इस गौरवान्वित किया है। लेकिन क्रूर काल के थपेड़ों, जलवायु की विषमता, विदेशी आक्रान्ताओं के आक्रमणों तथा रख-रखाव में उदासीनता के कारण कालान्तर में इस भूमि के अनेकों तीर्थ स्थल विलुप्त हो गए।

हरियाणा सरकार द्वारा कुरुक्षेत्र भूमि स्थित तीर्थों का उद्धार करने, उनकी पुरानी गरिमा लौटाने तथा उनके संरक्षण एवं संवर्धन हेतु आज से 50 वर्ष पहले सन् 1968 में भारत रत्न श्री गुलजारीलाल नन्दा जी की अध्यक्षता में 'कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड' का गठन किया गया था। बोर्ड द्वारा पुराविदों, मनिषियों, विद्वानों एवं स्थानीय निवासियों के प्रयत्नों से कुरुक्षेत्र भूमि के तीर्थों, जिनका वर्णन महाभारत, पुराणों, इतिहास एवं साहित्य में आया है, को चिह्नित करने, उनका जीर्णोद्धार करने, संरक्षित करने एवं सामान्य जन को उनसे परिचित करवाने हेतु निरन्तर भागीरथ प्रयास किए गए। इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप लोक मान्यताओं में वर्णित 360 तीर्थों में से 134 तीर्थों को चिह्नित कर उनके संरक्षण एवं पुनरूद्धार का कार्य कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड द्वारा प्राथमिकता के आधार किया जा रहा है। इन 134 तीर्थों में से लगभग 35 तीर्थों की मैंने स्वयं यात्रा की है तथा बोर्ड द्वारा किए गए संरक्षण एवं संवर्धन के प्रयासों को निकट से देखा है। इन तीर्थों के विकास के लिए हरियाणा सरकार प्रतिबद्ध है। केन्द्र सरकार की श्रीकृष्ण सर्किट योजना के माध्यम से भी कई प्रमुख तीर्थों का विकास कार्य प्रगति पर है। तीर्थों के विकास से हरियाणा में ग्रामीण पर्यटन को दिशा मिलेगी जो इस क्षेत्र में युवाओं के लिए रोजगार के विशेष अवसर भी उपलब्ध करवाएगी।

वर्ष 2018 कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के गठन का स्वर्ण जयन्ती वर्ष है। इस वर्ष बोर्ड अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के अवसर पर '48 कोस कुरुक्षेत्र– एक सांस्कृतिक यात्रा' नामक कॉफी टेबल बुक का प्रकाशन कर रहा है, जिसमें इस भूमि के 134 तीर्थों के महात्म्य एवं विवरण सहित तीर्थों के नयनाभिराम छायाचित्र हैं। इस पुस्तक के माध्यम से जन साधारण, पर्यटकों एवं तीर्थयात्रियों के लिए इन तीर्थों तक पहुँचना आसान होगा। कुरुक्षेत्र के तीर्थाटन पर बल देकर इसे अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक मानचित्र में स्थापित करना ही इस पुस्तक के प्रकाशन का मुख्य लक्ष्य है।

मैं इस पुस्तक के प्रकाशन से सम्बद्ध सभी लोगों के प्रति हृदय से अपना आभार व्यक्त करता हूँ तथा आशा व्यक्त करता हूँ कि इस पुस्तक के माध्यम से अधिक से अधिक लोग कुरुक्षेत्र की गौरवशाली धरोहर से परिचित होंगे।

मनोहर लाल

आभार

सर्वप्रथम 'धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र' की सर्वोपरि पावन धरा के प्रति मेरा सादर नमन् एवं सादर आभार, जोकि प्रस्तुत पुस्तक की विषयवस्तु एवं प्रेरणास्रोत है। इस अवसर पर मैं भारत रत्न स्वर्गीय श्री गुलजारी लाल नन्दा, संस्थापक अध्यक्ष, कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड का विशेष रूप से स्मरण कर हृदय से उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने सर्वप्रथम इस पावन धरा में स्थित तीर्थों के संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के लिए आज से 50 वर्ष पूर्व कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड का गठन किया था। तत्पश्चात् श्री सत्यदेव नारायण आर्य, माननीय राज्यपाल, हरियाणा एवं अध्यक्ष, कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के प्रति मैं हृदय से अपनी कृतज्ञता एवं विनम्र आभार व्यक्त करता हूँ जिनके कुशल मार्गदर्शन में कुरुक्षेत्र भूमि के सांस्कृतिक एवं पौराणिक तथ्यों का संग्रह कर उसे प्रकाशित करने का शुभ संकल्प लिया गया है। मैं माननीय मुख्यमंत्री हरियाणा श्री मनोहर लाल जी का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने 48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि के कई तीर्थों की यात्रा करके इस भूमि को तीर्थयात्रा पर्यटन से जोड़ने के अभूतपूर्व प्रयास किये हैं।

यह असीम प्रसन्नता का विषय है कि कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड अपने स्वर्ण जयन्ती वर्ष में '48 कोस कुरुक्षेत्र–एक सांस्कृतिक यात्रा' नामक कॉफी टेबल बुक का प्रकाशन कर रहा है जिसका उद्देश्य कुरुक्षेत्र की यात्रा करने वाले लोगों को बृहद् कुरुक्षेत्र की गौरवशाली धरोहर से परिचित करवाना है।

मैं पुस्तक के समय पर सफल प्रकाशन के लिए श्री संयम गर्ग, एच.सी.एस. मुख्य कार्यकारी अधिकारी, कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। मैं इस कॉफी टेबल बुक हेतु अपने अभिनव विचार देने के लिए श्री मदन मोहन छाबड़ा, माननद सचिव, कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड का आभार प्रकट करता हूँ। इसके साथ–साथ मैं श्री उपेन्द्र सिंघल और श्री सौरभ चौधरी तथा बोर्ड के अन्य सभी गैर सरकारी सदस्यों का भी पुस्तक के सफल प्रकाशन में सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। मैं श्रीकृष्ण संग्रहालयाध्यक्ष श्री राजेन्द्र सिंह राणा का पुस्तक आलेख तैयार करने के लिए आभार प्रकट करता हूँ। मैं इस पुस्तक की सज्जा के लिए श्रीकृष्ण संग्रहालय के आर्टिस्ट श्री बलवान सिंह तथा श्री प्रदीप कुमार का भी आभारी हूँ। मैं श्री कृष्ण कुमार मिश्र, पूर्व प्रवक्ता हिन्दी तथा श्री तारा चन्द शास्त्री, पूर्व प्रवक्ता संस्कृत को संग्रहालयाध्यक्ष द्वारा संयोजित हस्तलिपि के संस्करण को मूर्तरूप देने, संशोधन एवं पुनः निरीक्षण करने के लिए आभार प्रकट करता हूँ। इसके अतिरिक्त मैं प्रसिद्ध छायाकार श्री मुकेश डोलिया द्वारा इस पुस्तक हेतु समय पर तीर्थों के सुन्दर छायाचित्र उपलब्ध करवाने के लिए धन्यवाद देता हूँ।

मैं एक बार पुनः कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के अधिकारियों द्वारा स्वर्ण जयन्ती वर्ष तथा 'अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव 2018' के अवसर पर इस कॉफी टेबल बुक के सफल प्रकाशन के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

विजय सिंह दहिया, भा.प्र.से.
सदस्य सचिव
कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड
एवं
सचिव राज्यपाल, हरियाणा

अनुक्रमणिका

- तीर्थ भूमि– कुरुक्षेत्र 10–16
- कुरुक्षेत्र जिले में स्थित तीर्थ 17–48
- कैथल जिले में स्थित तीर्थ 49–96
- जींद एवं पानीपत जिले में स्थित तीर्थ 97–114
- करनाल जिले में स्थित तीर्थ 115–142
- कुरुक्षेत्र भूमि के मेले एवं पर्व 143–145
- तीर्थों क विकास के लिए प्रतिबद्ध कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड 146 147
- कुरुक्षेत्र में पर्यटकीय आकर्षण के स्थल 148 151

कुरुक्षेत्र जिले में स्थित तीर्थ

		पृ.क्र.
1	रन्तुक यक्ष, वीड़ पिपली	17
2	माँ भद्रकाली मन्दिर, कुरुक्षेत्र	18
3	स्थाण्वीश्वर महादेव मन्दिर, थानेसर	19
4	गांगिकमल तीर्थ, थानेसर	20
5	सन्निहित सरोवर, कुरुक्षेत्र	21
6	ब्रह्म सरोवर, कुरुक्षेत्र	22
7	बाण गंगा तीर्थ, दयालपुर	23
8	भीष्म कुण्ड, नरकातारी	24
9	ज्योतिसर, कुरुक्षेत्र	25
10	अदिति तीर्थ, अमीन	26
11	त्रिपुरारि तीर्थ, टिगरी	27
12	कुलोत्तारण तीर्थ, किरमिच	28
13	ओजस तीर्थ, समशीपुर	29
14	कर्ण का टीला, गिर्जापुर	30
15	आपगा तीर्थ, मिर्जापुर	31
16	काम्यक तीर्थ, कमोदा	32
17	लोमश तीर्थ, लोहार माजरा	33
18	भूरिश्रवा तीर्थ, भौर सैयदां	34
19	शालिहोत्र तीर्थ, सारसा	35
20	मणिपूरक तीर्थ, मुर्राजापुर	36
21	सोम तीर्थ, सैंसा	37
22	अरुणाय तीर्थ, अरणाय	38
23	प्राची तीर्थ, पिहोवा	39
24	सरस्वती तीर्थ, पिहोवा	40
25	ब्रह्मयोनि तीर्थ, पिहोवा	41
26	पृथूदक तीर्थ, पिहोवा	42
27	रेणुका तीर्थ, रणाचा	43
28	सोम तीर्थ, गुमथला गढ़	44
29	ब्रह्म तीर्थ, थाणा	45
30	सप्तसारस्वत तीर्थ, मांगना	46
31	गालव तीर्थ, गुलडेहरा	47
32	शुक्र तीर्थ, सतौड़ा	48

कैथल जिले में स्थित तीर्थ

33	ग्यारह रुद्री तीर्थ, कैथल	49
34	वृद्धकेदार तीर्थ, कैथल	50
35	नवदुर्गा तीर्थ, देवीगढ़	51
36	देवी तीर्थ, कलशी	51
37	सरक तीर्थ, शेरगढ़	52
38	अन्यजन्म तीर्थ, डयोढखेड़ी	53
39	कुकृत्यनाशन तीर्थ, काकौत	54
40	वागन तीर्थ, सौंगल	55
41	श्रीतीर्थ, करान	55
42	रामसंगल तीर्थ, जाखौली	56
43	हव्य तीर्थ, भाणा	57
44	चक्र तीर्थ, सेरहदा	58
45	काव्य तीर्थ, करोड़ा	59
46	जुहामि तीर्थ, हजवाना	60

47 विष्णुपद तीर्थ, बरराना 61
48 सूर्यकुण्ड, हाबड़ी 62
49 ऋणमोचन तीर्थ, रसीना 63
50 पुण्डरीक तीर्थ, पूण्डरी 64
51 देवी तीर्थ, मोहना 65
52 त्रिविष्टप तीर्थ, ट्गोंठा 66
53 लव–कुश तीर्थ, मुन्दड़ी 67
54 यज्ञसंग तीर्थ, प्योंग 68
55 फल्गु तीर्थ/फलकीवन, फरल 69
56 पवनेश्वर तीर्थ, फरल 70
57 ध्रुव कुण्ड, धेरडू 71
58 अलंपक तीर्थ, राकरा 72
59 कुलोत्तारण तीर्थ, कौल 73
60 कपिलमुनि तीर्थ, कौल 74
61 गढ़रथेश्वर तीर्थ, कौल 75
62 पवनह्रद तीर्थ, पबनावा 76
63 बंटेश्वर तीर्थ, बरोट 77
64 कोटिकूट तीर्थ, क्योड़क 78
65 वेदवती तीर्थ, बलवन्ती 79
66 नैमिष तीर्थ, नौच 80
67 श्रीकुंज तीर्थ, बानपुरा 81
68 गातृ तीर्थ, रसूलपुर 82
69 शीत वन/स्वर्गद्वार तीर्थ, सीवन 83
70 सुतीर्थ, सांख 84
71 इक्षुमति तीर्थ, पोलड़ 84
72 गन्धर्व तीर्थ, गोहरांखेड़ी 85
73 ब्रह्मावर्त तीर्थ, प्रभावत 86
74 अरन्तुक यक्ष, बेहरजक्ष 87
75 शृंगीऋषि तीर्थ, सांघन 88
76 गोभवन तीर्थ, गुहना 89
77 सूर्यकुण्ड, सजूमा 90
78 ब्रह्मोदुम्बर तीर्थ, शीलाखेड़ी 91
79 मानुष तीर्थ, मानरा 92
80 आपगा तीर्थ, गादली 93
81 कपिल मुनि तीर्थ, कलायत 94
82 मुकुटेश्वर तीर्थ, मटोर 95
83 खट्वांगेश्वर तीर्थ, खडालवा 96

जींद जिले में स्थित तीर्थ

84 भूतेश्वर तीर्थ, जींद 97
85 एकहंस तीर्थ, इक्कस 98
86 रामह्रद तीर्थ, रामराय 99
87 सन्निहित तीर्थ रामराय 100
88 पुष्कर तीर्थ/कपिल यक्ष, पोंकरी खेड़ी 101
89 सोग तीर्थ, पाण्डु पिण्डारा 102
90 वराह तीर्थ, बराहकलाँ 103
91 अश्विनी कुमार तीर्थ, आसन 104
92 जगदग्नि तीर्थ, जागनी 105
93 ययाति तीर्थ, कालवा 106
94 पंचनद तीर्थ/हटकेश्वर तीर्थ, हाट 107
95 सर्पदमन तीर्थ, सफीदों 108
96 सर्पदधि तीर्थ, सफीदों 109
97 वंशमूलक तीर्थ, बरसोला 110
98 कायशोधन तीर्थ, कसूहन 111
99 रामसर तीर्थ, कुचराना कलाँ 112
100 लोकोद्धार तीर्थ, लोधार 113

पानीपत जिले में स्थित तीर्थ

101 मचक्रुक यक्ष, सींख 114

करनाल जिले में स्थित तीर्थ

102 मिश्रक तीर्थ, निसिंग 115
103 दशरथ/राघवेन्द्र तीर्थ/सूर्यकुण्ड, औगद 116
104 दक्षेश्वर तीर्थ, डाचर 117
105 गौतम ऋषि/गवेन्द्र तीर्थ, गोंदर 118
106 जमदग्नि कुण्ड, जलमाणा 119
107 पंचदेव तीर्थ, पाढ़ा 120
108 कोटि तीर्थ, कुरलग 120
109 दशाश्वमेध तीर्थ, सालवन 121
110 ब्रह्म तीर्थ, रिसालवा 122
111 फल्गु तीर्थ, फफड़ाना 123
112 धनक्षेत्र तीर्थ, अरान्ध 124
113 जरासन्ध का टीला, असन्ध 124
114 जम्बूनद तीर्थ, जबाला 125
115 पावन तीर्थ, उपलाना 126
116 चुच्चुकारण्डव तीर्थ, चोरकारसा 127
117 त्रिगुणानन्द तीर्थ, गुनियाना 128
118 व्यास स्थली, बस्थली 129
119 पृथ्वी तीर्थ, बालू 130
120 पराशर तीर्थ, बहलोलपुर 131
121 विमलरार तीर्थ, राग्गा 132
122 वेदवती तीर्थ, सीताभाई 133
123 कौशिकी तीर्थ, कोयर 134
124 सुदिन एवं नर्वदा तीर्थ, ओंकार का खेड़ा 135
125 आहन तीर्थ, निगदू 136
126 प्रोक्षणी/प्रणीता तीर्थ, पल्लपुरी 136
127 ब्रह्म तीर्थ, सावंत 137
128 ज्येष्ठाश्रम तीर्थ, बोड़श्याम 138
129 कोटि तीर्थ, बोड़श्याम 138
130 सूर्य तीर्थ, बोड़श्याम 139
131 विष्णुह्रद/विष्णुपद/वामनक तीर्थ, बोड़श्याम 139
132 सोम तीर्थ, रामाना बाहु 140
133 अंजनी तीर्थ, अंजनथली 141
134 अक्षयवट तीर्थ, बड़थल 142

गङ्गायां तु जले मुक्तिः वाराणस्यां जले स्थले।
कुरुक्षेत्रे त्रिधा मुक्तिः अन्तरिक्षे जले स्थले॥

वामन पुराण

गंगा के जल में मुक्ति है, वाराणसी में जल और थल में मुक्ति है।
कुरुक्षेत्र में अंतरिक्ष (अकाश), जल तथा थल तीनों में मुक्ति है।

तीर्थ भूमि– कुरुक्षेत्र

सरस्वती नदी के दक्षिण तथा दृषद्वती के उत्तर में स्थित कुरुक्षेत्र भूमि को ब्रह्मा की उत्तर वेदी एवं समन्तपंचक भी कहा जाता है। इसी भू–भाग को वैदिक सभ्यता की क्रीड़ा–स्थली भी कहा जाता है। इसी भूमि में सरस्वती के पावन तटों पर ऋषियों द्वारा वैदिक साहित्य का सृजन एवं संकलन किया गया।

ब्राह्मण साहित्य में यह भूमि देवों की यज्ञभूमि के रूप में प्रतिष्ठित थी। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार स्वर्ग की कामना करने वाले देवता कुरुक्षेत्र में यज्ञों का सम्पादन करके स्वर्ग प्राप्त करते थे। महाभारत एवं पौराणिक काल में तो कुरुक्षेत्र का धार्मिक महत्त्व अपनी पराकाष्ठा पर था। कहा गया है कि कुरुक्षेत्र की वायु द्वारा उड़ाया गया धूल का कण यदि किसी महापातकी को भी छू जाए तो वह परम गति को प्राप्त हो जाता है। वामन पुराण एवं नारदीय पुराण के अनुसार समय आने पर ग्रह नक्षत्र तथा तारों का भी पतन हो जाता है अर्थात् वे नष्ट हो जाते हैं किन्तु कुरुक्षेत्र में जो व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त होते हैं उनका कभी पतन नहीं होता। महाभारत में कहा गया है कि पृथ्वी पर नैमिष तीर्थ, अन्तरिक्ष में पुष्कर तीर्थ तथा तीनों लोकों में कुरुक्षेत्र श्रेष्ठ तीर्थ है।

कुरुक्षेत्र महाभारत युद्ध की रणभूमि एवं श्रीमद्भगवद्गीता की जन्मस्थली के रूप में विश्व विख्यात है। द्वापर युग के अन्त में इसी पावन भूमि में महाभारत युद्ध से पूर्व भगवान श्रीकृष्ण द्वारा मोहग्रस्त अर्जुन को दिव्य गीता का शाश्वत उपदेश दिया गया था। श्रीमद्भगवद्गीता के पहले ही श्लोक में कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र कहा गया है जोकि इस भूमि के धार्मिक महत्त्व को प्रकट करता है।

कुरुक्षेत्र भूमि के साहित्यगत प्रमाणों को इस भूमि से मिलने वाले पुरातात्त्विक प्रमाण पुष्ट करते हैं। यहाँ पर अनेक एतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व के पुरातात्विक स्थल हैं – जैसे वर्धन शासकों की प्राचीन राजधानी थानेसर, भगवानपुरा, राजा कर्ण का टीला, मिर्ज़ापुर और दौलतपुर आदि। इन स्थलों के उत्खनन से कुरुक्षेत्र भूमि की अनेक संस्कृतियों का पता चलता है जिनका भारत के गौरवशाली इतिहास के निर्माण में महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

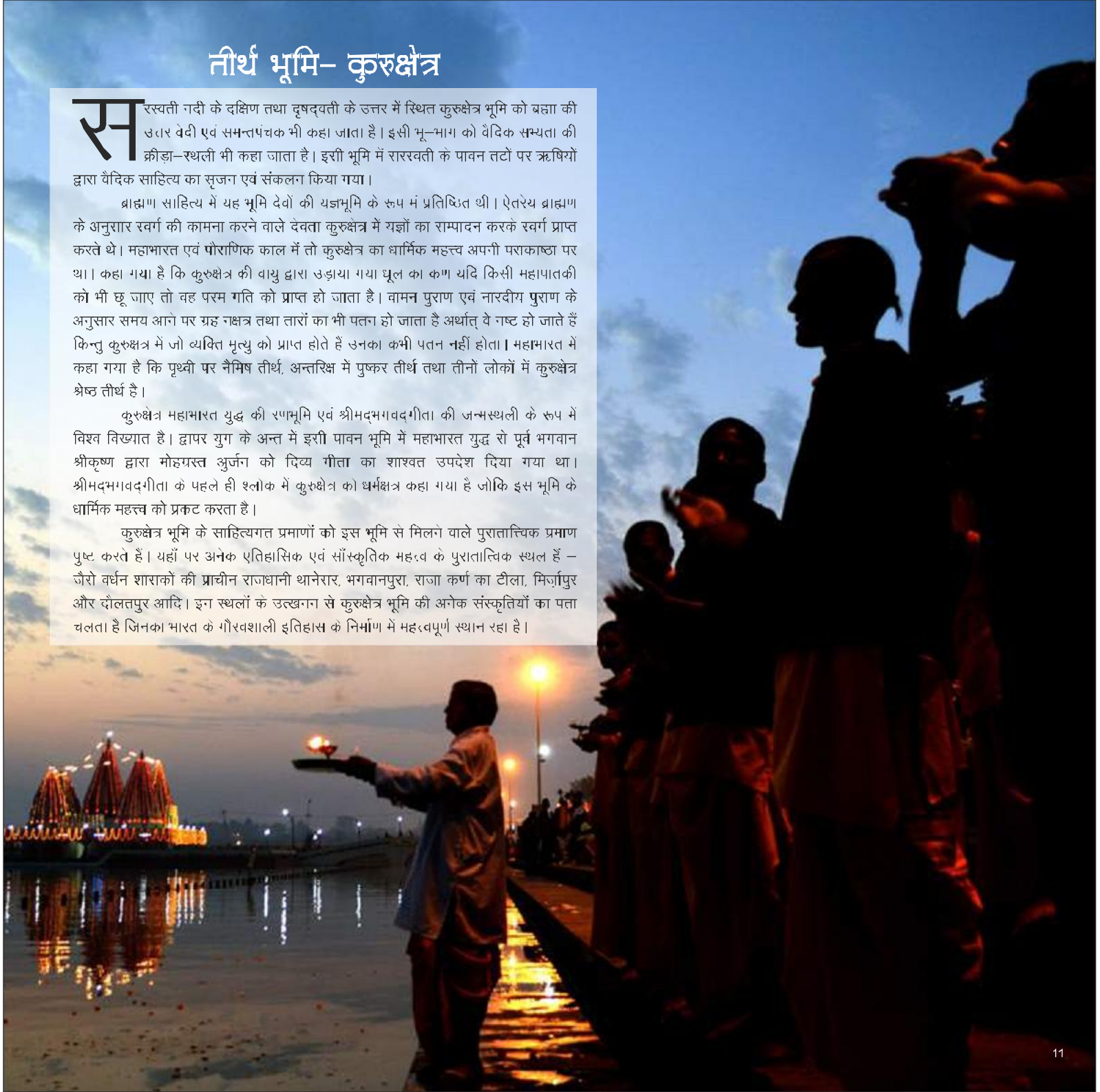

तीर्थों की जीवन रेखा : सरस्वती-दृषद्वती द्रोणी

सरस्वती नदी की गणना भारत की प्रमुख मोक्षदायिनी नदियों में होती है। ऋग्वेद में इसे नदियों में श्रेष्ठतम नदी कहा गया है जहाँ इसकी स्तुति में अनेक सूक्त हैं जिनकी रचना विभिन्न ऋषियों द्वारा की गई है। कुरुक्षेत्र भूमि में सरस्वती के अतिरिक्त अन्य भी कई नदियाँ बहती थी। वामन पुराण के अनुसार इस भूमि में सरस्वती को मिलाकर वैतरणी, आपगा, गंगा-मंदाकिनी, मधुस्रवा, वासुनदी, कौशिकी, दृषद्वती, हिरण्वती आदि कुल नौ नदियाँ बहती थी जिनमें सरस्वती ही एकमात्र सदानीरा नदी थी तथा अन्य सभी नदियाँ केवल वर्षाकाल में बहती थी। महाभारत के वनपर्व एवं शल्यपर्व में भी सरस्वती नदी का विशद वर्णन मिलता है। शल्य पर्व के अनुसार श्रीकृष्ण के अग्रज बलराम ने प्रभास तीर्थ से लेकर कुरुक्षेत्र तक सरस्वती के तटवर्ती तीर्थों की यात्रा की थी। इस काल तक सरस्वती कहीं जीवन्त रूप में तो कहीं सूखी हुई नजर आती थी। मनुस्मृति में सरस्वती एवं दृष्द्वती नदियों के बीच के भू भाग को ब्रह्मावर्त तथा महाभारत में कुरुक्षेत्र कहा गया है। वामन पुराण में सरस्वती नदी के तटों पर स्थित तीर्थों का विस्तार से वर्णन है। इसके अतिरिक्त भागवत् पुराण, मार्कण्डेय पुराण, स्कन्द पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण आदि अनेक पुराणों में नदी एवं देवीरूपा सरस्वती का उल्लेख यत्र-तत्र हुआ है।

कुरुक्षेत्र के तीर्थों की जीवन रेखा सरस्वती एवं दृषद्वती की द्रोणी में ही कुरुक्षेत्र भूमि के राग्पूर्ण तीर्थ रामाहित हैं जिनकी संख्या कहीं 767, 367 तथा 360 बताई जाती है। वर्तमान में इनमें से कई तीर्थ लुप्त एवं लोक विश्रुत हो चुके हैं। पुराविदों ने हरियाणा में सरस्वती एवं उसकी सहायक नदियों के तटों से 558 स्थल आद्य-हड़प्पा कालीन संस्कृति के, 114 स्थल विकसित हड़प्पा संस्कृति के तथा 1168 स्थल उत्तर-हड़प्पा कालीन संस्कृति के खोजे हैं। इन स्थलों की कुल संख्या 1840 है जबकि हरियाणा से लेकर गुजरात तक सरस्वती के तटों पर इस संस्कृति के कुल 2378 पुरातात्त्विक स्थल हैं। इससे कुरुक्षेत्र भूमि में तीर्थों की भारी उपस्थिति की सम्भावना को बल मिलता है। यह सम्भव है कि सरस्वती घाटी पर स्थित अनेक स्थल कालान्तर में तीर्थ रूप में परिणित हो गए होंगे।

लाओस में नया कुरुक्षेत्र

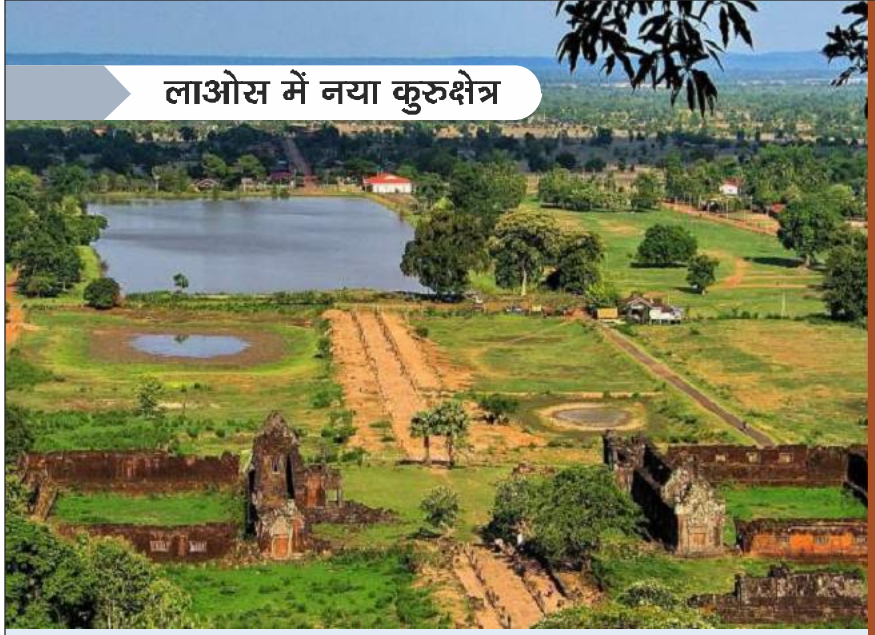

अति प्राचीन काल से ही भारत के दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों से राजनैतिक, सॉंस्कृतिक एवं व्यापारिक सम्बन्ध रहे हैं। इसीलिए इस सम्पूर्ण क्षेत्र को बृहत्तर भारत भी कहा जाता है। म्यांमार, कम्बोडिया, लाओस, मलाया, जावा, सुमात्रा, थाइलैण्ड, इन्डोनेशिया, वियतनाम आदि कई दक्षिण एशियाई देशों में भारतीय संस्कृति के प्रतीक अनेक मन्दिर, मूर्तियॉं तथा भारतीय परम्पराओं के दर्शन होते हैं। इन देशों की कला, संस्कृति एवं परम्पराओं पर आज भी भारतीय प्रभाव देखने को मिलता है।

लाओस नामक दक्षिण एशियाई देश के चम्पाराक प्रांत में सन् 456 ई. में लाओस के राजा देवानिक ने एक नए कुरुक्षेत्र का निर्माण करवाया था। यह तीर्थ यहॉं महातीर्थ के नाम से जाना जाता था। राजा देवानिक ने तीर्थ स्थापना की स्मृति में यहॉं एक शिलालेख उत्कीर्ण करवाया था जिसमें राजा को इन्द्र, युधिष्ठिर, धनंजय और शिवि के समकक्ष राजा कहा गया है। इस शिलालेख में कुरुक्षेत्र की महत्ता प्रकट करने वाले लगभग वही श्लोक मिलते हैं जो हमें महाभारत एवं पुराणों में उपलब्ध होते हैं। लाओस से प्राप्त इस शिलालेख से विदित होता है कि पॉंचवी शती ई. तक कुरुक्षेत्र को भारत के तीर्थों में सर्वश्रेष्ठ तीर्थ का स्थान प्राप्त था। इसी कारण राजा देवानिक ने अपने देश में कुरुक्षेत्र नामक महातीर्थ की स्थापना करवाई।

राजा देवानिक द्वारा लाओस में नव कुरुक्षेत्र नामक महातीर्थ के निर्माण के पीछे अनेक सम्भावनाएं छिपी प्रतीत होती हैं जिनमें उस समय कुरुक्षेत्र के समस्त भारत में सर्वश्रेष्ठ तीर्थ होने के अतिरिक्त राजा देवानिक के पूर्वजों का इस भू भाग से सम्बन्ध या फिर उनके पुरोहितों या प्रजाजनों की पूर्व में कुरुक्षेत्र भूमि से सम्बद्धता। क्योंकि कम्बोडिया से प्राप्त 11वीं शती ई. के एक अभिलेख से पता चलता है कि कम्बोडिया नरेश सूर्यवर्मन ने वहॉं के राजकीय अभिलेखागार के संरक्षक सुकर्मण को एक गॉंव दान में दिया था। जिसका नामकरण उसने अपने पूर्वजों की मातृभूमि कुरुक्षेत्र के नाम पर किया था।

लाओस महात्म्य (5वीं शती ई.) में नव कुरुक्षेत्र भूमि की प्रशंसा में रचित श्लोकों का शिलालेख का हिन्दी अनुवाद

- महान तीर्थ स्थलों पर रहने वाले, वहॉं मृत्यु को प्राप्त होने वाले तथा वहॉं उपासना करने वाले इनका तदानुसार फल प्राप्त करते हैं।
- प्रभासक्षेत्र जैसे स्थानों पर जाकर जो धर्म लाभ प्राप्त होता है वही फल यहॉं भी प्राप्त हो।
- वह देव जो केवल मात्र त्याग के लिए यहॉं आए हैं और अब वह ब्रह्मा, विष्णु और शिव के नेतृत्व में स्वर्ग की ओर अग्रसर हो चुके हैं, इस स्थान का नामकरण करने की कृपा करें।
- ऐसी प्रार्थना करने के पश्चात् राजा देवानिक को कुरुक्षेत्र नाम सूझा। पूर्व में वर्णित मानव को स्वर्ग ले जाने वाली धार्मिक उत्कृष्टता जिसकी प्रशंसा देवों और ऋषियों ने की वही धार्मिक उत्कृष्टता, महत्व इस नए कुरुक्षेत्र को प्राप्त हो।
- यह स्थान कुरुक्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ, तीर्थयात्राओं का केन्द्र बना और अक्षुण्य धार्मिक महात्म्य प्राप्त करने वाला बना क्योंकि इस भूमि को राजर्षि कुरु ने श्रेष्ठजन के लिए जोता था।
- उस कुरुक्षेत्र में महा पातकी भी वायु द्वारा उड़ाई गई कुरुक्षेत्र की धूलि के सम्पर्क से परम गति को प्राप्त हो जाता है।
- ऐसा व्यक्ति जो सदैव कहता है कि मैं कुरुक्षेत्र में जाऊँगा और वहॉं निवास करुँगा, वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है और जो कुरुक्षेत्र में स्थाई रूप से रहते हैं वह तो मानो स्वर्ग में ही रहते हैं।
- नैमिष पृथ्वी का सर्वश्रेष्ठ धार्मिक स्थान है और पुष्कर नभस्त क्षेत्र है किन्तु कुरुक्षेत्र तीनों लोकों (पृथ्वी, आकाश एवं पाताल) में सर्वश्रेष्ठ है।
- कुरुक्षेत्र के नाम की स्तुति करने वाले की सात पीढ़ियॉं अनुकम्पित हो जाती हैं। उन लोगों की तो बात ही क्या जो यहॉं निवास करते हैं।
- एक हजार अश्वमेध यज्ञ करने से या इतने अश्वों के दान से और एक सौ वाजपेय यज्ञ करने से या एक लाख गोदान करने से जो पुण्य मिलता है वह कुरुक्षेत्र भूमि पर निःस्वार्थ भाव से की गई प्रार्थना से मिल जाता है। उन्हें वह फल प्राप्त हो जाता है जो केवल निश्चयात्मक रूप से प्राप्त करना भी बहुत कठिन है।
- ऋषियों द्वारा पूर्व वर्णित धार्मिक पावनता इस पुण्य भूमि पर रहने वालों को प्राप्त हो।
- कुरुक्षेत्र में उपलब्ध हजारों तीर्थों का पुण्यलाभ भी यहीं (नए कुरुक्षेत्र लाओस में) प्राप्त हो।
- यह तीर्थ आधे योजन में विस्तृत है और जो स्थान इसमें सम्मिलित हैं वह बड़े पापों के विनाशक हैं।
- जो यहॉं मृत्यु को प्राप्त होते हैं और जो यहॉं भक्ति करते हैं वह उनके समान हैं जो दत्तचित्त हो ज्ञान–जल से अपनी पिपासा शान्त करते हैं।
- जो लोग अग्निष्टोम यज्ञ या सुखों के त्याग से असीम सुख प्राप्त करते हैं ऐसा यहॉं के निवासियों को मिले।
- जब इस तीर्थ पर महापातकियों के पाप धुल जाते हैं तो उन धार्मिक लोगों का क्या कहना जो इस महातीर्थ में निवास करते हों।

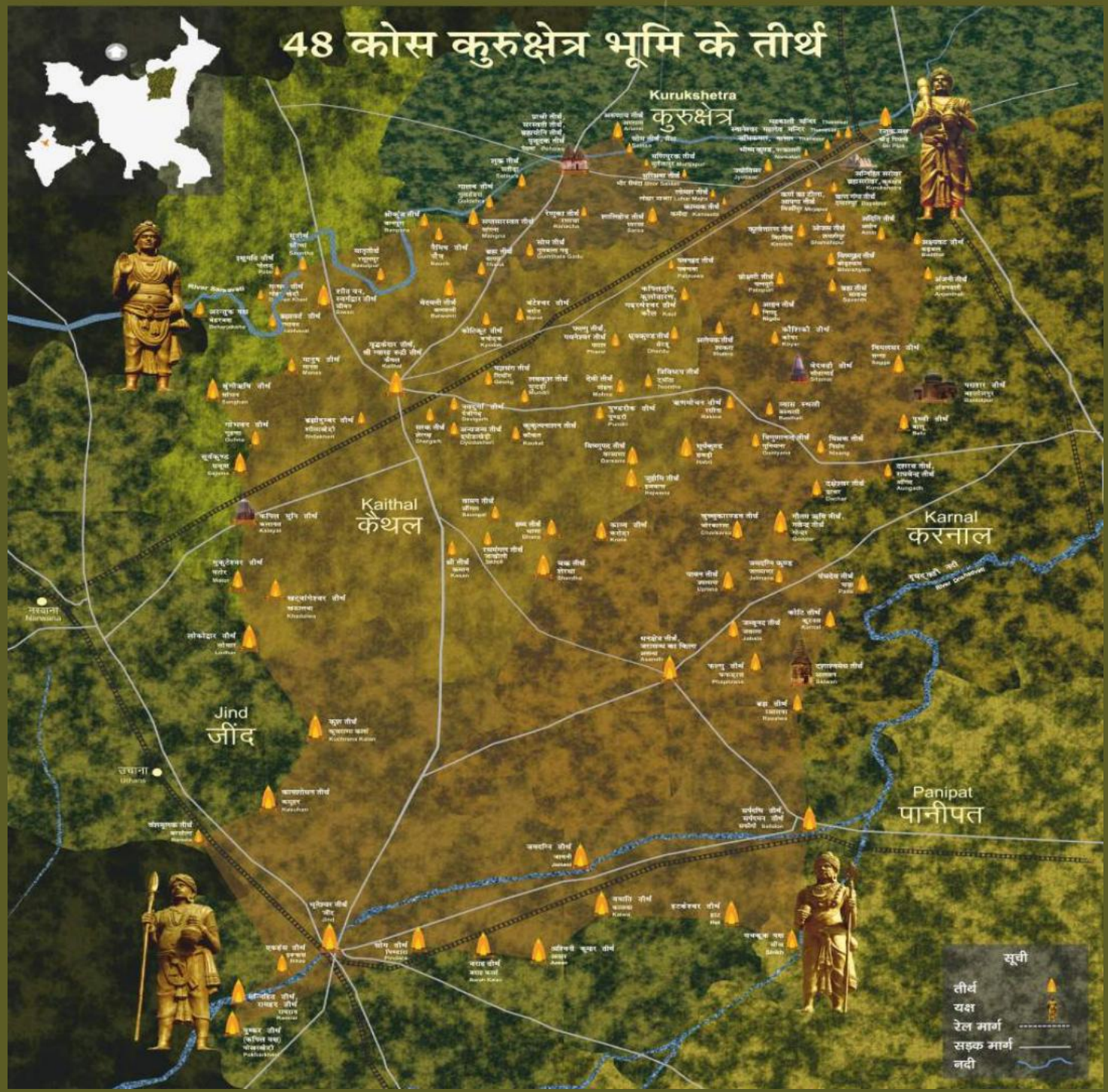

48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि का मानचित्र

48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि

कुरुक्षेत्र की प्राचीन भूमि '48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि' कहलाती है। राररवती, दृषद्वती, आपगा, गंगा–मंदाकिनी, मधुस्रवा, हिरणवती, वासुनदी, कोशिकी एवं वेतरणी आदि नौं नदियों से सिंचित तथा काम्यक, अदिति, व्यास, फलकी, सूर्य, शीत तथा मधु नामक सात वनों से आच्छादित इस पावन भूमि में अनेको तीर्थ स्थल विद्यमान थे जिनका उल्लेख महाभारत एवं पौराणिक साहित्य में हुआ है। वर्तमान में यह भूमि हरियाणा के पाँच राजस्व ज़िलों कुरुक्षेत्र, कैथल, करनाल, जींद और पानीपत तक विस्तृत है।

महाभारत में कुरुक्षेत्र को समन्तपंचक तथा ब्रह्मा की उत्तर वेदी भी कहा गया है जिसका विस्तार हर ओर से पाँच योजन भूमि में था। इस भूमि के उत्तर में सरस्वती और दक्षिण में दृषद्वती नदी की स्थिति बताई गई है। महाभारत के अनुसार इसके चार कोनों पर चार यक्ष द्वारपाल के रूप में प्रतिष्ठित थे। इनके नाम महाभारत में तरन्तुक, अरन्तुक, रामह्रद एवं मचक्रुक कहे गये हैं। वामन पुराण में तरन्तुक नामक यक्ष को रन्तुक अथवा रत्नुक तथा रामह्रद जो स्थान विशेष का सूचक था उसे कपिल यक्ष कहा गया है। कुरुक्षेत्र भूमि के सर्वेक्षण के उपरान्त इन यक्षों की स्थिति स्पष्ट हुई है। रन्तुक अथवा रत्नुक नामक यक्ष जोकि इस भूमि के उत्तर–पूर्वी सीमा पर स्थित था, बीड़ पिपली, कुरुक्षेत्र में सरस्वती के तट पर स्थित है। इसी प्रकार उत्तर–पश्चिमी सीमा का यक्ष अरन्तुक कैथल–पटियाला की सीमा पर बेहरजख नामक स्थान में स्थित है। कपिल नामक यक्ष जोकि इस भूमि की दक्षिण–पश्चिमी सीमा का यक्ष है, जींद जिले के पोंकरी खर्द नामक ग्राम के बाहर स्थित है। दक्षिण–पूर्वी सीमा का यक्ष मचक्रुक पानीपत जिले के सींख नामक ग्राम के बाहर स्थित है। इन्हीं चार यक्षों के बीच की भूमि 48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि कहलाती है जिसमें स्थानीय परम्परा 767, 367 तथा 360 तीर्थस्थलों की स्थिति बताती है। यद्यपि समय बीतने के साथ जलवायु की विविधता, रखरखाव की उपेक्षा और मध्यकाल में लगातार विदेशी आक्रमणों के कारण कई तीर्थ विलुप्त हो गए तथापि अभी भी इस क्षेत्र में 134 से अधिक तीर्थस्थल श्रद्धा और आस्था लिए हुए आज भी स्थित हैं। इस भूमि के तीर्थों का दस्तावेजीकरण कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड द्वारा किया गया है। भारत रत्न गुलज़ारीलाल नन्दा द्वारा कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के गठन के पीछे का उद्देश्य इस पावन भूमि स्थित तीर्थों का संरक्षण, संवर्धन एवं विकास था। कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के गठन के बाद अनेक तीर्थस्थलों का जीर्णोद्धार एवं विकास किया गया। कुरुक्षेत्र भूमि स्थित तीर्थों में देवताओं को समर्पित देव तीर्थों, ऋषियों को समर्पित ऋषि तीर्थों के अतिरिक्त श्राद्ध एवं पिण्डदान के लिए नैमित्तिक तीर्थों के अतिरिक्त कई तीर्थ महाभारत के कथा प्रसंगों से भी जुड़े हैं।

इन तीर्थस्थलों की पहचान के लिए राररवती, दृषद्वती नदियों, चार यक्षों तथा तीर्थों के राजस्व अभिलेखों को ध्यान में रखा गया है। शास्त्रीय संदर्भों के साथ–साथ 48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि के विषय में स्थानीय मान्यताओं का भी सम्मिलित किया गया है। ग्रामीण परम्पराओं में, इस क्षेत्र के मृतकों की राख और अस्थियों का 48 कोस कुरुक्षेत्र की भूमि में स्थित सरस्वती नदी अथवा इसकी सहायक नदियों में प्रवाहित करने की परम्परा का भी सहारा लिया गया है जबकि कुरुक्षेत्र की पवित्र परिक्रमा से बाहर रहने वाले लोग मृतकों की अस्थियाँ और राख हरिद्वार में गंगा नदी में प्रवाहित करते हैं।

कुरुक्षेत्र की सॉंस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर को पवित्र सरोवरों, ऐतिहासिक स्मारकों एवं मूर्तियों के रूप में संरक्षित किया गया है। अनेक तीर्थस्थलों और पुरातात्त्विक स्थानों से प्राप्त पुरावशेष इस क्षेत्र की सॉंस्कृतिक धरोहर पर प्रकाश डालते हैं।

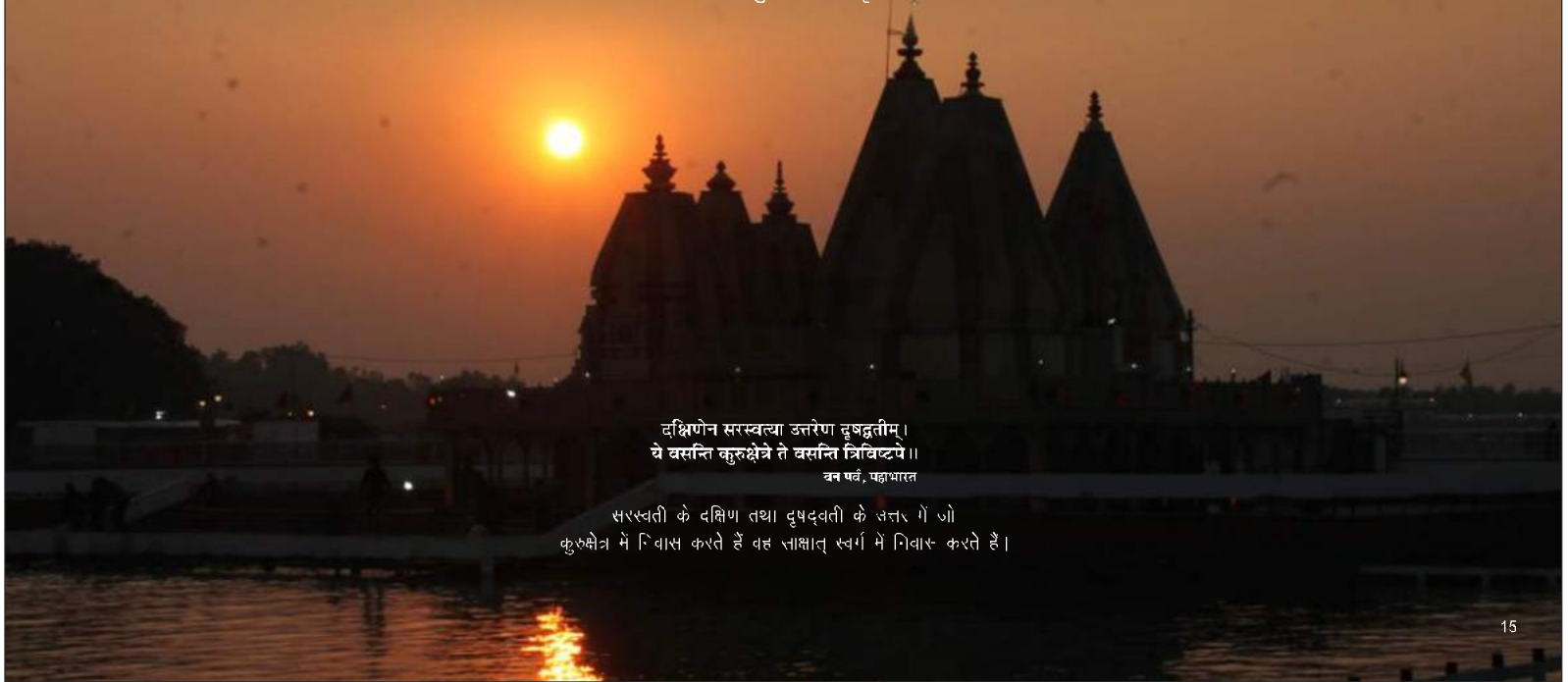

दक्षिणेन सरस्वत्या उत्तरेण दृषद्वतीम्।
ये वसन्ति कुरुक्षेत्रे ते वसन्ति त्रिविष्टपे॥
वन पर्व, महाभारत

सरस्वती के दक्षिण तथा दृषद्वती के उत्तर में जो
कुरुक्षेत्र में निवास करते हैं वह साक्षात् स्वर्ग में निवास करते हैं।

48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि के 134 तीर्थों का वर्गीकरण

देव तीर्थ

क्र.	तीर्थ	जिला
1.	स्थाण्वीश्वर महादेव मन्दिर, थानेसर	कुरुक्षेत्र
2.	भद्रकाली मन्दिर, थानेसर	कुरुक्षेत्र
3.	नाभिकमल, थानेसर	कुरुक्षेत्र
4.	अरुणाय तीर्थ, अरणाय	कुरुक्षेत्र
5.	ब्रह्मयोनि तीर्थ, पिहोवा	कुरुक्षेत्र
6.	अदिति तीर्थ, अमीन	कुरुक्षेत्र
7.	सोम तीर्थ, सैंसा	कुरुक्षेत्र
8.	ब्रह्म तीर्थ, थाणा	कुरुक्षेत्र
9.	रोग तीर्थ, गुन्थला गढ्ढु	कुरुक्षेत्र
10.	काम्यक तीर्थ, कमोदा	कुरुक्षेत्र
11.	ओजस तीर्थ, समशीपुर	कुरुक्षेत्र
12.	त्रिपुरारि तीर्थ, तिगरी	कुरुक्षेत्र
13.	पवनह्रद तीर्थ, पबनावा	कैथल
14.	पवनेश्वर तीर्थ, फरल	कैथल
15.	पुण्डरीक तीर्थ, पूण्डरी	कैथल
16.	त्रिविष्टप तीर्थ, ट्योंठ	कैथल
17.	वेदवती तीर्थ, बलवन्ती	कैथल
18.	नवदुर्गा तीर्थ, देवीगढ़	कैथल
19.	ग्यारहरूद्री तीर्थ	कैथल
20.	विष्णुपद तीर्थ, बरसाना	कैथल
21.	सूर्यकुण्ड, हाबड़ी	कैथल
22.	चक्र तीर्थ, सेरहदा	कैथल
23.	श्रीतीर्थ, कसान	कैथल
24.	श्रीकुंज तीर्थ, बानपुर	कैथल
25.	ब्रह्मावर्त तीर्थ, प्रभावत	कैथल
26.	सूर्यकुण्ड, राजूणा	कैथल
27.	शीतवन/स्वर्गद्वार तीर्थ, सीवन	कैथल
28.	ब्रह्मोदुम्बर तीर्थ, शीलाखेड़ी	कैथल
29.	अन्यजन्म तीर्थ, ड्योढखेड़ी	कैथल
30.	देवी तीर्थ, कलशी	कैथल
31.	ध्रुव कुण्ड, धेरड़ू	कैथल
32.	वामन तीर्थ, सौंगल	कैथल
33.	देवी तीर्थ, मोहना	कैथल
34.	गन्धर्व तीर्थ, गौहरं खेड़ी	कैथल
35.	वेदवती तीर्थ, सीतामाई	करनाल
36.	दशरथ तीर्थ/सूर्यकुण्ड, औंगद	करनाल
37.	दक्षेश्वर तीर्थ, डाचर	करनाल
38.	ब्रह्म तीर्थ, रावंता	करनाल
39.	ज्येष्ठाश्रम तीर्थ, बोड़श्याम	करनाल
40.	कोटि तीर्थ, बोड़श्याम	करनाल
41.	सूर्य तीर्थ, बोड़श्याम	करनाल
42.	विष्णुपद/वामनक तीर्थ, बोड़श्याम	करनाल
43.	ब्रह्म तीर्थ, ररालवा	करनाल
44.	अंजनी तीर्थ, अंजनथली	करनाल
45.	सोम तीर्थ, सनाना बाहु	करनाल
46.	पंचदेव तीर्थ, पाढ़ा	करनाल
47.	खट्वांगेश्वर तीर्थ, खड़ालवा	करनाल
48.	भूतेश्वर तीर्थ	जींद
49.	सोम तीर्थ, पाण्डु पिण्डारा	जींद
50.	वराह तीर्थ, वराहकलाँ	जींद
51.	पंचनद/हटकेश्वर तीर्थ, हाट	जींद

ऋषि तीर्थ

क्र.	तीर्थ	जिला
1.	पाची तीर्थ, पेहवा	कुरुक्षेत्र
2.	शक्रु तीर्थ, रातौड़ा	कुरुक्षेत्र
3.	गालव तीर्थ, गुलडेहरा	कुरुक्षेत्र
4.	सप्तसारस्वत तीर्थ, मांगना	कुरुक्षेत्र
5.	लोमश तीर्थ, लोहार माजरा	कुरुक्षेत्र
6.	रेणुका तीर्थ, अरणैचा	कुरुक्षेत्र
7.	फल्गु तीर्थ/फलकीवन, फरल	कैथल
8.	कपिल मुनि तीर्थ, कलायत	कैथल
9.	वटेश्वर तीर्थ, बरोट	कैथल
10.	नैमिष तीर्थ, नोच	कैथल
11.	कपिलमुनि तीर्थ, कौल	कैथल
12.	मुकुटेश्वर तीर्थ, मटोर	कैथल
13.	शृंगीऋषि तीर्थ, सांघन	कैथल
14.	लव–कुश तीर्थ, मुन्दड़ी	कैथल
15.	मिश्रक तीर्थ, निसंग	करनाल
16.	त्रिगुणानन्द तीर्थ, गुनियाना	करनाल
17.	पराशर तीर्थ, बहलोलपुर	करनाल
18.	व्यास स्थली, बस्थली	करनाल
19.	गौतम ऋषि/गजेन्द्र तीर्थ, गोंदर	करनाल
20.	फल्गु तीर्थ, जफड़ना	करनाल
21.	जमदग्नि कुण्ड, जलमाणा	करनाल
22.	रामह्रद तीर्थ, रामराय	जींद
23.	सन्निहित तीर्थ, रामराय	जींद
24.	अश्विनी कुमार तीर्थ, आसन	जींद
25.	जमदग्नि तीर्थ, जाम्नी	जींद
26.	लोकोद्धार तीर्थ, लोधार	जींद

महाभारत कालीन तीर्थ

क्र.	तीर्थ	जिला
1.	भीष्म कुण्ड, नरकातारी	कुरुक्षेत्र
2.	बाण गंगा तीर्थ, दयालपुर	कुरुक्षेत्र
3.	ज्योतिसर	कुरुक्षेत्र
4.	भूरिश्रवा तीर्थ, भौर सैयदां	कुरुक्षेत्र
5.	कर्ण का टीला, मिर्जापुर	कुरुक्षेत्र
6.	यज्ञसंग तीर्थ, क्योंग	कैथल
7.	गढ़रथेश्वर तीर्थ, कौल	कैथल
8.	जरासन्ध का टिला, असन्ध	करनाल
9.	एकहंस तीर्थ, इक्कस	जींद

उत्तर महाभारत कालीन तीर्थ

क्र.	तीर्थ	जिला
1.	कुलोत्तारण तीर्थ, किरमिच	कुरुक्षेत्र
2.	सर्पदधि तीर्थ, सफीदों	जींद
3.	सर्पदमन तीर्थ, सफीदों	जींद

नित्य तीर्थ

क्र.	तीर्थ	जिला
1.	सरस्वती तीर्थ, पिहोवा	कुरुक्षेत्र
2.	पृथूदक तीर्थ, पिहोवा	कुरुक्षेत्र
3.	ब्रह्म सरोवर	कुरुक्षेत्र
4.	सन्निहित सरोवर	कुरुक्षेत्र
5.	मणिपुरक तीर्थ, नुर्तजापुर	कुरुक्षेत्र
6.	आपगा तीर्थ, मिर्जापुर	कुरुक्षेत्र
7.	कोटिकूट तीर्थ, क्योड़क	कैथल
8.	वृद्धकेदार तीर्थ, कैथल	कैथल
9.	सरक तीर्थ, शेरगढ़	कैथल
10.	मानुष तीर्थ, मानस	कैथल
11.	आपगा तीर्थ, गादली	कैथल
12.	जुहोमि तीर्थ, हजवाना	कैथल
13.	कुलोत्तारण तीर्थ, कौल	कैथल
14.	मातृ तीर्थ, रसूलपुर	कैथल
15.	हव्य तीर्थ, भाग	कैथल
16.	इक्षुमति तीर्थ, पोलड़	कैथल
17.	सुतीर्थ, सौंथा	कैथल
18.	गोभवन तीर्थ, गुहणा	कैथल
19.	कुकृत्यनाशन तीर्थ, काकोत	कैथल
20.	काव्य तीर्थ, करोड़	कैथल
21.	ऋणमोचन तीर्थ, रसीना	कैथल
22.	अल्पक तीर्थ, साक्रा	कैथल
23.	आहन तीर्थ, निगदू	करनाल
24.	पावन तीर्थ, उपलाना	करनाल
25.	जम्बूनद तीर्थ, जवाला	करनाल
26.	दशाश्वमेध तीर्थ, सालवन	करनाल
27.	धनक्षेत्र तीर्थ, असन्ध	करनाल
28.	विमलसर तीर्थ सगा	करनाल
29.	पृथ्वी तीर्थ, बलू	करनाल
30.	अक्षयवट तीर्थ, बड़थल	करनाल
31.	सुदिन एवं नर्वदा तीर्थ, ओंकार का खेड़ा	करनाल
32.	कुलुकारण्डव तीर्थ, कोरकारसा	करनाल
33.	कोटि तीर्थ, कुरलन	करनाल
34.	प्रोक्षणी तीर्थ, पल्नपुरी	करनाल
35.	कौशिकी तीर्थ, कोयर	करनाल
36.	ययाति तीर्थ, काल्वा	जींद
37.	कायशोधन तीर्थ, कसूहन	जींद
38.	वंशमूलक तीर्थ, बररोला	जींद
39.	कुश/रामसर तीर्थ, कुवराना कलाँ	जींद

यक्ष तीर्थ

क्र.	तीर्थ	जिला
1.	रन्तुक यक्ष, बीड़ पिपली	कुरुक्षेत्र
2.	शालिहोत्र तीर्थ, सरसा	कुरुक्षेत्र
3.	रसमंगल तीर्थ, जाखौली	कैथल
4.	अरन्तुक यक्ष, बेहरजख	कैथल
5.	पुष्कर तीर्थ, पोंकरी खेड़ी	जींद
6.	मचक्रुक यक्ष, सींख	पानीपत

1 रन्तुक यक्ष, बीड़ पिपली

रन्तुक यक्ष को समर्पित यह तीर्थ कुरुक्षेत्र के बीड़ पिपली नामक स्थान पर सरस्वती के किनारे स्थित है। महाभारत के अनुसार कुरुक्षेत्र की पावन भूमि सरस्वती एवं दृषद्वती के मध्य स्थित है। इस भूमि के चार कोनों में चार यक्ष स्थित हैं। यही यक्ष कुरुक्षेत्र भूमि के रक्षक कहलाते थे। महाभारत में इन यक्षों को तरन्तुक, अरन्तुक, रामह्रद तथा मचक्रुक नामों से पुकारा गया है जिनके बीच की भूमि कुरुक्षेत्र, रामन्तपंचक तथा ब्रह्मा की उत्तर वेदी कहलाती है।

तरन्तुकारन्तुकयोर्यदन्तरं
रामह्रदानां च मचक्रुकस्य च।
एतत् कुरुक्षेत्रसमन्तपंचकं
पितामहस्योत्तरवेदिरुच्यते।।

(महाभारत, वन पर्व, 83/204)

इन चार यक्षों में से बीड पिपली स्थित यक्ष को महाभारत में तरन्तुक यक्ष कहा गया है। कालान्तर में तरन्तुक यक्ष को रन्तुक यक्ष नाम से जाना गया। वामन पुराण में इसी यक्ष को रन्तुक यक्ष भी कहा गया है। इस पुराण के अनुसार कुरुक्षेत्र की यात्रा प्रारम्भ करने से पूर्व रन्तुक यक्ष के दर्शन करना आवश्यक है क्योंकि यह यक्ष तीर्थ यात्रियों के यात्रा के दौरान मार्ग मे पड़ने वाले विघ्नों को दूर करते थे।

वामन पुराण के अनुसार इस यक्ष का अभिवादन किए बिना कोई भी व्यक्ति कुरुक्षेत्र के तीर्थों के भ्रमण का अधिकारी नहीं बन सकता था। इस पुराण में इसे यक्षेन्द्र की संज्ञा भी दी गई है।

वामन पुराण के अनुसार सरस्वती के किनारे स्थित इस यक्ष तीर्थ पर स्नान करने के उपरान्त यहाँ स्थित मन्दिर के दर्शनों के साथ ही कुरुक्षेत्र की परिक्रमा सफल मानी जाती थी।

वर्तमान मे यह तीर्थ चिट्टा मन्दिर के नाम से जाना जाता है यहाँ पहुँचने के लिए पिपली–पिहोवा मार्ग से एक उपमार्ग है। सरस्वती के तट पर स्थित इस तीर्थ के निकट से अनेक पुरातात्त्विक संरक्षण मिले हैं जिनमें दूसरी शताब्दि ई॰ पूर्व के धूसर चित्रित मृदभाण्डों से लेकर आद्य ऐतिहासिक काल से मध्य काल तक की संस्कृतियां के अवशेष सम्मिलित हैं। इन पुरातात्त्विक प्रमाणों से भी इस तीर्थ की प्राचीनता स्वयं सिद्ध होती है।

2 माँ भद्रकाली मन्दिर, कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्र में झाँसा रोड पर स्थित यह शक्तिपीठ देश के 52 शक्तिपीठों में से एक है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार कनखल में राजा दक्ष की पुत्री सती ने राजा दक्ष द्वारा आयोजित यज्ञ में अपने पति का अनादर देखकर यज्ञ कुण्ड में अपनी देह का त्याग किया। सती के बलिदान से क्षुब्ध होकर भगवान शिव सती की मृत देह को कंधे पर लेकर उन्मत्त भाव से तीनों लोकों में घूमने लगे।

शिव की यह दशा देखकर भगवान विष्णु ने अपने चक्र से सती के शरीर को 52 टुकड़ों में विभाजित कर दिया। जहाँ जहाँ भी सती की देह का अंश गिरा वह स्थान शक्तिपीठ के रूप में स्थापित हुआ। कहा जाता है कि कुरुक्षेत्र में सती का दायाँ गुल्फ (टखना) गिरा था। कुरुक्षेत्र के इस शक्तिपीठ की अधिष्ठात्री देवी सावित्री तथा उसके भैरव स्थाणु कहलाते हैं।

कुरुक्षेत्रऽप्परो गुल्फः सावित्री स्थाणु भैरवम्।
गत्वा सुशोभिते नित्यं देवयाः पीठो महान्भुवि।

प्रचलित मान्यताओं के अनुसार सती का दायाँ गुल्फ इस मन्दिर में स्थित देवीकूप में गिरा था। कहा जाता है कि महाभारत युद्ध से पूर्व अर्जुन ने यहाँ भगवान श्रीकृष्ण के साथ भगवती जगदम्बा की पूजा–अर्चना की थी। भगवती का स्तुतिगान करते हुए अर्जुन ने इस अवसर पर सिद्ध सेनानी, मन्दर वासिनी, कुमारी, काली, कपाली, कृष्ण पिंगला, भद्रकाली, महाकाली, चण्डी, तारणी और वरवर्णिनी आदि नामों से भगवती का आह्वान किया था।

कहा जाता है कि महाभारत युद्ध में विजय के पश्चात पाण्डवों ने पुनः इस पीठ पर आकर भगवती जगदम्बा की आराधना कर अपने श्रेष्ठ अश्व माँ भद्रकाली को भेंट किये थे। आज भी अपनी मनोकामनाओं के पूर्ण होने पर भक्तजन यहाँ मिट्टी एवं धातु से बने हुए घोड़े माँ भद्रकाली को अर्पित करते हैं।

कुरुक्षेत्र के इसी तीर्थ पर भगवान श्रीकृष्ण एवं बलराम का मुण्डन संस्कार उनके कुलगुरू गर्गाचार्य की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ था। आज भी यह प्रथा निरन्तर जारी है। देश के अनेक भागों से आए अनेक श्रद्धालु आज भी इस पावन पीठ पर अपने बालकों के मुण्डन संस्कार सम्पन्न करवाते हैं।

सरस्वती नदी के प्राचीन तट पर स्थित इस तीर्थ के निकट से कई पुरातात्विक संस्कृतियों के निक्षेप मिले हैं जिससे इस तीर्थ की प्राचीनता सिद्ध होती है। मन्दिर परिसर में हुई खुदाई से एक मिट्टी के बने टखने के मिलने से भी तीर्थ की प्राचीनता के प्रमाण मिलते हैं। हर वर्ष शरद् एवं वसंत की नवरात्रि को तीर्थ पर मेला लगता है जिसमें हरियाणा तथा देश के अनेक भागों से आए श्रद्धालुगण माँ भद्रकाली की पूजा–अर्चना कर पुण्य के भागी बनते हैं।

3 स्थाण्वीश्वर महादेव मन्दिर, थानेसर

महाभारत एवं पुराणों में वर्णित कुरुक्षेत्र का यह पावन तीर्थ थानेसर शहर के उत्तर में स्थित है। इस तीर्थ का सर्वप्रथम उल्लेख बौद्ध साहित्य में उपलब्ध होता है। 'महाभग्ग' ग्रन्थ में 'थूणा' नामक ब्राह्मण गाँव का उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार दिव्यावदान बौद्ध ग्रंथ में थूणं तथा उपरथूण नामक ब्राह्मण गाँवों का उल्लेख है। कालान्तर में थूणं नामक यह स्थान स्थाणुतीर्थ नाम से प्रसिद्ध हुआ। वामन पुराण में इसे स्थाणुतीर्थ कहा गया है जिसके चारों ओर हजारों लिंग है जिनके दर्शन मात्र से ही व्यक्ति को पापों से मुक्ति मिलती है।

स्थाणुतीर्थं ततो गच्छेत् सहस्रलिंग शोभितम्।
तत्र स्थाणुवटं दृष्ट्वा मुक्तो भवति किल्विषैः।

(वामन पुराण, 21/30)

कहा जाता है कि स्वयं प्रजापति ब्रह्मा ने यहां स्थाणु लिंग विग्रह की स्थापना की थी। वामन पुराण में स्थाणु तीर्थ के चारों और अनेक तीर्थों का वर्णन आता है। इस तीर्थ के चारों ओर विस्तृत एक वट वृक्ष का उल्लेख मिलता है। जिसके उत्तर में शुक्र, पूर्व में सोम, दक्षिण में दक्ष और पश्चिम में स्कन्द तीर्थ हैं। स्थाणु तीर्थ के नाम पर ही वर्तमान थानेसर नगर का नामकरण हुआ जिसे प्राचीनकाल में स्थाण्वीश्वर कहा जाता था। महाभारत के शल्य पर्व के अनुसार इस तीर्थ पर भगवान शिव ने घोर तप किया था तथा सरस्वती की पूजा के उपरान्त उन्होंने इस तीर्थ की स्थापना की थी। वामन पुराण के अनुसार मध्याह्न में पृथ्वी के सभी तीर्थ स्थाणु तीर्थ में आ जाते हैं।

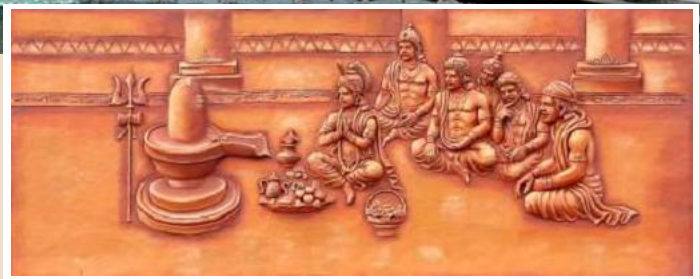

भगवान श्रीकृष्ण एवं पाण्डवों द्वारा स्थाणु तीर्थ पर शिवलिंग की पूजा

कहा जाता है कि महाभारत युद्ध से पूर्व भगवान श्रीकृष्ण सहित पाण्डवों ने इस स्थान पर स्थाण्वीश्वर महादेव की पूजा–अर्चना कर उन से युद्ध में विजय होने का वरदान प्राप्त किया था।

थानेसर के वर्धन साम्राज्य के संस्थापक पुष्पभूति ने अपने राज्य श्रीकण्ठ जनपद की राजधानी स्थाण्वीश्वर नगर को ही बनाया था। हर्षवर्धन के राज कवि बाण भट्ट के द्वारा रचित 'हर्षचरितम्' महाकाव्य में स्थाण्वीश्वर नगर के सौन्दर्य का अनुपम चित्रण किया है – यह मुनियों का तपोवन, सुधी जनों की संगीतशाला शत्रुओं का यमनगर, धनलोलुपों की चिन्तामणि, शस्त्रोपजीवियों का वीरक्षेत्र, विद्यार्थियों का गुरुकुल, गायकों का गन्धर्व नगर, वैज्ञानिकों के लिए विश्वकर्मा मन्दिर, वैदेहिकों की लाभ–भूमि, बन्दियों का द्यूतस्थान, भले लोगो के लिए साधुसमागम, कामियों के लिए अप्सरः पुर, वारणों के लिए महोत्सव समाज तथा विप्रो के लिए वसुधा के समान था। स्थाण्वीश्वर मन्दिर के जीर्णोद्धार में मराठों का भी योगदान रहा है। कहा जाता है कि पानीपत के तीसरे युद्ध से पहले मराठों ने यहाँ के अनेक मन्दिरों का जीर्णाद्धार करवाया था जिनमें से यह मन्दिर भी प्रमुख है।

4 नाभिकमल तीर्थ, थानेसर

कुरुक्षेत्र का यह प्रमुख तीर्थ थानेसर शहर के पश्चिम में थानेसर बगथला मार्ग पर राजा हर्ष के किले के दक्षिण में स्थित है। इस तीर्थ का संबन्ध भगवान विष्णु से है। कहा जाता है कि इसी स्थान पर क्षीरसागर में शयन करते हुए भगवान विष्णु के नाभि से एक कमल पुष्प उत्पन्न हुआ, उसी पुष्प से ब्रह्मा जी प्रकट हुए। ब्रह्मा ने यहीं पर भगवान विष्णु के आदेश से सृष्टि की रचना प्रारम्भ की थी।

चेत्र मास की कृष्ण चतुर्दशी को यहीं से कुरुक्षेत्र की प्रसिद्ध अष्ट कोसी परिक्रमा प्रारम्भ होकर कार्तिक मन्दिर, सरस्वती–घाट, स्थाण्वीश्वर महादेव मन्दिर, कुबेरघाट, सरस्वती घाट, रन्तुक यक्ष पिपली, शिव मन्दिर पलवल, बाण गंगा दयालपुर, भीष्मकुण्ड नरकातारी से होती हुई पुनः यही पहुँचकर सम्पन्न होती है। कुरुक्षेत्र की अष्ट कोसी परिक्रमा से जुडे होने के कारण इस मन्दिर की महत्ता एवं विशिष्टता सिद्ध होती है। तीर्थ के उत्तर में राजा हर्ष का किला नामक पुरातात्विक स्थल है जहाँ के उत्खनन से कुषाण काल से लेकर उत्तर मुगल काल तक की संस्कृतियों के निक्षेप मिलें है। निश्चय ही थानेसर के स्वर्णिम युग में इस मन्दिर का भी विशेष महत्त्व रहा होगा जिस कारण कुरुक्षेत्र की अष्ट कोसी परिक्रमा का प्रारम्भ और समापन यहीं से होता है।

तीर्थ स्थित मन्दिर नागर शैली में निर्मित है जिसका शिखर शन्कु आकार का है।

भगवन विष्णु के नाभिकमल से ब्रह्म की उत्पति

5 सन्निहित सरोवर, कुरुक्षेत्र

सन्निहित तीर्थ की गणना कुरुक्षेत्र के प्राचीन एवं पवित्र तीर्थों में की जाती है। वामन पुराण के अनुसार यह तीर्थ रन्तुक से लेकर ओजस तक, पावन से चतुर्मुख तक विस्तृत था।

रन्तुकादौजसं यावत् पावनाच्च चतुर्मुखम्।
सरः सन्निहितं प्रोक्तं ब्रह्मणा पूर्वगेव तु।

(वामन पुराण, 1/5)

शनैः शनैः इसके आकार में परिवर्तन होता रहा और द्वापर तथा कलियुग में इसका प्रमाण विश्वेश्वर से अस्थिपुर तक तथा कन्या जरद्गवी से ओघवती तक सीमित हो गया। इस तीर्थ के पास भगवान शंकर ने लिंग की स्थापना की थी।

इस तीर्थ में अमावस्या के दिन सूर्यग्रहण के समय जो अपने पूर्वजों का श्राद्ध करता है उसे हजारों अश्वमेध यज्ञों का फल मिलता है और एक ब्राह्मण को श्रद्धा पूर्वक भोजन कराने से करोड़ों व्यक्तियों के भोजन कराने का फल मिलता है।

अमावस्यां तथा चैव राहुग्रस्ते दिवाकरे।
यः श्राद्धं कुरुते मर्त्यस्तस्य पुण्यफलं शृणु।
अश्वमेधसहस्रस्य राज्यगिष्टस्य यत्फलम्।
स्नातेव तदाप्नोति कृत्वा श्राद्धं च मानवः।।

(ब्रह्म पुराण, अ. सं. 27/82-83)

पुराणों के अनुसार अमावस्या के अवसर पर पृथ्वी पटल पर स्थित सभी तीर्थ यहाँ एकत्र हो जाते हैं। इसीलिए इसे सन्निहित तीर्थ का नाम दिया गया। इस तीर्थ पर पूर्वजों हेतु पिण्ड–दान एवं श्राद्ध की प्राचीन परम्परा रही है। देश विदेश के अनेक भागों से आए श्रद्धालु अपने पूर्वजों के निमित्त इस तीर्थ पर श्राद्ध एवं पिण्ड दान करते हैं जिसका उल्लेख तीर्थ पुरोहितों की बहियों में मिलता है।

कहा जाता है कि इसी तीर्थ के तट पर महर्षि दधीचि ने इन्द्र की याचना पर देव कार्य हेतु अपनी अस्थियों का दान किया था जिनसे निर्मित वज्र अस्त्र द्वारा इन्द्र ने वृत्रासुर का वध किया था। भागवत पुराण के अनुसार खग्रास सूर्यग्रहण के समय द्वारका से पहुँचे श्रीकृष्ण की भेंट गोकुल से पहुँचे नन्द, यशोदा तथा गोप गोपिकाओं से हुई थी। श्रीकृष्ण ने विरह व्यथा से पीड़ित गोपियों को आत्मज्ञान की दीक्षा दी थी ।

तीर्थ परिसर में स्थापित ब्रिटिश कालीन अभिलेखों से इस सरोवर की पवित्रता एवं महत्ता का पता लगता है। तीर्थ परिसर में सूर्य नारायण, ध्रुवनारायण, लक्ष्मी–नारायण एवं दुःख भंजन महादेव मन्दिर स्थापित हैं। तीर्थ के पास में ही नाभा राजपरिवार द्वारा निर्मित नाभा हाऊस है जिसका प्रयोग राज परिवार द्वारा कुरुक्षेत्र भ्रमण के अवसर पर किया जाता था।

6 ब्रह्म सरोवर, कुरुक्षेत्र

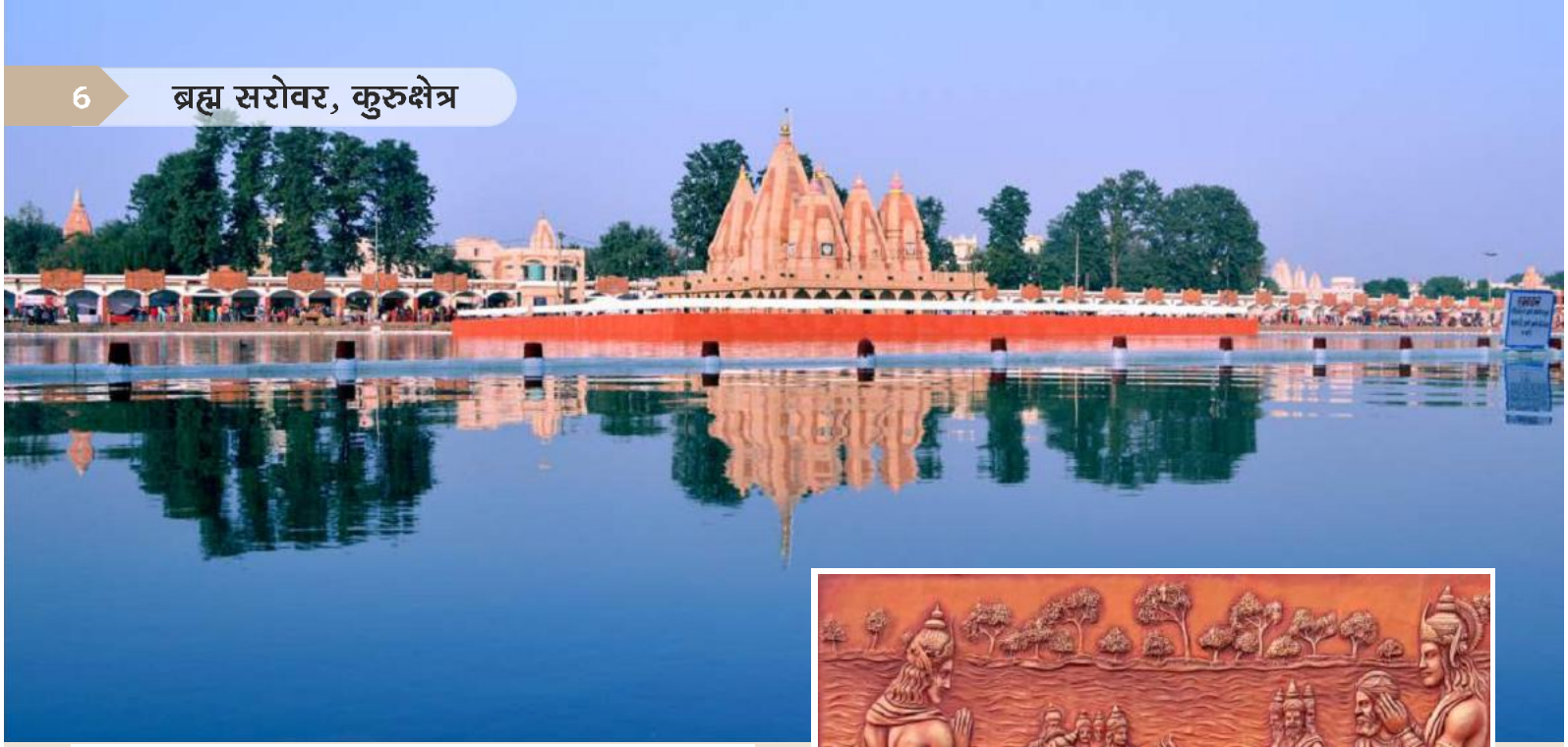

ब्रह्म सरोवर की गणना कुरुक्षेत्र के प्रगुख तीर्थों गें होती है। यह तीर्थ ब्रह्मा से सम्बधित होने के कारण ब्रह्म सरोवर नाम से प्रसिद्ध हुआ जिसे सृष्टि का आदि तीर्थ माना जाता है। महर्षि लोमहर्षण न ब्रह्मा, विष्णु व शिव सबको साक्षी मानकर इसका उल्लेख किया है :–

ब्रह्माणगीशं कगलासनस्थं विष्णुं च लक्ष्मी सहितं तथैव।
रुद्रं च देवं प्रणिपत्य मूर्ना तीर्थं वरं ब्रह्मसरः प्रवक्ष्ये।
(वामन पुराण 22 / 50)

आद्यं ब्रह्मसरः पुण्यं ततो रामह्रद स्मृताः।

इस श्लोक से ब्रहा सरोवर का महत्त्व स्वमेव सिद्ध हो जाता है। इसका गाम पूर्व में ब्रह्मरार तथा बाद में रामह्रद हुआ।

वामन पुराण के अनुसार सृष्टि रचना का ध्यान करते हुए ब्रह्मा ने चारों वर्णा की रचना इसी स्थान पर की थी। इसी पुराण के अनुसार चतुर्दशी तथा चैत्रमास के कृष्णपक्ष की अष्टमी को इस तीर्थ में स्नाग व उपवास करने वाला व्यक्ति जन्म–मरण के बंधन रो मुक्त हो जाता है। महाभारत के अनुसार इरा तीर्थ में स्नान करने वाला व्यक्ति ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है और अपने कुल को पवित्र करता है। कहा जाता है कि वदों में वर्णित राजा पुरुरवा तथा उर्वशी का विख्यात संवाद इसी सरोवर के तट पर हुआ था।

लौकिक आख्यानों के अनुसार इरा सरोवर का सर्वप्रथम जीर्णोद्धार राजा कुरु ने करवाया था। प्राचीन काल में इसे ब्रह्मा की उत्तरवेदि, ब्रह्मवेदि तथा समन्तपंचक भी कहा जाता था। सूर्यग्रहण के अवसर पर इस सरोवर में किया गया स्नान हजारों अश्वमेध यज्ञों के फल के समान माना जाता है।

यज्ञ कुण्ड में आहुति डालते हुए ब्रह्मा तथा उनके साथ अन्य देवता

यह सरोवर दो भागों में विभक्त है। कहा जाता है कि महाभारत युद्ध के उपरान्त युधिष्ठिर ने दोगो भागों के मध्य स्थित भूमि में एक विजय स्तम्भ का निर्माण करवाया था जोकि कालान्तर में नष्ट हो गया। मध्यकाल में मुस्लिम शासकों द्वारा इस भूमि में सैनिक छावनी का निर्माण करवाया गया था जो सरोवर में स्नान करने वाले तीर्थयात्रियों स जजिया कर वसूल करते थे। सन् 1567 के सूर्यग्रहण के अवसर पर मुगल सम्राट अकबर ने अपनी कुरुक्षेत्र यात्रा के समय यह कर समाप्त कर दिया था। पुनः औरंगजेब ने इरा कर को जारी किया। अंततः 18वीं सदी के मध्य में मराठों द्वारा इस कर को समाप्त किया गया था। इसी स्थल पर प्राचीन द्रौपदी कूप निर्मित है जिसे चन्द्र कूप भी कहा जाता है। यह सरोवर एशिया का सबसे विशाल मानव निर्मित सरोवर है। इस सरोवर की विशालता को देखते हुए ही अकबर के दरबारी कवि अबुल फजल ने इरो लघु समुद्र की संज्ञा दी थी।

सरोवर के मध्य में सर्वेश्वर महादेव का मन्दिर शोभायमान है। जनश्रुति के अनुसार ब्रह्मा ने सर्वप्रथम इसी स्थान पर शिवलिंग की स्थापना की थी। सरोवर के पश्चिमी तट पर एक प्राचीन बौद्ध स्तूप के अवशेष तथा आद्य ऐतिहासिक काल की संरचनाएं तथा पुरावशेष मिले हैं जोकि इस सरोवर की प्राचीनता सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं।

7 बाण गंगा, दयालपुर

बाण गंगा नामक यह तीर्थ ब्रह्म सरोवर से लगभग 4 कि.मी. दूर दयालपुर नामक ग्राम में स्थित है। इस तीर्थ के विषय में अनेक जनश्रुतियाँ प्रचलित हैं जिनमें से एक के अनुसार महाभारत युद्ध के चौदहवें दिन जयद्रथ को मारने से पूर्व अर्जुन ने इस स्थान पर पर्जन्यास्त्र से बाण मारकर जलधारा प्रकट की थी। इस जलधारा के निकले जल से भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन के रथ के थके हुए घोड़ों को नहलाया था जिस कारण इस तीर्थ का नाम बाण गंगा पड़ा।

दूसरी जनश्रुति के अनुसार इसी स्थान पर महादानी कर्ण ने ब्राह्मण वेशधारी श्रीकृष्ण को मरने से पूर्व अपना स्वर्ण मंडित दाँत जलधारा के जल से धो कर भेंट किया था।

तीर्थ में वर्तमान में एक उत्तर मध्यकालीन बावड़ीनुमा सरोवर है। इसी तीर्थ सरोवर में ईंटों से बनी धनुषाकृति है। मन्दिर के परिसर में लाखौरी ईंटों से निर्मित एक समाधि है। तीर्थ परिसर में ही माता बाला सुन्दरी का एक आधुनिक मंदिर भी स्थित है। यह तीर्थ कुरुक्षेत्र की अष्टकोशी परिक्रमा मार्ग पर पड़ने वाले तीर्थों में से एक प्रमुख तीर्थ है। कुरुक्षेत्र की अष्टकोशी परिक्रमा नाभिकमल तीर्थ से प्रारम्भ होकर कार्तिक मंदिर, स्थाण्वीश्वर मंदिर, माँ भद्रकाली मंदिर, कुबेर तीर्थ, सरस्वती खेड़ी, रन्तुक यक्ष पिपली, शिव मन्दिर पलवल से होकर यहाँ पहुँचती है। यहाँ से भीषण कुण्ड नरकातारी से होकर अंत में नाभिकमल मंदिर में सम्पन्न होती है।

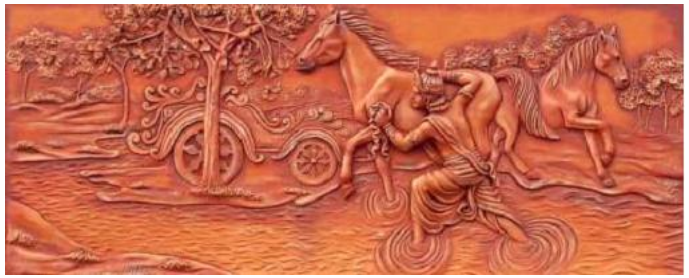

जयद्रथ वध से पूर्व अर्जुन के रथ के घोड़ों को नहलाते हुए भगवान श्रीकृष्ण

कर्ण का ब्राह्मण वेशधारी भगवान श्रीकृष्ण को अपना स्वर्ण–मण्डित दांत भेंट करते हुए

8 भीष्म कुण्ड, नरकातारी

महाभारत सरस्वती के तट पर स्थित यह तीर्थ पुराणों में अंगारक तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। इसी तीर्थ का उल्लेख महाभारत एवं वामन पुराण दोनों में मिलता है। कहा जाता है कि इस तीर्थ के पूर्व में ब्रह्मा, दक्षिण में शिव पश्चिम में रुद्रपत्नी एवं उत्तर में भगवान विष्णु का वास हैं।

लौकिक आख्यान इस तीर्थ का सम्बन्ध भीष्म पितामह से जोड़ते हैं। कहा जाता है कि कौरवों की ओर से दस दिन तक महाभारत युद्ध लड़ने के पश्चात् अर्जुन के बाणों से घायल होकर इसी स्थल पर भीष्म पितामह बाणों की शरशैय्या पर लेटे रहे तथा सूर्य के उत्तरी गोलार्द्ध में आने के पश्चात् ही उन्होंने अपने प्राण त्याग। यहाँ पर बने कुण्ड का भीष्म कुण्ड कहा जाता है।

कुण्ड के निर्माण के सम्बन्ध में कहा जाता है कि रणभूमि में घायल होकर जब भीष्म पितामह बाणों की शरशैय्या पर लेटे थे तो अपनी प्यास बुझाने के लिए उन्होंने कौरवों–पाण्डवों को इशारा किया तो कौरव उनके लिए पात्रों में सुगन्धित पवित्र जल लेकर उपस्थित हुए लेकिन उन्होंने पात्रों में लाए जल को अस्वीकार कर दिया। अर्जुन भीष्म पितामह का संकेत समझ चुके थे इसलिये उन्होंने पार्जन्य अस्त्र भूमि में मारकर जल प्रकट किया। अर्जुन के बाणों से प्रकट हुई जलधारा से ही भीष्म पितामह ने अपनी प्यास बुझाई।

अविध्यत्पृथिवीं पार्थः पार्श्वे भीष्मस्य दक्षिणे।
उत्पपात ततोधारा वारिणो विमल शुभा।
शतस्यामृतकल्पस्य दिव्यगन्धरसस्य च
अतर्पयत्तातः पार्थः शीतया जलधारया।

(महाभारत, भीष्म पर्व)

शरशैय्या पर लेटे भीष्म पितामह द्वारा युधिष्ठिर को राजधर्म का उपदेश

महाभारत युद्ध की समाप्ति पर हस्तिनापुर में राज्य सिंहासन ग्रहण करने के पश्चात् भगवान श्रीकृष्ण की सलाह पर युधिष्ठिर ने इसी स्थल पर आकर भीष्म पितामह से राजधर्म एवं अनुशासन की शिक्षाएं ग्रहण की। महाभारत के अनुसार महात्मा भीष्म के श्रीमुख से उन उपदेशों को सुनने के लिए पाण्डवों के अतिरिक्त आसित, देवल, व्यास जैसे महर्षि व अन्य ऋषिगण उपस्थित थे।

महात्मा भीष्म द्वारा प्रदत्त इन अपूर्व उपदेशों के संकलन के कारण ही महाभारत को समस्त भारतीय वांगमय में वह स्थान प्राप्त है जो इसे विश्व की अनमोल साहित्य निधि में स्थान दिलाता है। वास्तव में कुरुक्षेत्र भूमि में भगवान श्रीकृष्ण के मुख से निसृत गीता तथा भीष्म पितामह द्वारा दी गई ज्ञान धर्म एवं अनुशासन की शिक्षाएं इस भूमि को धन्य करती हैं।

यह तीर्थ सरस्वती के तट पर स्थित है। तीर्थ के आस–पास से उत्तर हड़प्पा कालीन एवं धूसर चित्रित मृदभाण्डीय संस्कृति के अवशेष मिलते हैं जिससे इस तीर्थ की प्राचीनता सिद्ध हो जाती है।

9 गीता जन्मस्थली- ज्योतिसर

यह तीर्थ ब्रह्म सरोवर से लगभग 6 कि.मी. दूर पिहोवा राजमार्ग पर सरस्वती नदी के प्राचीन तट पर स्थित है। श्रीमद्भगवद्गीता की जन्मस्थली ज्योतिसर कुरुक्षेत्र स्थित परम पावन स्थान है। ऐसा माना जाता है कि महाभारत युद्ध से पूर्व इसी स्थल पर भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को गीता का उपदेश दिया गया था। इसी स्थान पर भगवान श्रीकृष्ण ने गीता उपदेश देने के पश्चात अपना विराटस्वरूप अर्जुन को दिखाया था। भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिखाए गए इस विराट रूप का वर्णन श्रीमद्भगवद्गीता के विश्वरूप दर्शन योग नामक अध्याय में वर्णित है।

कहा जाता है कि अपनी हिमालय यात्रा के समय आदि गुरु शंकराचार्य ने सर्वप्रथम इस स्थान को चिह्नित किया था। सन् 1850 में महाराजा काश्मीर द्वारा यहाँ पर एक शिव मन्दिर की स्थापना की गई थी। इसके पश्चात् सन् 1924 में महाराजा दरभंगा ने यहाँ पर गीता उपदेश के साक्षी वट वृक्ष के चारों ओर एक चबूतरे का निर्माण करवाया।

तीर्थ के इसी महत्त्व को दृष्टिगत रखते हुए सन 1967 में कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य द्वारा मुख्य चबूतरे के साथ गीता उपदेश स्थल स्थापित करवाया गया तथा साथ ही चबूतरे के नीचे परिक्रमा पथ के साथ आदि गुरु शंकराचार्य का मन्दिर भी बनवाया गया। तीर्थ परिसर में निर्मित चबूतरे के नीचे रखे गए 9–10वीं शती ई. के मन्दिर के स्तम्भ के अवशेष से भी इस तीर्थ के ऐतिहासिक महत्त्व का पता चलता है। इसके अतिरिक्त पुरातत्त्ववेत्ताओं द्वारा तीर्थ परिसर से मिले मूर्ति

अर्जुन को विराट रूप दिखाते हुए भगवान श्रीकृष्ण

फलकों में भगवान विष्णु की मूर्ति का उल्लेख किया गया है। इस विवरण से सिद्ध होता है कि प्राचीन काल में इस तीर्थ में भगवान विष्णु का कोई भव्य मन्दिर स्थापित रहा होगा।

सरस्वती नदी के पावन तट पर स्थित इस तीर्थ के आस पास धूसर चित्रित मृदभाण्डीय संस्कृति के अवशेष मिलते हैं जिसका सम्बन्ध कुछ पुरातत्त्वविद् महाभारत काल से जोड़ते हैं। तीर्थ के पश्चिम की ओर स्थित जोगनाखेड़ा नामक ग्राम के पुरातात्विक उत्खनन से उत्तर हड़प्पा कालीन एवं धूसर चित्रित मृदभाण्डीय संस्कृति के अवशेष मिले हैं। इन सभी प्रमाणों से इस तीर्थ की पुरातनता सिद्ध होती है।

10 अदिति तीर्थ, अमीन

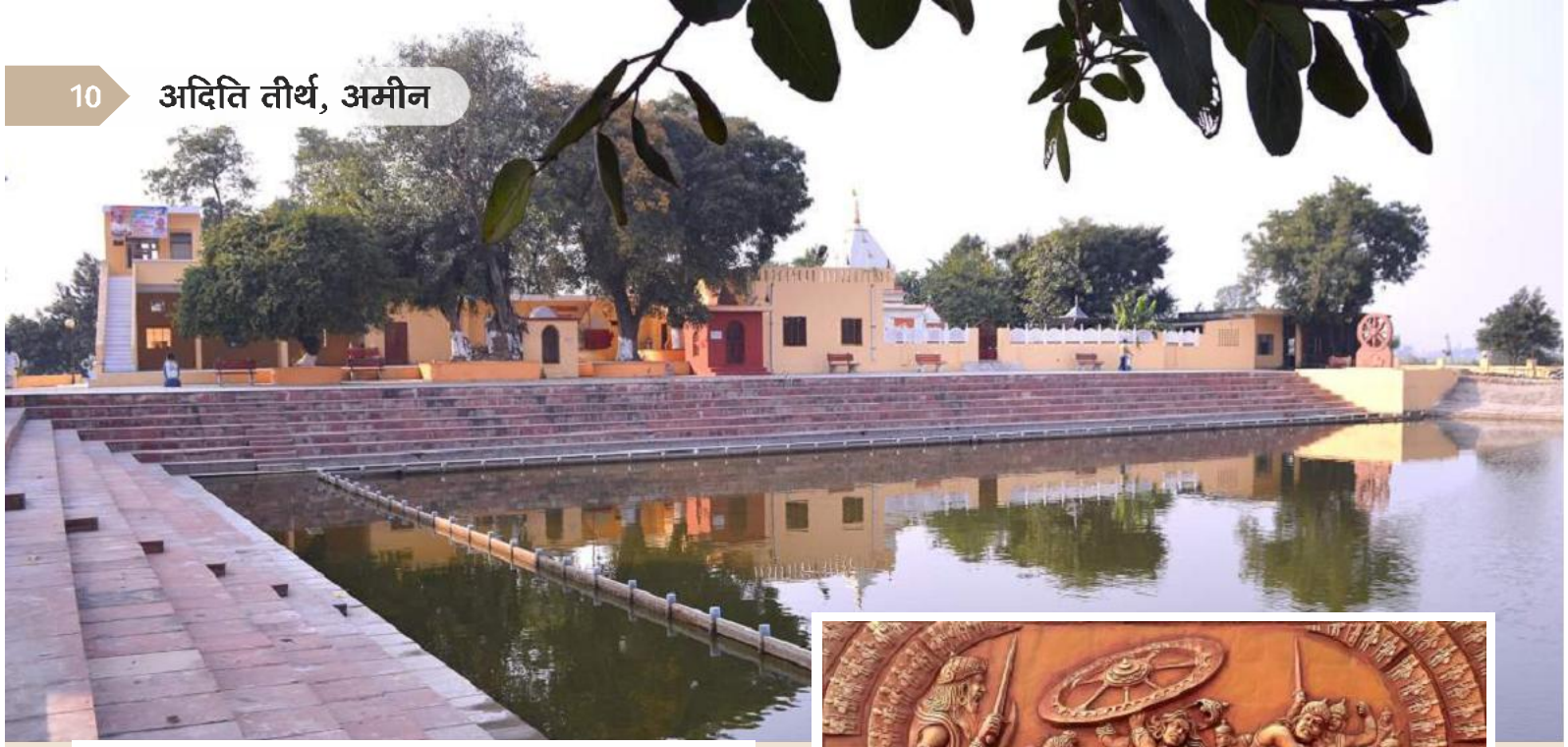

अदिति तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग 9 कि.मी. दूर अमीन ग्राम में स्थित है। पुराणों में यह क्षेत्र अदिति वन या अदिति क्षेत्र के रुप में जाना जाता है। वामन पुराण में कहा है कि यहाँ स्नान करने एवं देवताओं की माता अदिति का दर्शन करने वाली स्त्री सभी दोषों से मुक्त हो जाती है एवं शूरवीर पुत्र को जन्म देती है।

ततो गच्छेत् विप्रेन्द्र नाम्नाऽदितिवनं महत्।
तत्र स्नात्वा च दृष्ट्वा च अदितिं देवमातरम्।
पुत्रं जनयते शूरं सर्वदोषविवर्जितम्।

(वामन पुराण, 13/13)

कहा जाता है कि इसी स्थान पर देवमाता अदिति ने सहस्रों वर्षों तक तपस्या करके मार्तण्ड (आदित्य) को पुत्र रुप में प्राप्त किया था। मार्तण्ड ने दानवों को युद्ध में पराजित कर अपने भाई इन्द्र को पुनः स्वर्ग का सिंहासन सौंपा था।

अमीन नामक स्थान का सम्बन्ध जनश्रुतियाँ महाभारत से भी जोड़ती है। कहा जाता है कि इसी स्थान पर महाभारत युद्ध में कौरव सेनापति गुरु द्रोणाचार्य द्वारा चक्रव्यूह की रचना की गई थी। इसी चक्रव्यूह का भेदन करते हुए अर्जुन पुत्र वीर अभिमन्यु वीरगति को प्राप्त हुए थे। अतः परम्परानुसार यह स्थान अभिमन्युखेड़ा के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कालान्तर में अभिमन्युखेड़ा का अपभ्रंश ही अमीन नाम से जाना जाने लगा। स्थानीय लोग यहाँ स्थित विशाल पुरातात्त्विक टीले को ही चक्रव्यूह के अवशेष मानते है।

चक्रव्यूह में अभिमन्यु

यहाँ स्थित सरोवर को सूर्य कुण्ड भी कहा जाता है। कुरुक्षेत्र भूमि में अन्यत्र भी कई सूर्य कुण्ड मिलते है जो कि इस क्षेत्र में प्राचीन काल में प्रचलित सूर्य उपासना के महत्त्व को संकेतित करते है। तीर्थ के पश्चिम में अमीन से प्राप्त यक्ष एवं यक्षी—यक्षिणी की शुंग कालीन (प्रथम शती ई.पूर्व) की प्रतिमाएं मिली हैं जिनसे इस क्षेत्र में यक्ष पूजा की प्राचीन परम्परा का पता लगता है।

अमीन स्थित पुरास्थल

11 त्रिपुरारि तीर्थ, तिगरी

त्रिपुरारि नामक यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग 13 कि.मी. तिगरी खालरा नामक ग्राम में स्थित है। इस तीर्थ का सम्बन्ध भगवान शिव से है।

पौराणिक कथा के अनुसार देवताओं द्वारा तारकासुर को मारने के बाद उसके पुत्रों वारकाक्ष, कमलाक्ष, विद्युतमाली (तारकाक्ष) ने अपने कठोर तप से ब्रह्मा को अपने समक्ष प्रकट होने को विवश किया। उन्होंने ब्रह्म से वरदान माँगा कि वह तीनों अलग–अलग नगरों में रहें तथा त्रिलोक में स्वच्छन्द भ्रमण करते रहें। प्रत्येक हजार वर्ष बीत जाने पर तीनों अपने नगरों के साथ एक स्थान पर इकट्ठे हो जाएं तथा मिलने के पश्चात् उसी क्रम को दोहराएं। हमारी मृत्यु ऐसे समय पर आए जब हम तीनों एक साथ हो तथा हमारी मृत्यु एक ही बाण से हो। ब्रह्मा न उनके माँगे हुए सारे वरां को पूरा किया।

ब्रह्मा से वरदान प्राप्त करने के पश्चात् तीनों भाई मय दानव के पास पहुँचे। मय ने उनके लिए सोने, चाँदी और लोहे के तीन नगर बनाए। इन नगरों पर नियंत्रण रखने का दायित्व बाणासुर को दिया गया। ये तीनों नगर त्रिपुर कहलाते थे। त्रिपुरों के निर्माण के पश्चात् भी असुर बड़ी संख्या में नष्ट होते रहे। इस पर ब्रह्मा ने उनके लिए अमृत से भरी एक वापी बनवाई जिसमें मरे हुए असुर को डुबाने से वह पुनः जीवित हो उठता था।

इससे असुरों का भयानक और उग्र रूप देवों को पीड़ित करने लगा। तब सभी देवों द्वारा प्रार्थना करने पर भगवान शिव ने एक ही बाण से इन असुरों के तीनों नगरों को नष्ट कर दिया। इसीलिए भगवान शिव का नाम त्रिपुरारि पड़ा। इस घटना का सम्बन्ध जनश्रुतियाँ कुरुक्षेत्र भूमि स्थित इस त्रिपुरारि तीर्थ से जोड़ती हैं। यहाँ शिव पूजन से आशुतोष भगवान शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं।

12 कुलोत्तारण तीर्थ, किरमिच

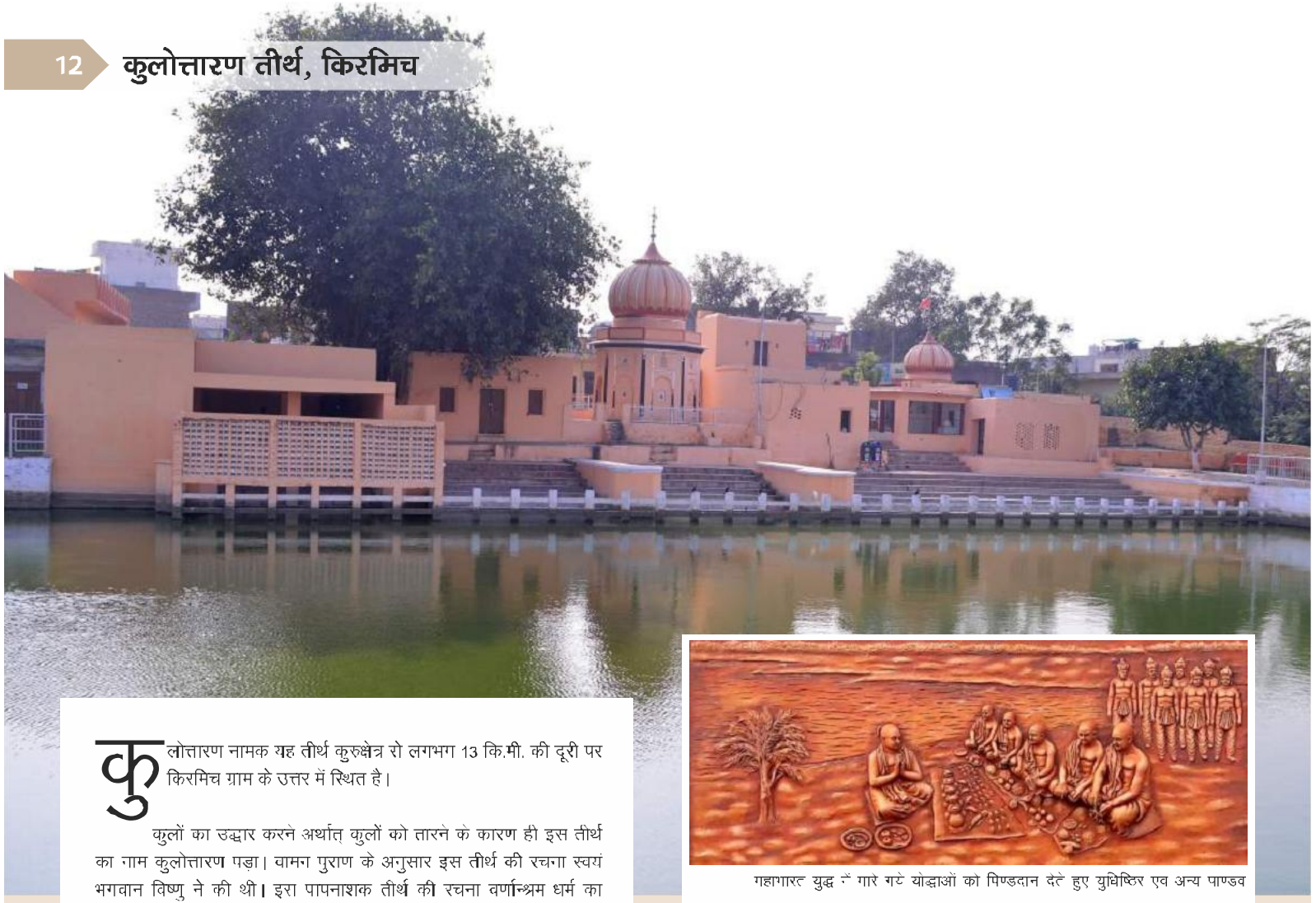

कुलोत्तारण नामक यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग 13 कि.मी. की दूरी पर किरमिच ग्राम के उत्तर में स्थित है।

कुलों का उद्धार करने अर्थात् कुलों को तारने के कारण ही इस तीर्थ का नाम कुलोत्तारण पड़ा। वामन पुराण के अनुसार इस तीर्थ की रचना स्वयं भगवान विष्णु ने की थी। इस पापनाशक तीर्थ की रचना वर्णाश्रम धर्म का पालन करने वाले मनुष्यों के निमित्त की गई थी।

ततो गच्छेत् विप्रेन्द्रास्तीर्थं कल्मषनाशनम्।
कुलोत्तारण नामानं विष्णुना कल्पितं पुरा।
वर्णनामाश्रमाणां च तारणाय सुनिर्मलम्।

(वामन पुराण 36/74)

वामन पुराण के अनुसार चारों आश्रमों के व्यक्ति इस तीर्थ में स्नान करने से अपने 21 कुलों अर्थात् पीढ़ियों का उद्धार कर देते हैं। पुराण के अनुसार इस तीर्थ के सेवन से व्यक्ति अपने माता एवं पिता दोनों के समस्त वंशों का उद्धार कर देता है। वामन पुराण में इस तीर्थ की महिमा का उल्लेख करते हुए लिखा गया है कि इस तीर्थ का सेवन करने वाला व्यक्ति अपने मातामह (नाना) एवं पितामह (दादा) दोनों के समस्त वंशों का उद्धार कर देता है।

महाभारत युद्ध में मारे गये योद्धाओं को पिण्डदान देते हुए युधिष्ठिर एवं अन्य पाण्डव

कुलोत्तारणमासाद्य तीर्थसत्वं द्विजोत्तम :।
कुलानि तारयेत् सर्वान् मातामह पितामहान्।

(वामन पुराण 37/1-5)

महाभारत में यह तीर्थ कुलम्पुन नाम से उल्लिखित है जो कि कुल को पवित्र करने वाला कहा गया है। लोक प्रचलित विश्वासों के अनुसार इसी तीर्थ पर महाभारत युद्ध के पश्चात् युधिष्ठिर ने महाभारत युद्ध में मारे गये योद्धाओं की आत्मा की शान्ति के लिये श्राद्ध एवं पिण्डदान किया था। तीर्थ परिसर बड़े भू-भाग में फैला है। परिसर के उत्तर में वट वृक्षों के झुंड है जिससे प्राचीन काल में इस तीर्थ के सुन्दर एवं वृक्ष सज्जित परिसर होने के प्रमाण मिलते हैं।

13 ओजस तीर्थ, समशीपुर

ओजस नामक यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग 10 कि.मी. की दूरी पर समशीपुर नामक ग्राम में स्थित है। इस तीर्थ का परिचय वामन पुराण में स्पष्ट रूप से दिया गया है तीर्थ का सम्बन्ध भगवान शिव के पुत्र कुमार कार्तिकेय से है। महाभारत के अनुसार देवताओं ने कुमार कार्तिकेय को अपनी सेना के सेनापति का पद प्रदान कर सरस्वती के तट पर स्थित इस तीर्थ पर अभिषेक किया था।

कुमारस्याभिषेकं च ओजसं नाग विश्रुतम्।
तस्मिन् स्नातस्तु पुरुषो यशसा च समन्वितः।
कुमारपुरमाप्नोति कृत्वा श्राद्धं तु मानवः।

(वामन पुराण 41/7-8)

वामन पुराण के अनुसार कुमार के अभिषेक वाला स्थान ओजस नाम से प्रसिद्ध है। उस तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य यश को प्राप्त करता है तथा वहाँ

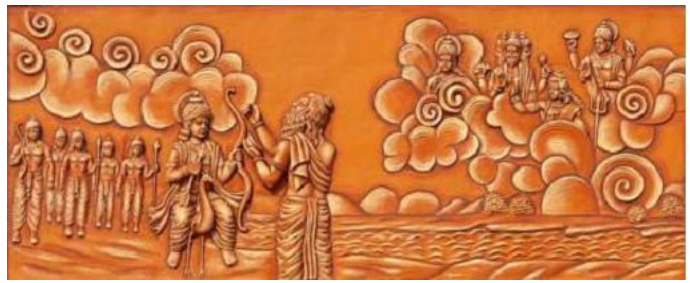

देव सेनापति पद पर कार्तिक का अभिषेक

श्राद्ध करने वाला मनुष्य कुमार के लोक को प्राप्त होता है। वामन पुराण के अनुसार यहाँ किया गया श्राद्ध अक्षय होता है।

ओजसे ह्यक्षयं श्राद्धं वायुना कथितं पुरा।

(वामन पुराण 41/9-11)

ब्रह्मपुराण में भी 'रेणुकं पंचवटकं विमोचनमधोजसम्' ऐसा कहकर इस तीर्थ का स्पष्ट उल्लेख किया है।

14 आपगा तीर्थ, दयालपुर

आपगा नामक यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग 5 कि.मी. की दूरी पर दयालपुर नामक ग्राम की सीमा पर स्थित है। वामन पुराण में कुरुक्षेत्र भूमि की नौ नदियों का उल्लेख है जिनमें सरस्वती, वैतरणी, मधुस्रवा, वासुनदी, कौशिकी, हिरण्यवती, गंगा, मन्दाकिनी, दृषद्वती के साथ आपगा का भी उल्लेख है। इन नौ नदियों में से सरस्वती के अतिरिक्त सभी को वर्षाकाल में बहने वाली बताया गया है :

सरस्वती नदी पुण्या तथा वैतरणी नदी ।
आपगा च महापुण्या गंगामन्दाकिनी नदी ।
मधुस्रवा वासुनदी कौशिकी पापनाशिनी ।
दृषद्वती महापुण्या तथा हिरण्वती नदी ।
वर्षाकालवहाः सर्वा वर्जयित्वा सरस्वतीम् ।
एतासामुदकं पुण्यं प्रावृष्काले प्रकीर्तितम् ।

(वामन पुराण 31/6-8)

महाभारत एवं पौराणिक साहित्य में इस तीर्थ का महत्त्व वर्णित है। महाभारत के वनपर्व में कहा है कि आपगा तीर्थ में किसी ब्राह्मण को श्यामक का भोजन करवाना करोड़ो ब्राह्मणों के भोजन करवाने का फल देता है।

पुराणों के अनुसार भाद्रपद मास में विशेष रूप से कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मध्याह्न में इस तीर्थ पर पिण्डदान करने वाला व्यक्ति मुक्ति को प्राप्त करता है।

इस तीर्थ में एक वर्गाकार सरोवर है जिसका निर्माण लाखोरी ईंटों से हुआ है। तीर्थ के चारों कोनों पर चार अष्टभुजाकार एवं गुम्बदाकार शिखर युक्त उत्तर मध्यकालीन चार छतरियाँ बनी हुई हैं। तीर्थ के निकट ही कुरुक्षेत्र का प्रसिद्ध पुरातात्विक स्थल राजा कर्ण का टीला है जिसका सम्बन्ध स्थानीय लोग कर्ण से जोड़ते हैं। तीर्थ परिसर से कुछ ही दूरी पर स्थित मिर्जापुर के टील की खुदाई से उत्तर हड़प्पा कालीन संस्कृति के अवशेष मिले हैं जिससे भी इस तीर्थ की प्राचीनता सिद्ध होती है।

15 कर्ण का टीला, मिर्जापुर

यह पुरातात्त्विक स्थल कुरुक्षेत्र से लगभग 5 कि.मी. की दूरी पर मिर्जापुर नामक ग्राम में स्थित है जिसका सम्बन्ध जनश्रुतियाँ महाभारत के प्रसिद्ध नायक दानवीर कर्ण से जोड़ती हैं।

कर्ण लोक निन्दा के भय से माता कुन्ती द्वारा त्यक्त थे। इसीलिए वह सूत दम्पति अधिरथ और राधा द्वारा पालित हुए। कर्ण सूर्यदेव के अनन्य उपासक तथा महा दानवीर थे। जन्म के साथ ही इन्हें कवच और कुण्डल प्राप्त थे। दुर्योधन ने इन्हें अंग देश का राजा बनाया था, जिसके फलस्वरूप इन्होंने कौरवों की ओर से पाण्डवों के विरुद्ध युद्ध किया। इन्द्र ने ब्राह्मण वेश धारण कर अर्जुन की सुरक्षा हेतु सूर्य पूजा के समय कर्ण से कवच और कुण्डल का दान माँग लिया था। कर्ण का प्रण था कि वह सूर्य पूजा के समय याचक की याचना अवश्य पूरी करेंगे। अतः अपने प्राण की रक्षा के लिए उन्होंने कवच और कुण्डल इन्द्र को दान दे दिए। यद्यपि वह जानते थे कि कवच और कुण्डल के अभाव में उनके प्राणों पर संकट आ सकता है।

अर्जुन के साथ युद्ध के समय कर्ण के रथ का पहिया जमीन में धँस गया और कर्ण उसे निकालने का प्रयास कर रहे थे तभी श्रीकृष्ण के संकेत पर अर्जुन ने कर्ण का वध कर दिया था। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार यह टीला कभी राजा कर्ण का किला होता था।

इस टीले का सर्वेक्षण सर्वप्रथम कनिंघम ने तथा उत्खनन डी.बी. स्पूनर ने किया था। टीले से उत्खनन से प्राप्त अवशेषों को 400 से 100 ई. पू. तक तथा 100 ई.पू. से 300 ई. तक के दो कालों में विभाजित किया गया है। अवशेषों में धूसर चित्रित मृदभाण्ड, लाल चमकीले मृदभाण्ड तथा काली पॉलिश वाले मृदभाण्ड प्राप्त हुए हैं। यहाँ से प्राप्त पुरावस्तुओं में पत्थर के सिल और मूसल, पत्थर के मणके, पशुओं की मूर्तियाँ, ब्राह्मीलेख से युक्त मोहरें आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इस टीले से मध्यकालीन बस्तियों के भी अवशेष मिले हैं।

16 काम्यक तीर्थ, कमौदा

काम्यक नामक यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग 15 कि.मी. की दूरी पर कमौदा नामक ग्राम में स्थित है। वामन पुराण के अनुसार कुरुक्षेत्र भूमि में नौ नदियाँ व सात वन थे और उन सब में पवित्र वन काम्यक वन था जोकि सरस्वती के तट के साथ मरु भूमि तक फैला हुआ था। इन सात वनों में अदिति वन, व्यास वन, फलकी वन, सूर्य वन, मधु वन, शीत वन के साथ ही काम्यक वन का उल्लेख आया है।

शृणु सप्त वनानीह कुरुक्षेत्रस्य मध्यतः।
येषां नामानि पुण्यानि सर्वपापहराणि च।
काम्यकं च वनं पुण्यं अदितिवनं महत्।
व्यासस्य च वनं पुण्यं फलकीवनमेव च।
तत्र सूर्यवनस्थानं तथा मधुवनं महत्।
पुण्यं शीतावनं नाम सर्वकल्मषनाशनम्।

(लिंग पुराण 34/15)

वामन पुराण के अनुसार काम्यक वन में प्रवेश करने मात्र से ही सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

काम्यकं च वनं पुण्यं सर्वपातकनाशनम्।
यस्मिन् प्रविष्टे मात्रस्तु मुक्तो भवति किल्बिषैः।।

(लिंग पुराण 20/32)

महाभारत के वन पर्व के अनुसार वनवास काल में काम्यक वन में ही पाण्डवों की भेंट वेद व्यास से हुई थी। इसी तीर्थ पर पाण्डवों से भगवान श्रीकृष्ण, विदुर व मैत्रेय ऋषि भी मिलने आये थे। महाभारत के अनुसार काम्यक वन में ही पाण्डवों द्वारा मृगया पर निकलने के पश्चात् कुटी में अकेली द्रौपदी का जयद्रथ ने अपहरण कर लिया था। द्रौपदी के करुण क्रन्दन को सुनकर पाण्डवों ने जयद्रथ को युद्ध में पराजित कर उसे बंदी बनाया था। बाद में युधिष्ठिर की सलाह पर पाण्डवों ने उसे मुक्त किया। यहीं द्रौपदी द्वारा सत्यभामा को प्रतिव्रत धर्म की शिक्षाएं दी गई थी। देवराज इन्द्र ने यहीं पाण्डवों से मिलने के लिए महर्षि लोमश को भेजा था। इसी वन में पाण्डवों की भेंट मार्कण्डेय ऋषि से हुई थी।

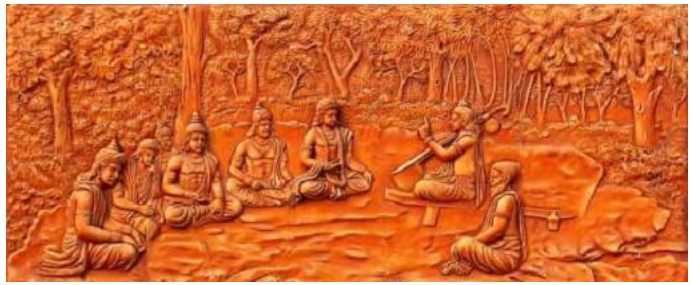

काम्यक वन में पाण्डवों के साथ भगवान श्रीकृष्ण, नारद एवं ऋषि मार्कण्डेय का मिलन

कमौदा स्थित इस काम्यक तीर्थ पर ही पाण्डवों ने कई वर्षों तक वास किया। जनश्रुतियों के अनुसार अश्वत्थामा त्रिकाल संध्या में से एक काल की संध्या इसी तीर्थ पर करता है। पुराणों के अनुसार काम्यक वन में भगवान सूर्य पूषा नामक विग्रह में स्थित रहते हैं। तीर्थ पर रविवार को पड़ने वाली शुक्ल सप्तमी को मेला लगता है। कहा जाता है कि उस दिन तीर्थ के सरोवर में स्नान करने वाला मनुष्य विशुद्ध देह पाकर अपने मनोरथों को प्राप्त करता है। तीर्थ पर कामेश्वर महादेव मन्दिर स्थित है जिसे भगवान शिव द्वारा कामदेव को भस्म करने के प्रसंग से भी जोड़ा जाता है।

17 लोमश तीर्थ, लोहार माजरा

यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग 15 कि.मी. की दूरी पर लोहार माजरा नागक ग्राग में स्थित है। इस तीर्थ का सम्बंध लोमश ऋषि से है जो एक महान कथावाचक थ। इन्होंने ही इन्द्र और अर्जुन का संदश काम्यक वन में युधिष्ठिर को सुनाया था। उनके कुशलक्षेम और दिव्यास्त्रों की प्राप्ति की बात बताई। महर्षि लोमश ने युधिष्ठिर को काम्यक वन में अनेकानेक कथाएं सुनाईं, जिनका वर्णन महाभारत में विस्तृत रूप में उपलब्ध है।

महाभारत के वन पर्व के अनुसार एक बार स्वर्ग में जाने पर लोमश द्वारा दवराज इन्द्र के सिंहासन क आधे भाग पर अर्जुन का स्थित देखकर उनके मन में यह प्रश्न उठा कि किन गुणों के कारण अर्जुन को यह राग्मान प्राप्त हुआ है। इन्द्र ने उनके मन मं उठे प्रश्न का उत्तर देकर उसका समाधान किया। तत्पश्चात् ये इन्द्र और अर्जुन का सन्देश लेकर काम्यक वन में निवास कर रहे धर्मराज युधिष्ठिर के पास पहुँचे और उन्हें अर्जुग की कुशलक्षेम के साथ ही उसके द्वारा दिव्यास्त्रों की प्राप्ति के बारे में भी बताया।

गहर्षि लोगश ने धर्गराज युधिष्ठिर को गहर्षि अगस्त्य, राग, परशुराग, दवताओं के हितार्थ एवं रक्षार्थ महर्षि दधिचि के अस्थि दान, राजा सगर के ताप,

शिव द्वारा उन्हें वर प्राप्ति, कपिल के क्रोध से सगर के साठ हजार पुत्रों के विनाश, भगीरथ के भागीरथ प्रयास द्वारा गंगा के पृथ्वी पर अवतरण एवं गंगा के द्वारा सगर पुत्रों के उद्धार आदि की अनेकानेक कथाओं का श्रवण करवाया।

18 भूरिश्रवा तीर्थ, भौर सैयदां

यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग 17 कि.मी. की दूरी पर भौर सैयदां नामक ग्राम में स्थित है जिसका नाम कुरुवंशी राजा सोमदत्त के पुत्र एवं महाभारत युद्ध के प्रमुख कौरव पक्षीय योद्धा भूरिश्रवा पर पड़ा है। लोकोक्तियों के अनुसार इसी स्थान पर महाभारत युद्ध में भगवान श्रीकृष्ण के चचेरे भाई महावीर सात्यकि द्वारा धोखे से भूरिश्रवा का वध किया गया था। भूरिश्रवा कौरव पक्ष के श्रेष्ठतम योद्धाओं में से एक थे जो असाधारण वीरता एवं साहस के लिए विख्यात थे। महाभारत युद्ध में उन्होंने कई बार पाण्डव सेनाओं को हराया था। उन्होंने महाभारत युद्ध के दौरान सात्यकि के दस पुत्रों को भी मारा था। महाभारत युद्ध के अवसर पर एक बार जब भूरिश्रवा सात्यकि को मारने वाले थे तभी अर्जुन ने बाण वेधकर उनकी दाँयी भुजा काट डाली। भुजाहीन भूरिश्रवा जब ध्यान में बैठे हुए थे तो तभी सात्यकि ने अवसर पाकर उन्हें मार डाला। अपनी मृत्यु के पश्चात् भूरिश्रवा विश्वदेवों में सम्मिलित हो गए थे।

भगवान शिव के परम भक्त होने के कारण मृत्यु के पश्चात् भूरिश्रवा की आत्मा भगवान शिव में ही विलीन हो गई थी। इसीलिये तीर्थ स्थित मन्दिर भूरिश्रवेश्वर महादेव कहलाता है। तीर्थ सरोवर में वन विभाग, हरियाणा द्वारा मगरमच्छ विहार विकसित किया गया है। वर्तमान में तीर्थ के उत्तर में प्राचीन सरस्वती का एक पुराना प्रवाह मार्ग भी खोजा गया है। सरस्वती का यह पुराना प्रवाह मार्ग महाभारत एवं पुराणों में वर्णित साहित्यगत विवरणों की पुष्टि करता है।

महाभारत युद्ध में सात्यकि द्वारा भूरिश्रवा का वध

इस तीर्थ में तीन मन्दिर स्थित हैं जिनमें भूतेश्वर महादेव मन्दिर उत्तर मध्यकालीन है। इस मन्दिर के गर्भगृह के सामने मण्डप है जिसका शिखर शंक्वाकार है। अष्टभुजा आधार से निर्मित गर्भगृह का शिखर गुम्बदाकार है। गर्भगृह की आन्तरिक भित्तियों में भित्ति चित्र बनाए गए हैं। सरोवर तीर्थ के उत्तर में स्थित है जिसमें दक्षिण की ओर दो घाटों का निर्माण हुआ है जिन्हें सरस्वती तथा गंगा घाटों के नाम से जाना जाता है। सरोवर में प्रचुर मात्रा में उगने वाले कमल इसकी शोभा को और अधिक बढ़ा देते हैं।

19 शालिहोत्र तीर्थ, सारसा

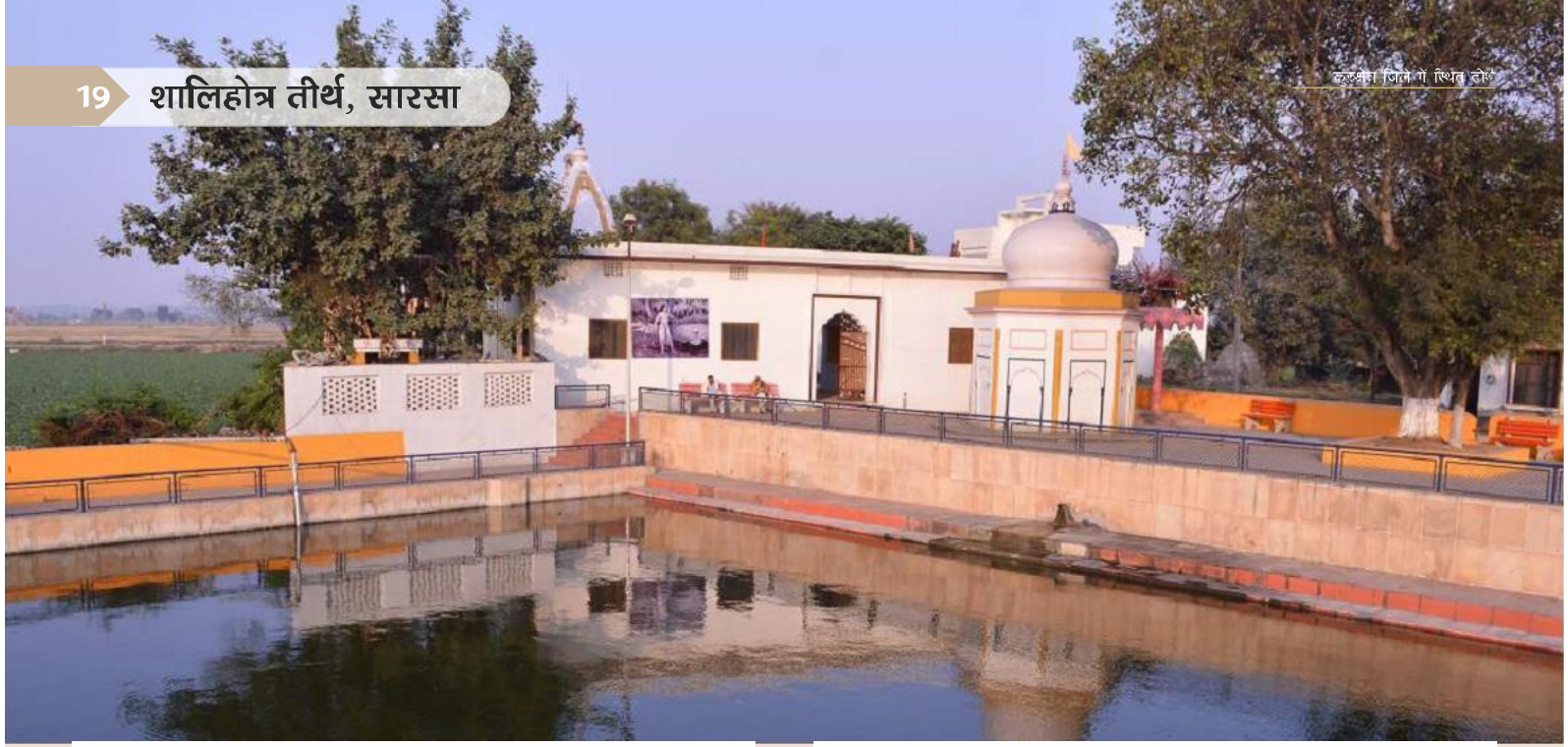

कुरुक्षेत्र जिले में स्थित तीर्थ

शालिहोत्र नामक यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग 24 कि.मी. की दूरी पर सारसा नामक ग्राम में स्थित है। इस तीर्थ का नाम शालिहोत्र मुनि से सम्बन्धित होने के कारण शालिहोत्र पड़ा तथा ग्राम का सारसा नाम होने का प्रमुख कारण यह रहा है कि इसी स्थान पर धर्मयक्ष ने सारस पक्षी का रूप धरण करके धर्मराज युधिष्ठिर से कई प्रश्न किये थे। युधिष्ठिर के उत्तरों से प्रसन्न होकर यक्ष ने उनके चारों भाईयों (भीम, अर्जुन, नकुल एवं सहदेव) को जीवन दान दिया था।

एक अन्य लौकिक आख्यान के अनुसार इस तीर्थ का सम्बन्ध हैहय वंशी राजा सहस्रबाहु से है जो कि भगवान विष्णु के अवतार परशुराम के समकालीन थे। पौराणिक आख्यानों के अनुसार परशुराम ने सहस्रबाहु को मारकर अन्यायी राजाओं के विरुद्ध अपना अभियान यहीं से शुरु किया था। कहा जाता है कि वर्तमान ग्राम का नाम सारसा इन्हीं सहस्रबाहु के नाम पर पड़ा है। कई मान्यताओं के अनुसार गाँव का नाम सारस पक्षी के नाम पर पड़ा है। तीर्थ सरोवर में आज भी सारस पक्षियों के झुण्ड देखने को मिलते हैं।

महाभारत के दाक्षिणात्य पाठ के आदि पर्व में शालिहोत्र मुनि का वर्णन है। इन्होंने अपने आश्रम में अपने तपोबल से एक दिव्य सरोवर और पवित्र वृक्ष का निर्माण किया था। उस सरोवर का जल मात्र पी लेने से ही मनुष्य की क्षुधा–तृष्णा सर्वथा शान्त हो जाती थी। यहीं यह भी उल्लेख है कि पाण्डव हिडिम्बा (भीम की पत्नी) के साथ इस आश्रम में आए थे तथा शालिहोत्र मुनि ने पाण्डवों को भोजन देकर उनकी भूख को शान्त किया था।

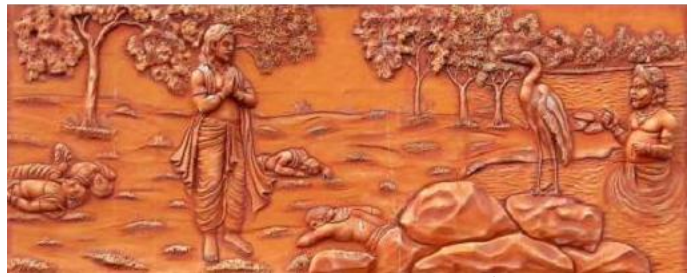

सारस रूपधारी धर्मयक्ष का युधिष्ठिर से संवाद

महाभारत में इस तीर्थ का महत्व इस प्रकार वर्णित है :

शालिहोत्रस्य तीर्थे च शालिसूर्ये यथाविधि।
स्नात्वा नरवरश्रेष्ठ गोसहस्र फलं लभेत्।।

(महाभारत, वन पर्व 83/107)

अर्थात् शालिहोत्र के शालिसूर्य नामक तीर्थ में स्नान करने पर मनुष्य को सहस्र गऊओं के दान का फल मिलता है।

वामन पुराण में भी इस तीर्थ को राजर्षि शालिहोत्र से सम्बंधित बताया गया है।

शालिहोत्रस्य राजर्षेस्तीर्थं त्रैलोक्य विश्रुतम्। (वामन पुराण, 37/5)

तीर्थ सरोवर के चारों ओर लाखौरी ईंटों से निर्मित घाट हैं। तीर्थ स्थित एक मन्दिर के गर्भगृह में शिवलिंग के साथ–साथ 9–10वीं शती की एक विष्णु प्रतिमा भी स्थापित है।

20 मणिपूरक तीर्थ, मुर्तजापुर

यह तीर्थ कुरुक्षत्र पिहोवा मार्ग पर कुरुक्षेत्र से लगभग 23 कि.मी. दूर मुर्तजापुर नामक ग्राम के पूर्व में स्थित है।

इस तीर्थ का वर्णन महाभारत के अन्तर्गत मणिपुर नाम से मिलता है। निःसन्देह यही मणिपुर कालान्तर में मणिपूरक नाम से प्रसिद्ध हो गया होगा। महाभारत में वर्णित मणिपुर वस्तुतः धर्मज्ञ एवं धर्मनिष्ठ राजा चित्रवाहन की राजधानी थी। तीर्थ यात्रा करते समय एक बार अर्जुन के द्वारा वचन भंग किए जाने पर उसने प्रायश्चित स्वरूप वनवास को स्वीकार किया। अपने वनवास के समय विभिन्न स्थानों पर भ्रमण करते हुए अर्जुन मणिपुर नामक तीर्थ पर पहुँचे। इसी स्थान पर अर्जुन ने सम्राट चित्रवाहन की पुत्री चित्रांगदा से विवाह किया तथा लगभग तीन वर्ष तक यहाँ निवास किया। इस सम्पूर्ण कथा का वर्णन महाभारत के आदिपर्व में उपलब्ध होता है।

महाभारत के अश्वमेध पर्व के अन्तर्गत यह वर्णन है कि जब धर्मराज युधिष्ठिर ने इन्द्रप्रस्थ में अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया तो अर्जुन अश्वमेधीय यज्ञ के अश्व की रक्षार्थ उसके साथ गये। अश्व का पीछा करते हुए अर्जुन का पुनः मणिपुर में आगमन हुआ तथा वहाँ अर्जुन का अपने ही पुत्र बभ्रुवाहन के साथ घोर संग्राम हुआ। लौकिक आख्यान इस तीर्थ का सम्बन्ध अश्वत्थामा से भी जोड़ते हैं। कहा जाता है कि इसी स्थान पर पाण्डवों ने अश्वत्थामा के माथे से जुड़ी मणि निकाली थी।

तीर्थ स्थित गौरी शंकर एवं गणश मन्दिर उत्तर मध्यकालीन शैली में निर्मित हैं जिनका शिखर लगभग गुम्बदाकार है। यह तीर्थ सरस्वती नदी के तट पर स्थित है। तीर्थ के निकट ही बीबीपुर कलाँ नामक ग्राम से उत्तर हड़प्पा काल से लेकर मध्यकाल तक की संस्कृतियों के पुरातात्त्विक अवशेष मिलते हैं जिससे यह सिद्ध हो जाता है कि प्राचीन काल में कभी इन संस्कृतियों का प्रसार यहाँ तक भी रहा होगा।

21 सोम तीर्थ, सैंसा

यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग 25 कि.मी. की दूरी पर सैंसा नामक ग्राम में स्थित है जिसे पुराणों में सोम तीर्थ के रूप में वर्णित किया गया है। इस तीर्थ का वर्णन महाभारत, वामन पुराण, ब्रह्म पुराण एवं पद्म पुराण में उपलब्ध होता है। वामन पुराण में इस तीर्थ को सोम (चन्द्र) देव से सम्बन्धित बताया गया है। दक्ष प्रजापति के श्रापवश एक बार सोमदेव भयंकर राजयक्ष्मा से पीड़ित हो गए थे। तत्पश्चात् देवताओं के आग्रह पर दक्ष प्रजापति के आदेशानुसार सोम ने इस स्थान पर उग्र एवं कठोर तप द्वारा स्वयं को उस भीषण व्याधि से मुक्त कर लिया था :

ततो गच्छत विप्रेन्द्राः सोमतीर्थमनुत्तमम्।
यत्र सोमस्तपस्तप्त्वा व्याधिमुक्तः अभवत् पुरा।
तत्र सोमेश्वरं दृष्ट्वा स्नात्वा तीर्थवरे शुभे।
राजसूयस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोति मानव :।
व्याधिभिश्च विनिर्मुक्तः सर्वदोषविवर्जित :।
सोमलोकमवाप्नोति तत्रैव रमते चिरम्।

(वामन पुराण ३८/33–35)

अर्थात् जिस स्थान पर सोम देव तप करके व्याधि मुक्त हुए ऐसे उस श्रेष्ठ सोमतीर्थ में स्नान कर एवं वहाँ स्थित सोमेश्वर का दर्शन करने पर मनुष्य राजसूय यज्ञ का फल प्राप्त करता है तथा समस्त रोग, शोक व दोष से मुक्त हो सोमलोक को प्राप्त कर चिरकाल तक वहां आनन्दपूर्वक निवास करता है।

यह प्राचीन तीर्थ सरस्वती नदी के तट पर स्थित है। तीर्थ के आस–पास के क्षेत्र से उत्तर हड़प्पा काल से लेकर मध्य काल तक की संस्कृतियों के अवशेष मिले है जो कि इस तीर्थ की प्राचीनता को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं।

कुरुक्षेत्र जिले में स्थित तीर्थ

22 अरुणाय तीर्थ, अरणाय

अरुणाय नामक यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग 28 कि.मी. तथा पिहोवा से लगभग 6 कि.मी. की दूरी पर अरुणाय नामक ग्राम में स्थित है।

इस तीर्थ की उत्पत्ति की कथा ऋषि विश्वामित्र एवं वशिष्ठ से जुड़ी है। महाभारत एवं वामन पुराण के अनुसार सरस्वती के तट पर ही महर्षि वशिष्ठ एवं विश्वामित्र के आश्रम थे। विश्वामित्र के मन में वशिष्ठ के प्रति द्वेष भाव था। एक बार ऋषि विश्वामित्र ने वशिष्ठ की हत्या की योजना बनाकर सरस्वती से कहा कि तुम वशिष्ठ का बहाकर मेरे आश्रम में ले आओ। भयभीत हुई सरस्वती ने विश्वामित्र की यह योजना महर्षि वशिष्ठ को बताई। उदारचित्त एवं करुणार्द्र महर्षि वशिष्ठ राररवती को विश्वामित्र के शाप से बचाने के लिए स्वयं राररवती के साथ बहते हुए ऋषि विश्वामित्र के आश्रम में पहुँचे। वहाँ पहुँचते ही जब विश्वामित्र वशिष्ठ का मारने हेतु शस्त्र लेने गये उसी समय ब्रह्महत्या के डर से भयभीत सरस्वती वशिष्ठ को पूर्व दिशा की ओर बहा कर ले गई। सरस्वती के इस आचरण से क्रोधित हुए विश्वामित्र ने राररवती को शाप दिया कि अब से वह राक्षसों के प्रिय रक्तयुक्त जल को प्रवाहित करेगी। ऋषि के शाप के कारण सरस्वती में रक्तिम जल बहने लगा।

एक बार तीर्थयात्रा पर निकले ऋषि मुनियों का समूह सरस्वती के तट पर पहुँचा। राररवती की दुर्दशा को देखकर व उसका कारण जानकर उसके निराकरण हेतु मुनियों ने महादेव का स्मरण करके सरस्वती को शापमुक्त किया। सरस्वती के जल को पवित्र हुआ देख राक्षसों ने मुनियों से अपने भोजन के विषय में प्रार्थना की। ऋषियों ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर उनकी समस्या का समाधान किया। तीर्थ को शुद्ध करने के पश्चात् ऋषिगण राक्षसों की मुक्ति के लिए पवित्र अरुणा नदी को वहाँ लाए तथा वहाँ सरस्वती और अरुणा नदी के संगम की स्थापना की। तभी से यह तीर्थ सरस्वती अरुणा संगम के नाम से विख्यात हुआ।

अरुणायाः राररवत्याः रांगमे लोकविश्रुते।
त्रिरात्रोपोषितः स्नातो मुक्ष्यते सर्वकिल्विषैः।
प्राप्ता कलियुगे घोरे अधर्मे प्रत्युपस्थिते।
अरुणासंगमे स्नात्वा मुक्तिमवाप्नोति मानवः।।

(वामन पुराण, 40/11–12)

अर्थात् लोक प्रसिद्ध अरुणा व राररवती के रांगम में तीन रात्रि संयमपूर्वक निवास करने वाला व स्नान करने वाला मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है। घोर कलियुग में तथा पाप बढ़ जाने पर मनुष्य अरुणा के संगम में स्नान करके मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

वर्तमान में इस तीर्थ में एक भव्य शिव मंदिर स्थापित है। मंदिर परिसर में ही अनेक अन्य मंदिर तीर्थ की शोभा बढ़ाते हैं। इस तीर्थ पर शिवरात्रि के अवसर पर विशाल मेले का आयोजन होता है जिसमें दूर–दराज से भक्तगण यहाँ आकर अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं।

23 प्राची तीर्थ, पिहोवा

प्राची नामक यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग 31 कि.मी. की दूरी पर पिहोवा में सरस्वती नदी के तट पर स्थित है। कुरुक्षेत्र भूमि के इस तीर्थ में सरस्वती नदी पूर्व दिशा की ओर बहती है। इसी से यह तीर्थ प्राची तीर्थ के नाम से विख्यात हुआ। वामन पुराण में इसे तीर्थ का नाम एवं महत्त्व दोनों ही स्पष्टतया वर्णित है। वामन पुराण में इस तीर्थ का वर्णन दुर्गा तीर्थ एवं सरस्वती कूप के पश्चात् उपलब्ध होता है :

स्नात्वा शुद्धिमवाप्नोति यत्र प्राची सरस्वती।
देवमार्ग प्रविष्टा च देवमार्गेण निःसृता।
प्राची सरस्वती पुण्या अपि दुष्कृतकर्मणां।
त्रिरात्रं च वसिष्यन्ति प्राचीं प्राप्य सरस्वतीम्।

(वामन पुराण 42.19–20)

अर्थात् पूर्व दिशा की ओर बहने वाली सरस्वती देवमार्ग में प्रविष्ट होकर देवमार्ग से ही निकली हुई है। यह पूर्ववाहिनी अर्थात् प्राची सरस्वती दुष्कर्मियों का भी उद्धार कर उन्हें पुण्य देने वाली है। जो मनुष्य प्राची सरस्वती के निकट जाकर तीन रात तक उपवास करता है उसे त्रिविध ताप आधिभौतिक, आधिदैहिक, आधिदैविक में से कोई ताप पीड़ित नहीं करता।

इसी पुराण में इस तीर्थ के महत्त्व के विस्तार में आगे लिखा है कि नर और नारायण, ब्रह्मा, स्थाणु, सूर्य एवं इन्द्र सहित सभी देवता प्राची दिशा का सेवन करते हैं। जो मानव प्राची सरस्वती में श्राद्ध करेंगे उनके लिए इस लोक एवं परलोक में कुछ भी दुर्लभ नहीं होगा। अतः श्रद्धालु पुरुष को चाहिए कि वह सदैव प्राची सरस्वती का सेवन करे विशेषतः पंचमी के दिन। पंचमी की तिथि को प्राची सरस्वती का सेवन करने वाला मनुष्य धन एवं वैभव सम्पन्न होता है।

वराह

उमा–महेश्वर

प्राची तीर्थ से प्राप्त प्रतिहार काल (9–10वीं शती ई.) की प्रस्तर मूर्तियाँ

यहाँ सरस्वती के प्राचीन घाट के किनारे उत्तर मध्यकालीन तीन मन्दिर स्थित हैं जिनमें से एक मन्दिर से बड़ी संख्या में प्रतिहार कालीन (9–10वीं शती) मूर्तियाँ मिली हैं। इनसे प्राचीन काल में इस तीर्थ की धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्ता का पता लगता है। कई पुराविदों का मानना है कि वर्तमान मन्दिर सम्भवतः उन्हीं तीन प्राचीन मन्दिरों के ऊपर बनाए गए होंगे जिनका निर्माण प्रतिहार शासकों के अधीनस्थ तीन तोमर सामंत भाईयों पूर्णराज, देवराज और गोग्ग ने किया था। इन मन्दिरों के निर्माण की पुष्टि प्रतिहार सम्राट महेन्द्र पाल के अभिलेख से होती है।

24 सरस्वती तीर्थ, पिहोवा

यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग 28 कि.मी. की दूरी पर पिहोवा में सरस्वती नदी के तट पर स्थित है।

ब्रह्माण्ड पुराण के 43 वें अध्याय में वर्णित कथा के अनुसार सृष्टि रचना के समय समाधि की अवस्था में ब्रह्मा के मस्तिष्क से एक कन्या उत्पन्न हुई। ब्रह्मा के पूछने पर उस कन्या ने बताया कि वह उन्हीं से उत्पन्न हुई है। उस कन्या ने ब्रह्मा देव से अपने स्थान व कर्त्तव्य के विषय में प्रश्न किया। तब ब्रह्मा ने उसे बताया कि उसका नाम सरस्वती है तथा वह प्रत्येक मनुष्य की जिह्वा में निवास करेगी। ब्रह्मा ने ही उसे बताया कि वह एक पवित्र नदी के रूप में भी धरती पर विद्यमान रहेगी।

सरस्वती मात्र पौराणिक काल की ही नहीं, अपितु वैदिक काल की भी एक प्रमुख नदी थी। ऋग्वेद में इस नदी का उल्लेख करते हुए इसे सर्वाधिक शक्तिशाली एवं सर्वाधिक वेगवान बताया गया है :

प्रक्षोदसा धयसा सप्त एषा सरस्वती धरुणमाय सी पू :।
प्रवाबधना रथ्येवयाति विश्वो अपो महिना सिंधुरन्था।
(ऋग्वेद 7/95/1)

शतपथ ब्राह्मण में सरस्वती को वाक्, अन्न तथा सोम कहा है। वामन पुराण में इसे विष्णु की जिह्वा कहा गया है तथा स्कंदपुराण में इसे ब्रह्मा की पुत्री कहा गया है।

महाभारत में आदि पर्व के 95 वें अध्याय में वर्णित कथा के अनुसार इस पवित्रा नदी के तट पर राजा गतिनार ने यज्ञ किया था । यज्ञ समाप्ति पर नदी की अधिष्ठात्री दवी सरस्वती ने उनके पास आकर उन्हें पति रूप में वरण किया। महाभारत के वन पर्व में उल्लेख है कि पाण्डवों ने अपने वनवास के समय इस नदी को पार कर काम्यक वन में प्रवेश किया था। ऐसा कहा जाता है कि पाण्डवों के वंशज असीम कृष्ण ने इसी नदी के तट पर 12 वर्षों तक यज्ञानुष्ठान किया था। महाभारत के अनुसार तीर्थ स्वरूपा इस नदी का सेवन करने और पितरों का तर्पण करने वाला मनुष्य सारस्वत लोकों का अधिकारी व आनन्द का भागी होता है।

पिहोवा स्थित सरस्वती तीर्थ पर पितरों के लिए श्राद्ध, पिण्ड व तर्पण दने का विधान है। तीर्थ परिसर में ही पृथ्वीश्वर महादेव मन्दिर स्थित है जिसका जीर्णोद्धार 18 वी शती ई0 में मराठाओं द्वारा किया गया था। मन्दिर के साथ ही कार्तिकेय मन्दिर है जहाँ कार्तिक को तेल चढ़ाया जाता है। इस मन्दिर में महिलाओं का प्रवेश निषिद्ध माना जाता है। सरस्वती के इस पावन तीर्थ पर चैत्रमास की कृष्ण चतुर्दशी पर भारी मेला लगता हैं जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालु स्नान व पिण्डदान हेतु यहाँ आते हैं। प्रेत चतुदर्शी पर आयोजित इस मेले का उल्लेख राररवती तीर्थ परिसर में स्थित बाबा गरीबनाथ के डेरे पर लगे प्रतिहार कालीन शिलालेख में भी मिलता है।

25 ब्रह्मयोनि तीर्थ, पिहोवा

ब्रह्मयोनि नामक यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग 28 कि.मी. की दूरी पर सरस्वती नदी के तट पर पिहोवा में स्थित है ।

कुरुक्षेत्र के तीर्थों में से अधिकांश का सम्बन्ध त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश से रहा है। ब्रह्मा से सम्बन्धित तीर्थों में ब्रह्मसर, ब्रह्मस्थान, ब्रह्मोदुम्बर, ब्रह्मतीर्थ एवं ब्रह्मयोनि प्रमुख हैं। इस तीर्थ का नाम एवं महत्त्व महाभारत तथा वामन पुराण दोनों में ही उपलब्ध होता है। महाभारत में वर्णित इसका महत्त्व इस प्रकार है :

ब्रह्मयोनिं समासाद्य शुचिः प्रयतमानसः।
तत्र स्नात्वा नरव्याघ्र ब्रह्मलोकं प्रपद्यते।।
पुनात्या सप्तमं चैव कुलं नास्तत्यत्र संशयः।

(महाभारत, वन पर्व 83/140 141)

अर्थात् शुद्ध, संयमित एवं पवित्र चित्त से ब्रह्मयोनि तीर्थ में स्नान करने वाला व्यक्ति ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है तथा निःसन्देह अपने कुल का उद्धार करता है। वामन पुराण के अनुसार उक्त तीर्थ का निर्माण ब्रह्मा ने सरस्वती के तट पर किया था।

तत्रैव ब्रह्मयोन्यस्ति ब्रह्मणा यत्र निर्मिता।
पृथूदकं समाश्रित्य सरस्वत्यास्तटे स्थितः।।

(वामन पुराण 39/21)

वागन पुराण के अनुसार यहाँ ब्रह्मा के चिन्तन से चारों वर्ण उत्पन्न होकर विभिन्न आश्रमों में स्थित हो गए थे। महाभारत वन पर्व में इस तीर्थ का उल्लेख विश्वामित्र तीर्थ के पश्चात् मिलता है तथा वागन पुराण में इस का वर्णन पृथूदक तीर्थ के बाद किया गया है। इस तीर्थ के उत्तर की ओर सरस्वती तीर्थ तथा दक्षिण में पृथूदक तीर्थ है। इस तीर्थ पर शनिवार को किया गया स्नान गोक्षदायी माना जाता है।

26 पृथूदक तीर्थ, पिहोवा

पृथूदक नामक यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग 28 कि.मी. की दूरी पर पिहोवा में सरस्वती नदी के किनारे स्थित है। महाभारत में इस तीर्थ को कुरुक्षेत्र के तीर्थों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तीर्थ कहा गया है।

पुण्यमाहुः कुरुक्षेत्रं कुरुक्षेत्रात्सरस्वतीम्।
सरस्त्यांश्च तीर्थानि तीर्थेभ्यश्च पृथूदकम्।

(महाभारत, वन पर्व 8/1..25)

इस तीर्थ के महात्म्य का वर्णन महाभारत के अतिरिक्त भागवत पुराण, भविष्य पुराण, वामन पुराण, वायु पुराण आदि में भी मिलता है। इस तीर्थ का नामकरण महाराज पृथु के नाम पर हुआ है जिन्होंने इस स्थान पर अपने पितरों हेतु उदक (जल) द्वारा तर्पण किया था। वामन पुराण के अनुसार भगवान शंकर ने भी प्राचीन काल में पृथूदक में विधिपूर्वक स्नान किया था :

शंकरोऽपि महातेजा विसृज्य गिरिकन्यकां।
पृथूदकं जगामाथ स्नानं चक्रे विधानतः।।

(वामन पुराण)

वामन पुराण की ही एक कथा के अनुसार गंगाद्वार पर रुषंगु का निवास

पृथूदक तीर्थ पर पितरों के निमित्त तर्पण देते हुए राजा पृथु

स्थान था। अपने अन्तकाल को समीप आया देख उसने अपने पुत्रों से स्वयं को पृथूदक ले जाने का आग्रह किया। उसके इस आशय को जान उसके पुत्र उस पृथूदक तीर्थ में ले गए। रुषंगु ने यहां स्नान किया तथा इस तीर्थ के महत्त्व को बताते हुए कहा कि सरस्वती के उत्तरी तट पर स्थित पृथूदक तीर्थ में जो व्यक्ति जप करता हुआ अपने शरीर का त्याग करता है वह निःसन्देह शाश्वत पद का अधिकारी होता है।

सरस्वती नदी के तट पर स्थित इस तीर्थ के साहित्यगत विवरण को इस क्षेत्र से मिलने वाले पुरातात्त्विक अवशेष पुष्ट करते हैं तथा पृथुदक क्षेत्र से मिली विभिन्न ऐतिहासिक कालों की मूर्तियों से भी इस तथ्य की अपरोक्ष पुष्टि होती है।

27 रेणुका तीर्थ, अरणैचा

महर्षि जमदग्नि के आश्रम में रेणुका के समक्ष धनुष पर बाण का संधान करते हुए महर्षि जमदग्नि तथा सामने ब्राह्मण वेशधारी सूर्य देव

यह तीर्थ पिहोवा से 5 कि.मी. तथा कुरुक्षेत्र से लगभग 33 कि.मी. की दूरी पर अरणैचा नामक ग्राम मे स्थित है जिसका सम्बंध महर्षि जमदग्नि की धर्मपत्नी एवं परशुराम की माता रेणुका से है। इस तीर्थ के नाम एवं महत्व सम्बन्धित पर्याप्त विवरण महाभारत एवं पौराणिक साहित्य में मिलते हैं।

महाभारत के अनुसार वेदाध्ययन में सम्पूर्ण कुशलता प्राप्त करने पर महर्षि जमदग्नि ने महाराजा प्रसेनजित के पास जाकर उनकी पुत्री रेणुका से विवाह की इच्छा प्रकट की। राजा प्रसेनजित ने प्रसन्नता सहित रेणुका महर्षि को सौंप दी। रेणुका ने पाँच पुत्रों को रुमण्वान, सुषेण, वसु, विश्वावसु एवं परशुराम को जन्म दिया। एक बार महर्षि जमदग्नि ने क्रोध में आकर अपने सभी पुत्रों को रेणुका का वध करने को कहा लेकिन परशुराम के अतिरिक्त कोई भी ऐसा करने को तैयार नहीं हुआ। ऋषि ने परशुराम की पितृभक्ति से प्रसन्न होकर उसे कोई अभिलषित वर मांगने को कहा। परशुराम ने सहर्ष अपनी माता को पुनर्जीवित करने का वर माँगा जिससे उनकी माता रेणुका पुनर्जीवित हो उठी।

महाभारत के अनुशासन पर्व की कथा के अनुसार महर्षि जमदग्नि के द्वारा बाणों को चलाए जाने पर रेणुका उन्हें उठा-उठा कर लाती थी। एक बार सूर्य की तीव्र धूप से सिर एवं पावों के जलने पर क्षण भर वृक्ष की छाया में विश्राम करने पर रेणुका ये बाण लेकर क्षण मात्र के विलम्ब से पहुँची। तब क्रोधित हुए जमदग्नि ने उससे विलम्ब का कारण पूछा। रेणुका के द्वारा विलम्ब का कारण सूर्य को जानकर महर्षि ने सूर्य को नष्ट करने के लिए अपना धनुष व असंख्य बाण उठाए। उनके इस क्रोध से बचने के लिए सूर्य देव ब्राह्मण का रूप धारण कर

महर्षि के पास पहुँचे। उन्होनें अपनी बुद्धिमतापूर्ण युक्तियों व स्तुतियों से इन्हें प्रसन्न कर उन्हें धूप से रक्षार्थ एक छाता व चरणपादुका प्रदान की।

इसी तीर्थ के महात्म्य के बारे में महाभारत में लिखा है :

ततो गच्छेत् राजेन्द्र रेणुकातीर्थमुत्तमम्।
तीर्थाभिषेकं कुर्वीत पितृदेवार्चने रतः।
सर्वपापविशुद्धात्मा अग्निष्टोमफलं लभेत्।

(महाभारत, वन पर्व 83/159 160)

अर्थात् हे राजेन्द्र! तत्पश्चात् रेणुका नामक उत्तम तीर्थ का सेवन करना चाहिए। जहाँ स्नान कर पितरों एवं देवताओं की अर्चना करने वाला मनुष्य सभी पापों से मुक्त होकर अग्निष्टोम यज्ञ का फल प्राप्त करता है।

वामन पुराण के अनुसार रेणुका तीर्थ में स्नान करने पर मातृ भक्ति से प्राप्त होने वाला फल मिलता है।

28 सोम तीर्थ, गुमथला गढ़ु

सरस्वती के तट पर भगवान शिव की आराधना करते हुए चन्द्र देव

यह तीर्थ पिहवा से 9 कि.मी. तथा कुरुक्षेत्र से लगभग 37 कि.मी. की दूरी पर गुमथला गढ़ु नामक ग्राम में स्थित है। इस तीर्थ का वर्णन महाभारत, वामन पुराण एवं पद्म पुराण में मिलता है। वामन पुराण में इस तीर्थ को सोम देव से सम्बन्धित बताया गया है। दक्ष प्रजापति के श्रापवश एक बार सोमदेव भयंकर राजयक्ष्मा रोग से पीड़ित हो गए थे। तत्पश्चात् देवताओं के आग्रह पर दक्ष प्रजापति के आदेशानुसार सोम ने इस स्थान पर उग्र एवं कठोर तप द्वारा स्वयं को उस भीषण व्याधि से मुक्त कर लिया था :

ततो गच्छेत् विप्रेन्द्राः सोमतीर्थमनुत्तमम्।
यत्र सोमस्तपस्तप्त्वा व्याधिमुक्तः अभवत् पुरा।
तत्र सोमेश्वरं दृष्ट्वा स्नात्वा तीर्थवरे शुभे।
राजसूयस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोतिमानव :।
व्याधिभिश्च विनिर्मुक्तः सर्वदोषविवर्जितम्।
सोमलोकमवाप्नोति तत्रैव रमते चिरम्।

(वामन पुराण 34/33–35)

अर्थात् जिस स्थान पर सोम देव तप करके व्याधि मुक्त हुए ऐसे उस श्रेष्ठ सोमतीर्थ में स्नान कर एवं वहाँ स्थित सोमेश्वर का दर्शन करने पर मनुष्य राजसूय यज्ञ का फल प्राप्त करता है तथा समस्त रोग, शोक व दोष से मुक्त हो सोमलोक को प्राप्त कर चिरकाल तक वहाँ आनन्दपूर्वक निवास करता है।

वामन पुराण में अन्यत्र ऐसा भी उल्लेख है कि यहाँ पर सोम ने अत्यन्त उग्र तपस्या करके द्विज राज्य को प्राप्त किया था तथा इस तीर्थ के महत्व के विषय में लिखा है कि इस तीर्थ में स्नान करके देवों और पितरों की पूजा करने वाला मनुष्य कार्तिक मास के चन्द्रमा के समान निर्मल होकर स्वर्ग को प्राप्त करता है।

तीर्थ स्थित मन्दिर के गर्भगृह में शिवलिंग प्रतिष्ठित है। गर्भगृह की पश्चिमी भित्ति पर गन्धमादन पर्वत को उठाते हुए हनुमान का चित्र उत्कीर्ण है। शिवलिंग के पास ही नन्दी व गणेश की सांगमरमर की आधुनिक प्रतिमाएं हैं। तीर्थ परिसर से ही प्रतिहार कालीन (9–10वी शती ई.) मन्दिर के भग्न स्तम्भ तथा इसी काल की मूर्तियों के मिलने से इस तीर्थ की प्राचीनता स्वयं सिद्ध हो जाती है।

तीर्थ से प्राप्त मध्यकालीन मन्दिर के भग्न वास्तुखण्ड

29 ब्रह्म तीर्थ, थाणा

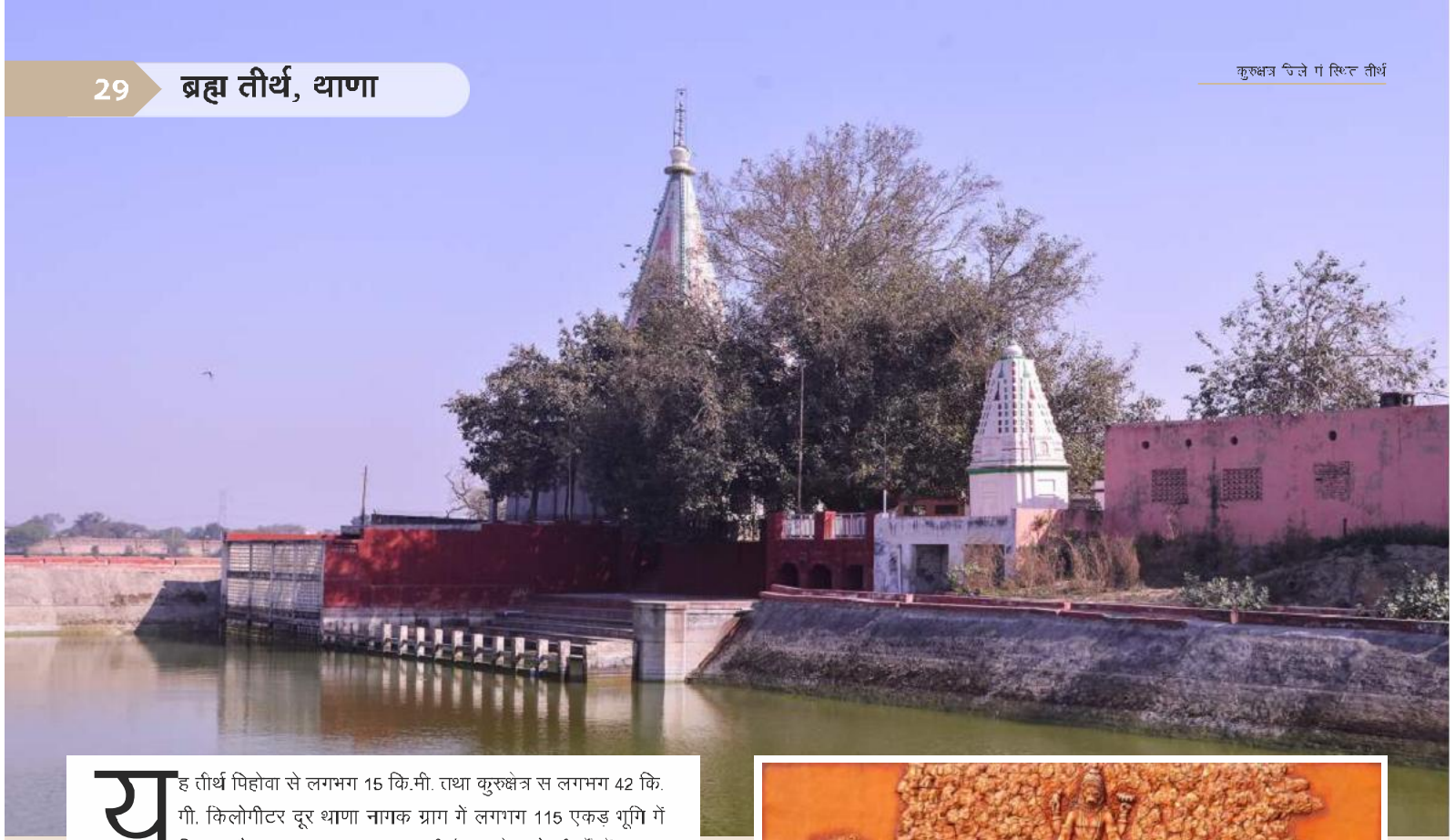

यह तीर्थ पिहोवा से लगभग 15 कि.मी. तथा कुरुक्षेत्र से लगभग 42 कि.मी. किलोमीटर दूर थाणा नामक ग्राम में लगभग 115 एकड़ भूमि में विस्तृत है। ब्रह्मस्थान नामक यह तीर्थ कुरुक्षेत्र के तीर्थों में अपना प्रमुख स्थान रखता है। इस तीर्थ का वर्णन महाभारत के वन पर्व में किया गया है। ब्रह्मस्थान नामक इस तीर्थ का स्पष्ट नामोल्लेख एवं महत्त्व वन पर्व के 84 वें अध्याय में वर्णित है :

ततोगच्छेत्राजेन्द्र ब्रह्मस्थानमनुत्तमम्।
तत्राभिगम्यराजेन्द्र ब्रह्माणं पुरुषर्षभ।
राजसूयस्याश्वमेधाभ्यां फलंप्राप्नोति मानवः।

(महाभारत, वन पर्व 84/103–104)

अर्थात्, हे राजेन्द्र ! तत्पश्चात् मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ तीर्थ ब्रह्मस्थान को जाना चाहिए जो कि ब्रह्मा से सम्बन्धित है। वहाँ जाने पर मनुष्य राजसूय एवं अश्वमेध यज्ञों का फल प्राप्त करता है।इसी तीर्थ के महत्त्व को पुष्ट करता वन पर्व के 85 वें अध्याय का निम्न श्लोक भी द्रष्टव्य है :

ब्रह्मस्थानं समासाद्यत्रिरात्रोपोषितो नरः।
गोसहस्र फलं विन्द्यात् स्वर्गलोकं च गच्छति।

(महाभारत, वन पर्व 85/35)

अर्थात् ब्रह्मस्थान नामक तीर्थ में तीन रात्रि निवास करने वाला मनुष्य सहस्र

विशाल बल्लीवट वृक्ष के बीच ध्यानरत भगवान नृसिंह एवं वृक्ष की सतह पर महर्षि मारकण्डेय द्वारा महर्षि भृगु से महामृत्युंजय मंत्र की प्राप्ति

गऊओं के दान का फल प्राप्त करता है तथा स्वर्ग को जाता है।

इसी तीर्थ के पूर्वी तट पर बल्लीवट नामक महान वृक्ष का उल्लेख नृसिंह पुराण में मिलता है। नृसिंह पुराण में वर्णन है कि बल्लीवट में भगवान की 'महायोग' नामक मूर्ति का निवास है। इसी वृक्ष के नीचे महर्षि मार्कण्डेय ने महर्षि भृगु से महामृत्युंजय मंत्र की प्राप्ति की थी जिसका वर्णन नृसिंह पुराण के सातवें अध्याय में है।

इस तीर्थ से कुषाण एवं गुप्तकालीन ईंटें तथा मृदपात्र मिले हैं जिससे इस तीर्थ की प्राचीनता स्वयं सिद्ध हो जाती है।

30 सप्तसारस्वत तीर्थ, माँगना

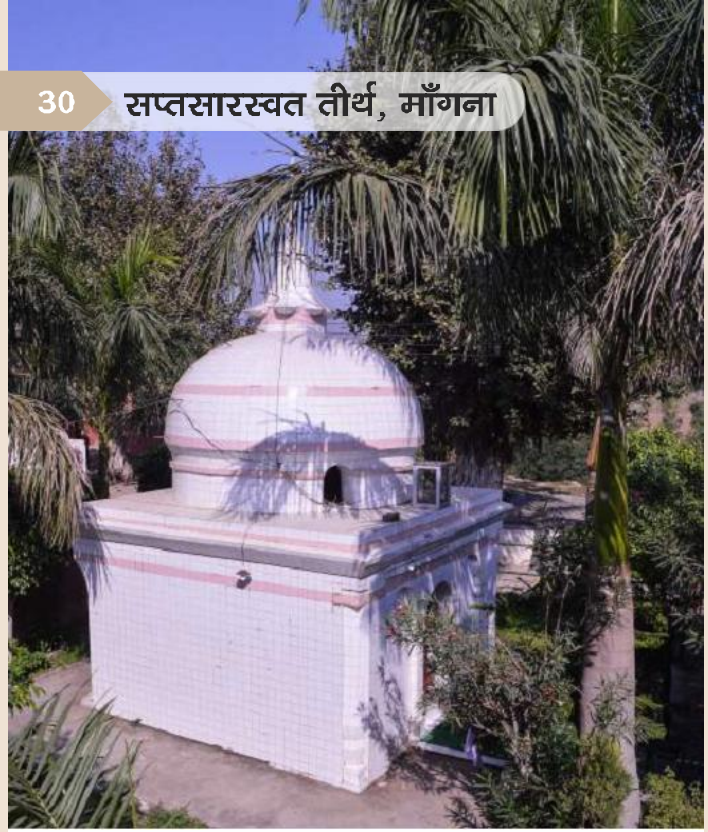

सप्तसारस्वत नामक यह तीर्थ पिहोवा से लगभग 12 कि.मी. तथा कुरुक्षेत्र से लगभग 42 कि.मी. दूरी पर माँगना नामक ग्राम की उत्तरी दिशा में सरस्वती नदी के दक्षिण–पश्चिमी घाट पर स्थित है ।

राप्तसारस्वत से अभिप्राय सात सरस्वतियों के संगम से है। चूंकि इस स्थान पर सरस्वती की सात धाराएं एक होकर बहती थीं। इसी से यह तीर्थ सप्तसारस्वत के नाम से विख्यात हुआ। सात सरस्वतियों का संगम होने से ही इस तीर्थ को वामन पुराण में 'त्रैलोक्य में दुर्लभ' कहा गया है। वामन पुराण में इस तीर्थ के गहात्म्य एवं सरस्वती के सातों नामों का स्पष्ट उल्लेख है :

राप्तसारस्वतं तीर्थं त्रैलोकस्यापि दुर्लभम्।
यत्र सप्त सरस्वत्य एकीभूता वहन्ति च।
सुप्रभा कांचनाक्षी च विशाला मानसह्रदा।
सरस्वत्योघनागा च सुवेणुर्विमलोदका।

(वामन पुराण 37/17–18)

सात सरस्वतियाँ अर्थात् तीनों लोकों में दुर्लभ सप्तसारस्वत नामक तीर्थ में सुप्रभा, कांचनाक्षी, विशाला, मानसह्रदा, सरस्वती ओघनामा, विमलोदका एवं सुवेणु एक होकर प्रवाहित होती हैं। महाभारत में सात सरस्वतियों का उल्लेख निम्न श्लोक में है:

राजन्सप्तसरस्वत्योः याभिर्व्याप्तं इदं जगत्।
आहुताबलवद्गिर्हि तत्र तत्र सरस्वती।।
सुप्रभा कांचनाक्षी च विशाला च मनोरमा।
सरस्वती चोघवती सुरेणुर्विमलोदका।।

(महाभारत–शल्यपर्व, 38.4)

नृत्यरत मंकणक ऋषि तथा आस–पास खड़े देवतागण

इसी तीर्थ से सम्बन्धित एक अन्य कथा के अनुसार एक बार महर्षि मंकणक के कुशाग्र से क्षत होने पर उनके हाथ से वानस्पतिक तरल पदार्थ बहने लगा। उसे देख हर्षावेश में आकर ऋषि नृत्यमग्न हो गए। उनके नृत्य से आकर्षित हुए समस्त चराचर पदार्थ भी नृत्य करने लगे । ऐसी अवस्था को देख चिन्तित हुए देवताओं ने महादेव से प्रार्थना की कि वे कोई ऐसा उपाय करें जिससे ऋषि का नृत्य बन्द हो जाए। तब देवताओं की प्रार्थना को स्वीकार कर महादेव मंकणक ऋषि के पास आए तथा उनसे नाचने का कारण पूछा। तब हर्षाविष्ट होकर नृत्य करते ऋषि ने अपने नृत्य का कारण शाकरस का बहना बताया। इस पर महादेव ने अपनी अंगुली के अग्रभाग से अपने अंगूठे पर एक घाव किया जिससे वहाँ से हिमसदृश श्वेत भस्म निकलने लगा। इसे देख लज्जित हुए ऋषि महादेव के पैरों पर गिर कर शिवस्तुति करने लगे। इस पर प्रसन्न हुए शिव ने ऋषि से कहा कि वह स्वयं इस आश्रम में निवास करेंगे तथा इस तीर्थ में स्नान करके एवं मेरी अर्चना करने वाले प्राणियों के लिए इस संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं होगा तथा वह निःसन्देह सारस्वत लोक को जाएंगे।

तीर्थ परिसर में एक कुआँ है जिसे गंगाकूप कहा जाता है। जनश्रुति के अनुसार बैसाखी के पवित्र दिन इस कुँए में गंगा प्रकट होती है और जिससे इसके पानी का रंग दूधिया हो जाता है। इस दिन कुँए के जल से किया गया स्नान गंगा स्नान के बराबर माना जाता है। तीर्थ स्थित मन्दिर में एक विशाल शिवलिंग प्रतिष्ठित है।

31 गालव तीर्थ, गुलडैहरा

गालव नामक यह तीर्थ पिहोवा से 11 कि.मी. तथा कुरुक्षेत्र से लगभग 41 कि.मी. गुलडैहरा नामक ग्राम में स्थित है जिसका सम्बन्ध महर्षि विश्वामित्र के पुत्र गहर्षि गालव से रहा है। गहर्षि गालव से सम्बन्धित होने के कारण ही तीर्थ का नाम भी गालव पड़ गया तथा ग्राम्य भाषा में लोग इसे गालिब तीर्थ के नाम से जानते हैं।

महाभारत में वर्णित कथा के अनुसार महर्षि गालव ने अपने पिता महर्षि विश्वामित्र से ही शिक्षा ग्रहण की। इनकी गुरु भक्ति से प्रसन्न होकर इनके गुरु विश्वामित्र ने विद्या समाप्त होने पर इनसे गुरु दक्षिणा लेना स्वीकार नहीं किया लेकिन गालव ऋषि के बार बार आग्रह करने पर विश्वामित्र ने क्रोधित होकर इनसे 800 ऐसे अश्व लाने को कहा जिनका एक कान काला हो। गालव ऋषि इस अप्रत्याशित दक्षिणा को सुनकर बड़े दुखी हुए। तत्पचात् गरुड़ के परामर्श पर ये राजा ययाति के पास गए। महाराज ययाति ने अपनी पुत्री माध्वी को ऋषि की सहायतार्थ उनके साथ भेज दिया। माध्वी के सहयोग से भी ये तीन नरेशों के पास जाकर 600 अश्व ही जुटा पाए। संकट के क्षण में पक्षीराज गरुड़ पुनः उनके बचाव के लिए आए तथा उन्होंने गालव को परामर्श दिया कि वह शेष 200 अश्वों

ऋषि विश्वामित्र को राजकुमारी माधवी तथा घोड़ों की दक्षिणा देते हुए गालव ऋषि

के स्थान पर माध्वी का ऋषि विश्वामित्र को सौंप दें ताकि उनकी गुरु दक्षिणा पूर्ण हो सके। गालव से उचित गुरु दक्षिणा पाकर प्रसन्न हुए विश्वामित्र ने उनको आशीर्वाद दिया।

यही गालव ऋषि अपनी उपस्थिति से देवराज इन्द्र तथा धर्मराज युधिष्ठिर की सभा की भी शोभा बढ़ाते थे, ऐसा उल्लेख महाभारत के सभापर्व में है। इन्हीं गालव ऋषि ने इस स्थान पर दीर्घ समय तक घोर तपस्या की थी इसी कारण यह तीर्थ ऋषि के नाम पर गालव तीर्थ के नाम से विख्यात हुआ।

32 शुक्र तीर्थ, सतौड़ा

मृत दैत्यों के पुनर्जीवित करने हेतु भगवान शिव से मृत संजीवनी विद्या प्राप्त करते हुए शुक्राचार्य

यह तीर्थ पिहोवा से लगभग 6 कि.मी. तथा कुरुक्षेत्र से लगभग 34 कि.मी. की दूरी पर सतौड़ा नामक ग्राम में सरस्वती नदी के किनारे पर स्थित है।

दैत्यों के गुरु महर्षि शुक्राचार्य से सम्बन्धित होने के कारण ही इस तीर्थ का नाम शुक्र तीर्थ पड़ा। महर्षि शुक्राचार्य भृगु ऋषि के पुत्र थे। इनका एक अन्य नाम उशना भी था। महर्षि शुक्र ही ग्रह बन कर तीनों लोकों के जीवन की रक्षा के लिए वृष्टि, अनावृष्टि, भय एवं अभय उत्पन्न करते हैं। इन्होंने मृतसंजीवनी विद्या के बल से मरे हुए दानवों को पुनर्जीवित किया था। इन्हीं की पुत्री देवयानी का विवाह राजा ययाति से हुआ था। कहा जाता है कि इन्हीं महर्षि शुक्राचार्य ने इस तीर्थ पर घोर तपस्या की थी।

ब्रह्मपुराण में इस तीर्थ का महत्त्व इस प्रकार वर्णित है :

शुक्रतीर्थमिति ख्यातं सर्वसिद्धिकरं नृणाम्।
सर्वपापप्रशमनं सर्वव्याधिविनाशनम्।

(ब्रह्मपुराण 95/1)

अर्थात् मनुष्यों के सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाला विख्यात शुक्र नामक तीर्थ है जो मनुष्य के द्वारा किए गए सभी पापों को दूर करता है एवं सभी रोगों को नष्ट करता है।

इस तीर्थ की पूर्व दिशा में सरस्वती नदी बहती है जिसके तट पर लाखौरी ईंटों से निर्मित एक प्राचीन घाट है। तीर्थ स्थित मन्दिर का प्रवेश द्वार मुगलकालीन शैली में निर्मित एक विशाल मेहराब से अलंकृत है। यहाँ स्थित शिव मन्दिर में एक मण्डप और एक गर्भगृह है। मन्दी मण्डप शिल्पचित्रों से सुशोभित है जिसकी भित्तियों में ऋद्धि एवं सिद्धि के मध्य में गणेश, भैरव, गोपियों के बीच कृष्ण एवं भगवान विष्णु के नाभिकमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति जैसे प्रसंगों को चित्रित किया गया है।

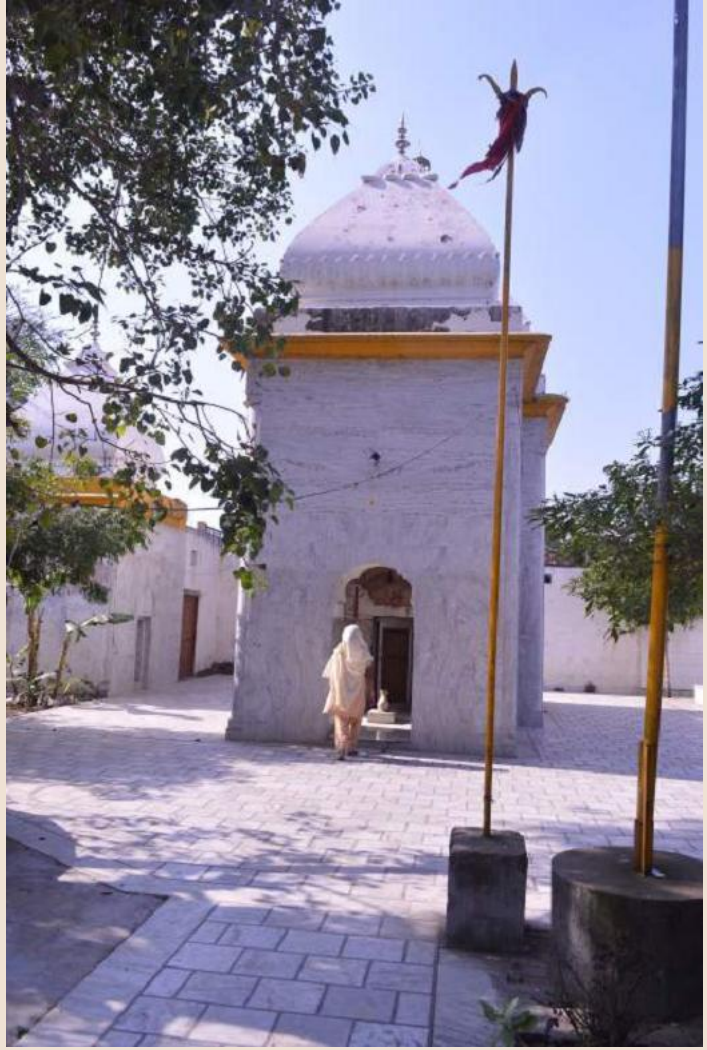

33 ग्यारह रुद्री तीर्थ, कैथल

ग्यारह रुद्री नामक यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग 51 कि.मी. की दूरी पर कैथल नगर में स्थित है।

एकादश रुद्रों से सम्बन्धित पर्याप्त सामग्री महाभारत तथा विभिन्न पुराणों में उपलब्ध होती है। इन एकादश रुद्रों के नाम विभिन्न पुराणों में भिन्न–भिन्न मिलते हैं।

महाभारत में आदि पर्व के अन्तर्गत 66 वें अध्याय में ऋषि वैशम्पायन ग्यारह रुद्रों की उत्पत्ति भगवान ब्रह्मा से बताते हैं। ब्रह्मा जी के छः मानस पुत्र छः महान् ऋषि थे। स्थाणु भी ब्रह्मा के अन्य मानस पुत्र थे जिनके ग्यारह महान शक्तिशाली पुत्र थे। उनके नाम क्रमशः मृगव्याध, निऋति, अजैकपाद, दहन, ईश्वर, कपाली, स्थाणु, भग, सर्प, अहिर्बुध एवं पिनाकी थे। ये ग्यारह ही एकादश रुद्रों के नाम से विख्यात हुए :

एकादशसुताः स्थाणोः ख्याताः परम तेजसः।
मृगव्याधश्चसर्पश्च निऋतिशचमहायशः।
अजैकपादहिर्बुध्न्यः पिनाकी च परंतपः।
दहनोअथेश्वरश्चैव कपाली च महाद्युति।
स्थाणुर्भगश्चभगवान् रुद्राएकादशस्मृताः।

(महाभारत, आदि पर्व 66: 1–3)

रुद्र मात्र पौराणिक काल में ही उपास्य नहीं थे अपितु वैदिक काल में साधारण देवता के रूप में पूजनीय थे क्योंकि वेदों में इनकी स्तुति में सूक्त मिलते हैं। पौराणिक काल में रुद्र के शिवरूप का महत्व अत्यधिक बढ़ गया था। विष्णु पुराण में वर्णन है कि ग्यारह रुद्रों को ब्रह्मा ने हृदय के ग्यारह स्थानों पर नियुक्त किया था। कैथल स्थित इस मन्दिर का नाम शिव के ग्यारह रुद्रों के स्थापित होने से ही ग्यारह रुद्री शिव मन्दिर पड़ा है। वस्तुतः ग्यारह के ग्यारह रुद्र शिव के ही अंशावतार हैं। जनश्रुतियों के अनुसार महाभारत युद्ध के अन्त में अश्वत्थामा ने रात्रि को पाण्डव शिविर पर आक्रमण करने से पूर्व इसी स्थान पर भगवान शिव की पूजा–अर्चना की थी।

शिवलिंग की पूजा करते हुए शस्त्रधारी अश्वत्थामा।

यहां स्थित मन्दिर के गर्भगृह में एकादश रुद्रों के 11 लिंग हैं। मन्दिर की आन्तरिक भित्तियों में जीव–जन्तुओं व प्राकृतिक दृश्यों के चित्रों सहित हनुमान, दुर्गा, विष्णु, वराह अवतार आदि चित्रों का भी चित्रण है।

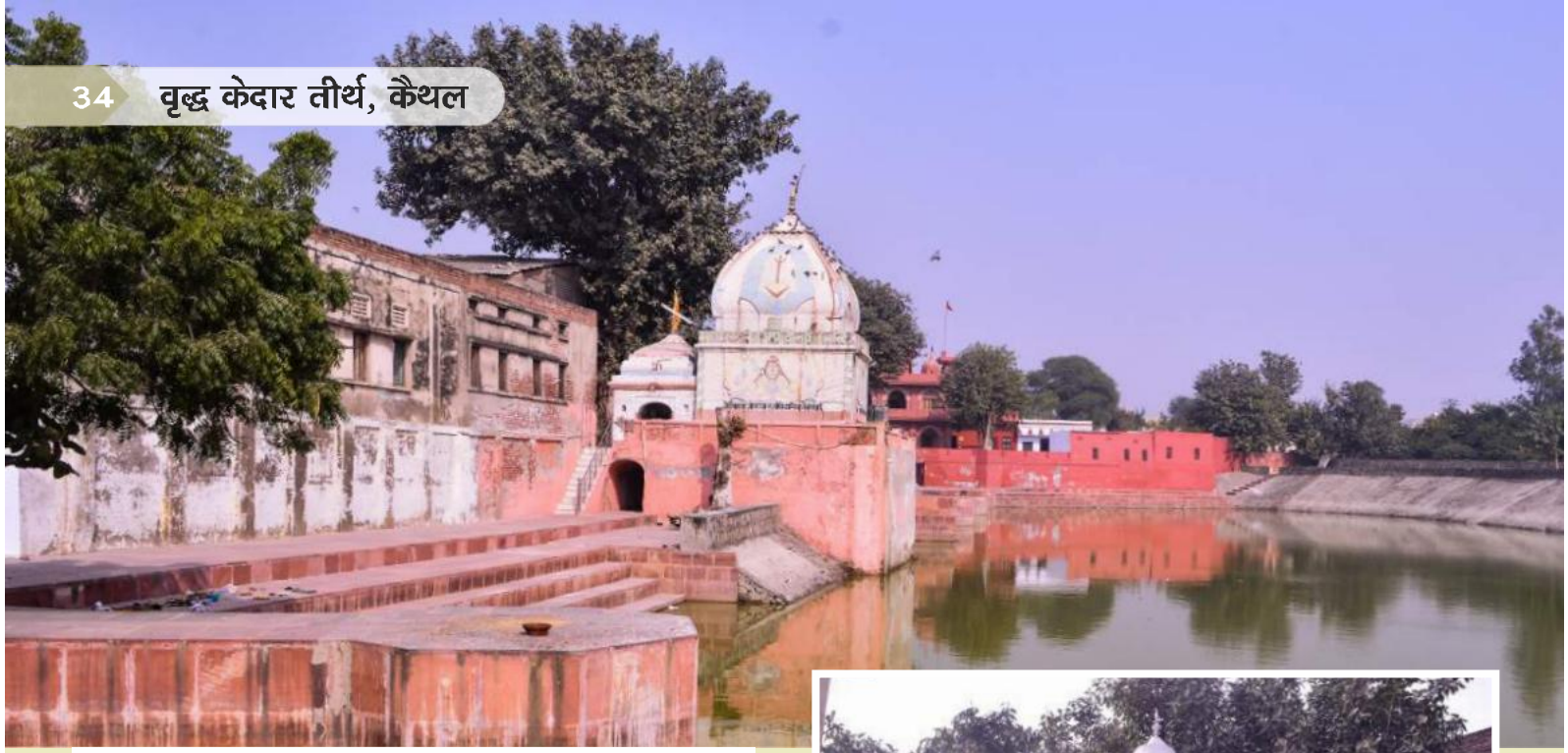

34 वृद्ध केदार तीर्थ, कैथल

वृद्ध केदार नामक यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग 50 कि.मी. की दूरी पर कैथल नगर में स्थित है।

महाभारत एवं वामन पुराण में वर्णित कुरुक्षेत्र का यह तीर्थ अति प्राचीन है। वामन पुराण में इस तीर्थ को कपिस्थल तथा महाभारत में कपिष्ठल नाम से वर्णित किया गया है। सम्भवतः कपिष्ठल का ही अपभ्रंश कालान्तर में कैथल नाम से विख्यात हो गया। प्राचीनकाल में यह तीर्थ कपिष्ठल नाम से अपना महत्त्व बनाए हुए था लेकिन वर्तमान में इसे यहाँ स्थित वृद्ध केदार तीर्थ के नाम से जाना जाता है।

वामन पुराण में ऐसा स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि कपिस्थल नामक तीर्थ में वृद्धकेदार नामक देव स्वयं विद्यमान हैं :

कपिस्थलेति विख्यातं सर्वपातक नाशनम्।
यस्मिन् स्थितः स्वयं देवो वृद्धकेदार संज्ञितः।

(वामन पुराण, 36/14)

ऐसा प्रतीत होता है कि पौराणिक काल में इस तीर्थ का महत्त्व काफी अधिक रहा होगा। वामन पुराण में इस तीर्थ का महत्त्व इस प्रकार वर्णित है

यस्तत्र तर्पणं कृत्वा पिबते चुलकत्रयम्।
दिण्डिदेवं नमस्कृत्य केदारस्य फलं लभेत्।
यस्तत्र कुरुते श्राद्धं शिवमुद्दिश्य मानवः।
चैत्र शुक्लचतुर्दश्यां प्राप्नोति परमं पदम्।

(वामन पुराण 36/16–17)

अर्थात् जो व्यक्ति उस स्थान पर तर्पण करके दिण्डि भगवान को प्रणाम कर तीन चुल्लु जल पीता है वह केदार तीर्थ एवं वाराणसी के आठ शिव तीर्थों में जाने फल प्राप्त करता है तथा जो व्यक्ति भगवान शिव में श्रद्धा रखते हुए चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को श्राद्ध करता है वह परमपद को प्राप्त करता है।

35 नवदुर्गा तीर्थ, देवीगढ़

कैथल जिले में स्थित तीर्थ

नवदुर्गा नामक यह तीर्थ कैथल नगर से लगभग 3 कि.मी. की दूरी पर देवीगढ़ नामक ग्राम में स्थित है। वामन पुराण में एक दुर्गा तीर्थ का स्पष्ट वर्णन है जहाँ स्नान करने एवं पितरों की पूजा करने वाला व्यक्ति दुर्गति को प्राप्त नहीं होता। लोक प्रचलित किंवदन्तियों के अनुसार देवीगढ़ नामक यह स्थान प्रत्येक वर्ष बाढ़ के प्रकोप के कारण सामान्य ढंग से बसता नहीं था। किसी सज्जन महात्मा को देवी ने स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि यदि इस स्थान पर दुर्गा माता की प्रतिमा स्थापित की जाए तो यह स्थान भली भाँति बस जाएगा तथा सभी का कल्याण होगा। तब देवी भगवती के आदेश को मानकर यहाँ नवदुर्गाओं के सुन्दर मन्दिर का निर्माण किया गया।

यहाँ चैत्र एवं आश्विन मास के नवरात्रों के शुभ अवसर पर प्रत्येक वर्ष शुक्ल पक्ष की अष्टमी को भारी मेले का आयोजन होता है।

यहाँ पर एक उत्तर मध्यकालीन मन्दिर है जिसके आंतरिक भाग में पत्रपुष्पों के अलंकरण के साथ रासलीला का चित्रण है। गर्भगृह में काली माता की मूर्ति है जिसके ऊपरी बायें हाथ में बाली, निचले हाथ में नरमुण्ड, ऊपरी बायें हाथ में खप्पर व निचल हाथ में त्रिशूल है। काली के पावों में भैरव है। मन्दिर के पूर्व में लाखौरी ईंटों से निर्मित एक सरोवर है।

36 देवी तीर्थ, कलशी

देवी तीर्थ नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 2 कि.मी. दूर कैथल–करनाल मार्ग पर गांव देवीगढ़ की सीमा पर स्थित है जो किंदान जप वाले कुण्ड जोहड़ के नाम से जाना जाता है। कलशी स्थित इस तीर्थ का नाग एवं गहत्त्व गहाभारत एवं वागन पुराण में स्पष्ट उपलब्ध होता है। महाभारत में इस तीर्थ का नाम एवं महत्व इस प्रकार वर्णित है:

कलश्यांवार्युपस्पृश्य श्रद्धान्ते जितेन्द्रिय :।
अग्निष्टोगस्य यज्ञस्यफलं प्राप्नोति गानवः।

(महाभारत, वन पर्व 83/80)

अर्थात् श्रद्धावान एवं जितेन्द्रिय मनुष्य कलशी तीर्थ का सेवन करके अग्निष्टोम यज्ञ का फल प्राप्त करता है।

वामन पुराण में यह तीर्थ देवी तीर्थ के नाम से उल्लेखित है। वामन पुराण में इस तीर्थ का महत्त्व निम्न प्रकार से वर्णित है:

कलस्यां च नरः स्नात्वा दृष्ट्वा दुर्गां तटे स्थिताम्।

(ब्रह्म पुराण 36/18 19)

अर्थात् तत्पश्चात् कलशी नामक तीर्थ में जाना चाहिए जहाँ भद्रा, निद्रा माया, सनातनी एवं कात्यायनी रूपा दुर्गा देवी स्वयं अवस्थित हैं। कलशी तीर्थ में स्नान कर उसके किनारे पर स्थित दुर्गादेवी का दर्शन करने वाला मनुष्य निःसन्देह दुस्तर संसार दुर्ग को पार कर जाता है। इस तीर्थ में भाद्रपद मास में शुक्ल एवं कृष्ण पक्ष की एकादशी को मेला लगता है।

37 सरक तीर्थ, शेरगढ़

सरक नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 4 कि.मी. दूर कैथल हिसार मार्ग से लगभग 1 किलोमीटर पूर्व में शेरगढ़ गांव में स्थित है। शेरगढ़ में स्थित इस तीर्थ का महाभारत एवं वामन पुराण दोनों में ही वर्णन उपलब्ध होता है। महाभारत के अनुसार इस तीर्थ में तीन करोड़ तीर्थ विद्यमान हैं। महाभारत में इस तीर्थ का महत्त्व इस प्रकार वर्णित है :

ततो गच्छेत् राजेन्द्र सारकं लोक विश्रुतम्।
कृष्णपक्षे चतुर्दश्यामिभगम्य वृषध्वजम्।
लभेत् सर्वकामान् हि स्वर्गलोकं च गच्छति।
तिस्रः कोट्यस्तु तीर्थानां सरके कुरुनन्दन।

(महाभारत, वन पर्व, 75–76)

अर्थात् हे राजेन्द्र तत्पश्चात् लोक प्रसिद्ध सरक नामक तीर्थ में जाना चाहिए जहां कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को वृषध्वज (भगवान शंकर) का दर्शन करके व्यक्ति की सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं एवं वह स्वर्गलोक को जाता है। वामन पुराण में भी इस तीर्थ सम्बन्धी वर्णन महाभारत में दिए गए वर्णन से बहुत अधिक साम्य रखता है। अन्तर मात्र इतना ही है कि जहां महाभारत में इस तीर्थ को लोकविश्रुत कहा गया है वहीं वामन पुराण में इसे त्रिलोक में दुर्लभ बताया गया है :

ततो गच्छेत् सरकं त्रैलोकस्यापि दुर्लभम्।
कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां दृष्ट्वा देवं महेश्वरम्।
लभते सर्वकामांश्च शिवलोकं स गच्छति।
तिस्रः कोट्यस्तु तीर्थानां सरके द्विजसत्तमाः।

(वामन पुराण 36/20–21)

महाभारत तथा वामन पुराण दोनों में ही यह वर्णन भी है कि यहाँ सर के मध्य कूप में रुद्रकोटि स्थित है। वामन पुराण में वर्णित है कि उस सर में स्नान कर रुद्रकोटि का स्मरण करने वाले व्यक्ति के द्वारा निःसन्देह रुद्रकोटि पूजित हो जाते हैं तथा रुद्रों के प्रसाद से वह समस्त दोषों से छूट कर इन्द्रिय सम्बन्धी ज्ञान से परिपूर्ण होकर परमपद को प्राप्त करता है।

38 अन्यजन्म तीर्थ, ड्योढखेड़ी

अन्यजन्म नामक यह तीर्थ कैथल से 7 कि.मी. दूर दक्षिण में ड्योढखेड़ी नामक ग्राम में स्थित है।

ड्योढखेड़ी में स्थित इस तीर्थ का वर्णन महाभारत एवं वामन पुराण में मिलता है। दोनों में इस तीर्थ को सरक के पूर्व में बताया गया है लेकिन जहाँ महाभारत में इसे अम्बाजन्म कहा गया है वहीं वामन पुराण में इसे अन्यजन्म कहा गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि महाभारत में वर्णित अंबाजन्म एवं वामन पुराण में वर्णित अन्यजन्म दोनों एक ही तीर्थ हैं।

महाभारत में इस तीर्थ को देवर्षि नारद से सम्बन्धित बताया गया है :

सरकस्य तु पूर्वेण नारदस्य महात्मनः।
तीर्थं कुरुकुल श्रेष्ठ अंबाजन्मेति विश्रुतम्।
तत्र तीर्थे नरः स्नात्वा प्राणानुत्सृज्य भारत।
नारदेनाभ्यनुज्ञातो लोकान्प्राप्नोत्यनुत्तमान्।

(महाभारत, वन पर्व 83/81–82)

अर्थात् हे कुरुकुलश्रेष्ठ ! सरक के पूर्व में महर्षि नारद का बहुविख्यात अंबाजन्म नाम का तीर्थ है। उस तीर्थ में स्नान करने एवं प्राणों को त्याग करने वाला मनुष्य नारद जी की आज्ञा से उत्तम लोकों को प्राप्त करता है।

वामन पुराण में इस तीर्थ से सम्बंधित कथा इस प्रकार है :

महापराक्रमी दानव हिरण्यकश्यप का वध करने के बाद नृसिंह रूपधारी भगवान विष्णु पशुयोनि में स्थित सिंहों से प्रेम करने लगे। तत्पश्चात् गन्धर्वों के

नृसिंह एवं शरभ के मध्य युद्ध देखते नारद मुनि

साथ सभी देवताओं ने शिव की आराधना कर विष्णु से पुनः स्वदेह को धारण करने की प्रार्थना की। इस पर भगवान शिव ने शरभ का रूप धारण करके हजारों दिव्य वर्षों तक नृसिंह के साथ युद्ध किया। दोनों देवता युद्ध करते हुए इस तीर्थ के सरोवर में गिर पड़े। उस सरोवर के किनारे अश्वत्थ वृक्ष के नीचे देवर्षि नारद ध्यानावस्था में थे। जब देवर्षि नारद ने उन दोनों को देखा तो विष्णु चतुर्भुज रूप में तथा शिव लिंग के रूप में परिवर्तित हो गए। उन दोनों को देखकर नारद ने उनकी वन्दना की। नारद ने कहा कि आज मैं दोनों श्रेष्ठ देवों के दर्शन कर धन्य हुआ। आप दोनों देवश्रेष्ठों के द्वारा पवित्र किया गया मेरा यह आश्रम पवित्र और पुण्यमय हो गया। आज से तीनों लोकों में यह आश्रम अन्यजन्म के नाम से प्रसिद्ध हो जाएगा। जो व्यक्ति यहां आकर इस तीर्थ में स्नान करके अपने पितरों का तर्पण करेगा श्रद्धा से सम्पन्न उस पुरुष को यहां इन्द्रिय सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त हो जाएगा।

इस तीर्थ पर चैत्र एवं आश्विन मास की अष्टमी को मेला लगता है।

39 कुकृत्यनाशन तीर्थ, काकौत

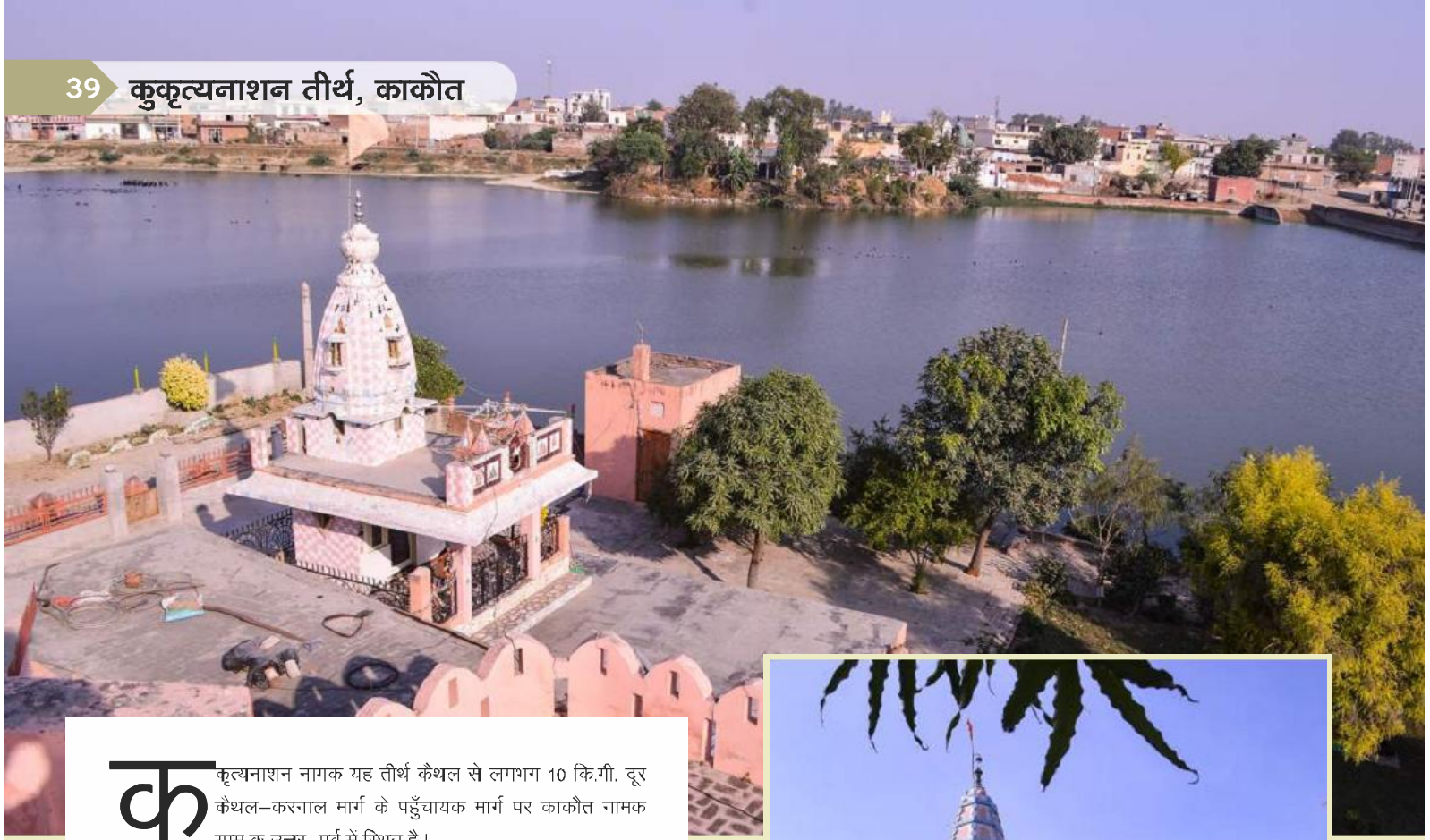

कुकृत्यनाशन नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 10 कि.मी. दूर कैथल–करनाल मार्ग के पहुँचायक मार्ग पर काकौत नामक ग्राम क उत्तर पूर्व में स्थित है।

इस तीर्थ के नाम से ही इसका अर्थ व महत्व स्पष्ट हो जाता है कि कुकृत्य अर्थात् बुरे एवं पाप कर्मों का विनाश करने वाला जो तीर्थ है वही कुकृत्यनाशन तीर्थ के नाम से विख्यात हुआ।

जनसाधारण में प्रचलित किंवदन्तियाँ इस तीर्थ का सम्बन्ध महाभारत काल से जाड़ती हैं जिसका सम्बंध पाण्डवां की माता कुन्ती से बताया जाता है। इस तीर्थ का कुछ ऐसा प्रभाव रहा है कि यहाँ अनेक ऋषि–मुनियों ने तपस्या करके इसे और अधिक पवित्र बनाया। सम्भवतः उन सब के तपोबल के कारण ही यह तीर्थ प्राणियों द्वारा किए जाने वाले दुष्कर्मों का विनाश करने में समर्थ हो सका। जनसाधारण में प्रचलित जनश्रुति के अनुसार तो यहाँ अनेक जीव भी तापस्या रत रहते हैं जिससे इस तीर्थ का प्रभाव और अधिक बढ़ जाता है।

इस तीर्थ में चैत्र मास की सप्तमी तथा आश्विन माह की अष्टमी को विशाल मेला लगता है। प्रचलित विश्वास के अनुसार इस दिन इस तीर्थ का दर्शन करने से श्रद्धालुओं की सम्पूर्ण मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

40 वामन तीर्थ, सौंगल

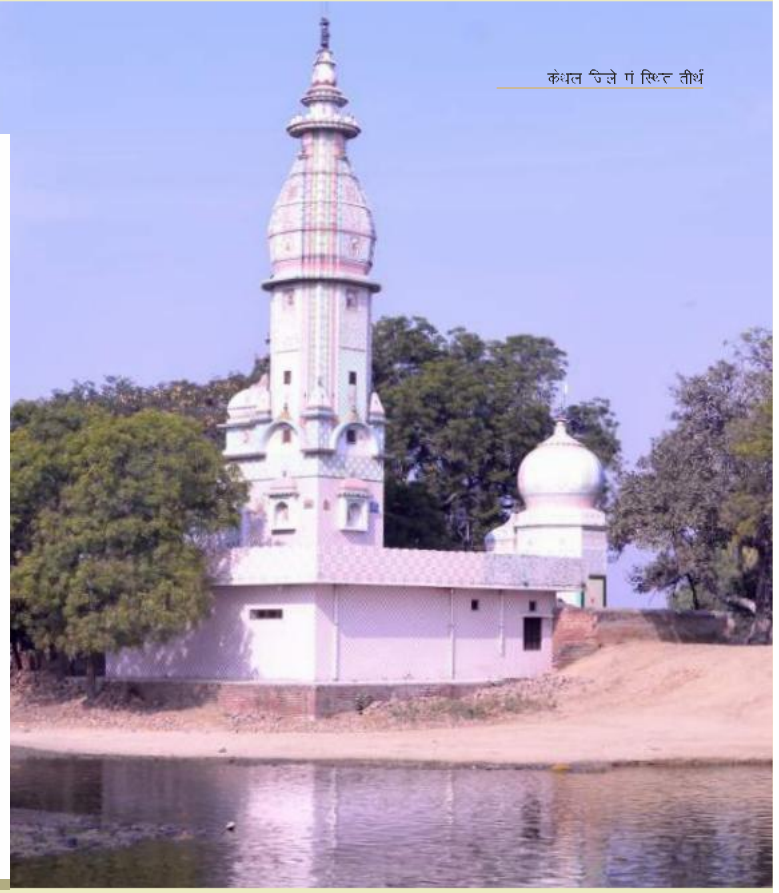
केथल जिले में स्थित तीर्थ

वागन नागक यह तीर्थ केथल से लगभग 18 कि.मी. दूर सौंगल गाँव के दक्षिण–पश्चिम में स्थित है। सौंगल स्थित इस तीर्थ के नाम एवं महत्त्व का महाभारत एवं वामन पुराण दोनों में स्पष्ट उल्लेख मिलता है। महाभारत में इस तीर्थ का वर्णन इस प्रकार मिलता है :

ततोवामनकं गच्छेत् त्रिषुलोकेषु विश्रुतम्।
तत्रविष्णुपदे रनात्वा अर्चयित्वा च वामनं।
सर्वपाप विशुद्धात्मा विष्णुलोकमाप्नुयात्।

(महाभारत, वन पर्व 83/103–104)

अर्थात् तत्पश्चात् तीनों लोकों में विख्यात वामन नामक तीर्थ में जाना चाहिए। वहाँ विष्णुपद में स्नान कर तथा वामन भगवान की पूजा करने वाला मनुष्य सभी पापों से मुक्त होकर विष्णुलोक को प्राप्त करता है। वामन पुराण में इस तीर्थ का महत्त्व इस प्रकार बताया गया है :

ततो वामनकं गच्छेत् त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
यत्र वामनरूपेण विष्णुना प्रभविष्णुना।
बलेरपहृतं राज्य इन्द्राय प्रतिपादितम्।
तत्र विष्णुपदे स्नात्वा अर्चयित्वा च वामनम्।
सर्वपापं विशुद्धात्मा विष्णुलोकमाप्नुयात्।

(वामन पुराण 36/64–66)

अर्थात् तत्पश्चात् तीनों लोकों में प्रसिद्ध वामन तीर्थ में जाए जहाँ भगवान विष्णु ने वामन रूप धारण कर राजा बलि के राज्य का हरण कर उसे इन्द्र को प्रदान किया। वहाँ स्नान करके विष्णु और वामन का अर्चन करके मनुष्य सब पापों से शुद्ध हो कर विष्णु लोक को प्राप्त कर लेता है।

तीर्थ स्थित मन्दिर की दीवारों पर कई भित्ति चित्र हैं जिनमें शेषशायी विष्णु, नाभि कमल से प्रकट होते ब्रह्मा, हनुमान, रासलीला, ब्रह्माण्ड दर्शन, मत्स्यावतार, भैरव, ब्रह्मा एवं कृष्ण के चित्र प्रमुख हैं।

41 श्रीतीर्थ, कसान

श्रीतीर्थ नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 18 कि.मी. दूर कैथल जींद मार्ग पर कसान नामक ग्राम में स्थित है। कसान नामक ग्राम में स्थित इस तीर्थ के नाम से ही प्रतीत होता है कि यह तीर्थ मनुष्य को श्री लक्ष्मी, वैभव, ऐश्वर्य, धन–सम्पदा प्रदान करने वाला है। इस तीर्थ का वर्णन महाभारत, वामन पुराण तथा ब्रह्म पुराण में मिलता है। महाभारत में इस तीर्थ का गहत्त्व इस प्रकार वर्णित है :

श्रीतीर्थं च समासाद्य स्नात्वा नियतमानसः।
अर्चयित्वा पितृन्देवान्विन्दते श्रियमुत्तमाम्।

(महाभारत, वन पर्व 83/46)

अर्थात् श्री तीर्थ में पहुँच कर एवं इस तीर्थ में संयमी हृदय से स्नान करके देवताओं एवं पितरों की अर्चना करने वाला मनुष्य अतुल श्री एवं वैभव को प्राप्त करता है।

ब्रह्म पुराण के 25 वें अध्याय में जहाँ सकल तीर्थों के महात्म्य का वर्णन है वहीं पर सम्पूर्ण तीर्थों के अन्तर्गत श्री तीर्थ का नामोल्लेख भी मिलता है।

विद्याधरं सगान्धर्वं श्रीतीर्थं ब्रह्मणो हृदम्।

(ब्रह्म पुराण 25/23)

नारद पुराण में ऐसा उल्लेख है कि जो मनुष्य श्री तीर्थ में स्नान करके श्री हरि का पूजन करता है वह प्रतिदिन भगवान को अपनी समीप विद्यमान पाता है।

यहाँ तीर्थ परिसर स्थित मन्दिर की भित्तियों पर बने भित्ति चित्रों में दूध बिलोती यशोदा के साथ कृष्ण, हाथी–घोड़े पर सवार योद्धाओं तथा पशु–पक्षियों का भी चित्रण है।

42 रसमंगल तीर्थ, जाखौली

रामंगल नामक यह तीर्थ कैथल से 19 कि.मी. की दूरी पर जाखौली एवं सौंगल नामक ग्रामों की सीमा पर स्थित है

इस तीर्थ के विषय में जनसाधारण में प्रचलित जनश्रुति के अनुसार एक बार सतयुग में ब्रह्मा के द्वारा एक विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें उन्होंने समस्त देवी देवताओं को आमन्त्रित किया था। इसी यज्ञ में ब्रह्मा ने देवताओं के प्रीत्यर्थ उनके प्रिय पेय सोम रस का पान करवाया था। आयुर्वेद में भी साम रस बड़ा गुणकारी माना गया है।

इस तीर्थ पर प्रत्येक वर्ष आश्विन मास की अमावस्या, सोमवती अमावस्या, ज्येष्ठ पूर्णिमा एवं कार्तिक पूर्णिमा के दिन श्रद्धालु स्नान करते हैं। इन अवसरों पर इस तीर्थ पर विशाल मेले लगते हैं। कई जनश्रुतियाँ इस तीर्थ का सम्बंध यक्ष से भी जोड़ती हैं। सम्भवतः यक्ष से जुड़े होने के कारण ही इस ग्राम का नाम जाखौली पड़ा होगा।

यहाँ पर एक प्राचीन टीला है जिसमें मध्यकालीन मृद्भाण्ड मिलते हैं। तीर्थ पर एक समाधि है। सरोवर तीर्थ के पश्चिम में स्थित है। सरोवर पर एक अष्टकोण बुर्जी वाला घाट है जिसका नवीनीकरण किया गया है। पूरा तीर्थ लगभग 5 एकड़ भूमि में फैला हुआ है।

43 हव्य तीर्थ, भाणा

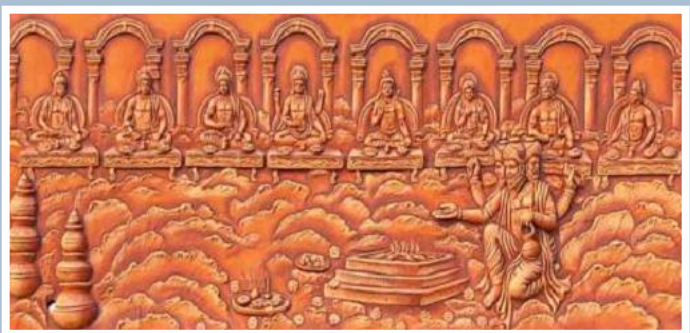

यज्ञ स्थल के पास बैठे देवी देवताओं को भोजन करवाते हुए ब्रह्मा

हव्य नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 22 कि.मी. दूर भाणा नामक ग्राम में स्थित है।

इस तीर्थ से सम्बन्धित जनश्रुति के अनुसार यहाँ सतयुग में ब्रह्मा ने एक यज्ञ का आयोजन किया था जिसमें समस्त देवी देवताओं को निमन्त्रित कर उन्हें भोजन करवाया था। वैसे भी हव्य शब्द का अर्थ आहुति में दिया जाने वाला पदार्थ है जिससे यही तथ्य स्पष्ट होता है कि इस तीर्थ में किसी समय अवश्य ही किसी विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया होगा।

इस तीर्थ के विषय में एक साधारण मान्यता यह भी पाई जाती है कि पाण्डवों ने कुछ समय के लिए इस तीर्थ पर निवास किया था। जनसाधारण में यह विश्वास पाया जाता है कि इस तीर्थ पर स्नान करने से पुण्यफल प्राप्त होता है। यहाँ सूर्य ग्रहण व चन्द्र ग्रहण के अवसर पर मेला लगता है। तीर्थ स्थित मन्दिर की भीतरी छत पर वानस्पतिक अलंकरण किया गया है।

44 काव्य तीर्थ, करोड़ा

काव्य तीर्थ नामक यह तीर्थ कैथल–पुण्डरी–राजोंद मार्ग पर कैथल से लगभग 24 कि.मी. दूर करोड़ा नामक ग्राम में स्थित है।

प्रचलित जनश्रुति के अनुसार उक्त तीर्थ महाभारत एवं वामन पुराण में वर्णित कोटि तीर्थ ही है। इस तीर्थ को कुरुक्षेत्र की 48 कोस भूमि का केन्द्र बिन्दु माना जाता है। प्रचलित किम्वदन्तियों के अनुसार ब्रह्मा जी ने इसी स्थान पर यज्ञ किया था।

प्रचलित मान्यता के अनुसार यदि माघ मास की एकादशी रविवार के दिन पड़े तो यहां स्नान करने से कोटि यज्ञों के करने का पुण्य फल प्राप्त होता है।

यहाँ स्थित तीर्थ सरोवर लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में विस्तृत है। तीर्थ परिसर में कुल तीन मन्दिर हैं जिनमें से एक उत्तर मध्यकालीन तथा दो आधुनिक मन्दिर हैं।

45 चक्र तीर्थ, सेरहदा

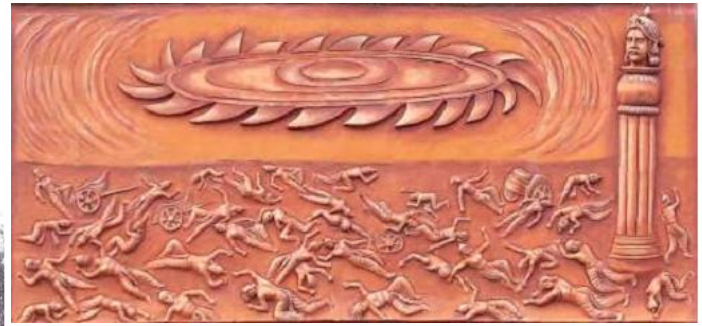

स्तम्भ के ऊपर रखे हुए ऊपरी कटे हुए सिर से महाभारत युद्ध देखते हुए बर्बरीक

चक्रतीर्थ नामक यह तीर्थ कैथल–पूण्डरी–राजौन्द मार्ग पर कैथल से लगभग 27 कि.मी. किलोमीटर दूर सेरहदा ग्राम में स्थित है।

सेरहदा नामक ग्राम में स्थित इस तीर्थ का वर्णन पौराणिक साहित्य में चक्रतीर्थ के रूप में मिलता है। सम्भवतः कालान्तर में चक्र तीर्थ ही चक्रमणि के नाम से जाना जाने लगा। यद्यपि महाभारत में इस तीर्थ का नामोल्लेख नहीं मिलता तथापि वामन पुराण एवं अन्य पुराणों में किंचित परिवर्तन के साथ इस तीर्थ का नामोल्लेख एवं महत्त्व स्पष्ट वर्णित है। ब्रह्मपुराण में इस तीर्थ का नामोल्लेख एवं महत्व स्पष्ट वर्णित है :

अस्ति ब्रह्मन्महातीर्थं चक्रतीर्थमिति श्रुतम्।
तत्र स्नात्वानरो भक्त्याहरेर्लोकमवाप्नुयात्।

(ब्रह्म पुराण 88/1)

अर्थात् चक्रतीर्थ नामक एक परम प्रसिद्ध महातीर्थ है, उस तीर्थ में भक्तिपूर्वक स्नान करने से मनुष्य विष्णुलोक को प्राप्त करता है ।

इस तीर्थ सम्बन्धित कथा के अनुसार विश्वधर नामक एक वैश्य का पुत्र युवावस्था में काल का ग्रास बन गया। पुत्र शोक से व्याकुल वह वणिक् एवं उसकी धर्मपत्नी के विलाप से यम का हृदय द्रवित हो गया तथा वे अपने लोक को छोड़कर भगवान विष्णु का ध्यान करने लगे। यम के अपना लोक छोड़ देने पर पृथ्वी लोक में कोई मृत्यु न होने से वसुन्धरा भार से आक्रान्त हो गई तब वसुन्धरा ने इन्द्र के समीप जाकर उन्हें यम को प्रजाओं के संहारकारी कार्य में प्रवृत्त करने को कहा। इन्द्र यमराज को यम लोक में न पाकर क्रोधित हुए क्योंकि यमराज उस समय घोर तपस्या में लीन थे। इस पर क्रोधित हुए इन्द्र स्वयं देवताओं की सेना लेकर यम से युद्ध करने चल पड़े। इन्द्र के मन की ऐसी कुटिलता को भाँप कर सज्जनों के रक्षक चक्रधारी भगवान विष्णु ने यम की रक्षार्थ अपने सुदर्शन चक्र को भेज दिया। जिस स्थान पर यह चक्र रक्षार्थ प्रकट हुआ, वही परमश्रेष्ठ चक्रतीर्थ के नाम से विख्यात हुआ।

एक अन्य जनश्रुति के अनुसार महाभारत युद्ध से पूर्व इसी स्थान पर ब्राह्मण वेशधारी श्रीकृष्ण ने महावीर बर्बरीक से उनका शीश दान में लिया था। बर्बरीक ने एक बहुत ऊँचे स्तम्भ पर स्थापित अपने कटे सिर से ही सम्पूर्ण महाभारत का युद्ध देखा था। शीश दान में लेने के कारण ही इस गाँव का नाम सेरहदा पड़ा।

46 जुहोमि तीर्थ, हजवाना

जुहोमि नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 25 कि.मी. दूर हजवाना ग्राम में स्थित है।

लोक प्रचलित जन–श्रुति के अनुसार इस तीर्थ का नाम जुहोगि गहात्मा के नाम पर पड़ा है। इसी प्रचलित गान्यता के आधार पर कहा जाता है कि यहाँ पर महात्मा जुहोमि ने तपस्या की थी। इस तीर्थ पर अमावस्या व सूर्य ग्रहण के मेले पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु स्नान के लिए आते हैं। तीर्थ पर एक उत्तर मध्यकालीन लाखौरी ईंटों से निर्मित पक्का घाट है जिसके प्रवेश द्वार की सीढ़ियों के दोनों ओर लगते हुए तीन–तीन गेहराबी कक्ष हैं। घाट गे अष्टकोणाकृति वाली बुर्जियाँ हैं। सरोवर तीर्थ की उत्तरी दिशा में स्थित है।

47 विष्णुपद तीर्थ, बरसाना

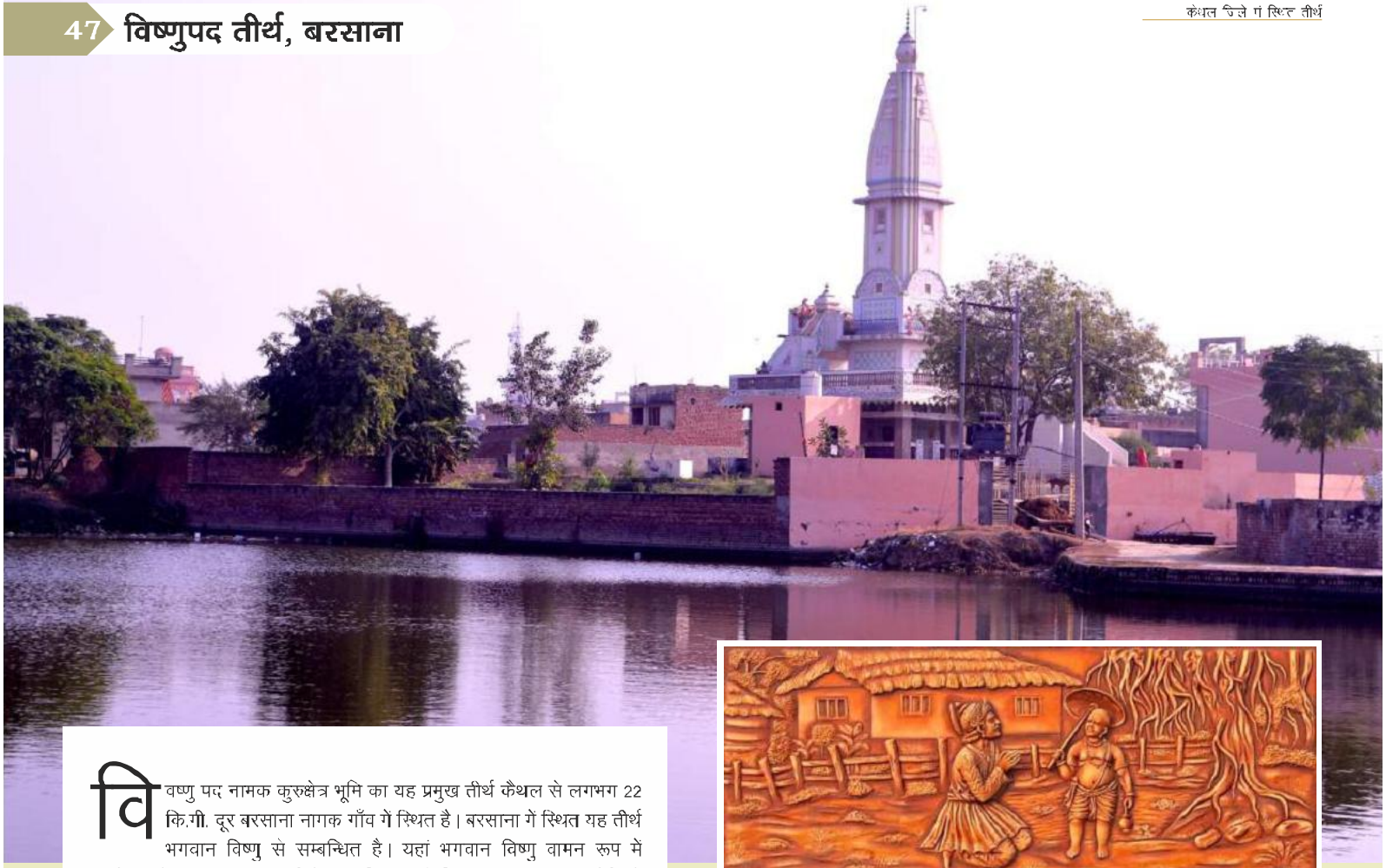

विष्णु पद नामक कुरुक्षेत्र भूमि का यह प्रमुख तीर्थ कैथल से लगभग 22 कि.मी. दूर बरसाना नागक गाँव में स्थित है। बरसाना में स्थित यह तीर्थ भगवान विष्णु से सम्बन्धित है। यहां भगवान विष्णु वामन रूप में अवस्थित हैं। महाभारत वन पर्व के अन्तर्गत इस तीर्थ का नाम एवं महत्व वर्णित है तथा वामन पुराण में भी इस तीर्थ का नाम एवं महत्त्व महाभारत की अपेक्षा कुछ विस्तार से वर्णित है।

वामन पुराण में वर्णित कथा के अनुसार भगवान विष्णु ने वामनावतार लेकर दैत्यराज बलि से उसका सम्पूर्ण राज्य लेकर उसे सुतल नामक पाताल सौंप दिया था। बलि ने वामनरूपधारी विष्णु से यह प्रश्न किया था कि वहाँ निवास करने पर वह किस विधि से निरन्तर उनका स्मरण कर सकेगा। तब वामन रूपधारी श्री विष्णु ने उसे बताया था कि अविधिपूर्वक दिए गए दान, क्षोत्रिय ब्राह्मण से रहित श्राद्ध तथा श्रद्धा रहित हवन तुम्हारा भाग बनेंगे। अत्यन्त पवित्र ज्येष्ठाश्रम तथा विष्णु सरोवर में जो भी मनुष्य श्राद्ध, दान, व्रत या नियमपालन करेगा तथा विधि या अविधिपूर्वक जो कोई क्रिया वहाँ की जाएगी, उसके लिए वह सभी निःसन्देह अक्षय फलदायी होगी।

भगवान वामन से प्रश्न करते हुए राजा बलि

ज्येष्ठाश्रमे महापुण्ये तथा विष्णुपदे ह्रदे।
ये च श्राद्धानि दास्यन्ति व्रतं नियममेव च।
क्रिया कृता च या काचिद् विधिनाविधिनापि च।
सर्वं तदक्षयं तस्य भविष्यति न संशयः।

(वामन पुराण 31/82–83)

वामन पुराण के अनुसार जो मनुष्य ज्येष्ठ मास के शुक्लपक्ष की एकादशी के दिन उपवास कर द्वादशी के दिन विष्णुपद नाम के सरोवर में स्नान कर यथाशक्ति दान देगा, वह परमपद को प्राप्त करेगा। महाभारत में भी इस तीर्थ का महत्त्व वर्णित है जिसके अनुसार तीनों लोकों में विख्यात विष्णुपद तीर्थ सरोवर में स्नान करके वामन रूपधारी भगवान विष्णु की अर्चना करने वाला मनुष्य सभी पापों से मुक्त होकर विष्णु लोक को प्राप्त करता है।

48 सूर्यकुण्ड, हाबड़ी

सूर्य कुण्ड नामक यह तीर्थ कैथल से 24 कि.मी. दूर हाबड़ी ग्राम में स्थित है।

हाबड़ी नामक ग्राम में स्थित सूर्यकुण्ड के नाम से विख्यात उक्त तीर्थ सूर्यदेव से सम्बन्धित रहा है। महाभारत एवं पौराणिक साहित्य में सूर्य तीर्थ का स्पष्ट वर्णन उपलब्ध होता है जहाँ स्नान करके देवताओं एवं पितरों की अर्चना करके उपवास करने वाला पुरुष अग्निष्टोम यज्ञ के फल को पाता है एवं सूर्यलोक को जाता है।

सूर्यकुण्ड तीर्थ से सम्बन्धित एक जनश्रुति के अनुसार महाभारत के विनाशकारी महायुद्ध के पश्चात् इसी स्थान पर ऋषि–महर्षियों ने युद्ध में मारे गए योद्धाओं की मोक्ष प्राप्ति के लिए अनन्य भाव से सूर्यदेव की आराधना की थी जिससे इस तीर्थ का नाम सूर्यकुण्ड पड़ गया।

इस तीर्थ पर सूर्य ग्रहण तथा सोमवती अमावस्या को मेला लगता है। इस तीर्थ का सर्वाधिक वैशिष्ट्य इसलिए भी है कि यहाँ हिन्दू, सिक्ख तथा मुस्लिम जनों के तीर्थ स्थल साथ–साथ हैं जो धार्मिक एवं साम्प्रदायिक सद्भावना एवं एकता को अधिकाधिक मजबूत करते हैं।

तीर्थ स्थित घाटों का निर्माण लाखौरी ईंटों से हुआ है। घाट की सीढ़ियों के पास मेहराबी कक्ष हैं। तीर्थ परिसर में नागर शिखर युक्त एक मन्दिर है जिसकी छत पर रासलीला आदि प्रसंगों का चित्रण है। मन्दिर के गर्भगृह की दीवारों पर रागदरबार, शंकर पार्वती व गणेश के चित्र हैं।

49 ऋणमोचन तीर्थ, रसीना

रसीना से प्राप्त विष्णु प्रतिमाएं

ऋणमोचन नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 25 कि.मी. दूर रसीना ग्राम में स्थित है। इस तीर्थ का उल्लेख पौराणिक साहित्य के अन्तर्गत वामन पुराण, ब्रह्म पुराण तथा मत्स्य पुराण में किया गया है। पौराणिक साहित्य में कहीं इसे ऋणमोचन तो कहीं ऋणप्रमोचन कहा गया है लेकिन इसका शाब्दिक अर्थ ऋणों से मुक्त करने वाला ही है।

ब्रह्म पुराण में इस तीर्थ से सम्बन्धित कथा के अनुसार प्राचीन समय में कक्षीवान् नामक राजा के दो पुत्र थे। ज्येष्ठ पुत्र पृथुश्रवा ने विरक्ति के कारण न तो विवाह ही किया और न अग्निपूजन ही। कनिष्ठ पुत्र ने योग्य होते हुए भी स्वयं विवाह या अग्निस्थापनादि कर्म नहीं किया। ये देख पितृगणों ने कक्षीवान् के उन दोनों पुत्रों को तीन ऋण– देव ऋण, पितृ ऋण तथा ऋषि ऋण से मुक्ति पाने के लिए विवाह करने का परामर्श दिया। लेकिन बड़े पुत्र ने विरक्ति के कारण तथा छोटे पुत्र ने बड़े भाई के अविवाहित रहने पर छोटे भाई के विवाह से उत्पन्न पाप या दुख दोष के कारण विवाह करना अस्वीकार कर दिया।

उन दोनों के उद्धार के इच्छुक पितरों ने तब उन्हें पवित्र गौतमी के तट पर जाकर सर्वमनोरथ प्रदाता उस पुण्यसलिला नदी में श्रद्धापूर्वक स्नान एवं तर्पण करने को कहा जिससे ज्येष्ठ भ्राता पितृऋण से मुक्त हो जाएगा तथा कनिष्ठ को परिवित्ति दोष नहीं लगेगा।

पितरों की आज्ञा से वैसा ही करने पर वह पृथुश्रवा अपने पिता कक्षीवान के ऋण से उऋण हो गया। तभी से वह तीर्थ ऋणमोचन के नाम से विख्यात हो गया :

ततः प्रभृति तत्तीर्थं ऋणमोचनमुच्यते ।
श्रौतस्मार्तऋणेभ्यश्च इतरेभ्यश्च नारद ।
तत्र स्नानेन दानेन ऋणी मुक्तः सुखी भवेत् ।

(ब्रह्म पुराण 99/12)

अर्थात् ऋणमोचन तीर्थ श्रौत, स्मार्त अथवा अन्य सभी प्रकार के ऋणों से मनुष्य को मुक्त कर देता है। उस तीर्थ में स्नान एवं दान से ऋणी मनुष्य ऋण से मुक्त हो सुखी हो जाता है।

इस तीर्थ के सरोवर की खुदाई से दो प्रतिहारकालीन (9–10वीं शती ई.) विष्णु प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं जो वर्तमान में कुरुक्षेत्र के श्रीकृष्ण संग्रहालय में प्रदर्शित हैं।

50 पुण्डरीक तीर्थ, पूण्डरी

पुण्डरीक नामक यह तीर्थ कैथल से 15 कि.मी. की दूरी पर पूण्डरी नामक शहर में स्थित है।

पुण्डरीक तीर्थ का वर्णन महाभारत एवं वामन पुराण दोनों में ही मिलता है। महाभारत के अनुसार इस तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य पुण्डरीक यज्ञ के फल को प्राप्त करता है :

शुक्लपक्षे दशम्यां च पुण्डरीकं समाविशेत्।
तत्र स्नात्वा नरो राजन्पुण्डरीकफलं लभेत्।

(महाभारत, वन पर्व 83/83)

उक्त श्लोक से स्पष्ट है कि इस तीर्थ का सेवन शुक्ल पक्ष की दशमी को करना चाहिए। वामन पुराण में भी इस तीर्थ का सेवन चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को ही करने का विधान है। वामन पुराण में इस तीर्थ का सेवन करने वाले मनुष्य को उसी फल विशेष का अधिकारी बताया गया है जिस फल विशेष का वर्णन महाभारत में है :

पौण्डरीके नरः स्नात्वा पुण्डरीकफलं लभेत्।
दश्म्यां शुक्लपक्षस्य चैत्रस्य तु विशेषतः।
स्नानं जपं तथा श्राद्धं मुक्तिगार्ग प्रदायकम्।।

(वामन पुराण 36/39–40)

अर्थात् शुक्ल पक्ष की दशमी (विशेषतः चैत्र मास की) को इस तीर्थ में किया गया स्नान, जप, एवं श्राद्ध मोक्ष पद को देने वाला होता है। महाभारत के सभा पर्व के

पुण्डरीक तीर्थ स्थित मन्दिर में बने भित्तिचित्र

पाँचवें अध्याय में पुण्डरीक नामक महायज्ञ का वर्णन है। लगभग 35 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ पूण्डरी तीर्थ परिसर कुरुक्षेत्र भूमि में स्थित विशाल तीर्थों में से एक है। सरोवर के पश्चिमी तट पर घाट से लगे हुए सात उत्तर मध्यकालीन मन्दिर हैं। इन मन्दिरों की आन्तरिक भित्तियों में पौराणिक एवं महाकाव्यों के प्रसंगों पर आधारित भित्तिचित्र हैं जिनमें गोपियों के मध्य श्रीकृष्ण, मत्स्यावतार, नृसिंहावतार, शेषशायी विष्णु, हनुमान, शिव–पार्वती इत्यादि प्रमुख हैं।

51 देवी तीर्थ, मोहना

देवी तीर्थ मोहना नामक यह तीर्थ कैथल से 17 कि.मी. दूर मोहना नामक ग्राम में स्थित है। महाभारत में कुरुक्षेत्र भूमि में देवी से सम्बन्धित प्रमुखतया तीन तीर्थ बताए गए हैं। पहला देवी तीर्थ शंखिनी के भीतर, दूसरा गधुवटी (गधुवन) के अन्तर्गत तथा तीसरा गृगधूग के अनन्तर है। यद्यपि ये तीनों तीर्थ देवी तीर्थ के ही पर्याय हैं तथापि इनके सेवन का पुण्य फल भिन्न–भिन्न है।

ग्राम मोहगा में स्थित मधुवटी तीर्थ जो कि वस्तुतः देवी तीर्थ का ही पर्याय है इसका वर्णन गहाभारत, वागन पुराण तथा ब्रह्म पुराण गें उपलब्ध होता है। ब्रह्म पुराण में इसे मधुवट कहा गया है।

पाणिखातां मिश्रकंच मधुवटमनोजवौ।

(ब्रह्म पुराण 25/42)

महाभारत वन पर्व में इस तीर्थ का महत्व इस प्रकार वर्णित है।

गत्वा मधुवटीं चैव देव्यास्तीर्थे नरः शुचि :।
तत्र स्नात्वाऽर्चयित्वा च पितृन देवांश्च पुरुषः।
स दव्यासमनुज्ञातो गोसहस्रफलं लभेत्।

(महाभारत, वन पर्व 83/94 95)

अर्थात् जो मनुष्य पवित्र हृदय से मधुवटी के देवी तीर्थ में जाकर वहाँ स्नान करके देवताओं एवं पितरों की पूजा अर्चना करता है, देवी की कृपा से उसे सहस्र गऊओं के दान का पुण्य फल प्राप्त होता है।

वागन पुराण के अनुसार इस तीर्थ का गहत्त्व गहाभारत गें वर्णित गहत्त्व से भिन्न है :

गत्वा मधुवटीं चैव देव्यास्तीर्थं नरः शुचि।
तत्र स्नात्वाऽर्चयेद् देवान् पितृंश्च प्रयतो नरः।
स देव्या सगानुज्ञाता यथा सिद्धिं लभेन्नरः।

(वामन पुराण 38 55–56)

अर्थात् पवित्र हृदय से मनुष्य को देवी के मधुवटी में जाकर वहां स्नान करके देवताओं एवं पितरों की पूजा करनी चाहिए। ऐसा करने वाला व्यक्ति देवी की कृपा से अभिलषित सिद्धि को प्राप्त कर लेता है।

यहाँ प्रत्येक वर्ष श्रावण मारा के शुक्ल पक्ष की राप्तमी को रविवार के दिन मेला लगता है।

52 त्रिविष्टप तीर्थ, ट्योंठा

त्रिविष्टप नामक यह तीर्थ करनाल–कैथल मार्ग पर कैथल से लगभग 19 कि.मी. की दूरी पर ट्योंठा नामक गाँव में स्थित है।

कुरुक्षेत्र के अधिकांश तीर्थों का सम्बन्ध हिन्दुओं के त्रिदेवों ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश से रहा है। कालान्तर में ब्रह्मा की महत्ता कम होती गई। महाभारत काल में विष्णु एवं शिव दोनों एक समान माने जाते थे। महाभारत तथा पौराणिक साहित्य में वर्णित अनेक तीर्थ इन दोनों देवताओं से सम्बंधित हैं। शिव से सम्बन्धित सतत, पंचनद, सरक, अनरक, स्थाणेश्वर आदि तीर्थों में त्रिविष्टप तीर्थ का अपना विशेष महत्त्व है।

महाभारत एवं वामन पुराण दोनों में ही इस तीर्थ का वर्णन पुण्डरीक तीर्थ के बाद किया गया है। दोनों में ही यहां स्थित वैतरणी नदी का भी उल्लेख है। वैतरणी नदी कुरुक्षेत्र की नौ नदियों सरस्वती, दृषद्वती, गंगा, मंदाकिनी, मधुस्रवा, वासुनदी, कौशिकी, हिरण्वती आदि प्रमुख नदियों में से एक है। महाभारत में इस तीर्थ विषयक वर्णन निम्न प्रकार से है :

ततस्त्रिविष्टपं गच्छेत् त्रिषुलोकेषु विश्रुतम्।
तत्र वैतरणी पुण्यानदी पाप प्रणाशिनी।
तत्र स्नात्वा अर्चयित्वा शूलपाणिंवृषध्वजं।
सर्वपापविशुद्धात्मा गच्छेत्परमां गतिम्।

(महाभारत वन. पर्व 83/84–85)

अर्थात् तत्पश्चात् तीनों लोकों में विख्यात त्रिविष्टप नामक तीर्थ में जाना चाहिए। जहां सर्व पाप नाशक वैतरणी नदी है। इस पवित्र नदी में स्नान करके एवं भगवान शंकर की अर्चना करने से सभी पापों से मुक्त हुआ व्यक्ति परमगति को प्राप्त करता है। वामन पुराण के अनुसार भी इस तीर्थ का महत्त्व महाभारत में दिये गए महत्त्व से शतशः साम्य रखता है :

ततः त्रिविष्टपं गच्छेत् तीर्थं देवनिषेवितम्।
तत्र वैतरणी पुण्यानदी पापप्रमोचिनी।
तत्र स्नात्वाऽर्चयित्वा च शूलपाणिं वृषध्वजं।
सर्वपाप विशुद्धात्मा गच्छत्येव परं गतिम्। (वामन पुराण)

उक्त श्लोक से स्पष्ट है कि इस तीर्थ का महत्त्व एवं पुण्य फल महाभारत तथा वामन पुराण में लगभग एक जैसा था।

53 लव-कुश तीर्थ, मुन्दड़ी

लवकुश नागक यह तीर्थ कैथल–करनाल गार्ग पर कैथल से लगभग 8 कि.मी. की दूरी पर मुन्दड़ी गाँव की उत्तर–पश्चिम दिशा में स्थित है।

लोक प्रचलित किम्वदन्तियों के अनुसार इसी स्थान पर भगवान राम एवं सीता जी के पुत्र लव एवं कुश ने महर्षि बालीकि से रागायण के सम्पूर्ण श्लोक कण्ठस्थ कर लिए थे। जनसामान्य में ऐसा विश्वास पाया जाता है कि लव एवं कुश को सम्पूर्ण रामायण कण्ठस्थ करवा देने क पश्चात् उन्होंन मौन धारण कर लिया था।

वर्तगान गें इरा तीर्थ पर शिव, हनुगान व लवकुश के गन्दिर हैं। प्रत्येक रविवार को आसपास के श्रद्धालु इकट्ठे होकर तीर्थ में स्नान करते हैं। प्रचलित विश्वास के अनुसार इस तीर्थ में स्नान करने से श्रद्धालुओं की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

यहाँ स्थित मन्दिर के गर्भगृह की भित्तियों पर राम, लक्ष्मण को कन्धे पर बैठाए हुए हनुमान, गोपियों के साथ कृष्ण, रासलीला व गणेश इत्यादि के

महर्षि बाल्मीकि के आश्रम में लव कुश

चित्र बने हुए हैं। मन्दिर के सरोवर की खुदाई से कुषाणकाल (प्रथम–द्वितीय शती ई.) से लेकर गध्यकाल 9–10वी शती ई. के गृदपात्र एवं अन्य पुरावशेष मिले है जिससे इस तीर्थ की प्राचीनता सिद्ध होती है।

54 यज्ञसंग तीर्थ, ग्योंग

यज्ञसंग नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 5 कि.मी. दूर ग्योंग नामक ग्राम के पूर्व में स्थित है। यह सर्वथा सत्य है कि कुरुक्षेत्र की 48 कोस की परिधि में स्थित अधिकाँश तीर्थों का सम्बन्ध महाभारत में वर्णित तीर्थों स है अथवा पुराणों में वर्णित तीर्थों से, विशेषत: वामन पुराण में उल्लिखित तीर्थों से है। इनमें से अधिकाँश तीर्थों के नाम तो महाभारत व पुराणों में वर्णित नाम से पूर्णतया साम्य रखते हैं जबकि कुछ तीर्थों के नामों में कालान्तर में कुछ परिवर्तन हो गया।

इस तीर्थ के सम्बन्ध में प्रचलित जनश्रुति इसका सम्बन्ध महाभारत काल से ही जोड़ती हैं। प्रचलित जनश्रुति के अनुसार गंगा देवी एवं उनके पुत्र गांगेय (भीष्म पितामह) ने महाभारत युद्ध के समय इस स्थान पर अत्यन्त यज्ञ–यागादि किये थे। यज्ञ–भूमि होने से ही इस तीर्थ का नाम यज्ञसंग तीर्थ तथा गांगेय से सम्बन्धित होने पर ग्राम का नाम उस समय गांगेय पड़ा जो कालान्तर में अपभंश होकर गियोंग के नाम से विख्यात हुआ।

सरोवर तट पर यज्ञ करते हुए मात गंगा एवं भीष्म पितामह

तीर्थ के दक्षिण में स्थित सरोवर में लाखौरी ईंटों से निर्मित एक घाट है। सरोवर के ऊपरी भाग तक पहुँचने वाली सीढ़ियों के दोनों ओर तीन तीन मेहराब युक्त कक्ष बने हुए हैं। घाट पर अष्टकोणाकृति की बुर्जियाँ बनी हुई हैं जिससे विदित होता है कि कुरुक्षेत्र भूमि के अन्य तीर्थों की तरह इस तीर्थ का जीर्णोद्धार भी उत्तर मध्यकाल मे हुआ होगा।

55 फल्गु तीर्थ, फलकीवन, फरल

फल्गु तीर्थ, नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 21 कि.मी. दूर फरल नामक ग्राम में स्थित है। फरल ग्राम का नामकरण भी सम्भवतः फलकी वन से ही हुआ प्रतीत होता है जहां फल्गु ऋषि निवास करते थे। वामन पुराण में काम्यक वन, अदिति वन, व्यास वन, सूर्यवन, मधुवन एवं शीत वन के साथ फलकीवन का भी उल्लेख हुआ है। यह सभी सात वन प्राचीन कुरुक्षेत्र भूमि के प्रमुख वन थे।

श्रृणु सप्त वनानीह कुरुक्षेत्रस्य मध्यतः।
येषां नामानि पुण्यानि सर्वपापहराणि च।
काम्यकं च वनं पुण्यं तथा अदितिवनं महत्।
व्यासस्य च वनं पुण्यं फलकीवनमेव च।
तथा सूर्यवनस्थानं तथा मधुवनं महत्।
पुण्यं शीतवनं नाम सर्वकल्मषनाशनम्।

(वामन पुराण 34/3–5)

इस तीर्थ का वर्णन महाभारत, वामन पुराण, मत्स्य पुराण तथा नारद पुराण में भी मिलता है। महाभारत एवं वामन पुराण दोनों में यह तीर्थ देवताओं की तपस्या की विशेष स्थली के रूप में उल्लिखित है। महाभारत वन पर्व में तीर्थयात्रा प्रसंग के अन्तर्गत इस तीर्थ के महत्त्व के विषय में स्पष्ट उल्लेख है।

महाभारत के अनुसार इस तीर्थ में स्नान करने एवं देवताओं का तर्पण करने से मनुष्य को अग्निष्टोम तथा अतिरात्र यज्ञों के करने से भी कहीं अधिक श्रेष्ठतर फल को प्राप्त होता है। वामन पुराण के अनुसार सोमवार की अमावस्या के दिन इस तीर्थ में किया गया श्राद्ध पितरों को वैसा ही तृप्त और सन्तुष्ट करता है जैसा कि गया में किया गया श्राद्ध। कहा जाता है कि मात्र मन से जो व्यक्ति फलकीवन का स्मरण करता है निःसन्देह उसके पितर तृप्त हो जाते हैं। इस तीर्थ से सम्बन्धित एक कथा के अनुसार गया तीर्थ निवासी गयासुर नामक एक दैत्य को पराजित कर फल्गु ऋषि ने उसकी पुत्रियों सोमा, भोमा और खोमा से विवाह किया था।

महर्षि फल्गु एवं गयासुर के बीच युद्ध तथा पार्श्व में खड़ी गयासुर की तीन पुत्रियां सोम, भोम एवं खोमा

फल्गु ऋषि का सर्वाधिक प्रेम सोमा से था तथा सोमा से सम्बन्धित होने के कारण ही सोमवती अमावस्या प्रसिद्ध हुई। गयासुर ने फल्गु ऋषि को वरदान दिया था कि फलकीवन में आश्विन मास की सोमवती का योग होने पर पिण्डदान का महत्त्व सबसे अधिक होगा तथा उस दिन गया में पिण्डदान नहीं किया जाएगा। तभी से आश्विन मास की सोमवती अमावस्या के दिन लाखों की संख्या में तीर्थ यात्री पितरों को संतुष्ट व प्रसन्न करने हेतु यहां पिण्डदान करने आते हैं। इस अवसर पर यहां विशाल मेला लगता है।

56 पवनेश्वर तीर्थ, फरल

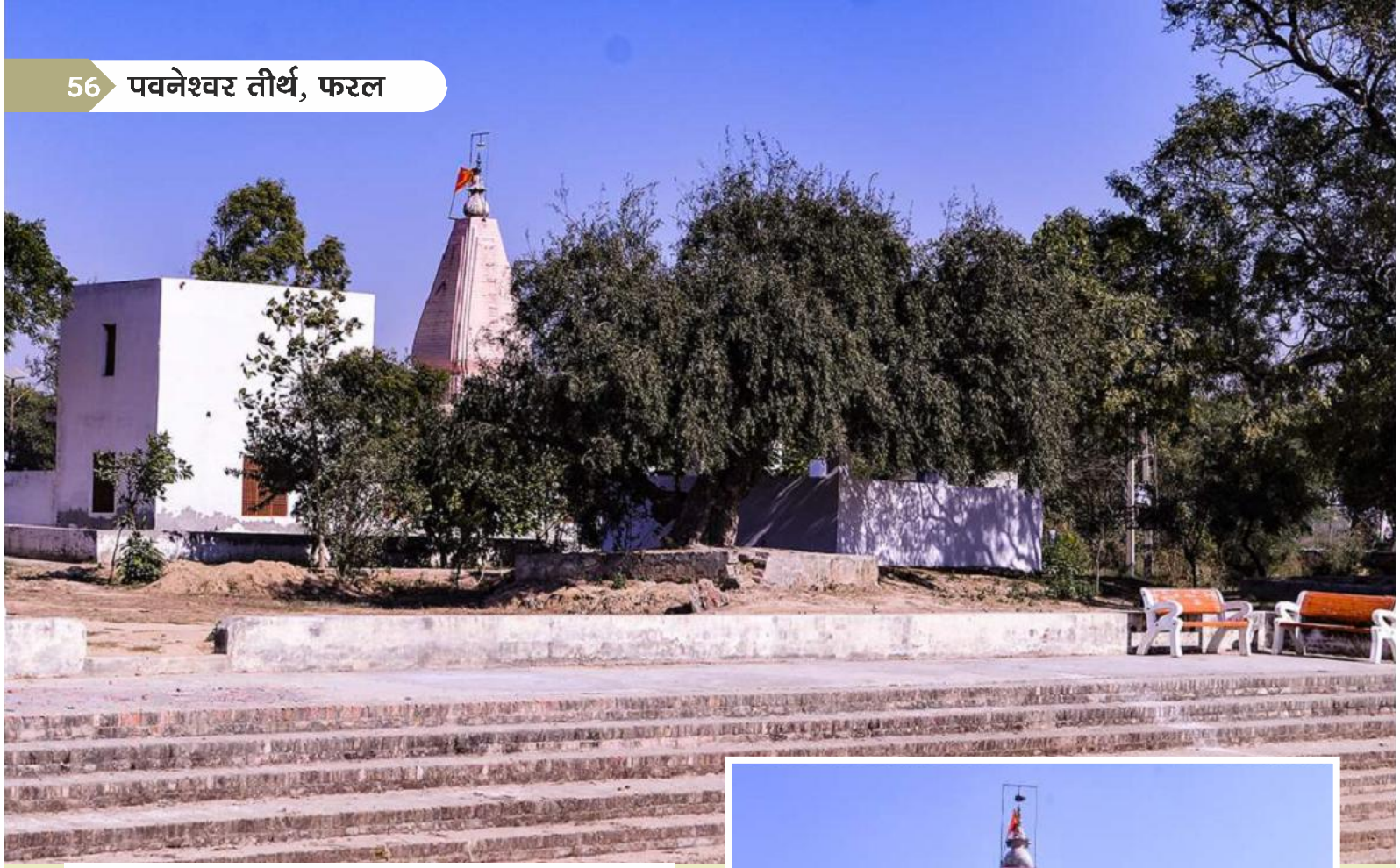

यह तीर्थ कैथल से लगभग 21 कि.मी. की दूरी पर फरल नामक ग्राम में स्थित है ।

पवन पुत्र हनुमान से सम्बन्धित होने से इस तीर्थ को पवनेश्वर तीर्थ के नाम से जाना जाता है।

सम्भवतः महाभारत में पाणिखात नाम से वर्णित तीर्थ यही तीर्थ है। महाभारत में पाणिखात नामक तीर्थ का उल्लेख फल्गु तीर्थ के पश्चात् मिलने से ही ऐसी सम्भावना बढ़ जाती है। यद्यपि इस तीर्थ का निर्माण कालान्तर में हुआ है तथापि इस तीर्थ के प्रति यहाँ के जनसाधरण में अथाह श्रद्धा एवं अगाध भक्ति देखने को मिलती है। इसी अथाह श्रद्धा के परिणामस्वरूप यहाँ के ग्रामीण निवासियों द्वारा इस तीर्थ का जीर्णोद्धार किया गया है।

तीर्थ में पवन पुत्र हनुमान को समर्पित एक मन्दिर है जिसमें हनुमान की एक अद्भुत एवं सुन्दर प्रतिमा स्थापित है। प्रचलित विश्वास के अनुसार यह एक चमत्कारिक तीर्थ है ।

57 ध्रुव कुण्ड, धेरडू

ध्रुव कुण्ड नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 26 कि.मी. दूर धेरडू ग्राम की उत्तर–पूर्व दिशा में स्थित है।

धेरडू में स्थित यह तीर्थ भक्त शिरोमणि ध्रुव से सम्बन्धित है। इस तीर्थ का वर्णन वराह पुराण में मिलता है। पौराणिक साहित्य के अन्तर्गत विष्णु पुराण में ध्रुव के जीवन व चरित्र पर पर्याप्त विवरण उपलब्ध होता है।

विष्णु पुराण के अनुसार ब्रह्मा के पुत्र स्वयंभू के प्रियव्रत एवं उत्तानपाद नाम के दो पुत्र थे। उत्तानपाद के सुरुचि एवं सुनीति नाम की दो पत्नियां थी। सुरुचि से उत्तम एवं सुनीति से ध्रुव का जन्म हुआ। राजा उत्तानपाद को सुरुचि एवं उत्तम विशेष रूप से प्रिय थ। पिता के इस एकपक्षीय व्यवहार से दुखी होकर ध्रुव शैशव अवस्था में ही गृहत्याग कर तपस्या के लिए चल पड़े। इनके कठोर तप को देखकर भगवान विष्णु ने इन्हें सर्वोच्च स्थान प्रदान किया जो सप्त ऋषियों एवं देवताओं से भी ऊपर था।

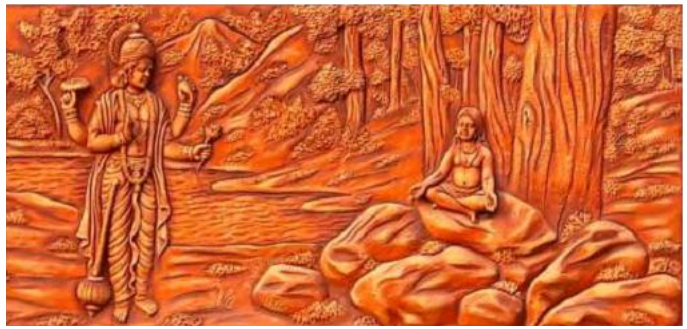

तपस्यारत ध्रुव को भगवान विष्णु के दर्शन

लोक प्रचलित मान्यता के अनुसार ध्रुव ने इसी स्थान पर रहकर घोर तपस्या की थी। ध्रुव से सम्बन्धित होने के कारण ही यह तीर्थ ध्रुव कुण्ड के नाम से विख्यात हुआ। जनसाधारण में प्रचलित विश्वास के अनुसार चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में यहाँ पूजा अर्चना करने वाले मनुष्य को देवता इच्छित वर प्रदान करते हैं।

58 हय्लेपक तीर्थ, साकरा

हय्लेपक नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 30 कि.मी. दूर साकरा ग्राम में स्थित है। कुरुक्षेत्र भूमि के वे तीर्थ जो भगवान शिव से सम्बन्धित हैं उनमें सतत, दक्षाश्रम, पंचनद, कागेश्वर, सरक, हय्लेपक, मनोजव, अनरक, स्थाणु वट आदि प्रमुख हैं। इनमें से कुछ तीर्थों का उल्लेख तो महाभारत तथा वामन पुराण दोनों में ही उपलब्ध हो जाता है। साकरा स्थित इस तीर्थ का उल्लेख वामन पुराण में उपलब्ध होता है जहाँ इसे शिव से सम्बन्धित बताया गया है :

चैत्रशुक्लचतुर्दश्यां तीर्थे स्नात्वा हय्लेपके।
पूजयित्वा शिवं तत्र पापलेपा न विद्यते।

(वामन पुराण 36/44)

उपरोक्त श्लोक से स्पष्ट है कि विशेषतया चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को इस तीर्थ में स्नान करने तथा भगवान शिव की पूजा करने वाले मनुष्य को पाप स्पर्श भी नहीं करता।

नारद पुराण में भी इस तीर्थ को विलेपक कहते हुए वामन पुराण के अनुसार ही इसे भगवान शिव से सम्बन्धित बताते हुए चैत्रमास के शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को इसमें स्नान का विशेष महत्त्व बताया है। नारद पुराण के अनुसार भी ऐसा करने वाला व्यक्ति सब पापों से मुक्त हो जाता है।

59 कपिलमुनि तीर्थ, कौल

कपिल मुनि नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 27 कि.मी. की दूरी पर कौल नामक गाँव में स्थित है। इस तीर्थ का सम्बन्ध सांख्य शास्त्र के प्रणेता कपिलमुनि से है। तीर्थ लगभग 4 एकड़ भूमि में विस्तृत है। तीर्थ स्थित मन्दिर के मण्डप की दीवारों पर हाथ में तलवार लिए किसी योद्धा एवं संन्यासी का चित्राँकन किया गाया है। गर्भगृह की भित्तियों में वानस्पतिक अलंकरण के साथ–साथ चारों भित्ति पटों पर जगन्नाथ, बलभद्र एवं सुभद्रा के चित्राँकन के साथ शेषशायी विष्णु, गीता उपदेश, हनुमान, रुक्मणी हरण, शिवपार्वती, गणेश आदि का चित्रण भी दर्शनीय है।

इसी तीर्थ परिसर में सरोवर के उत्तर में एक उत्तर मध्यकालीन कृष्ण मन्दिर है। मन्दिर के मण्डप की भित्तियों पर जगन्नाथ, दानलीला, गजलक्ष्मी, भीष्म शरशैय्या, राधा कृष्ण, कंस वध, राधा की वेणी गुंथाते हुए कृष्ण, नृसिंह, वराह, सहस्रबाहु वध आदि दृश्य चित्रित हैं।

60 कुलोत्तारण तीर्थ, कौल

कुलोत्तारण नागक यह तीर्थ केथल से लगभग 27 कि.मी. दूर कौल ग्राम में स्थित है। यह तीर्थ कपिलमुनि तीर्थ परिसर में ही स्थित है।

कुलों का उद्धार करने अथवा कुलां को तारने के कारण ही इस तीर्थ का नाम कुलोत्तारण हुआ। कुरुक्षेत्र भूमि में कुलोत्तारण नाम से दो तीर्थ पाए जाते है जिनमें रो एक किरमच ग्राम में तथा दूरारा कौल ग्राम में है।

कुलोत्तारण नामक इस तीर्थ का उल्लेख महाभारत, वामन पुराण तथा नारद पुराण में मिलता है। महाभारत में इस तीर्थ का नाम कुलम्पुन है। वामन पुराण में उपलब्ध वर्णन से ज्ञात होता है कि इस काल में तीर्थ का पर्याप्त महत्त्व हो गया था। वामन पुराण के अनुसार इरा तीर्थ का निर्माण भगवान विष्णु ने वर्णाश्रम धर्म का पालन करने वाले मनुष्यों को तारने के लिए किया था। इस तीर्थ के महत्त्व के विषय में वामन पुराण में लिखा है :

ततोगच्छेत् विप्रेन्द्रास्तीर्थं कल्मषनाशनम्।
कुलोत्तारणनागानं विष्णुना कल्पितं पुरा।
तेऽपि तत्तीर्थमासाद्य पश्यन्ति परमं पदम्।
ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थो यतिस्तथा।
कुलानि तारयेत् स्नातः सप्त सप्त च सप्त च।

(वामन पुराण 38/74–76)

अर्थात् तत्पश्चात् पाप का नाश करने वाले कुलोत्तारण नागक इस तीर्थ में जाना चाहिए जिसे विष्णु ने वर्णाश्रम धर्म का पालन करने वाले मनुष्यों को तारने के लिए बनाया था। विशुद्ध मोक्ष की इच्छा करने वाले लोग उस तीर्थ में जाकर परम पद का दर्शन कर लेते हैं। चारों आश्रमों में स्थित लोग इस तीर्थ में स्नान करने से अपने इक्कीरा पीढियों के पूर्वजों का उद्धार कर लेते हैं। नारद पुराण में इरा तीर्थ के विषय में लिखा है कि कुलोत्तारण नामक तीर्थ में जाकर स्नान करने वाला पुरुष अपने कुल का उद्धार करके कल्प पर्यन्त स्वर्ग लोग में निवास करता है। तीर्थ सरोवर के घाटों के निर्माण में लाखौरी ईंटों का प्रयोग हुआ है।

61 गढ़रथेश्वर तीर्थ, कौल

गढ़रथेश्वर नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 27 कि.मी. दूर कौल ग्राम के समीप स्थित है। कौल नामक ग्राम में स्थित यह तीर्थ महाभारत के नायक दानवीर योद्धा कर्ण स सम्बन्धित है।

इस तीर्थ से सम्बन्धित जनश्रुतियों के अनुसार इसी स्थान पर महाभारत युद्ध के 17वें दिन अर्जुन से युद्ध करते समय यशस्वी दानवीर कर्ण के रथ का पहिया जमीन में धँस गया था। इसी कारण महापराक्रमी अर्जुन के द्वारा कर्ण का वध कर दिया गया था। प्रचलित किंवदन्तियों के अनुसार इसी स्थान विशेष पर दानवीर कर्ण ने अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में ब्राह्मण वेशधारी श्रीकृष्ण को अपना स्वर्ण मण्डित दाँत दान में दिया था। इस तीर्थ पर आने वाले तीर्थ यात्री यहाँ दानवीर कर्ण के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

तीर्थ पर एक उत्तर मध्यकालीन मन्दिर है जिसके पूर्व में एक सरोवर है। मन्दिर परिसर में ही मध्यकालीन मन्दिर के स्तम्भों के अवशेष मिले हैं जिससे इस तीर्थ पर एक विशाल मध्यकालीन मन्दिर होने प्रमाण मिलते है। मन्दिर के उत्तर व दक्षिण में लाखौरी ईंटों से निर्मित दो मेहराबी मीनारें हैं जो कि एक बाड़े से मिली प्रतीत होती हैं। बाड़ के निर्माण में भी लाखौरी ईंटों का प्रयोग हुआ है।

62 पवनह्रद तीर्थ, पबनावा

पवनह्रद नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 27 कि.मी. दूर पबनावा नामक ग्राम में स्थित है। कुरुक्षेत्र की 48 कोस भूमि में पवन देव से सम्बन्धित एकमात्र तीर्थ होने से इसकी महत्ता और भी अधिक बढ़ जाती है।

पवन देवता से सम्बन्धित होने के कारण ही इस तीर्थ का नाम पवनह्रद पड़ा। इसी प्रकार पवनाब (पवन+आब) का शाब्दिक अर्थ भी पवन से सम्बन्धित जलाशय है। इसी कारण ऐसा प्रतीत होता है कि कालान्तर में इस ग्राम का नाम पवनाब से अपभ्रंश होकर पबनावा पड़ा है।

इस तीर्थ का वर्णन महाभारत, पद्म पुराण तथा वामनपुराण में मिलता है। जहाँ महाभारत में इसे पवन देवता से सम्बन्धित बताया गया है, वहीं वामन पुराण इसका सम्बन्ध महादेव एवं पवन देवता से स्थापित करता है जबकि पद्म पुराण में इसका सम्बन्ध महर्षि दधीचि से जोड़ा गया है।

महाभारत में इस तीर्थ का महत्त्व इस प्रकार है :

पवनस्यह्रदेस्नात्वा मरुतां तीर्थमुत्तमम्।
तत्र स्नात्वा नरव्याघ्र विष्णु लोके महीयते।।

(महाभारत, वन पर्व 83/134–135)

अर्थात् इस पवनह्रद नामक तीर्थ में स्नान करने वाला व्यक्ति विष्णुलोक में पूजित एवं सम्मानित होता है। वामन पुराण एवं पद्म पुराण के अनुसार समस्त 49 मरुत तीर्थों में उत्तम पवनह्रद नामक तीर्थ में स्नान करने पर व्यक्ति वायुलोक में श्रेष्ठ पद का अधिकारी बनता है। वामन पुराण में इसका महत्त्व इस प्रकार वर्णित है :

पवनस्यह्रदे स्नात्वा दृष्ट्वा देवं महेश्वरम्।
विमुक्तः कलुषैः सर्वैः शैवं पदमवाप्नुयात्।

(वामन पु. अ. 37/1)

अर्थात् इस तीर्थ में स्नान करके एवं भगवान महेश्वर का दर्शन करके मनुष्य सभी पापों से मुक्त होकर शैव पद को प्राप्त करता है। पौराणिक आख्यान के अनुसार यह वही विशेष सरोवर है जहां पवन देव पुत्रशोक से संतप्त होकर विलीन हो गए थे, तत्पश्चात् ब्रह्मा जी के साथ सभी देवताओं के द्वारा की गई विभिन्न स्तुतियों से प्रसन्न होकर वे पुनः आविर्भूत हुए।

वर्तमान में सरोवर के पश्चिमी घाट के समीप पवन देवता का एक आधुनिक मन्दिर है जिसमें पवन देवता की प्रतिमा के साथ उनके वाहन हिरण का भी दिखाया गया है। तीर्थ स्थित बांके बिहारी (श्रीकृष्ण) का एक उत्तर मध्यकालीन मन्दिर भी है। जिसका निर्माण लाखौरी ईंटों से हुआ है। इस मन्दिर में मण्डप, अन्तराल व गर्भगृह बने हैं। इस प्रकार की मन्दिर योजना सम्पूर्ण 48 कोस में अत्यन्त दुर्लभ है। मन्दिर की भित्तियों पर रासलीला, गीतोपदेश तथा रावण वध आदि प्रसंगों का मनोहारी चित्रण किया गया है। इस मन्दिर के अन्तराल के प्रवेशद्वार की भित्तियों पर जगन्नाथ, बलभद्र एवं सुभद्रा का चित्रण विशेष रूप से उल्लेखनीय है जो कि हरियाणवी लोक चित्र कला का उत्कृष्ट नमूना है।

63 बंटेश्वर तीर्थ, बरोट

बंटेश्वर नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 15 कि.मी. दूर बरोट ग्राम के पूर्व में स्थित है।

इस तीर्थ का नामोल्लेख गत्स्य, कूर्म, पद्म, अग्नि तथा नारद पुराण में मिलता है। प्रचलित जनश्रुति इसका सम्बन्ध महर्षि कर्दम से बताती है। जनश्रुति के अनुसार यहाँ कर्दम मुनि ने अपने धर्मपत्नी के साथ पुत्र प्राप्ति के लिए भगवान विष्णु को प्रसन्न करने हेतु तप किया था। इनके तप से प्रसन्न होकर श्री विष्णु ने इन्हें अपने जैसा ही पुत्र होने का वरदान दिया। अतः यह मान्यता है कि जो भी व्यक्ति इस तीर्थ में पुत्र की मनोकामना से स्नान करता है, वह अवश्य ही अपना अभिलषित वर प्राप्त करता है।

एक अन्य प्रचलित मान्यता इस तीर्थ का सम्बन्ध महर्षि वशिष्ठ से जोड़ती है। संक्षेपतः यही कहा जा सकता है कि पौराणिक काल में निर्मित कई तीर्थों के नाम एवं महत्त्व में काल क एक अत्यन्त दीर्घ अन्तराल के पश्चात् परिवर्तन आना सर्वथा स्वाभाविक ही है। समय की एक सुदीर्घ अवधि बीत जाने पर भी वर्तमान तीर्थों के नाम पौराणिक साहित्य में एवं महाभारत में उल्लिखित नाम से पर्याप्त समानता रखते हैं।

तीर्थ सरोवर मन्दिर के पूर्व में स्थित है। इस सरोवर की खुदाई से अनेक ढलवाँ अलंकृत ईंटें मिली है जिनसे यह सिद्ध होता है कि कभी इस तीर्थ पर ईंटों से निर्मित कोई मन्दिर रहा होगा। इस प्रकार के मन्दिर कपिल मुनि तीर्थ कलायत में मिले हैं। तीर्थ सरोवर से पूर्व मध्यकाल की संस्कृतियों के निक्षेप मिले हैं जिससे इस तीर्थ की प्राचीनता स्वतः सिद्ध हो जाती है।

64 कोटिकूट तीर्थ, क्योड़क

कोटिकूट नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 11 कि.मी दूर क्योड़क ग्राम में स्थित है।

क्योड़क नामक ग्राम में स्थित यह तीर्थ महाभारत एवं वामन पुराण में उल्लिखित कोटि तीर्थ ही है। इस तीर्थ का उल्लेख ब्रह्म पुराण में मिलता है। इस पुराण के अनुसार इस तीर्थ में करोड़ तीर्थ समाविष्ट हैं।

ब्रह्मपुराण में कोटिकूट तीर्थ के बारे में निम्न उल्लेख मिलता है :

सप्तर्षिकुण्डं च तथा तीर्थं देव्याः सुजम्बुकम्।
ईहारपदं कोटिकूटं किन्दानं किंजपं तथा।।

(ब्रह्म पुराण 25/41)

ब्रह्म पुराण के 25 वें अध्याय में जहाँ सभी तीर्थों के नाम एवं महत्व का संक्षिप्त वर्णन है उसी के अन्तर्गत कोटिकूट तीर्थ का नामोल्लेख मिलता है।

इस तीर्थ के विषय में प्रचलित जनश्रुति के अनुसार महाभारत काल में कुन्ती के द्वारा आत्मग्लानि से युक्त होने पर एक ऋषि ने इनको प्रायश्चित स्वरूप एक करोड़ तीर्थों में स्नान करने का परामर्श दिया। तब कुन्ती ने यहाँ स्नान कर पाप से मुक्ति प्राप्त की। लोगों में ऐसा विश्वास पाया जाता है कि इस तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

तीर्थ सरोवर के पश्चिमी भाग में टीले के ऊपर एक दुमंजिला लाखौरी ईंटों से

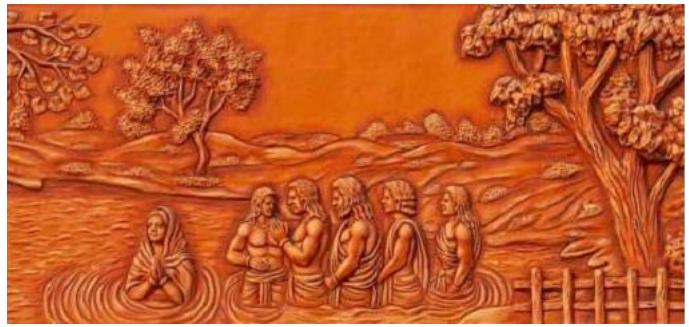

कोटिकूट तीर्थ सरोवर पर प्रायश्चित दूर करने हेतु माता कुन्ती द्वारा रचित तथा राधे में पाँचों पांडव

निर्मित उत्तर मध्यकालीन भवन है जिसकी छत बंगाली चाला प्रकार की है। पूरा गाँव प्राचीन टीले पर बसा हुआ है। पुरातात्विक सर्वेक्षण में यहाँ से धूसर चित्रित मृद्भाण्ड मिले हैं जिनका सम्बन्ध पुरातत्त्वविद महाभारत काल से जोड़ते है। इसके अतिरिक्त यहाँ से आद्य–ऐतिहासिक काल से लेकर मध्यकाल तक की संस्कृतियों के अवशेष भी मिलते है जो कि इस स्थल की प्राचीनता को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं।

65 वेदवती तीर्थ, बलवन्ती

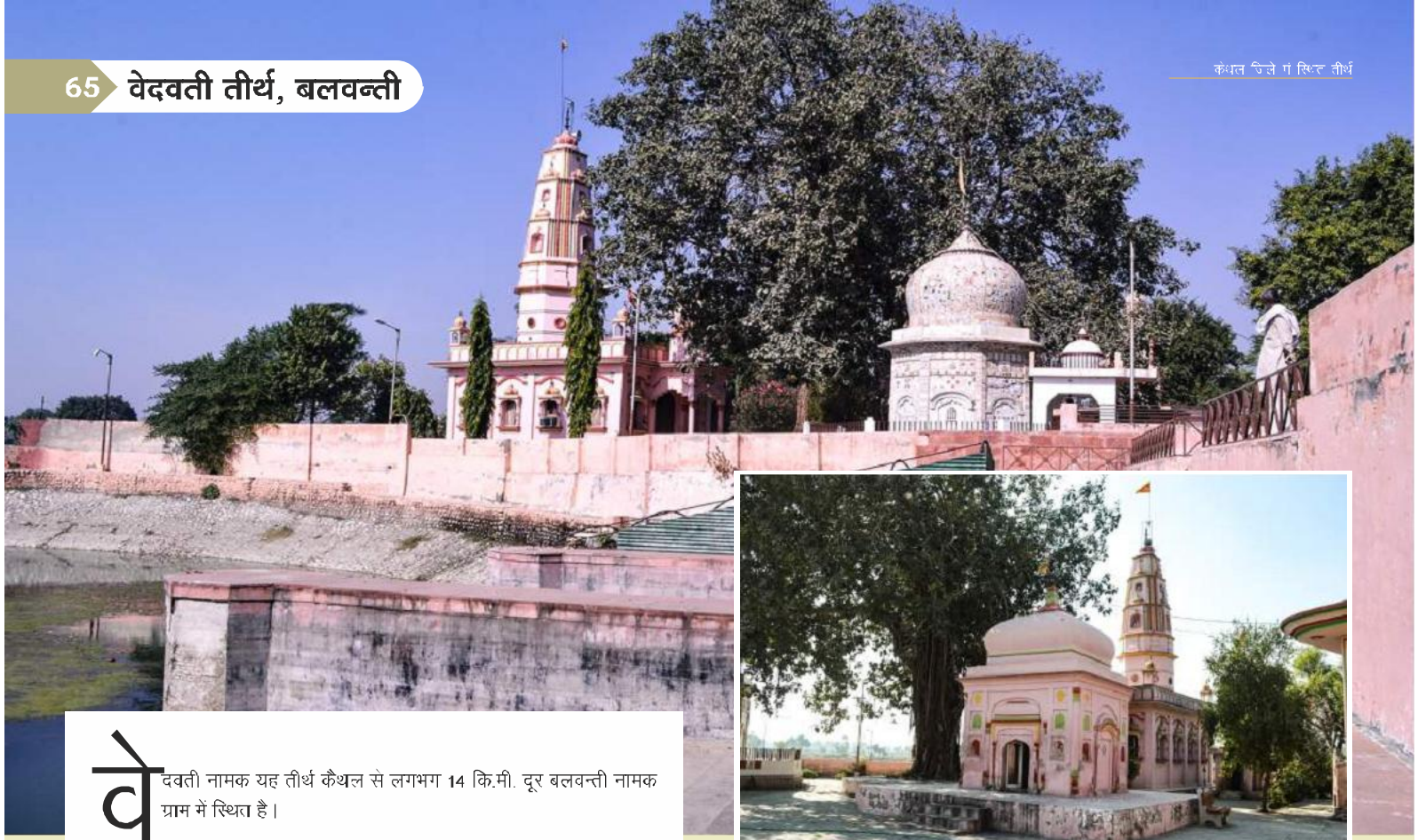

वेदवती नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 14 कि.मी. दूर बलवन्ती नामक ग्राम में स्थित है।

वामन पुराण में इस तीर्थ का विस्तार से वर्णन है। रामायण में इस तीर्थ से सम्बन्धित कथा संक्षेपतः इस प्रकार है कि भगवान शंकर से वर प्राप्त करने के पश्चात् रावण सर्वत्र अत्याचार करता हुआ विचरण करने लगा। भ्रमण करते हुए एक दिन उसने एक तपस्यारत कन्या को देख उससे तप करने का कारण पूछा। उस कन्या ने बताया कि वह राजा कुशध्वज की कन्या है तथा उसका नाम वेदवती है। उसके पिता उसका विवाह भगवान विष्णु के साथ करने के इच्छुक थे। इससे क्रोधित होकर शुम्भ नामक राक्षस ने उसके पिता का वध कर दिया। जिससे दुःखी होकर उसकी माता भी अग्नि में प्रवेश कर गई। विष्णु के विषय में पिता की संकल्प पूर्ति हेतु ही वह उनको प्राप्त करने के लिए यज्ञ कर रही है। विष्णु निन्दक रावण ये सुनते ही विष्णु की निन्दा करने लगा तथा वेदवती को बताया कि वह पराक्रम में किसी भी प्रकार विष्णु से कम नहीं है। वेदवती ने रावण को विष्णु की निन्दा करने से रोका। इस पर रावण ने उस के केश पकड़ लिए। इस अपमान से वेदवती को इतनी अधिक आत्मग्लानि हुई कि उसने अग्नि में प्रवेश करने का निश्चय किया और रावण से कहा कि वह उसके वधार्थ पुनर्जन्म ग्रहण करेगी। तदुपरान्त उस कन्या ने अग्नि में प्रवेश किया तथा राजा जनक के यहाँ कन्या रूप में जन्म लिया :

एषा वेदवती नाम पूर्वमासीत्कृते युगे।
त्रेता युगमनुप्राप्य वधार्थं तस्य रक्षसः।
उत्पन्ना मैथिलकुले जनकस्य महात्मनः।

(रामायण, उत्तरकाण्ड 17/38)

वामन पुराण में इस कथा से आगे बताया है कि उस कन्या का (राम की पत्नी सीता) रावण ने हरण किया और श्रीराम रावण को मारकर सीता को घर ले आए।

इस तीर्थ के महत्त्व के विषय में वामन पुराण में लिखा है कि यहाँ स्नान करने पर व्यक्ति कन्या यज्ञ के फल को प्राप्त करता है तथा सभी पापों से रहित होकर परमपद को प्राप्त करता है :

तस्यास्तीर्थेश्वरः स्नात्वा कन्यायज्ञफलं लभेत्।
विमुक्तः कलुषैः सर्वैः प्राप्नोति परमं पदम्।

(वामन पुराण 37/13)

महाभारत के अनुसार इस तीर्थ में स्नान करने से अग्निष्टोम यज्ञ के फल की प्राप्ति होती है।

66 नैमिष तीर्थ, नौच

नैमिष नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 17 कि.मी. दूर कैथल–पिहोवा मार्ग पर नौच ग्राम में स्थित है। महाभारत के आदि पर्व में यह उल्लेख है कि नैमिषारण्य में ऋषियों की प्रेरणा से सौति ने महाभारत की सम्पूर्ण कथा सुनाई थी। महाभारत काल में इस का महत्त्व इतना अधिक था कि पृथ्वी के समस्त तीर्थों को यहाँ विद्यमान समझा जाता था।

महाभारत वन पर्व में नैमिष कुंज नामक एक प्राचीन तीर्थ का वर्णन है जिसका निर्माण नैमिषारण्य में निवास करने वाले मुनियों ने किया था :

ततो नैमिषं कुंजं च समासाद्य कुरुद्वह।
ऋषयः किल राजेन्द्र नेमिषेयास्तपस्विनः।
तीर्थयात्रां पुररकृत्य कुरुक्षेत्रं गताः पुरा।
ततः कुंजं सरस्वत्याः कृतो भरतसत्तम।

(महाभारत, वन पर्व 83/139 110)

उक्त विवरण स स्पष्ट है कि नैमिषारण्य के निवासी ऋषियां न अपनी तीर्थयात्रा के दोरान कुरुक्षेत्र आने पर सरस्वती के तट पर एक कुंज का निर्माण किया जो उन राब के लिए आह्लादकारी एवं मनोहारी विश्राम स्थली था।

महाभारत वन पर्व के 84वें अध्याय में नैमिष तीर्थ के महत्व का बड़ा ही विस्तारपूर्वक वर्णन है जिसक अनुसार नैमिष तीर्थ सिद्धां क द्वारा सेवित एवं पुण्यमयी तीर्थ हे जहाँ देवताओं के साथ ब्रह्मा नित्य निवास करते हैं। नैमिष में प्रवेश करने वाले मनुष्य के आधे पाप उसी क्षण नष्ट हो जाते हैं तथा मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। इस तीर्थ में उपवासपूर्वक प्राण त्यागने वाला व्यक्ति सगस्त पुण्यलोकों गें आनन्द का अनुभव करता है। नैगिष तीर्थ नित्य पवित्र और पुण्यजनक है।

तीर्थ के पूर्व में लाखौरी ईंटो से निर्मित सरोवर है। तीर्थ स्थित मन्दिर की आन्तरिक भित्तियाँ चित्रों से सुसज्जित हैं जिनमें पैरों से हाथी दबाए एवं एक हाथी को काँख गें लिए हुए भीगसेन, किले के सागने लड़ाई का दृश्य, गाला जपता हुआ बालक, वृषभ के साथ शिव पार्वती, रामसीता की सेवा में हनुमान, परशुराम, वराह, मत्स्यावतार, शंखासुर वध, कालनेमि वध, गंधमार्दन पर्वत को हाथ में उठाए हुए हनुमान, मोदक पात्र लिए हुए गणेश, शेषशायी विष्णु तथा नृसिंहावतार आदि प्रगुख हैं।

67 श्रीकुंज तीर्थ, बानपुरा

श्रीकुंज नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 20 कि.मी. दूर कैथल–पिहोवा मार्ग पर बानपुरा में स्थित है।

बानपुरा में स्थित इस तीर्थ का वर्णन महाभारत एवं वामन पुराण दोनों में ही उपलब्ध होता है। महाभारत एवं वामन पुराण दोनों में ही इस तीर्थ को सरस्वती के तट पर स्थित बताया गया है। महाभारत में इस तीर्थ के महत्त्व के विषय में लिखा है कि यहाँ स्नान करने पर मनुष्य को अग्निष्टोम यज्ञ का फल मिलता है:

श्रीकुंजः च सरस्वत्यास्तीर्थं भरतसत्तम।
तत्र स्नात्वा नरश्रेष्ठ अग्निष्टोम फलं लभेत्। (महाभारत, वन पर्व 83/108)

वामन पुराण के काल में भी इस तीर्थ का महत्त्व बिल्कुल वैसा ही था जैसा महाभारत के काल में था। इसका स्पष्ट प्रमाण निम्न श्लोक से मिल जाता है :

श्रीकुंजं तु सरस्वत्यां तीर्थं त्रैलोक्य विश्रुतम्।
तत्र स्नात्वा नरो भक्त्या अग्निष्टोम फलं लभेत्। (वामन पुराण 37/6 7)

ब्रह्म पुराण में भी इस तीर्थ का नामोल्लेख सर्वतीर्थमहात्म्य नामक अध्याय में मिलता है :

श्रीकुंजं शालितीर्थंच नैमिष्यं विश्रुतम् ।(ब्रह्म पुराण 25/45)

यहाँ एक उत्तर–गध्यकालीन शैली में निर्मित मन्दिर है। यहाँ से प्राप्त शुंग एवं कुषाण कालीन ईंटों से सिद्ध होता है कि यह अति प्राचीन तीर्थ स्थल है।

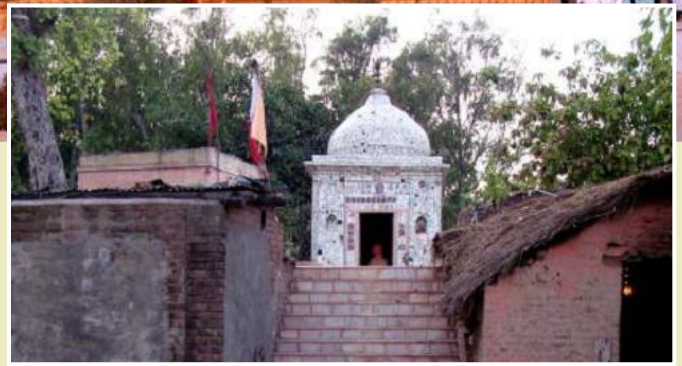

68 मातृ तीर्थ, रसूलपुर

मातृ तीर्थ नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 19 कि.मी. की दूरी पर ग्राम रसूलपुर के पूर्व में स्थित है। इस तीर्थ का नामोल्लेख महाभारत, ब्रह्म पुराण, वामन पुराण, पद्म पुराण तथा कूर्म पुराण गें गिलता है। ब्रह्म पुराण की कथा के अनुसार देवासुर संग्राग गें पराजित देवताओं ने भगवान शंकर की शरण ली। उनकी स्तुतियों से प्रसन्न हुए भगवान शिव ने देवश्रेष्ठों से अपना अभिलषित बताने को कहा जिससे वे उन्हें उनका अभीष्ट प्रदान कर सकें। शिव के ऐसा पूछे जाने पर देवताओं ने देवासुर संग्राम गें अपनी पराजय के विषय गें उन्हें बताया तथा साथ ही उनसे यह प्रार्थना की कि भगवान स्वयं उनके रक्षक बनना स्वीकार करें। देवताओं की प्रार्थना को स्वीकार कर भगवान स्वयं दानवों के साथ युद्ध करने पहुँचे। युद्ध के श्रम से शिव के ललाट से स्वेदकण गिरने लगे जिनसे शिव के आकार की मातृकाएं उत्पन्न हुईं। वे रौद्र रूप धारण कर असुरों का विनाश करने लगीं। उनके इस अत्यन्त भयंकर रूप को देख भयभीत हुए दानव मेरु पृष्ठ को त्याग कर पृथ्वी पर चले आए। मातृकाएं भी उनका भीषण संहार करते हुए पृथ्वी पर चली आई। उन माताओं ने भगवान शिव से कहा कि वे सब दानवों को खाएंगी। उन माताओं ने पृथ्वी का भेदन कर रसातल गें जाकर असुरों का संहार किया। पुनः वे ऐसे मार्ग से पृथ्वी पर स्थित देवों के समीप चली आई जहाँ माताओं की उत्पत्ति हुई थी। जहाँ जहाँ रसातल को जाने वाले विवर बने वे पृथक्–पृथक् एक एक मातृ तीर्थ कहलाए। देवों ने माताओं को शिवतुल्य पूजा व सम्मान प्राप्त होने का वरदान दिया। यह कह कर देवगण अदृश्य हो गए लेकिन माताएं वहीं रही। जहाँ–जहाँ माताएं रही वहीं–वहीं मातृ तीर्थ स्थापित हुए। इस तीर्थ का महत्त्व ब्रह्म पुराण गें इस प्रकार वर्णित है :

यत्र यत्र स्थिता देव्यो मातृतीर्थंततो विदुः।
सुराणामपि सेव्यानि किं पुनर्मानुषादिभिः।।
तेषु स्नानमथो दानं पितृणां चैव तर्पणम्।
सर्वं तदक्षयं ज्ञेयं शिवस्य वचनं यथा।।
यस्त्विदं श्रृणुयान्नित्यं स्मरेदपि पठेत्तथा।
आख्यानं मातृतीर्थानामायुष्मानस सुखी भवेत्।।

(ब्रह्म पुराण 122/26-28)

अर्थात् ये मातृ तीर्थ देवों के लिए भी सेव्य हैं तो साधारण व्यक्तियों का तो कहना ही क्या। उन तीर्थों गें किए गए स्नान, दान एवं पितृ तर्पण कर्म शिव के वरदान की तरह अक्षय होते हैं। इन तीर्थों का श्रवण, मनन एवं पठन करने वाला मनुष्य भी सम्पूर्ण सुखी व चिरंजीवी होता है।

वामन पुराण के अनुसार इस मातृ तीर्थ में भक्तिपूर्वक स्नान करने वाले व्यक्ति की सन्तति बढ़ती है एवं वह प्रचुर वैभव का स्वामी बनता है।

69 शीतवन/स्वर्गद्वार तीर्थ, सीवन

शीतवन/स्वर्गद्वार नामक यह तीर्थ कैथल रो 15 कि.मी. दूर गुहला–चीका मार्ग पर सीवन ग्राम में स्थित है।

वामन पुराण में कुरुक्षेत्र के सात वनों का स्पष्ट वर्णन उपलब्ध होता है :

श्रृणु सप्त वनानीह कुरुक्षेत्रस्य गध्यतः।
येषां नामानि पुण्यानि सर्वपापहराणि च।।
काम्यकं च वनं पुण्यं तथा अदितिवनं महत्।
व्यासस्य च वन पुण्यं फलकीवनमेव च।।
तत्र सूर्यवनस्थानं तथा गधुवनं गहत्।।
पुण्यं शीतवनं नाम सर्वकल्मषनाशनम्।

(वामन पुराण 34/3 5)

ऐसा प्रतीत होता है कि यही शीतावन अपभ्रंश हो कर परवर्ती काल में सीतवन के नाम से विख्यात हो गया। वामन पुराण में इस तीर्थ को मातृतीर्थ के पश्चात् रखा गया है। इराके साथ ही यह भी वर्णित है कि नियत आहार करने वाले एवं जितेन्द्रिय मनुष्य को अवश्य ही शीतवन का सेवन करना चाहिए।

लोक प्रचलित परम्परा इस जनकनन्दिनी सीता जी से सम्बन्धित मानती है। प्रचलित विश्वास के अनुसार सीता जी इसी स्थान पर धरती में समा गई थीं। इसीलिए इरा तीर्थ को रवर्गद्वार के नाम रो भी जाना जाता है।

इस तीर्थ का उल्लेख महाभारत एवं वामन पुराण के अतिरिक्त पद्म पुराण, ब्रह्म पुराण, कूर्म पराण, नारद पुराण तथा अग्नि पुराण में भी पाया जाता हे। महाभारत के अनुसार नियताहारी एवं जितेन्द्रिय मनुष्य को स्वर्गद्वार नामक तीर्थ में जाना चाहिए जहाँ जाकर वह रवर्ग लोक होते हुए ब्रह्मलोक को जाता है। नारद पुराण के अनुसार चैत्र मास की चतुर्दशी को इस तीर्थ में स्नान करने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है।

70 सुतीर्थ, सौंत्था

सुतीर्थ नागक यह तीर्थ कैथल से लगभग 21 कि.गी. की दूरी पर सौंत्था ग्राम के उत्तर–पश्चिम में स्थित है। इस तीर्थ का वर्णन महाभारत में इस प्रकार है :

ततो गच्छेत् राजेन्द्र सुतीर्थकमनुत्तमम्।
तत्रसन्निहिता नित्यं देवतैः सह।।
तत्राभिषेकं कुर्वीत पितृदेवार्चने रतः।
अश्वमधमवाप्नोति पितृलोकं च गच्छति।।

(महाभारत, वन पर्व 83 / 54 55)

अर्थात् हे राजेन्द्र! तत्पश्चात् सर्वश्रेष्ठ सुतीर्थ में जाना चाहिए जहाँ नित्य पितर एवं देवताओं का सान्निध्य रहता है। वहाँ जाकर पितरों एवं देवताओं की अर्चना एवं अभिषेक करना चाहिए। ऐसा करने वाले मनुष्य को अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है एवं वह पितृ लोक को प्राप्त करता है।

तीर्थ सरोवर पर प्राचीन ईंटों से निर्मित एक घाट है जिसके निकट दो प्राचीन मन्दिर हैं जिनका नवीनीकरण किया गया है।

71 इक्षुमति तीर्थ, पोलड़

इक्षुमति नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 20 कि.मी. दूर सरस्वती नदी के किनारे पोलड़ ग्राम में एक प्राचीन टीले पर स्थित है। पोलड़ नामक ग्राम में स्थित यह तीर्थ किसी देवता अथवा ऋषि से सम्बन्धित न होकर एक प्राचीन नदी से सम्बन्धित है। इस नदी का उल्लेख पाणिनी ने भी किया है। महर्षि बाल्मीकि कृत रामायण के अयोध्या काण्ड में जिस समय महर्षि वशिष्ठ की आज्ञा से पाँच दूत कैकय देश के राजगृह नगर में जाते हैं तो उनके मार्ग में आने वाली इक्षुमति नदी का स्पष्ट उल्लेख है :

अभिकालं ततः प्राप्य तेजोऽभिभवनाच्च्युताः।
पितृपैतामहीं पुण्यां तेरुरिक्षुमतीं नदीम्।।

(रामायण, अयोध्या काण्ड 68 / 18)

अर्थात् वे दूत तेजाभिभवन नामक ग्राम का पार करते हुए वे अभिकाल नामक ग्राम में पहुँचे और वहाँ से आगे बढ़ने पर उन्होंने राजा दशरथ के पिता पितामहों द्वारा सेवित पुण्य सलिला इक्षुमति को पार किया। टीले से प्राप्त मृद्–पात्र, मुद्राएं एवं अन्य पुरावशेषों के आधार पर पता चलता है कि यहाँ आद्य ऐतिहासिक काल (6 5वी शती ई.पू.) से लेकर मध्यकाल तक अनेक संस्कृतियाँ फली–फूली। निश्चय ही इस कालांतर में यह तीर्थ भी अपने चरम स्वरूप में रहा होगा।

72 गन्धर्व तीर्थ, गौहरां खेड़ी

गन्धर्व नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 21 कि.मी. दूर ग्राम गोहरां खेड़ी में स्थित है। इस तीर्थ का वर्णन महाभारत और पद्मपुराण में मिलता है। गन्धर्वों से सम्बन्धित होने के कारण ही इसे गन्धर्व तीर्थ कहा गया है। शल्य पर्व में उल्लेख है कि यहाँ हलधर बलराम ने स्नान करके ब्राह्मणों को बहुत सा धन स्वर्ण और रजत दान करके सन्तुष्ट किया था।

गन्धर्वाणां ततस्तीर्थमागच्छद्रोहिणीसुतः।
विश्वावसुमुखस्तत्रगंधर्वास्तपसान्विताः।।
नृत्यवादित्रगीतं च कुर्वन्ति सुमनोरमम्।
तत्र गत्वा हलधरो विप्रेभ्यो विविधं वसु।।
अजाविकंगोखराष्ट्रमं सुवर्णं रजतं तथा।
प्रययौसहिताविप्रै : स्तूयमानश्च माधवः।।
भोजयित्वा द्विजान् कामैः संतर्प्य च महाधनैः।
तस्माद् गन्धर्व तीर्थच्च महाबाहुररिंदमः।।

(महाभारत, शल्य पर्व 37/10-13)

इससे स्पष्ट है कि यह सरस्वती तटवर्ती एक प्राचीन तीर्थ था जहाँ विश्वावसु आदि अनेक गन्धर्व नृत्य आदि का आयोजन करते थे। भगवान कृष्ण के अग्रज बलराम जी ने इस तीर्थ के महत्त्व को समझते हुए ही इस तीर्थ की यात्रा की थी। आज भी यहाँ श्रावण मास की अष्टमी को मेला लगता है।

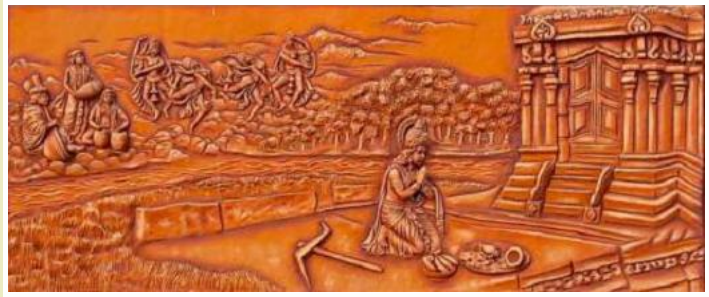

सरस्वती के तट पर गंधर्व तीर्थ में पूजा अर्चना करते हुए बलराम

73 ब्रह्मावर्त तीर्थ, प्रभावत

ब्रह्मावर्त नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 20 कि.मी. की दूरी पर प्रभावत ग्राम के पश्चिम में स्थित है।

कुरुक्षेत्र भूमि की 48 कोस की परिधि में स्थित ब्रह्मतीर्थों (ब्रह्मसर, ब्रह्मयोनि, ब्रह्मोदुम्बर, ब्रह्मावर्त) में इस तीर्थ का एक प्रमुख स्थान है। महाभारत एवं वामन पुराण दोनों में ही इस तीर्थ का महत्त्व वर्णित है। महाभारत में इस तीर्थ का महत्त्व इस प्रकार है।

ततोगच्छेत् राजन्द्र ब्रह्मवर्ता नरोत्तमः।
ब्रह्मावर्ते नरः स्नात्वा ब्रह्मलोकमवाप्नुयात्।।

(महाभारत, वन पर्व 83/53–54)

अर्थात् हे राजन् ! तत्पश्चात् ब्रह्मावर्त नामक तीर्थ में जाना चाहिए जहाँ स्नान करने पर मनुष्य ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है।

वामन पुराण में इस तीर्थ का सवन करने वाले मनुष्य का ब्रह्मज्ञानी होने का फल वर्णित है :

ब्रह्मावर्ते नरः स्नात्वा ब्रह्मज्ञानसमन्वितः।
भवेत नात्र संदेहः प्राणान् मुंचति स्वेच्छया।।

(वामन पुराण 35/36)

अर्थात् ब्रह्मावर्त नामक तीर्थ में स्नान करने पर व्यक्ति निःसन्देह ब्रह्मज्ञानी हो जाता है एवं वह अपनी इच्छा के अनुसार अपने प्राणों का परित्याग करता है ।

अग्नि पुराण में भी तीर्थ महात्म्य नामक अध्याय में जहाँ कुरुक्षेत्र के तीर्थों का वर्णन है वहाँ इस तीर्थ का नाम स्पष्टतया वर्णित है ।

गंगासरस्वतीसंगमं ब्रह्मावर्तमघार्दनम् ।

(अग्नि पुराण 109/17)

नारद पुराण में भी ऐसा वर्णन है कि ब्रह्मावर्त तीर्थ में स्नान करने पर मनुष्य ब्रह्मज्ञान को प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार इस तीर्थ के महात्म्य के सम्बन्ध में वामन पुराण, नारद पुराण, मत्स्य एवं पद्म पुराण के मतों में पर्याप्त साम्य है।

सरस्वती नदी के किनारे स्थित यह तीर्थ कुरुक्षेत्र भूमि की 48 कोस की सीमा पर स्थित है।

74 अरन्तुक यक्ष, बेहरजख

अरन्तुक यक्ष को समर्पित यह तीर्थ कैथल से लगभग 26 कि.मी. दूर कैथल–पटियाला जिलों की सीमा पर बेहरजख ग्राम के पश्चिम में स्थित है।

वन पर्व में इसे कुरुक्षेत्र भूमि क रक्षक चार यक्षों में से एक बताया गया है :

तरंकतुकारंतुकयोः यदंरतनंरामह्रदानां च मचक्रुकस्य।
एतत्कुरुक्षेत्रसमंतपंचकं पितामहस्योत्तरवेदिरुच्यते।।

(महाभारत, वन पर्व 83 208)

अर्थात् तरन्तुक, अरन्तुक, रामह्रद तथा मचक्रुक के मध्य का भू–भाग ही कुरुक्षेत्र अथवा समन्तपंचक है, जिसे ब्रह्मा जी की उत्तर वेदी भी कहते हैं ।

ततोगच्छेत् राजेन्द्र द्वारपालं अरन्तुकम् ।
यच्चतीर्थं सारस्वत्यां यक्षेन्द्रस्य महात्मनः ।।
तत्रस्नात्वानरो राजन् अग्निष्टोमफलं लभत्।

(महाभारत, वन पर्व 83.52 53)

अर्थात् हे राजेन्द्र ! तत्पश्चात् अरन्तुक नामक द्वारपाल के समीप जाना चाहिए जो कि सरस्वती के तट पर स्थित हे तथा जो यक्षेन्द्र (यक्षों के स्वामी) से सम्बन्धित है। हे राजन ! वहां स्नान करने पर मनुष्य को अग्निष्टोम का फल प्राप्त हाता है। इससे स्पष्ट है कि महाभारत काल में चारों द्वारपालों में स यह यक्ष सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं सम्मानीय स्थान प्राप्त कर चुका था।

यहाँ स्थित मन्दिर के बरामदे के साथ लगते हुए एक कक्ष में भगवान विष्णु की एक मध्यकालीन प्रतिमा है। बालुका पत्थर की इस स्थानक विष्णु

प्रतिमा के दाहिने भाग के ऊपरी हाथ में गदा व निचला हाथ वरद मुद्रा में है। बाँयें ऊपरी हाथ में चक्र व निचले हाथ में शंख है। मूर्ति के दोनों पार्श्वों में लघु मन्दिराकृतियां उत्कीर्ण हैं। दाँयीं मन्दिराकृति के नीचे क्रमशः ब्रह्मा, वामन, नृसिंह, वराह, कूर्म एवं मत्स्यावतार को दिखाया गया है जबकि बाँयीं मन्दिराकृति में शिव व चैत्यों में परशुराम, राम, बलराम एवं कल्कि अवतार दिखाए गए हैं। मूर्ति के पायदान वाले भाग में बाँयीं तरफ तीन पुरुष व दो नारियाँ उत्कीर्ण हैं। पुरुषों के हाथ में कर्णफूल व नारियों के हाथ में घड़े हैं। दाँयीं ओर भी इसी तरह पुरुष एवं नारियों का उत्कीर्णन है। मूर्ति में गदा, चक्र एवं प्रभा मण्डल के ऊपर विद्याधर एवं लघु मन्दिराकृतियों में गन्धर्वों का चित्रण है। मूर्ति के पार्श्व में व्याल है। पायदान में गणों का उत्कीर्णन है। इस तीर्थ के दक्षिण–पूर्व में सिक्खों के नवम गुरु तेगबहादुर जी को समर्पित एक गुरुद्वारा है ।

75 शृंगीऋषि तीर्थ, सांघन

शृंगी ऋषि/शंखिनी देवी तीर्थ नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 22 कि.मी दूर कैथल–टोहाना मार्ग पर सांघन ग्राम में स्थित है। महाभारत मे कुरुक्षेत्र भूमि के तीन तीर्थों को मातृशक्ति की प्रतीक देवी से सम्बन्धित बताया गया है जिनमें से एक यह शंखिनी देवी नामक तीर्थ है।

शंखिनीतीर्थमासाद्य तीर्थं सेवी कुरुद्वह।
देव्यारतीर्थं नरः स्नात्वा लभते रूपमुत्तमम्।

(महाभारत, वन पर्व, 83/51)

अर्थात् हे कौरव श्रेष्ठ ! तीर्थ परायण मनुष्य को शंखिनी तीर्थ में जाना चाहिए। देवी के उस तीर्थ में स्नान करने पर मनुष्य उत्तम रूप को प्राप्त करता है। ब्रह्म पुराण में भी सर्वतीर्थ महात्म्य नामक अध्याय में इस तीर्थ का स्पष्ट नामोल्लेख उपलब्ध होता है :

सूर्यतीर्थं शंखिनी च गवां भवनमेव च।

(ब्रह्म पुराण 25.37)

अन्तर मात्र इतना ही है कि महाभारत में शंखिनी तीर्थ का उल्लेख गवां भवन के पश्चात् किया गया है तथा ब्रह्म पुराण में इसका उल्लेख गवां भवन नामक तीर्थ से पहले किया गया है। ब्रह्मपुराण में वर्णित शंखिनी को ही वामन पुराण मे संगिनी कहा गया है। प्रचलित मान्यताओं के अनुसार इसी तीर्थ में शंखिनीदेवी ने महर्षि शृंगी की पूजा की थी और बेहद जख में तपस्या की थी।

इस तीर्थ के सेवन का पुण्य फल मात्र उत्तम रूप तक सीमित न रह कर अनन्त ऐश्वर्य प्रदाता तथा पुत्र–पौत्र आदि से समन्वित होकर विपुल भोगों का भोक्ता बना कर परम् पद की प्राप्ति करवाने वाला है।

इस तीर्थ पर एक विशाल सरोवर है। तीर्थ स्थित मन्दिर की भित्तियों पर मत्स्यावतार एवं रासलीला के प्रसंगों का चित्रण है।

76 गोभवन तीर्थ, गुहना

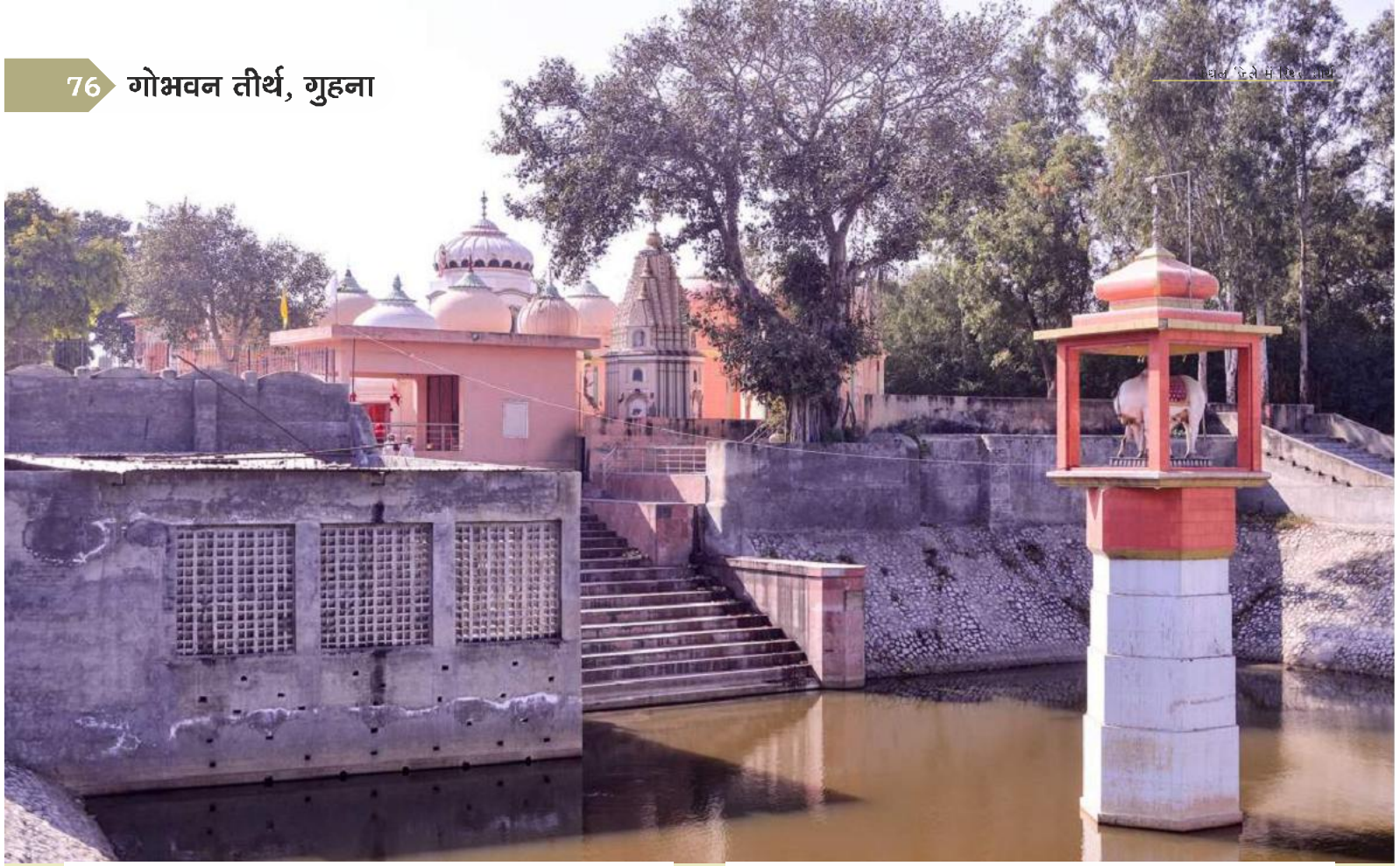

गोभवन तीर्थ, नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 23 कि.मी. दूर गुहणा ग्राम में स्थित है।

गुहणा में स्थित इस तीर्थ का वर्णन महाभारत तथा पद्म पुराण दोनों में किंचित शब्द परिवर्तन के साथ मिलता है। महाभारत तथा पद्म पुराण में यह तीर्थ गवां भवन के नाम से उल्लिखित है। सम्भवतः महाभारत एवं पद्म पुराण में गवां भवन नाम से वर्णित तीर्थ ही वर्तमान में अपभ्रंश होकर गोभवन के नाम से विख्यात हो गया होगा।

महाभारत में इस तीर्थ का महत्त्व इस प्रकार वर्णित है :

गवां भवनमासाद्य तीर्थसेवीयथाक्रमम्।
रात्राभिषेकं कुर्वाणा गोसहस्र फलं लभेत्।।

(महाभारत, वन पर्व 83/50)

अर्थात् तीर्थ सेवी मनुष्य को चाहिए कि वह गवांभवन तीर्थ में जाए। वहां पर स्नान करने वाले मनुष्य को गोसहस्र दान का फल प्राप्त होता है।

ब्रह्म पुराण में भी इस तीर्थ का स्पष्ट नामोल्लेख मिलता है :

लोकद्वारं पंचतीर्थं कपिलातीर्थमेव च।
सूर्यतीर्थं शंखिनी च गवां भवनमेव च।।

(ब्रह्म पुराण 25/38)

इस तीर्थ से सम्बन्धित प्रचलित जन–श्रुति के अनुसार यहाँ पर न्यालगिरि नागक एक महान तपस्वी थे जो तपश्चर्या के साथ–साथ गो सेवा भी करते थे। एक बार उन्हीं सन्त के समक्ष तालाब खुदाई करते समय एक मृतक गाय व बछड़ा निकले। गौ भक्त महात्मा उस गाय को जीवित करने की सदेच्छा से 360 तीर्थों पर उस मृतक गाय को लेकर भ्रमण करते रहे लेकिन गाय जिन्दा न हो सकी। उनकी इस अवस्था को देखकर भगवान साधु रूप में उनके समक्ष प्रकट हुए तथा उन्हें कहा कि आप इस गाय को वहीं ले जाकर स्नान कराएं तो इसका उद्धार होगा। तब बाबा न्यालगिरि उनका परामर्श मान पुनः उसी स्थान पर आए तथा उसे इसी तालाब में स्नान करवाने पर गाय पुनर्जीवित हो गई। इस तीर्थ में भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की षष्ठी को स्नान करना श्रेष्ठ समझा जाता है।

77 सूर्यकुण्ड, सजूमा

सूर्यकुण्ड नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 24 कि.मी. दूर सजूमा ग्राम के पश्चिम में स्थित है। यह तीर्थ कुरुक्षेत्र भूमि स्थित सूर्य कुण्ड तीर्थों में से एक है। कुरुक्षेत्र की भूमि सौर उपासना के लिए प्रसिद्ध रही है जिस कारण इस भूमि में अनेक सूर्य कुण्ड मिलते हैं जहाँ श्रद्धालु अमावस्या एवं सूर्य ग्रहण के अवसर पर स्नान करते आए हैं। तीर्थ पर लगभग 20 एकड़ क्षेत्र में विस्तृत एक सरोवर है जिसमें पुरुष एवं महिला घाटों का निर्माण किया गया है।

तीर्थ स्थित एक उत्तर मध्यकालीन मन्दिर की भित्तियों पर वानरपतिक अलंकरण के साथ साथ दुर्गा, मत्स्यावतार, वराह, हनुमान, भैरव, गोपियों के मध्य कृष्ण, कालनेमि को मारते हुए हनुमान, गीता उपदेश, हनुमान पर तीर छोड़ते भरत आदि प्रसंगों का चित्रण है।

78 ब्रह्मोदुम्बर तीर्थ, शीलाखेड़ी

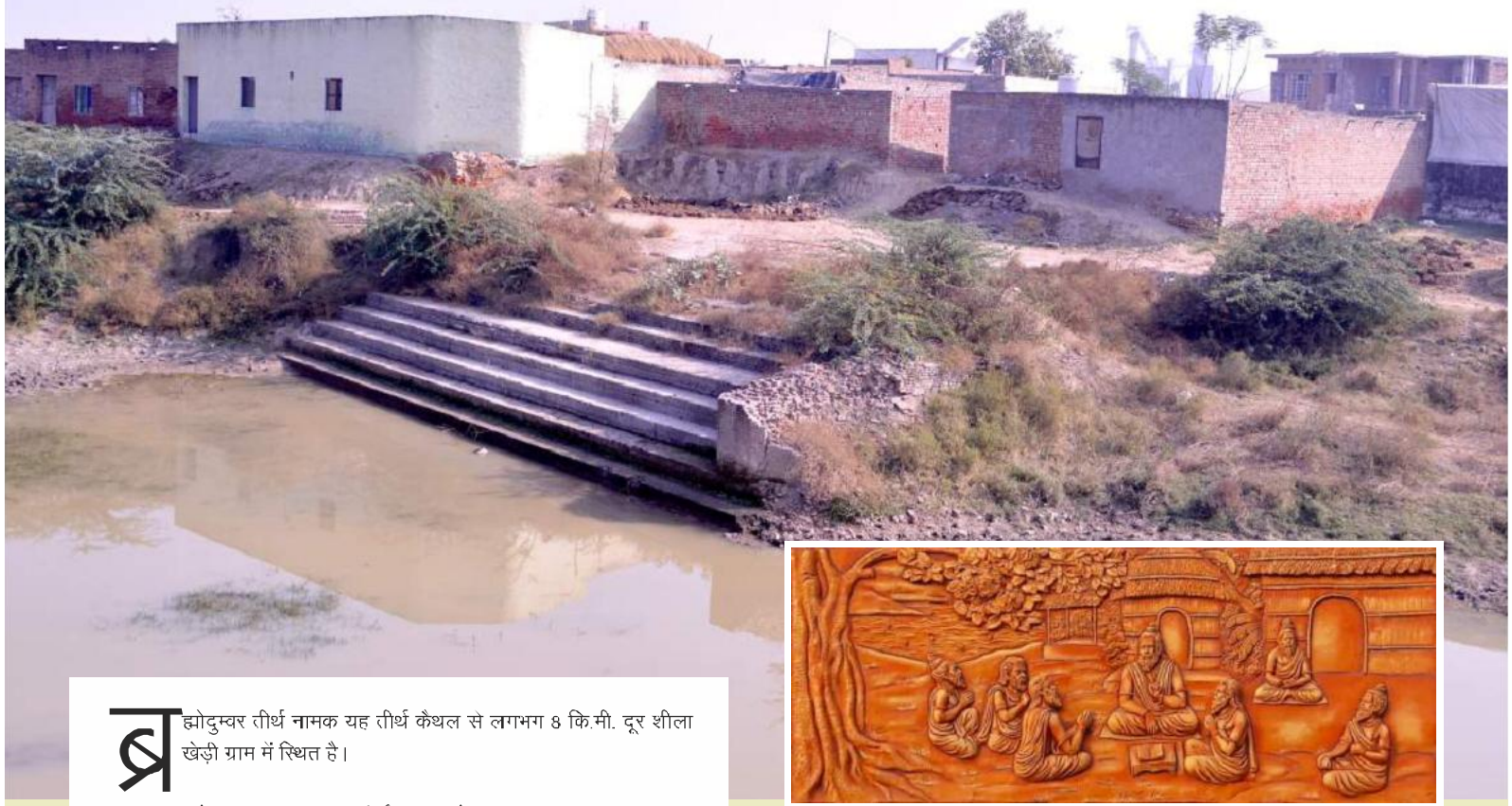

ब्रह्मोदुम्बर तीर्थ नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 8 कि.मी. दूर शीला खेड़ी ग्राम में स्थित है।

ब्रह्मोदुम्बर नामक उक्त तीर्थ का उल्लेख महाभारत एवं वामन पुराण दोनों में मिलता है। महाभारत के वन पर्व में इस तीर्थ का वर्णन निम्नवत है :

तत्तागच्छत् राजेन्द्र ब्रह्मणः स्थानमुत्तमम्।
ब्रह्मोदुम्बरमित्येव प्रकाशं भुविगारत।

(महाभारत, वन पर्व 83/71)

अर्थात् हे राजेन्द्र ! तत्पश्चात् ब्रह्मा जी के उत्तम स्थान को जाना चाहिए जो कि पृथ्वी पर ब्रह्मोदुम्बर के नाम से विख्यात है।

इसी तीर्थ के महात्म्य विस्तार में आगे लिखा है कि उस तीर्थ में स्थित सप्तर्षि (गारद्वाज, गोतग, जगदग्नि, कश्यप, विश्वागित्र, वशिष्ठ एवं गहर्षि अत्रि) कुण्डों में स्नान करने से मनुष्य ब्रह्मा के लोक को प्राप्त करता है।

वामन पुराण में इस तीर्थ के ब्रह्मा जी द्वारा सेवित होने स ही ब्रह्मोदुम्बर की संज्ञा दी गई है। इसी पुराण के अनुसार इस तीर्थ में स्नान करने वाला गनुष्य ब्रहालोक को प्राप्त करता है।

वामन पुराण के काल में इस तीर्थ का महत्त्व अपने चरम शिखर पर पहुँच चुका था।।

तीर्थ सरोवर के चारों ओर भृगु, अत्रि, अंगिरा, वशिष्ठ, पुलस्त्य, पुलह, मारिचि आदि सप्तर्षि गण

तस्मिंस्तीर्थवरे स्नातो ब्रह्मणो अव्यक्त जन्मनः।
ब्रह्मलोकमवाप्नोति नात्र कार्य विचारणा।।
देवान् पितृन् समुद्दिश्य यो विप्रं भोजयिष्यति।
पितररतरय रुखिता दारयन्ति भुवि दुर्लभम्।।
सप्तर्षिश्च समुद्दिश्य पृथक् स्नानं समाचरेत्।
ऋषीणां च प्रसादन सप्तालोकाधिपो भवेत्।।

(नागन पुराण 36/11–13)

अर्थात् जो व्यक्ति इस तीर्थ में देवताओं एवं पितरों को ध्यान में रखते हुए ब्राह्मणों को भोजन करवाएगा उराके पितर प्रसान्न होकर उरो दुर्लभ वरतुएं प्रदान करेंगे। सप्तर्षियों का ध्यान करते हुए जो पृथक् स्नान करेग। वह ऋषियों के प्रसाद से सात लोकों का स्वामी होगा।

सरोवर से लगते हुए टीले से प्राप्त मृद्–पात्रों से प्रतीत होता है कि यह स्थान कुषाण काल (प्रथम शती) का है।

79 मानुष तीर्थ, मानस

मानुष नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 12 कि.मी. दूर मानस ग्राम में स्थित है। कुरुक्षेत्र भूमि में स्थित इस तीर्थ की प्राचीनता ऋग्वेद में इसका वर्णन मिलने से स्वतः सिद्ध हो जाती है । वैदिक काल में ऋषियों ने इसी पवित्र तीर्थ पर अग्नि को स्थापित किया था। यह वर्णन ऋग्वद के प्रथम मण्डल के 128 वें सूक्त के सातवें श्लोक में मिलता है।

वामन पुराण तथा स्कन्दपुराण में इस तीर्थ का नाम एवं महत्त्व वर्णित है :

ततो गच्छेत् राजेन्द्र मानुषं लोकविश्रुतम्।
यत्र कृष्णमृगा राजन् व्याधेन शरपीड़िता।।
विगत्य तस्मिन् सरसि मानुषत्वमुपागता :।
तस्मिन् तीर्थे नरः स्नात्वा ब्रह्मचारी समाहिता :।।
सर्वपापविशुद्धात्मा स्वर्गलोके महीयते।

(महाभारत, वन पर्व, 83/65-67)

उपरोक्त श्लोक से स्पष्ट है कि इस सरोवर में स्नान करन से व्याध के बाण से आहत मृग चूंकि मानुष शरीर पा गए थे, इसी से इस तीर्थ का नाम मानुष तीर्थ हुआ। वहां ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए एकाग्र चित्त होकर स्नान करने वाला मनुष्य पापमुक्त होकर स्वर्ग लोक में प्रतिष्ठित होता है।

वामन पुराण में तथा स्कन्दपुराण में भी महाभारत के समान ही इस तीर्थ की उत्पत्ति बताई है। वामन पुराण के अनुसार पूर्वकाल में शिकारियों के बाण से विद्ध कृष्ण मृग इसी सरोवर में स्नान कर मनुष्यत्व को प्राप्त हुए थे । मृगों की खोज करते व्याधों ने जब सरोवर पर स्थित श्रेष्ठ द्विजों से मृगों के विषय में यह प्रश्न किया कि हम लोगों के बाणों से पीड़ित इस मार्ग से जाते हुए वे काले मृग सरोवर से कहाँ चले गए तो उन द्विजोत्तमों ने उत्तर दिया कि हम द्विजोत्तम ही वे कृष्ण मृग थे। इस तीर्थ क धार्मिक महात्म्य से ही हम सब मनुष्य बन गए हैं। अतएव मत्सर–ईर्ष्यादि से मुक्त होकर श्रद्धायुक्त चित्त से इस तीर्थ में स्नान करने पर तुम सब भी समस्त पापों से मुक्त हो जाओगे :

उन ब्राह्मणों के उपरोक्त वचन सुनकर वे सभी व्याध भी उस में स्नान कर शुद्ध देह होकर स्वर्ग चले गए।

इस मानुष तीर्थ का महात्म्य इतना अधिक है कि इसका श्रवण मात्र करने वाला व्यक्ति भी परमगति को प्राप्त करता है तथा इस तीर्थ का दर्शन करने पर समस्त पापों से छूट जाता है :

80 आपगा तीर्थ, गादली

आपगा नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 8 कि.मी. दूर गादली ग्राम में स्थित है। प्राचीन काल में यह तीर्थ सरस्वती की सहायक आपगा नदी पर स्थित था। महाभारत तथा वामन पुराण दोनों में ही 'आपगा' नाम से वर्णित यह पवित्र नदी निःसन्देह ऋग्वैदिक काल की आपगा नदी ही है। ऋग्वेद में इसका वर्णन उपलब्ध होने से इसकी प्राचीनता स्वयंमेव सिद्ध हो जाती है । महाभारत एवं वामन पुराण में इसे मानुष तीर्थ के पूर्व में कोश मात्र की दूरी पर स्थित कहा गया है।

मानुषस्य तु पूर्वेण क्रोशमात्र महीपते।
आपगा नाम विख्याता नदी सिद्धनिसेविताः।

(महाभारत वन पर्व 83/67/88)

महाभारत में इस तीर्थ के धार्मिक महत्त्व के विषय में यह उल्लेख है कि इस तीर्थ में जो व्यक्ति एक ब्राह्मण को भोजन करवाता है वह करोड़ों ब्राह्मणों को भोजन करवाने के समान है। इस तीर्थ में स्नान कर देवताओं एवं पितरों की पूजा अर्चना कर यहाँ एक रात निवारा करने से मनुष्य को अग्निष्टोम यज्ञ का फल प्राप्त होता है। जो व्यक्ति यहाँ देवताओं एवं पितरों को उद्दिश्य करके श्यामक का भोजन करवाते हैं वे महान पुण्य के भागी बनते हैं।

ये तु श्राद्धं करिष्यन्ति प्राप्य तामपगां नदीम्।
ते सर्वकामसंयुक्ता भविष्यन्ति न संशयं :।
शंसन्ति सर्वे पितरः स्मरन्ति च पितामहाः।
अस्माकं च कुले पुत्र पौत्रो वापि भविष्यति।
य आपगां नदीं गत्वा तिलैः संतर्पयिष्यति।
तेन तृप्ता भविष्यामो यावत्कल्पशतं गतम्।

(वामन पुराण 36/3–5)

अर्थात् आपगा नदी के तट पर श्राद्ध करने वाले मनुष्य निःसन्देह सर्व कामनाओं से पूर्ण हो जाएंगे। सभी पितर कहते हैं तथा पितामह स्मरण करते हैं कि हमारे कुल में कोई ऐसा पुत्र या पौत्र उत्पन्न होगा जो आपगा के पवित्र तट पर तिलों से तर्पण कर हमें अनन्त काल तक तृप्त करेगा। वामन पुराण में कहा गया है कि भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को मध्याह्न काल में यहाँ पिण्डदान करने वाला मनुष्य मोक्षपद को प्राप्त करता है।

81 कपिलमुनि तीर्थ, कलायत

कपिलमुनि नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 26 कि.मी. दूर कलायत नामक कस्बे में स्थित है जिसका उल्लेख महाभारत, वामन पुराण, मत्स्य पुराण, ब्रह्म पुराण, कूर्म पुराण तथा पद्म पुराण में मिलता है।

महाभारत वन पर्व में इसका महत्त्व इस प्रकार वर्णित है।

कपिलानां तीर्थमासाद्य ब्रह्मचारी समाहितः।
तत्र स्नात्वाऽर्चयित्वा च पितॄन्स्वान्दैवतान्यपि।
कपिलानां सहस्रस्य फलं विन्दतिमानवः।

(महाभारत, वन पर्व 83/47–48)

अर्थात् ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने वाले एवं श्रद्धायुक्त चित्त से कपिल तीर्थ में स्नान करके देवताओं एवं पितरों की पूजा अर्चना करने वाले व्यक्ति को सहस्र गऊओं के दान का फल प्राप्त होता है।
वामन पुराण में इस तीर्थ को भगवान शिव से सम्बन्धित बताया गया है :

तत्र स्थितं महादेवं कापिलं वपुरास्थितम्।
दृष्ट्वा मुक्तिमवाप्नोति ऋषिभिः पूजितं शिवम्।

(वामन पुराण 35/25–26)

अर्थात् इस तीर्थ में स्थित ऋषियों से पूजित कपिल शरीरधारी महादेव शिव का दर्शन करने वाला व्यक्ति मोक्ष पद का अधिकारी होता है। मत्स्य पुराण में भी इस तीर्थ को कपिला की संज्ञा देते हुए मार्कण्डेय ऋषि युधिष्ठिर को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि हे राजेन्द्र ! तदनन्तर उत्तम कपिल नामक तीर्थ की यात्रा करनी चाहिए। वहाँ स्नान करने से मनुष्य कपिला गऊ के दान का फल प्राप्त करता है। कूर्म पुराण में भी उत्तम तीर्थों में इसकी गणना की गई है। ब्रह्म पुराण के अनुसार कापिल तीर्थ में इन्द्रिय संयम पूर्वक स्नान करते हुए देवताओं को प्रणाम करने वाला व्यक्ति सब पापों से रहित हो, उत्तम विमान में

माता देवाहुति को सांख्य शास्त्र का उपदेश देते हुए कपिल मुनि

स्थित होकर, गन्धर्वों से पूजित होकर ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है।

लोक प्रचलित परम्परा इसे कपिल मुनि से सम्बन्धित मानती है जो सांख्य दर्शन के प्रणेता के रूप में प्रसिद्ध हैं। भागवत पुराण के तृतीय स्कन्ध के अनुसार कर्दम प्रजापति का देहावसान हो जाने पर उनकी धर्मपत्नी देवाहुति अपने पुत्र कपिल के पास पहुँचकर उनसे भक्ति योग के मार्ग के विषय में पूछने लगी, तब कपिल मुनि ने अध्यात्मज्ञान देकर उन्हें मोक्ष के लिए भक्ति मार्ग का अनुसरण करने की प्रेरणा दी। तत्पश्चात् वह तपोमय जीवन व्यतीत कर मोक्ष को प्राप्त हुई। इस प्रकार कपिल मुनि से सम्बन्धित होने से ही इस तीर्थ का नाम कपिल पड़ा। यहाँ पर प्रत्येक मास की पूर्णिमा को तथा कार्तिक मास की पूर्णिमा को विशेष मेला लगता है जिसमें दूर–दूर से भक्तजन यहाँ आते हैं।

तीर्थ स्थित मन्दिर के गर्भगृह में प्रतिष्ठित महिषासुर मर्दिनी तथा गणेश की प्रतिमाएं 10–11 शती ई. की हैं। इसी मन्दिर की भित्तियों पर अनेक भित्ति चित्र बने हैं। तीर्थ परिसर में ही 7वी. शती ई. के दो ईंटों से निर्मित मन्दिर हैं जो भारत के विरल मन्दिरों में गिने जाते हैं।

82 मुकुटेश्वर तीर्थ, मटोर

मुकुटेश्वर नामक यह कैथल से लगभग 32 कि.मी. दूर मटोर ग्राम के मध्य में स्थित है।

प्रचलित किंवदन्ती इस तीर्थ का सम्बन्ध महर्षि मार्कण्डेय से जोड़ती है जिसके अनुसार महर्षि मार्कण्डेय का जन्म इसी स्थान पर हुआ था। विभिन्न पुराणों में मार्कण्डेय ऋषि एवं मार्कण्डेय तीर्थ दोनों ही का वर्णन मिलता है।

मार्कण्डेय के जन्म के विषय में यह पौराणिक कथा है कि इनके पिता मृकण्डु के दीर्घ काल तक कोई पुत्र न हुआ तो उन्होंने पुत्र प्राप्ति के लिए भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए दीर्घ काल तक कठोर तप किया। अन्ततः प्रसन्न हुए शिव ने इन्हें एक गुणवान, यशस्वी एवं मनस्वी परन्तु अल्पायु वाले पुत्र के पिता होने का वर दिया। तब उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जो मार्कण्डेय कहलाए। शैशवावस्था में ही उन्होंने सम्पूर्ण विद्याओं में निपुणता प्राप्त की। शिव की कृपा से इन्हें 16 वर्ष की आयु का वरदान मिला था। एक बार अपने माता–पिता को रोता हुआ देखकर तथा उनके दुख का कारण स्वयं को समझ कर इन्होंने भगवान शिव को प्रसन्न करने हेतु उग्र तप करना प्रारम्भ कर दिया। अन्ततः इनकी मृत्यु का दिन आने पर यम ने अपने दूतों को इन्हें लाने के लिए भेजा लेकिन यम के दूत इनके तपोबल के प्रभाव से इनके समीप न जा सके। विवश होकर यम स्वयं इन्हें लेने आए। उस समय मार्कण्डेय भक्तिभाव से विह्वल होकर उस शिवलिंग से लिपट कर अपने जीवनरक्षा की प्रार्थना करने

यमराज से मार्कण्डेय की रक्षा करते हुए भगवान शिव

लगे। यम ने शिवलिंग व मार्कण्डेय को बाँधने के लिए एक पाशा फैंका। उसी समय भगवान शिव स्वयं उस लिंग से उत्पन्न हुए तथा उन्होंने यम को मार गिराया। पुनश्च देवताओं द्वारा आग्रह किए जाने पर भगवान शिव ने यम का पुनः जीवन प्रदान किया। मृत्यु पर विजय से ही शिव मृत्युंजय नाम से भी प्रसिद्ध हुए।

इस तीर्थ पर सूर्यग्रहण के अवसर पर लोग दूर दूर से स्नान के लिए पहुँचते हैं तथा यहाँ रहकर वे अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते हैं।

तीर्थ सरोवर के पश्चिम में एक उत्तर मध्यकालीन हवेलीनुमा भवन है जिसकी बाह्य भित्तियों पर सुन्दर वानस्पतिक अलंकरण के साथ–साथ धार्मिक प्रसंगों का भी चित्रण है।

83 खट्वांगेश्वर तीर्थ, खडालवा

खट्वांगेश्वर नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 34 कि.मी. दूर खडालवा ग्राम के एक प्राचीन टीले पर स्थित है।

प्रचलित जनश्रुति इस तीर्थ का सम्बन्ध महाराज खण्डेश्वर से जोड़ती है। कहा जाता है कि एक बार महाराज खण्डेश्वर भ्रमण करते हुए यहाँ पहुँचे। उन्होंने इस स्थान पर चारों ओर घने जंगल को देखा। खण्डेश्वर भगवान शिव के अनन्य उपासक थे। रात्रि को विश्राम कर सुबह उन्होंने भगवान शिव की अर्चना की। यहाँ पर उन्हें शिवलिंग के दर्शन हुए। तब राजा खण्डेश्वर ने इस स्थान को आबाद करने की इच्छा से खण्डालवा नाम का एक गाँव बसाया। यहाँ पर निर्मित भव्य शिव मन्दिर में प्रत्येक वर्ष श्रावण मास की शिवरात्रि को मेला लगता है।

मन्दिर के पूर्व में अष्टकोण बुर्जी वाला एक घाट है तथा एक छोटा सा सरोवर है जो कि पहले वाले सरोवर से पूर्व में जुड़ा रहा होगा।

इस तीर्थ के पश्चिम में खंडवागेश्वर मन्दिर है। मन्दिर में एक स्वंभू पाषाण का बृहदाकार शिवलिंग है जिसकी ऊंचाई लगभग 2 फुट है। तीर्थ परिसर से मिली ईंटों एवं मृद-पात्रों के आधार पर इस स्थल की प्राचीनता पहली शती ई. तक सिद्ध होती है।

84 भूतेश्वर तीर्थ, जीन्द

नव भूतेश्वर तीर्थ (रानी तालाब)

प्राचीन भूतेश्वर तीर्थ

भूतेश्वर नामक यह तीर्थ जीन्द शहर के मध्य में स्थित है जिसका नाम जींद नगर के आदि देव भूतेश्वर अर्थात् भगवान शंकर के नाम पर पड़ा प्रतीत होता है। महाभारत में वन पर्व के अन्तर्गत कुरुक्षेत्र में स्थित तीर्थों की शृंखला में इस तीर्थ का वर्णन जयन्ती तीर्थ के नाम से मिलता है, लेकिन वामन पुराण में सोम तीर्थ के पश्चात् इस तीर्थ का महत्त्व भूतेश्वर ज्वालामालेश्वर के नाम से वर्णित है। महाभारत में इसे सरस्वती के तट पर स्थित एक तीर्थ बताया गया है जिसमें स्नान करके मनुष्य राजसूय यज्ञ का फल प्राप्त करता है।

इस तीर्थ के विषय में दो अलग–अलग मत प्रचलित हैं। एक मतानुसार महाराजा जींद द्वारा निर्मित मन्दिर ही वास्तविक भूतेश्वर ज्वालामालेश्वर तीर्थ है जबकि दूसरे मतानुसार अपराही मोहल्ले में स्थित भूतेश्वर मन्दिर ही वास्तविक प्राचीन तीर्थ है। विकास की दृष्टि से महाराजा द्वारा निर्मित मन्दिर भव्य एवं विशाल स्वरूप ग्रहण कर चुका है।

महाराजा द्वारा निर्मित मन्दिर जींद शहर के मध्य में स्थित है। अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर की भांति इस तीर्थ में स्थित मन्दिर भी सरोवर क मध्य एक अटूट एवं भव्य स्मारक की तरह सुशोभित है। मन्दिर के निर्माण के विषय में यह धारणा प्रचलित है कि जींद के तत्कालीन महाराजा रघुबीर सिंह ने इसे सन् 1857 ई॰ में बनवाया था। जनश्रुति के अनुसार महाराजा रघुबीर सिंह एक बार स्वर्ण मन्दिर को देखने के लिए अमृतसर गए जहाँ पर भारी भीड़ होने के कारण उन्हें दर्शन के लिए काफी प्रतीक्षा करनी पड़ी। तत्पश्चात् उन्होंने स्वर्ण मन्दिर जैसा ही एक मन्दिर अपने नगर में बनवाने का संकल्प लिया तथा नगर में आने पर इस संकल्प का मूर्त रूप दिया। इस मन्दिर का सरोवर रानी तालाब कहलाता हैं क्योंकि राजमहल से तालाब तक सुरंग के माध्यम से रानियाँ स्नान एवं पूजा करने के लिए यहाँ आया करती थीं।

इस मन्दिर से लगभग एक कि.मी. की दूरी पर प्राचीन भूतेश्वर ज्वालामालेश्वर मन्दिर सफीदों गेट पर अपराही मोहल्ले में स्थित है। जनसाधारण इसी मन्दिर को वास्तविक भूतेश्वर ज्वालामालेश्वर तीर्थ मानते है जिसका उल्लेख वामन पुराण में मिलता है। ऐसा मत है कि इस मन्दिर में स्थापित शिवलिंग स्वयंभू है और यहाँ पर भगवान महादेव स्वयं प्रकट हुए थे।

वामन पुराण के अनुसार भूतेश्वर एवं ज्वालामालेश्वर नाम के इन दोनों लिंगों की पूजा करने वाला मनुष्य पुनर्जन्म ग्रहण नहीं करता। यहाँ पर श्रावण व फाल्गुन मास की महाशिवरात्रि को विशाल मेलों का आयोजन होता है।

85 एकहंस तीर्थ, इक्कस

एक हंस नामक यह तीर्थ जीन्द से लगभग 7 कि.मी. दूर इक्कस ग्राम के पूर्व मे स्थित है। महाभारत एवं वामन पुराण में एकहंरा नाम से वर्णित तीर्थ ही सम्भवतः अपभ्रंश होकर कालान्तर में इक्कस नाम से विख्यात हुआ।

इस तीर्थ का उल्लेख महाभारत, वामन पुराण तथा पद्म पुराण में हुआ है। लोक प्रचलित मान्यता के अनुसार भगवान विष्णु का हंसावतार इस स्थान पर हुआ था। इसका धार्मिक महात्म्य भी महाभारत, वामन एवं पद्म पुराण में बिल्कुल एक जैसा ही है। महाभारत में इसका महत्त्व इस प्रकार वर्णित है :

एकहंसे नरः स्नात्वा गो सहस्र फलं लभेत्।

(महाभारत वन पर्व 83/20)

अर्थात् एकहंस नामक तीर्थ में स्नान करने वाला व्यक्ति सहस्रों गऊओं के दान का फल प्राप्त करता है।

गाँव के पूर्व में एक सरोवर स्थित है जो लोकप्रचलित भाषा में ढूंढू तालाब के नाम से विख्यात है। जनश्रुति के अनुसार महाभारत युद्ध के अंत में दुर्योधन ने इसी सरोवर में आश्रय लिया था। तत्पश्चात् पांचो पाण्डव एवं श्रीकृष्ण दुर्याधन को ढूंढते हुए यहाँ पहुँच। सम्भवतः इसी कारण जनसाधारण

की भाषा में इस तालाब का नाम ढूंढू पड़ गया। इसी स्थान पर श्रीकृष्ण के संकेत पर भीम ने दुर्योधन की जंघा पर गदा प्रहार करके उसका वध किया था। लौकिक मान्यताओं के अनुसार इस तीर्थ पर चार रविवारों को निरन्तर स्नान करने पर व्यक्ति की प्रत्येक मनोकामना पूर्ण होती है।

सरोवर के घाटों से प्राप्त उत्तर–गुप्तकालीन ईंटों तथा खण्डित मूर्तियों के अवशेषों से यह प्रतीत होता है कि यह तीर्थ पूर्व मध्यकाल से सम्बन्धित हैं।

86 रामह्रद तीर्थ, रामराय

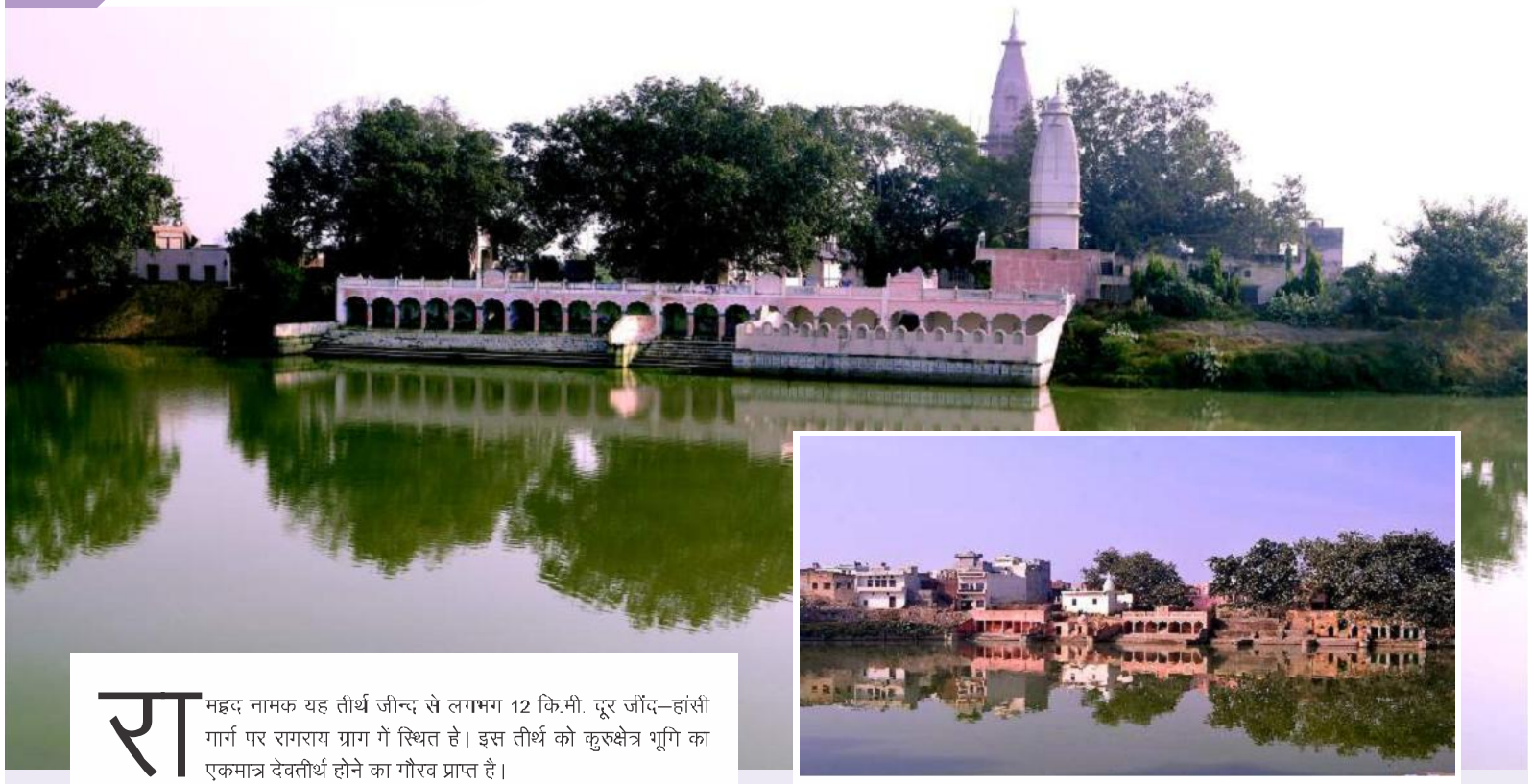

रामह्रद नामक यह तीर्थ जीन्द से लगभग 12 कि.मी. दूर जींद–हांसी मार्ग पर रामराय ग्राम में स्थित है। इस तीर्थ को कुरुक्षेत्र भूमि का एकमात्र देवतीर्थ होने का गौरव प्राप्त है।

यह पवित्र स्थल महर्षि जमदग्नि के पुत्र महर्षि परशुराम से सम्बन्धित है, जिनकी गणना भगवान विष्णु के दस अवतारों में होती है। महर्षि परशुराम ने आततायी व अत्याचारी क्षत्रियों के अन्यायपूर्ण व्यवहार से क्रोधित होकर क्षत्रियों का विनाश कर उनके रक्त से इस स्थल पर पाँच सरोवरों को भर दिया था। महाभारत में इस कथा का वर्णन आता है

ततो रामह्रदानागंच्छेत्तीर्थसेवी समाहितः।
तत्र रामेण राजेन्द्र तरसा दीप्ततेजसा।।
क्षत्रमुत्साद्य वीरेण ह्रदाः पंच निवेशिताः।
पूरयित्वा नरव्याघ्र रुधिरेणेति विश्रुतम्।।

(महाभारत, वन पर्व 83/25, 27)

त्रेतायुग की समाप्ति एवं द्वापर युग का प्रारम्भ होने पर महर्षि परशुराम ने क्रोधित होकर क्षत्रियों का विनाश कर समन्त पंचक नामक क्षेत्र में उनके रक्त से पांच सरोवरों (रामह्रद, सन्निहित, सूर्य, कल्याणी, गोविन्द) का निर्माण कर उन्हीं सरोवरों में रक्ताँजलि द्वारा अपने पितरों का तर्पण किया तब उनके पितरों ने प्रसन्न होकर उनसे वर माँगने को कहा। तब परशुराम जी ने आकाश में स्थित अपने उन पितरों को देखकर अंजलिबद्ध होकर कहा कि हे पितरो! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो क्रोधावेश में किये हुए क्षत्रियों के विनाश रूपी कृत्य के जघन्य पाप से मुझे मुक्त करें तथा मेरे द्वारा निर्मित ये ह्रद संसार में तीर्थ रूप में प्रसिद्ध हो जाएं। प्रसन्न हुए पितरों ने उन्हें उनका मनोनुकूल वर प्रदान किया। उनके पितरों ने कहा

ह्रदेष्वेतेषु यः स्नात्वा पितॄन्सन्तर्पयिष्यति।
पितरस्तस्य वै प्रीताः दारयन्ति भुवि दुर्लभम्।

(महाभारत, वन पर्व 83/31)

अर्थात् जो भी व्यक्ति इन सरोवरों में स्नान करके श्रद्धायुक्त चित्त से पितरों का तर्पण करेगा, उसके पितर उससे संतुष्ट होकर उसे संसार में दुर्लभ पदार्थ प्रदान करेंगे एवं उसे स्वर्ग की प्राप्ति होगी। इस प्रकार का वरदान देकर पितरों ने भृगुवंशीय परशुराम का अभिनन्दन किया।

इसी तीर्थ के महात्म्य के विषय में कहा गया कि ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए तथा पवित्र एवं श्रद्धायुक्त चित्त से इन सरोवरों में स्नान करने वाला व्यक्ति अधिक सुवर्ण (अपार धन वैभव) को प्राप्त करता है।

वर्तमान में इस तीर्थ में कपिल, यक्ष, यक्षिणी तथा महर्षि परशुराम के मन्दिर बने हुए हैं। यहां वैशाख, श्रावण तथा कार्तिक मास की पूर्णिमा का मेला लगता है।

87 सन्निहित तीर्थ, रामराय

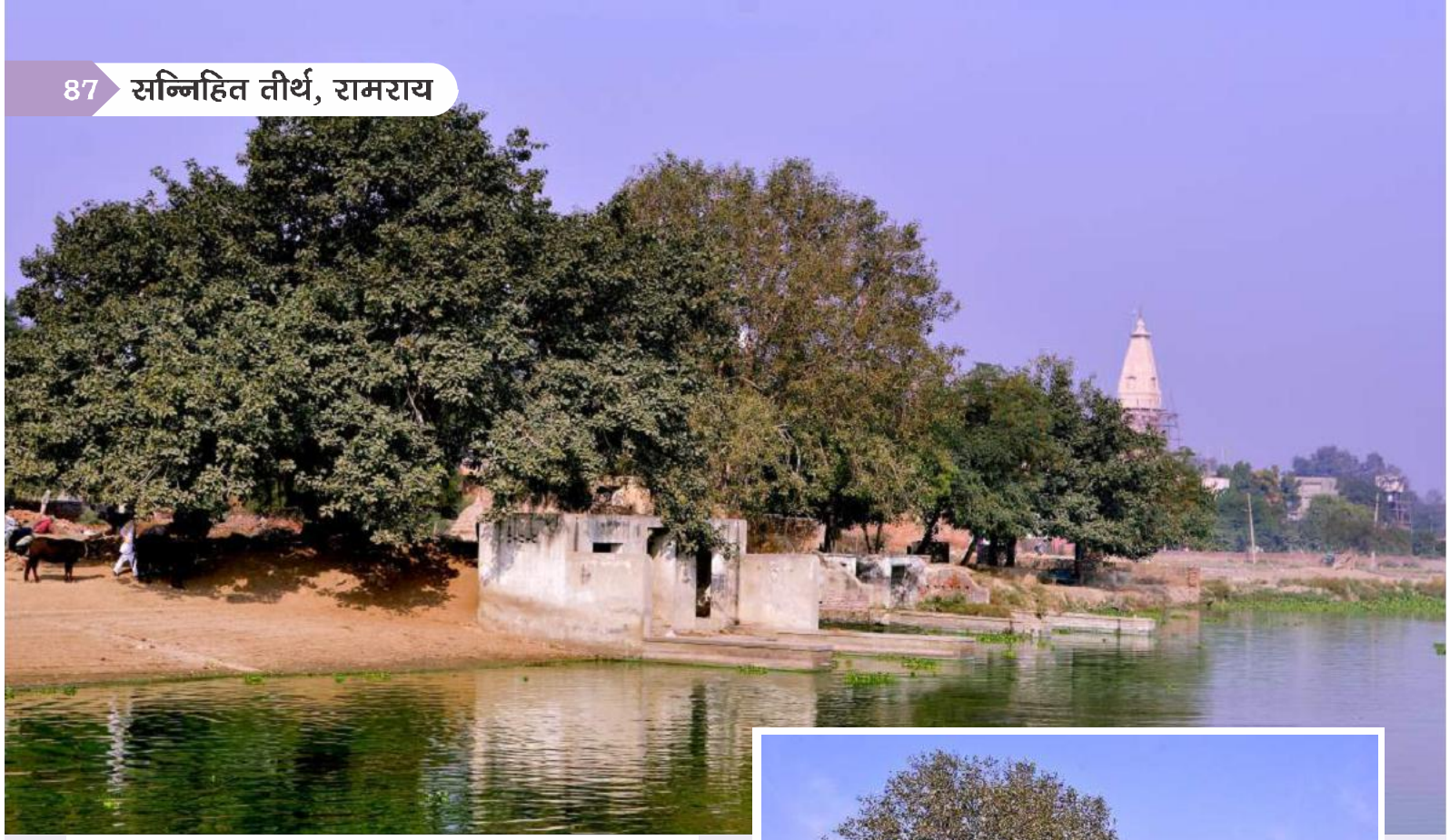

सन्निहित नामक यह तीर्थ जींद से लगभग 11 कि.मी. दूर जींद–हांसी मार्ग पर रामराय ग्राम में स्थित है। कहा जाता है कि प्रत्येक मास की अमावस्या को पृथ्वी के सभी तीर्थ यहाँ एकत्रित होते हैं। तीर्थों का संगम होने से ही इस तीर्थ का नाम सन्निहित पड़ा।

इस तीर्थ का नामोल्लेख एवं महत्त्व वामन पुराण तथा महाभारत में विस्तार से वर्णित है। इस तीर्थ में सूर्यग्रहण के अवसर पर दान पुण्य करने का विशेष महत्त्व है।

भागवत पुराण में वर्णन है कि एक बार सूर्यग्रहण के अवसर पर विभिन्न स्थानों से राजा लोग, द्वारिका से श्रीकृष्ण एवं बलराम समस्त प्रमुख यादवों सहित समन्तपंचक नामक उस क्षेत्र में पहुँचे जहाँ शस्त्रधारी भृगुवंशीय महर्षि परशुराम ने पृथ्वी को क्षत्रिय विहीन करते हुए उनके रक्त से पाँच सरोवर बनाए थे। समन्तपंचक नामक इस क्षेत्र में सूर्यग्रहण के पर्व पर सन्निहित तीर्थ में व्रत एवं स्नानादि करके श्रीकृष्ण, बलराम तथा अन्य प्रमुख यादवों ने पुष्प, स्वर्ण आभूषणों एवं मालाओं आदि से सुसज्जित गौएं ब्राह्मणों को दान में दी।

प्रचलित विश्वास के अनुसार प्राचीन सन्निहित सरोवर यहाँ रामह्रद में है, लेकिन बाद में इस सरोवर की मिट्टी से कुरुक्षेत्र में सन्निहित तीर्थ को बनाया गया। महाभारत में इस तीर्थ के महत्त्व के विषय में लिखा है कि सूर्यग्रहण के अवसर पर इस तीर्थ का स्पर्श मात्र कर लेने से सौकड़ों अश्वमेध यज्ञों के फल की प्राप्ति होती है।

88 पुष्कर तीर्थ/कपिल यक्ष, पोंकरी खेड़ी

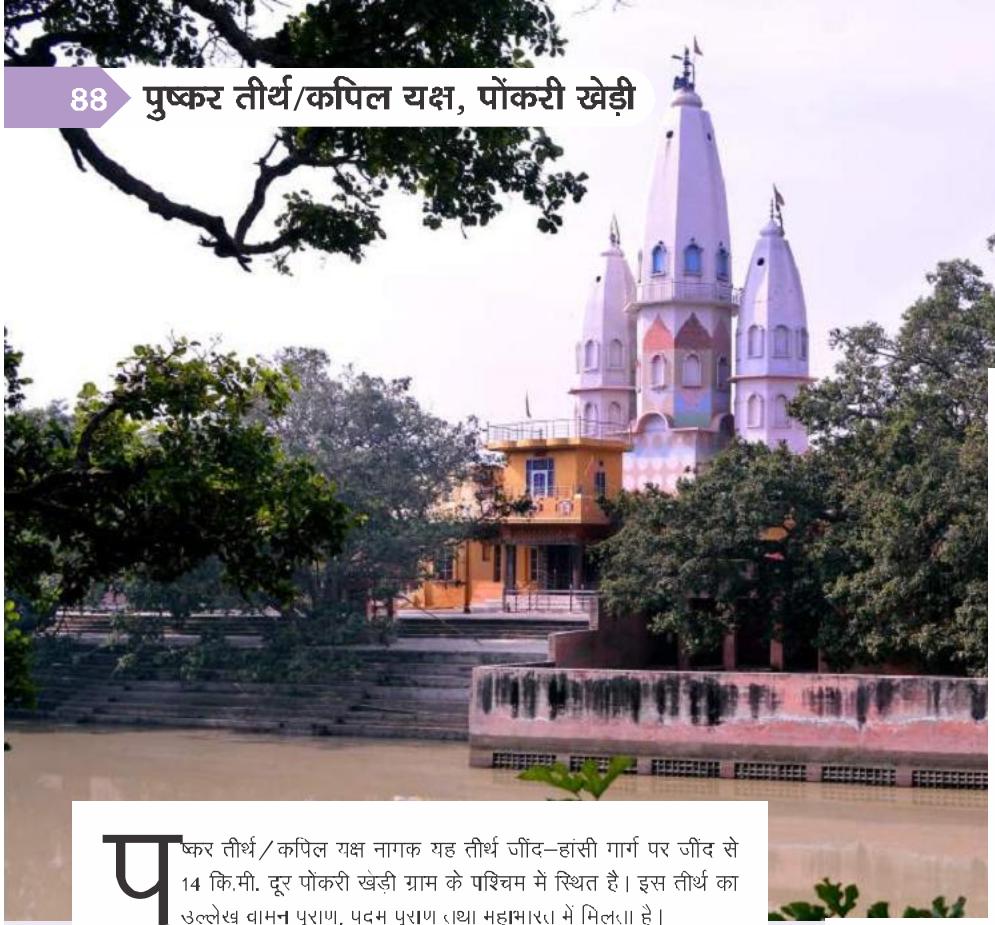

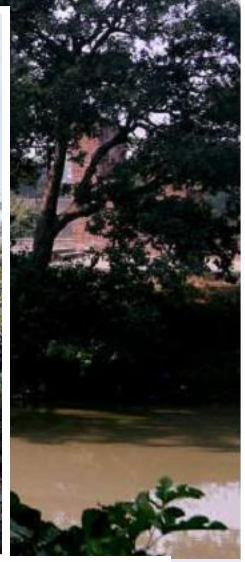

पुष्कर तीर्थ/कपिल यक्ष नामक यह तीर्थ जींद–हांसी मार्ग पर जींद से 14 कि.मी. दूर पोंकरी खेड़ी ग्राम के पश्चिम में स्थित है। इस तीर्थ का उल्लेख वामन पुराण, पद्म पुराण तथा महाभारत में मिलता है।

वामन पुराण में इस तीर्थ के निर्माता महर्षि परशुराम को बताया गया है जिसका महत्त्व वामन पुराण में इस प्रकार वर्णित है

पुष्करं च ततो गत्वा अभ्यर्च्य पितृदेवताः।
जामदग्न्येन रामेण आहृतं तन्महात्मना।।
कृतकृत्यो भवेद् राजा अश्वमेधं च विन्दति।

(वामन पुराण 34/11,12)

अर्थात् महर्षि परशुराम द्वारा निर्मित पुष्कर तीर्थ में जाने से मनुष्य के सम्पूर्ण मनोरथ सफल हो जाते हैं तथा यदि कोई राजा इस तीर्थ का सेवन करता है तो उसे अश्वमेघ यज्ञ का फल प्राप्त होता है। कार्तिक की पूर्णिमा को जो मनुष्य इस तीर्थ में कन्या का दान करता है, देवता उस पर प्रसन्न होकर उसे अभिलषित वर प्रदान करते हैं।

दन्त कथाओं के अनुसार महर्षि जमदग्नि की पत्नी रेणुका नित्य पुष्कर तीर्थ के जल से स्नान करके ऋषि के लिए जल लाती थी। एक बार जब रेणुका पुष्कर तीर्थ से जल ला रही थी तब सहस्रबाहु ने उनकी मटकी को तीर मारकर तोड़ दिया। देरी से पहुंचने पर रेणुका ने जामदग्नि ऋषि को देरी का कारण बताया। ऋषि ने कहा कि अगर यह सत्य है तो जिस स्थान पर पानी की मटकी टूटी वहीं पुष्कर तीर्थ बन जायेगा। तभी से यहां पर पुष्कर तीर्थ बन गया।

महाभारत के अनुसार पुष्करों के संगम इस तीर्थ में स्नान करने वाला तथा पितरों की अर्चना करने वाला व्यक्ति अश्वमेघ यज्ञ के फल को प्राप्त करता है।

महाभारत तथा वामन पुराण में कुरुक्षेत्र की सीमा के चार द्वारपाल तरन्तुक, अरन्तुक, रामह्रद (कपिल) तथा मचक्रुक नामक चार यक्ष किंचित नाम परिवर्तन के साथ बताए हैं। इन्हीं चार यक्षों में से यह तीर्थ कपिल यक्ष को समर्पित है। वामन पुराण के अनुसार इस तीर्थ में कपिल नामक महायक्ष स्वयं द्वारपाल के रूप में स्थित है। वामन पुराण के अनुसार इस तीर्थ में द्वारपाल के रूप में स्थित कपिल नामक महायक्ष पापियों के मार्ग में विघ्न डालकर उन्हें दुर्गति प्रदान करते हैं। महायक्षी उदूखलमखला नाम वाली उनकी पत्नी भी नित्यप्रति दुन्दुभि बजाते हुए वहाँ भ्रमण करती रहती है। महाभारत में वर्णित यक्षों में रामह्रद केवल स्थान का सूचक है। रामह्रद का शाब्दिक अभिप्राय परशुराम द्वारा निर्मित सरोवर है। सम्भवतः वामन पुराण में वर्णित पुष्कर तीर्थ महाभारत में वर्णित रामह्रद के ही विस्तार क्षेत्र में स्थित रहा होगा जहाँ कपिल यक्ष द्वारपाल के रूप में स्थित है।

इस तीर्थ पर हर मास की शुक्ल पक्ष की द्वादशी को मेला लगता है।

89 सोम तीर्थ, पाण्डु पिण्डारा

यह तीर्थ जीन्द से लगभग 5 कि.मी. की दूरी पर पाण्डु पिण्डारा नामक ग्राम में स्थित है। इस तीर्थ को महाभारत, वामन पुराण तथा पदम पुराण में सोम (चन्द्रमा) देवता से सम्बन्धित बताया गया है। महाभारत के शल्य पर्व में एवं स्कन्द पुराण की कथा के अनुसार प्रजापति दक्ष की अनेक कन्याएं थी जिनमें से 27 का विवाह सोमदेव के साथ हुआ था। अपने अतुलनीय सौन्दर्य के कारण रोहिणी चन्द्रदेव की सर्वाधिक प्रिय थी। परिणामतः रोहिणी की शेष बहनें चन्द्रदेव से रुष्ट हो गई। तत्पश्चात् वे सभी मिलकर अपने पिता दक्ष के समीप चन्ददेव के पक्षपातपूर्ण व्यवहार की शिकायत करने गईं। प्रजापति दक्ष ने सोम को समझाया कि उन्हें सभी के साथ समान व्यवहार करना चाहिए। किन्तु दक्ष के समझाने पर भी सोमदेव के व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आया । इस पर दक्ष ने क्रोधित होकर सोमदेव को राजयक्ष्मा नामक भयंकर रोग होने का श्राप दिया। जिससे चन्द्रमा प्रतिदिन क्षीण होने लगा। रोग से मुक्त होने के लिए उनके द्वारा किया गया प्रत्येक प्रयास व्यर्थ रहा। सोमदेव की इस दयनीय दशा को देखकर देवताओं को बड़ा दुख हुआ। दुखी हुए सभी देवता दक्ष के पास जाकर सोमदेव से श्राप को हटाने की प्रार्थना करने लगे। तब दक्ष ने कहा कि यदि सोमदेव अपनी सभी स्त्रियों से समान व्यवहार करें और सरस्वती के श्रेष्ठ तीर्थ में स्नान करें तो पुनः स्वस्थ व पुष्ट हो जाएंगे। दक्ष के इस कथन को सुन सोम सरस्वती के प्रथम तीर्थ प्रभास क्षेत्र में गए तथा अमावस्या के दिन उस पवित्र तीर्थ में स्नान किया। तब वह शीतल किरणों से

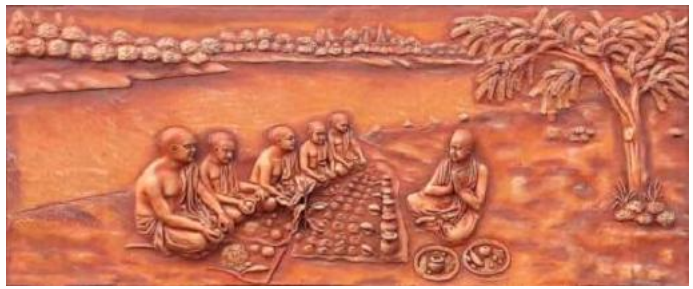

सोमवती अमावस्या पर अपने पितरों को पिण्डदान देते हुए पाण्डव

युक्त हो कर समग्र संसार को प्रकाशित करने लगे।

महाभारत के अनुसार जयन्ती (जीन्द) में स्थित सोम तीर्थ में स्नान करने पर मनुष्य को राजसूय यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

ततो जयंत्यां राजेन्द्र सोमतीर्थं समाविशेत्।
स्नात्वा फलमवाप्नोति राजसूयस्य मानवः।

(महाभारत, वन पर्व 83/19)

प्रचलित विश्वास के अनुसार इसी स्थान पर पाण्डवों ने बारह वर्ष तक सोमवती अमावस्या की प्रतीक्षा की थी। जनश्रुति के अनुसार महाभारत युद्ध के बाद पाण्डवों ने इसी स्थान पर अपने पूर्वजों के पिण्ड दान किए थे। प्रत्येक सोमवती अमावस्या के दिन यहां बड़ा भारी मेला लगता है।

90 वराह तीर्थ, बराहकलाँ

वराह नामक यह तीर्थ जींद से लगभग 11कि.मी. दूर सफीदों–जींद मार्ग पर बारहकलां ग्राम मे स्थित है। भगवान विष्णु के वराह अवतार से सम्बन्धित होने से ही इस गाम का नाम वराह कलां हुआ। वराह तीर्थ भगवान विष्णु से सम्बन्धित तीर्थों में प्रमुख तीर्थ है।

वराह भगवान विष्णु के तीसरे अवतार माने जाते है। पौराणिक आख्यानो के अनुसार कश्यप ऋषि एवं दैत्य माता दिति का पुत्र हिरण्याक्ष पृथ्वी पर सर्वत्र आसुरी साम्राज्य की स्थापना का संकल्प ले चुका था। हिरण्याक्ष के आततायी व्यवहार से राग्पूर्ण त्रिलोक में हाहाकार मचा हुआ था। तब पृथ्वी के उद्धार हेतु तथा हिरण्याक्ष के वध के लिए समस्त देवगणों तथा ऋषि महर्षियों ने मिलकर ब्रह्मा का स्मरण किया। उसी समय ब्रह्मा की नासिका स अंगूठे क बराबर आकार का एक गौर वर्ण शिशु प्रकट हुआ और तदनन्तर वह आकार में विशाल हो गया। यह गौर वर्ण शिशु ही वस्तुतः भगवान विष्णु का वराह अवतार थे। सभी देवगण उसकी वन्दना करने लगे। वराह ने रसातल पहुंचकर दैत्य राज हिरण्याक्ष के द्वारा छिपाई गई भूदेवी को अपने दाढ़ों पर धारण कर उसका उद्धार किया। पृथ्वी का उद्धार होने से सभी देव, ऋषि, महर्षि भगवान वराह के कृतज्ञ एवं ऋणी हुए।

इस तीर्थ का उल्लेख वामन पुराण, पद्म पुराण तथा महाभारत में मिलता है। महाभारत के अनुसार इस तीर्थ में विष्णु वराह रूप में विद्यमान हैं। वामन पुराण में इस तीर्थ का महत्व इस प्रकार वर्णित है :

वाराहं तीर्थमाख्यातं विष्णुना परिकीर्तितम्।
तस्मिन् स्नात्वा श्रद्दधानः प्राप्नोति परमं पदम्।।

(वामन पुराण 34 32)

अर्थात् इस तीर्थ में श्रद्धायुक्त चित्त से स्नान करने वाला मनुष्य परमपद का अधिकारी होता है। इस स्थान पर आने वाले तीर्थयात्री एवं श्रद्धालु जन स्नानादि करके भगवान विष्णु की पूजा अर्चना करते हैं।

यहाँ स्थित वराह मन्दिर में भगवान विष्णु के वराह रूप की अष्टभुजी प्रतिमा स्थापित है जिसके दाहिनी तरफ ऊपर वाले हाथ में चक्र एवं नीचे वाले हाथ में गदा, तीसरा हाथ अभय मुद्रा में है तथा चौथा हाथ खण्डित है। बाँयीं तरफ ऊपरी हाथ के कन्ध पर भूदेवी विराजमान हैं। नीचे वाले हाथों में क्रमशः पद्म एवं शंख हैं तथा चौथा हाथ जंघा पर है। उनके शरीर में वनमाला सुशोभित है। मूर्तिफलक के दाँयें और बाँयें विद्याधरों को दिखाया गया है। बाईं तरफ घुटने के पास करबद्ध मुद्रा में नाग एवं नागकन्याओं को दर्शाया गया है। वराह की यह प्रस्तर प्रतिमा सौन्दर्य की दृष्टि से अनुपम है। 8–9वीं शती ई. की इस मूर्ति से इस स्थान की प्राचीनता स्वतः सिद्ध होती है।

तीर्थ पर प्रत्येक वर्ष आषाढ़ तथा फाल्गुन मास की शुक्ल पक्ष की द्वादशी को मेला लगता है।

91 अश्विनी कुमार तीर्थ, आसन

अश्विनी कुमार नामक यह तीर्थ सफीदों जींद मार्ग पर जींद से 16 कि.मी. की दूरी पर आसन ग्राम में स्थित है। अश्विनी कुमारों से सम्बन्धित होने के कारण ही यह तीर्थ अश्विनी तीर्थ के नाम से विख्यात हुआ। सम्भवतः कालान्तर में अश्विनी का ही अपभ्रंश होने से यह गाँव आसन नाम से जाना जाने लगा। पाँचों पाण्डवों में नकुल एवं सहदेव इन्हीं अश्विनी कुमारों के सादी से उत्पन्न पुत्र थे।

देवी भागवत पुराण के सप्तम स्कन्ध में वर्णित कथा के अनुसार महाराज शर्याति की पुत्री सुकन्या ने एक बार अज्ञानवश समाधिस्थ महर्षि च्यवन के नेत्र तिनके से फोड़ दिए थे जिसके प्रायश्चित स्वरूप महाराज शर्याति ने ऋषि से क्षमायाचना कर सुकन्या का विवाह उनके साथ कर दिया। अश्विनी कुमारों ने सुकन्या के आग्रह पर च्यवन ऋषि को स्वस्थ एवं युवा शरीर प्रदान किया। महर्षि च्यवन ने अश्विनी कुमारों के कहने पर देवताओं के निमित्त होने वाले यज्ञों में उन्हें उनका उचित भाग दिलाने के लिए अपने श्वसुर महाराज शर्याति को इसी स्थान पर यज्ञ करने को कहा तथा उसमें सभी देवताओं व ऋषि मुनियों को आमंत्रित किया। तब देवराज इन्द्र ने अश्विनी कुमारों को यज्ञ में न लाने की बात कही, लेकिन च्यवन ऋषि ने इसमें अस्वीकृति जताई। तब देवराज इन्द्र ने वज्र का प्रहार किया लेकिन महर्षि च्यवन के तपोबल से उनका हाथ ऊपर ही उठा रह गया। ऋषि के तपोबल से प्रभावित होकर इन्द्र ने उनसे क्षमा याचना की तथा अश्विनी कुमारों को यज्ञादि धार्मिक उत्सवों में उन दोनों को उचित स्थान दिलाया।

वामन पुराण के अनुसार श्रद्धावान जितेन्द्रिय मनुष्य अश्विनी कुमारों के तीर्थ में जाकर रूपवान और यशस्वी होता है।

अश्विनो तीर्थमासाद्य श्रद्धावान यो जितेन्द्रियः।
रूपस्य भागी भवति यशस्वी च भवेन्नरः।।

(वा॰ पुराण 31/31)

तीर्थ स्थित एक मन्दिर में दोनों अश्विनी कुमारों को दिखाया गया है जिनके दाहिने हाथ वरद मुद्रा में और बायें हाथों में औषधियां हैं।

92 जमदग्नि तीर्थ, जामनी

जमदग्नि नामक यह अति प्राचीन तीर्थ सफीदों–जींद मार्ग पर जींद से 18 कि.मी. दूर जामनी ग्राम में स्थित है। सम्भवतः कालान्तर में विकृत होते–होते जगदग्नि ही जागनी बन गया।

यह तीर्थ महर्षि च्यवन के प्रपौत्र ब्रह्मर्षि जमदग्नि से सम्बन्धित है। लोक प्रचलित धारणा के अनुसार जमदग्नि नामक इस तीर्थ में महर्षि जमदग्नि ने कठोर तपस्या की थी। एक बार हैहेयी नामक राक्षस ने उनकी तपस्या में विघ्न डाल कर ऋषि को अपमानित किया एवं उनके शिष्यों को मार डाला। दुखी हुए ऋषि ने अपने पुत्र परशुराम से हैहेयी राक्षस का वध करवाया।

इसी तीर्थ से सम्बन्धित कथा के अनुसार एक बार राजा सहस्रबाहु अपनी विशाल सेना के साथ महर्षि जमदग्नि के आश्रम पर आए। महर्षि ने अपनी कामधेनु से उन सबके सत्कारादि की भव्य व्यवस्था की। कामधेनु के इस सामर्थ्य को देखकर सहस्रबाहु ने उस धेनु को अपने साथ ले जाने की चेष्टा की। सहस्रबाहु की इस कुचेष्टा से क्रोधित होकर महर्षि जमदग्नि ने उन पर आक्रमण कर दिया। क्रोधित हुए सहस्रबाहु ने बल प्रयोग से महर्षि का शिरोच्छेद कर डाला। अपने पिता की हत्या से क्रोधित हुए परशुराम ने राजा सहस्रबाहु की सम्पूर्ण नगरी को नष्ट

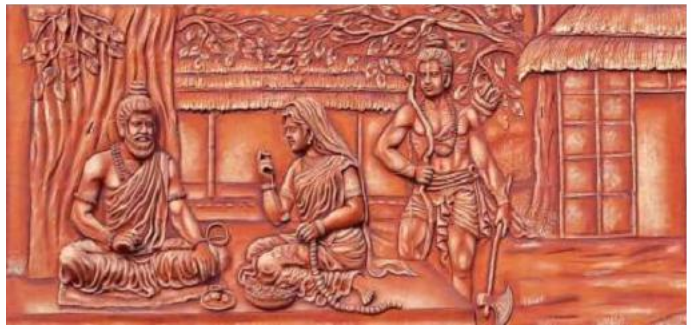

आश्रम में ऋषि जगदग्नि एवं पत्नी रेणुका के साथ परशुराम

भ्रष्ट कर दिया तथा समस्त क्षत्रिय जाति को समूल नष्ट करने के लिए अपनी प्रतिज्ञानुसार 21 बार क्षत्रियों का संहार किया।

इस तीर्थ की गणना 68 पवित्र धामों में की जाती है। यहाँ लोग पूरी आस्था से जमदग्नि ऋषि की पूजा–अर्चना करते हैं। नवविवाहित युगल मन्दिर में पूजा अर्चना कर अपने सुखी दाम्पत्य जीवन हेतु प्रार्थना करते हैं। तीर्थ परिसर से विगत कुछ वर्ष पूर्व हड़प्पा कालीन संस्कृति की ईंटें प्राप्त हुई हैं। इससे भी इस तीर्थ की प्राचीनता स्वयंमेव सिद्ध हो जाती है।

93 ययाति तीर्थ, कालवा

ययाति नामक यह तीर्थ जींद से 21 कि.मी. की दूरी पर कालवा ग्राम में स्थित है। कुरुक्षेत्र भूमि का यह पवित्र तीर्थ महाराज नहुष के द्वितीय पुत्र ययाति से सम्बन्धित है। इन्हीं सम्राट ययाति की धर्मपत्नी देवयानी से उत्पन्न पुत्र यदु की भावी पीढ़ी में भगवान श्रीकृष्ण ने जन्म लिया तथा इनकी दूसरी पत्नी शर्मिष्ठा से उत्पन्न पुत्र पुरु के वंश में आगे चलकर कौरव और पाण्डव उत्पन्न हुए।

महाभारत के शल्य पर्व में यह स्पष्ट वर्णित है कि महाराजा ययाति ने एक बार इस तीर्थ में यज्ञ सम्पन्न किया था।

ययौ तीर्थं महाबाहुर्ययातं पृथिवीपते।
तत्र यज्ञेययातेश्च महाराज सरस्वती।।
सर्पिः पयश्च सुस्रावाग्नाहुषस्यमहात्मनः।

(महाभारत, शल्य पर्व 1/32–33)

अर्थात् महात्मा नहुष के पुत्र ययाति के द्वारा वहां (ययात तीर्थ में) यज्ञ किए जाने पर सरस्वती ने उनके लिए दूध और घी का स्रोत बहाया था। सरस्वती के प्रति महाराज ययाति की अथाह श्रद्धा एवं भक्ति थी। अपने प्रति महाराजा की इसी अटूट श्रद्धा एवं शक्ति को ध्यान में रखते हुए सरस्वती ने यज्ञ में आने वाले सभी ब्राह्मणों को उनकी अभिलषित वस्तुएं प्रदान की। राजा के यज्ञ के निमित्त आने वाले प्रत्येक ब्राह्मण के लिए सरस्वती ने यथास्थान पृथक् पृथक् गृह, शैय्या, आसन, भोजन तथा दानादि की व्यवस्था की। देवता

ययात तीर्थ पर यज्ञ करते हुए राजा ययाति

एवं गन्धर्व भी यज्ञ में असंख्य बहुमूल्य पदार्थों को देख कर प्रसन्न हुए तो मानव समुदाय को तो महान आश्चर्य होना स्वाभाविक ही था।

वामन पुराण के अनुसार इस ययात तीर्थ में यज्ञ करने वाले के लिए सरस्वती नदी ने मधु बहाया था। इस पुराण में ययाति के स्थान पर तीर्थ को ययात नाम से उल्लिखित किया गया है।

इस तीर्थ का सरोवर तीर्थ के पूर्व में स्थित है जिसमें उत्तर मध्यकालीन लाखौरी ईंटों से निर्मित घाट हैं। एक घाट से दूसरे घाट को पृथक् करने के लिए बीच में एक आयताकार बुर्जी का निर्माण किया गया है। सरोवर की सीढ़ियों से लगते हुए मेहराबी कक्ष हैं।

94 पंचनद/हटकेश्वर तीर्थ, हाट

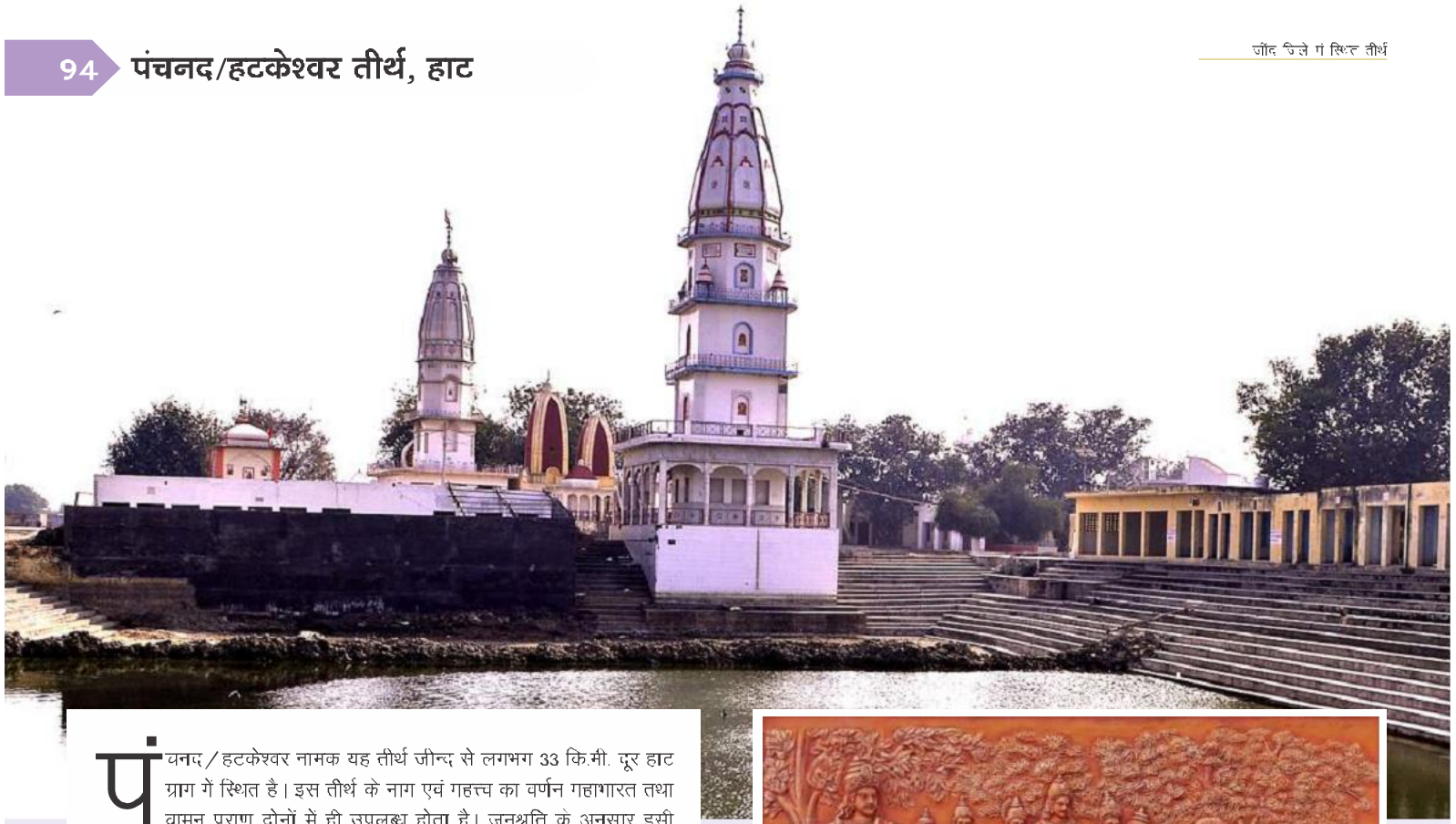

पंचनद/हटकेश्वर नामक यह तीर्थ जीन्द से लगभग 33 कि.मी. दूर हाट ग्राम में स्थित है। इस तीर्थ के नाम एवं महत्त्व का वर्णन महाभारत तथा वामन पुराण दोनों में ही उपलब्ध होता है। जनश्रुति के अनुसार इसी स्थान पर भगवान श्रीकृष्ण के परामर्श अनुसार अर्जुन ने गाण्डीव धनुष की नोक से कौरव महारथी अश्वत्थामा के सिर से मणि निकाल कर उसे मणिविहीन कर दिया था। इस मन्दिर में अश्वत्थामा की मूर्ति की पूजा की जाती है। महाभारत के वनपर्व में तीर्थ का नाम एवं महत्त्व इस प्रकार वर्णित है –

अथ पंचनदं गत्वा नियतो नियताशनः।
पंचयज्ञानवाप्नोति क्रमशो येऽनुकीर्तिताः।

(महाभारत, वन पर्व 82/83)

अर्थात्, हे राजेन्द्र! पंचनद नामक तीर्थ में स्नान करने वाला व्यक्ति पंचमहायज्ञों का फल प्राप्त करता है।

पौराणिक काल में यह तीर्थ रुद्र, वामन तथा हर के साथ जुड़ जाने से अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया। वामन पुराण में इस तीर्थ की उत्पत्ति के विषय में कहा गया है कि दानवों को भयभीत करने के उद्देश्य से रुद्र ने पांच नदों का निर्माण किया।

पंचनदाश्च रुद्रेण कृताः दानव भीषणाः।
तत्र सर्वेषु लोकेषु तीर्थं पंचनदं स्मृतम्।।

(वामन पुराण)

पाण्डवों द्वारा अश्वत्थामा के सिर से जड़ित मणि लेना

वामन पुराण के अनुसार यहां पर रुद्र स्वयं कोटितीर्थों का समाहृत्य करके विद्यमान हैं, अतः यह तीर्थ कोटितीर्थ भी कहलाता है।

इस तीर्थ के मुख्य मन्दिर में अश्वत्थामा की प्रतिमा है। अन्य दो मन्दिर राधा–कृष्ण एवं शिव के हैं जिनके बरामदे की उत्तरी दीवार पर 9–10वीं सदी की बलुआ पत्थर से निर्मित विष्णु की एक प्रतिमा स्थापित है जिसके एक ओर ब्रह्मा व दूसरी ओर उमा–महेश्वर की प्रतिमाएँ विराजमान हैं। खुदाई में अनेक प्राचीन मूर्तियों के मिलने से भी इस तीर्थ की प्राचीनता सिद्ध होती है। यहाँ प्रत्येक वर्ष श्रावण मास के आखिरी रविवार को मेला लगता है। जनश्रुति के अनुसार हाट के इस पवित्र सरोवर में पृथ्वी के 68 तीर्थों की कान्ति एवं शक्ति निहित है।

95 सर्पदमन तीर्थ, सफीदों

सर्पदमन नामक यह तीर्थ जींद से लगभग 35 कि.मी दूर सफीदों नगर में स्थित है। इस तीर्थ से सम्बन्धित कथा महाभारत के आदि पर्व में आस्तीक पर्व के अन्तर्गत संक्षेपतः इस प्रकार है कि द्वापर युग की समाप्ति पर एवं कलियुग के प्रारम्भिक काल में महाराज परीक्षित की मृत्यु तक्षक नाग के डसने से हुई। अपने पिता की मृत्यु का बदला तक्षक से लेने के उद्देश्य से परीक्षित के पुत्र महाराजा जनमेजय ने सम्पूर्ण नागजाति को नष्ट करने के लिए ऋषियों एवं ब्राह्मणों के परामर्श से इस स्थान पर सर्पदमन नामक यज्ञ करवाया। मन्त्रों के चमत्कारिक प्रभाव से बड़े बड़े शक्तिशाली सर्प यज्ञकुण्ड में आकर गिरने लगे। सम्पूर्ण वातावरण विषैला हो उठा, तब अपनी मृत्यु के भय से भयभीत हुआ तक्षक इन्द्र की शरण में गया। पहले तो इन्द्र ने तक्षक को निर्भय रहने को कहा, लेकिन जब मंत्रों के प्रभाव से स्वयं इन्द्र तक्षक सहित यज्ञकुण्ड में गिरने ही वाले थे कि जरत्कारू ऋषि के पुत्र आस्तीक के कहने पर यज्ञ रोक दिया गया। सर्पदमन यज्ञ सम्पन्न होने से ही इस तीर्थ का नाम सर्पदमन पड़ा।

जनमेजय का नाग यज्ञ

इस तीर्थ पर एक प्राचीन सरोवर है जिसमें नागर शैली में निर्मित शिव, कृष्ण और शक्ति के उत्तर मध्यकालीन मन्दिर हैं जिनका निर्माण महाराजा जींद द्वारा करवाया गया था। इस तीर्थ को नागक्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है। जनसाधारण में ऐसा विश्वास पाया जाता है कि इस सरोवर में स्नान करने पर मनुष्य पाप मुक्त हो जाता है।

96 सर्पदधि तीर्थ, सफीदों

सर्पदधि नामक यह तीर्थ जींद–राफीदों मार्ग पर जींद से लगभग 35 कि.मी. की दूरी पर सफीदों नगर में स्थित है।

इस तीर्थ का उल्लेख महाभारत में सर्पदेवी तथा वामन पुराण में सर्पदधि नाग से मिलता है। महाभारत वन पर्व में इस तीर्थ का महात्म्य इस प्रकार वर्णित है :

सर्पदेवीं समासाद्य नागानां तीर्थमुत्तमम्।
अग्निष्टोममवाप्नोति नागलोकं च विन्दति।।

(महाभारत, वन पर्व 83/13)

अर्थात् नागतीर्थों में उत्तम सर्पदेवी नामक तीर्थ का सेवन करने पर मनुष्य अग्निष्टोम का फल प्राप्त करता है तथा नागलोक का अधिकारी बनता है।

वामन पुराण में इस तीर्थ के महत्त्व में इस प्रकार से लिखा है :

सर्पिदधिं समासाद्य नागानां तीर्थमुत्तमम् ।
तत्र स्नानं नरः कृत्वा मुक्तो नागभयाद् भवेत्।।

(वामन पुराण 34/23)

अर्थात् नागों के श्रेष्ठ तीर्थ सर्पदधि में जा कर वहां स्नान करने वाला मनुष्य नागभय से मुक्त हो जाता है।

प्रचलित परम्परा के अनुसार यहां पर सर्पों को घी और दही का दान किया जाता है। लौकिक कथाओं के अनुसार इसी तीर्थ पर सर्पदमन यज्ञ के लिए आए हुए ब्राह्मणों एवं ऋषियों के निवास की व्यवस्था की गई थी। वर्तमान में यह तीर्थ हंसराज तीर्थ के नाम से भी जाना जाता है।

97 वंशमूलक तीर्थ, बरसोला

वंशमूलक नामक यह तीर्थ जींद से लगभग 17 कि.मी. की दूरी पर बरसोला ग्राम मे स्थित है। यह तीर्थ वंश की वृद्धि करने वाला कहा जाता है। महाभारत, पदम पुराण तथा वामन पुराण में इस तीर्थ का नामोल्लेख एवं महत्त्व उपलब्ध होता है। महाभारत में इस तीर्थ का महत्त्व इस प्रकार वर्णित है।

वंशमूलकमासाद्य तीर्थसेवी कुरुद्वह।
स्ववंशमुद्धरद्राजन स्नात्वा वै वंशमूलके।।

(महाभारत, वन पर्व 93/41)

अर्थात् हे राजन्! वंशमूलक तीर्थ में पहुंच कर वहां स्नान करने वाला व्यक्ति अपने वंश का उद्धार कर लेता है।

वामन पुराण में भी इस तीर्थ के सम्बन्ध में दिया गया वर्णन महाभारत में दिए गए वर्णन से पर्याप्त साम्य रखता है :

वंशमूलं समासाद्य तीर्थसेवी सुसंयतः।
स्ववंशरिद्धये विप्राः स्नात्वा वै वंशमूलके।

(वामन पुराण 35/16)

अर्थात् हे विप्र श्रेष्ठो! भली भांति इन्द्रियों का निग्रह करने वाला तीर्थ सेवी मनुष्य वंशमूलक नामक तीर्थ में जाकर वहां स्नान करने से अपने वंश की सिद्धि प्राप्त करता है।

इस तीर्थ के प्रति यहाँ के जनसाधारण में अथाह श्रद्धा एवं विश्वास पाया जाता है। निःसन्तान दम्पति यदि एक वर्ष निरन्तर यहाँ स्नान करें तो उन्हें अवश्य सन्तान प्राप्त होती है– ऐसा विश्वास जनसाधारण में पाया जाता है।

यहाँ तीर्थ स्थित एक मन्दिर के बाह्य भाग में गन्धर्व व किन्नरों की 9–10वीं शती ई. की प्राचीन मूर्तियाँ स्थापित हैं जिससे इस तीर्थ की प्राचीनता सिद्ध होती है।

98 कायशोधन तीर्थ, कसूहन

कायशोधन नामक यह तीर्थ जींद से लगभग 19 कि.मी. दूर कसूहन ग्राम में स्थित है। कसूहन में स्थित इस तीर्थ के नाम से ही प्रतीत होता है कि यह तीर्थ काया अर्थात् देह को शुद्ध करने वाला है । इस तीर्थ का वर्णन महाभारत एवं वामन पुराण दोनों में ही उपलब्ध होता है। महाभारत में इस तीर्थ के महत्व विषयक निम्न श्लोक है :

कायशोधनमासाद्य तीर्थं भरतसत्तम ।
शरीरशुद्धि स्नातस्य तस्मिंस्तीर्थे न संशय :।।

(महाभारत, वन पर्व 83/12)

अर्थात् हे भरतश्रेष्ठ! कायशोधन तीर्थ में जाकर स्नान करने वाले मनुष्य की शरीरशुद्धि हो जाती है इसमें कोई संशय नहीं है।

वामन पुराण में दिए गए वर्णन से ज्ञात होता है कि महाभारत काल की अपेक्षा इस काल में उक्त तीर्थ का गहत्त्व अपनी प्रगति की पराकाष्ठा पर था :

कायशोधनमासाद्य तीर्थं त्रैलोक्यविश्रुतम्।
शरीरशुद्धिमाप्नोति स्नात्वास्मिन् न संशयः।
शुद्धदेहश्च तं याति यस्मान्नावर्तते पुनः।
तावद् भ्रमन्ति तीर्थेषु सिद्धास्तीर्थपरायणाः।
यावन्न प्राप्नुवन्तीह तीर्थं तत्कायशोधनम्।

(वामन पुराण 35/17-18)

उक्त श्लोकों से स्पष्ट है कि वामन पुराण में भी इस तीर्थ के सेवन का फल महाभारत की भाँति शरीर शुद्धि बताया है लेकिन इसके आगे विस्तार में यह भी स्पष्ट उल्लिखित है कि इस शुद्ध देह को प्राप्त करके मनुष्य उस स्थान को जाता है जहाँ से वह पुनः नहीं लौटता। भावार्थ यह है कि वह मनुष्य जन्म मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है। इस तीर्थ को सर्वाधिक श्रेष्ठ समझते हुए अन्त में लिखा है कि तीर्थ प्रेमी सिद्ध पुरुष तभी तक तीर्थों में भ्रमण करते रहते हैं जब तक वे उस कायशोधन नामक तीर्थ में नहीं पहुँचते अर्थात् कायशोधन नामक तीर्थ का सेवन करने के पश्चात् किसी अन्य तीर्थ में जाने की आवश्यकता नहीं रहती।

इस तीर्थ के प्रति यहाँ जनसाधारण में दृढ़ आस्था पाई जाती है। लोक प्रचलित विश्वास के अनुसार यहाँ स्नान करने से सभी दैहिक (शारीरिक) रोग नष्ट हो जाते हैं। कहते हैं कि महाराजा पटियाला का कुष्ठ रोग भी इस तीर्थ के स्नान से दूर हो गया था।

99 कुश/रामसर तीर्थ, कुचराना कलां

कुश/रामसर नामक यह तीर्थ, जींद से लगभग 28 कि.मी. की दूरी पर कुचराना ग्राम में स्थित है। महाभारत के अनुसार प्राचीन काल में कुश नामक एक महर्षि थे जो अग्निदेव के समान प्रतापी थे। अपनी तपस्या के बल से ही यह अग्नि के समान प्रतापी हुए थे। कहा जाता है कि इन्हीं महर्षि कुश ने इस तीर्थ पर दीर्घ समय तक कठोर तप किया था। इसीलिए उनके नाम पर इस तीर्थ का नाम कुश तीर्थ पड़ गया। महाभारत के अनुशासन पर्व में कुशस्तम्ब एवं कुशावर्त नामक तीर्थों का वर्णन है। कूर्म पुराण में भी कुश तीर्थ का वर्णन है।

यहाँ तीर्थ स्थित सरोवर पर घाट में एक प्रवेश द्वार दो महराबों से निर्मित है। घाट के दोनों तरफ अष्टभुजा आकृति की बुर्जियाँ हैं। सरोवर के पास एक कृत्रिम टीले पर एक आधुनिक समाधि का निर्माण किया गया है जो कि बाबा ब्रह्मदास को समर्पित है। सरोवर के चारों ओर बड़, पीपल व कीकर आदि के वृक्ष हैं।

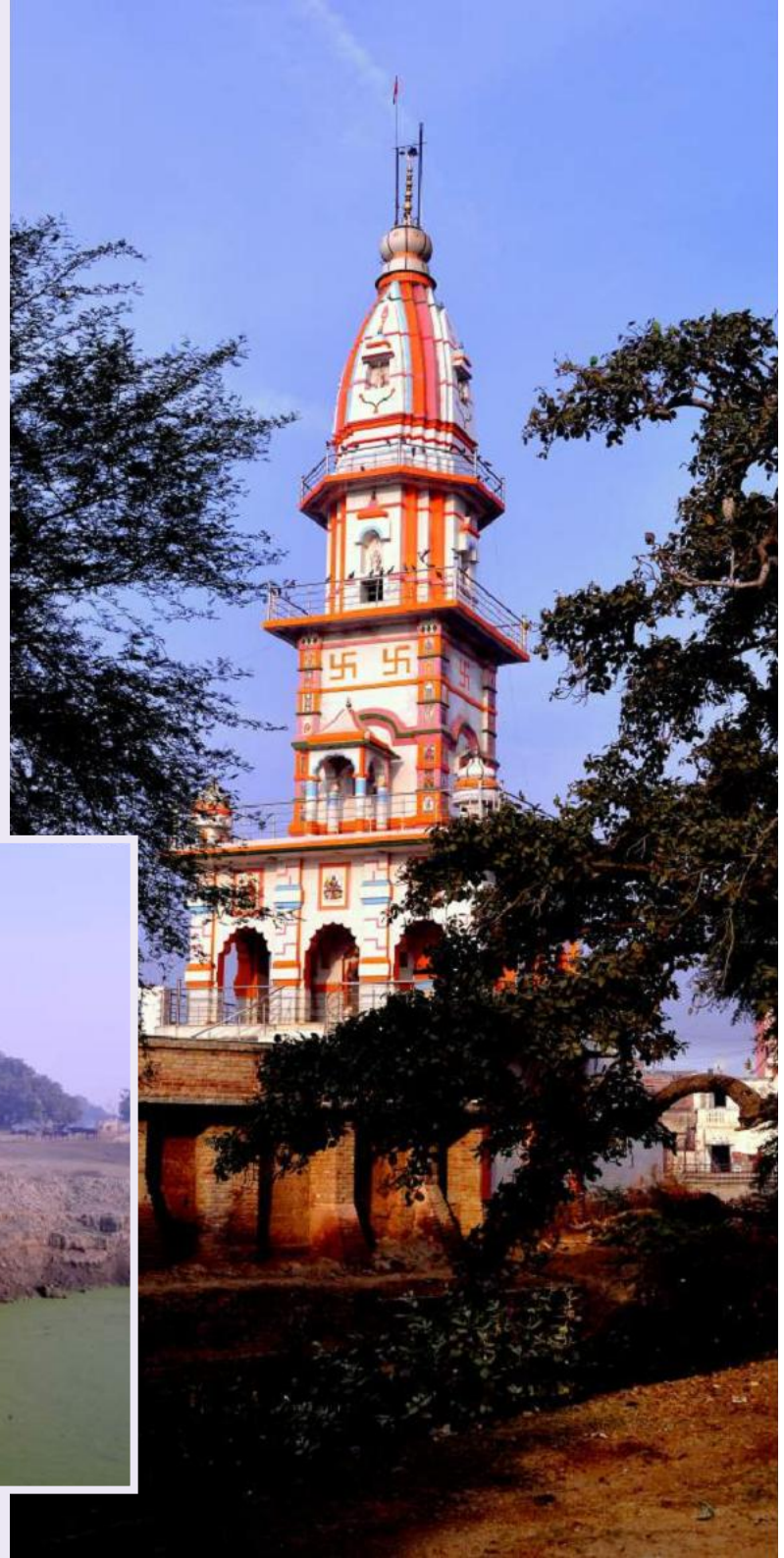

100 लोकोद्धार तीर्थ, लोधार

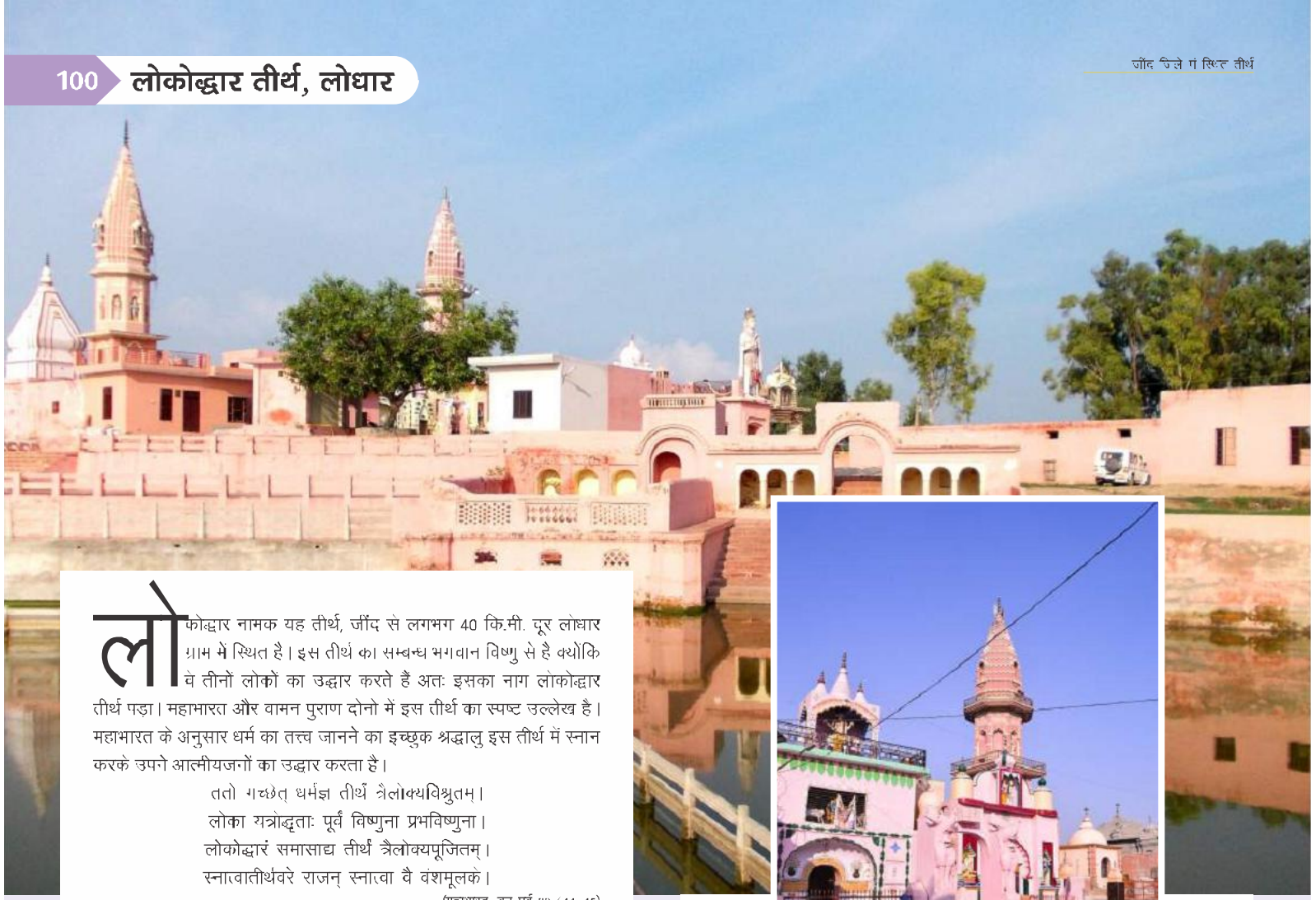

लोकोद्धार नामक यह तीर्थ, जींद से लगभग 40 कि.मी. दूर लोधार ग्राम में स्थित है। इस तीर्थ का सम्बन्ध भगवान विष्णु से है क्योंकि वे तीनों लोकों का उद्धार करते हैं अतः इसका नाम लोकोद्धार तीर्थ पड़ा। महाभारत और वामन पुराण दोनो में इस तीर्थ का स्पष्ट उल्लेख है। महाभारत के अनुसार धर्म का तत्त्व जानने का इच्छुक श्रद्धालु इस तीर्थ में स्नान करके उपने आत्मीयजनों का उद्धार करता है।

ततो गच्छेत् धर्मज्ञ तीर्थं त्रैलोक्यविश्रुतम्।
लोका यत्रोद्धृताः पूर्वं विष्णुना प्रभविष्णुना।
लोकोद्धारं समासाद्य तीर्थं त्रैलोक्यपूजितम्।
स्नात्वातीर्थवरे राजन् स्नात्वा वै वंशमूलके।

(महाभारत, वन पर्व 83/44 45)

इसी प्रकार वामन पुराण में कहा है कि यहाँ स्नान करने एवं सनातन शिव को साष्टांग प्रणाम करने से मुक्ति प्राप्त होती है।

ततो गच्छेत् विप्रेन्द्रास्तीर्थं त्रैलोक्य विश्रुतम्।
लोका यत्रोद्धृताः सर्वे विष्णु प्रभविष्णुना।
लोकोद्धारं समासाद्य तीर्थस्मरणतत्परः।
स्नात्वा तीर्थवरे तस्मिन् लोकान् पश्यति शाश्वताम्।
यत्र विष्णु स्थितो नित्यं शिवो देवः सनातनः।
तौ देवौ प्रणिपातेन प्रसाद्य मुक्तिमाप्नुयात्।

(वामन पुराण 35/20 22)

अर्थात् हे धर्मतत्त्व के ज्ञाता! तत्पश्चात् तीनों लोकों में प्रसिद्ध उस तीर्थ का सेवन करना चाहिए जहाँ सर्वशक्तिमान भगवान विष्णु ने अनेक लोकों का उद्धार किया था। त्रिलोक में पूजित इस तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य आत्मीयजनों का उद्धार करता है। यहाँ विष्णु एवं शिव निरंतर निवास करते हैं। इन दोनो देवों का प्रणाम करके उन्हे प्रसन्न किए जाने पर मनुष्य मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

जनश्रुति है कि यहाँ लौहऋषि ने भी तपस्या की थी उसी के कारण इस स्थान का नाम लौहगढ़ पड़ा कालान्तर में लोधर नाम से पुकारा जाने लगा। सोमवती अमावस्या को यहाँ पिण्ड दान किया जाता है और श्रद्धालु हर अमावस्या को यहाँ स्नान करने आते हैं।

101 मचक्रुक यक्ष, सींख

यह तीर्थ पानीपत से लगभग 38 कि.मी. की दूरी पर तथा सफीदों से 14 कि.मी. की दूरी पर सींख नामक गांव में स्थित है। महाभारत में वर्णित चार यक्षों में से यह तीर्थ मचक्रुक नामक यक्ष को समर्पित है।

तरंतुकारंतुकयोर्यदंतरंरामह्रदानांच मचक्रुकस्य च।

एतत्कुरुक्षेत्रा, समन्तपंचकं अथवा पितामहस्योत्तरवेदिरुच्यते।

(महाभारत, वन पर्व 83/208, शल्य पर्व 53/24)

अर्थात् तरन्तुक, अरन्तुक, रामह्रद (कपिल) तथा मचक्रुक नामक यक्षों का प्रदेश कुरुक्षेत्र, समन्तपंचक अथवा पितामह ब्रह्मा की उत्तर वेदि कहलाता था। गचक्रुक नागक यह यक्ष कुरुक्षेत्र की दक्षिणी पूर्वी सीगा का द्वारपाल है। महाभारत में वन पर्व में इस के महत्त्व को बताते हुए लिखा है।

तीर्थ परिसर में एक यक्ष कुण्ड है। यहाँ प्राचीन काल में कोई मन्दिर था जिसकी नींव के अवशेष आज भी तीर्थ के दक्षिणी भाग में पाए जाते हैं। यक्ष कुण्ड तीर्थ के पूर्व में स्थित है। वर्तमान कुण्ड के निर्माण लाखौरी ईंटों का प्रयोग हुआ है। यहां स्त्री पुरुषों स्नान के लिए अलग–अलग घाट बने हुए हैं। इस यक्ष की एलैक्जेंडर कन्निघंम ने महाभारत में वर्णित मचक्रुक यक्ष क रूप में पहचान की थी। कुरुक्षेत्र के दक्षिण में प्रवाहित दृषद्वती नदी के किनारे स्थित इस तीर्थ की स्थिति पुराणों में वर्णित है।

तीर्थ पर सोमवती अमावस्या, सूर्यग्रहण, जन्माष्टमी तथा कार्तिक मास की पूर्णिमा को मेले लगते हैं।

102 मिश्रक तीर्थ, निसिंग

मिश्रक नामक यह तीर्थ करनाल से लगभग 24 कि.मी. दूर निसिंग नागक कस्बे में स्थित है। अनेक तीर्थों का मिश्रण होने से ही इस तीर्थ का नाम मिश्रक पड़ा। इस तीर्थ का नाम एवं महत्त्व वामन पुराण तथा महाभारत दोनों में ही मिलता है।

वामन पुराण में इस तीर्थ से सम्बन्धित यह वर्णन मिलता है कि यहाँ इस तीर्थ में महर्षि व्यास ने दधीचि मुनि के लिए तीर्थों को एक ही तीर्थ में मिश्रित किया था।

ततो गच्छेत् सुमहत्तीर्थं मिश्रकमुत्तमम्।
तत्र तीर्थानि मुनिना मिश्रितानि महात्मना।
व्यासेन मुनिशार्दूला दधीच्यर्थं महात्मना।

(वामन पुराण 36 42–43)

इसी तीर्थ का धार्मिक महत्त्व बताते हुए वामन पुराण में उल्लेख है कि इस तीर्थ में स्नान करने वाला व्यक्ति मानो सभी तीर्थों में स्नान कर लेता है।

महाभारत में इस तीर्थ से सम्बन्धित यह उल्लेख वामन पुराण से मिलता है कि यहां व्यास मुनि ने सब तीर्थों को मिश्रित किया था :

ततो गच्छेत् राजेन्द्र मिश्रकं तीर्थमुत्तमम्।
सर्वतीर्थानिराजेन्द्रमिश्रितानि महात्मना।
व्यासेन नृपशार्दूलद्विजार्थमितिनः श्रुतम्।
सर्वतीर्थेषु यः स्नाति मिश्रके स्नाति यो नरः।

(महाभारत, वन पर्व, 83 91–92)

मिश्रक तीर्थ में अनेक तीर्थों का जल डालते हुए वेद व्यास

उपरोक्त श्लोकों से स्पष्ट है कि इस तीर्थ के फल विशेष में महाभारत एवं वामन पुराण का एक जैसा ही मत है। भेद केवल इतना ही है कि वामन पुराण में उपलब्ध वर्णन के अनुसार व्यास द्वारा गहर्षि दधीचि हेतु तीर्थों का मिश्रण किया गया था तथा महाभारत में उपलब्ध वर्णन में यहां ब्राह्मणों के हेतु तीर्थों का मिश्रण बनाया गया था।

मन्दिर परिसर के प्रवेश कक्ष में आधुनिक चित्रों द्वारा अनेक प्रसंगों जैसे राजा दिलीप द्वारा नन्दी की रक्षा, श्रीकृष्ण का देवकी के पुत्रों को वापिस करना, कालिया दमन, भीलनी के बेर खाते राम–लक्ष्मण, शेषशायी विष्णु, शाल्व वध व व्यासजी द्वारा सब तीर्थों का जल मिश्रक तीर्थ में डालने का अति मनभावन चित्रण है।

103 दशरथ/राघवेन्द्र तीर्थ/सूर्य कुण्ड, औंगद

दशरथ/राघवेन्द्र तीर्थ/सूर्य कुण्ड कहा जाने वाला यह तीर्थ करनाल से लगभग 20 कि.मी. दूर औंगद ग्राम में स्थित है। इस तीर्थ के विषय में जनसाधारण में ऐसी मान्यता पाई जाती है कि इस तीर्थ का निर्माण अयोध्या के महाराजा दशरथ ने करवाया था। इसी कारण इस तीर्थ को दशरथ तीर्थ के नाम से जाना जाता है।

अयाध्या के महाराजा दशरथ के कौशल्या, सुमित्रा एवं कैकेयी नाम की तीन रानियाँ थी। निःसन्तान होने के दुख को एक बार महाराज दशरथ ने अपने कुलगुरु महर्षि वशिष्ठ के सामने व्यक्त किया जिनके परामर्श से उन्होनें सुयोग्य सन्तान प्राप्ति के लिए यज्ञ किया। परिणामस्वरूप महाराजा दशरथ ने श्रीराम, लक्ष्मण, भरत एवं शत्रुघ्न जैसे चार सर्वश्रेष्ठ पुत्ररत्न प्राप्त किये। जिस समय महाराजा दशरथ श्री राम का राज्याभिषेक करने ही वाले थे उसी समय कैकेयी ने अपने पुत्र भरत को राज्याभिषेक एवं श्री राम को चौदह वर्ष का वनवास– ये दो वर माँग कर महाराज दशरथ को धर्मसंकट में डाल दिया। महाराजा दशरथ यद्यपि ऐसा करने के इच्छुक न थ लकिन श्रीराम ने अपनी दृढ़ पितृभक्ति का परिचय देते हुए सहर्ष वनवास को प्रस्थान किया। श्रीराम के प्रस्थान करते ही महाराजा दशरथ

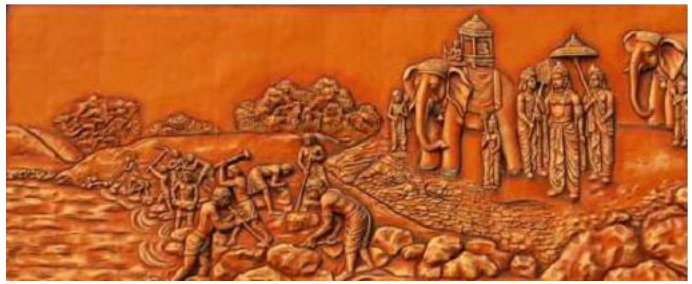

महाराजा दशरथ द्वारा राघवेन्द्र तीर्थ का निर्माण

ने पुत्र–वियोग में प्राण त्याग दिय। औंगद ग्राम में स्थित यह तीर्थ महाराजा दशरथ से सम्बन्धित है जिसे राघवेन्द्र तीर्थ तथा सूर्य कुण्ड के नाम से भी जाना जाता है।

इस तीर्थ पर सूर्य ग्रहण तथा चन्द्र ग्रहण के समय मेला लगता है। श्रद्धालुगण इन अवसरों पर यहाँ आकर स्नान करते हैं। तीर्थ सरोवर मन्दिर के उत्तर में स्थित है। सरोवर पर एक अष्टकोण बुर्जी वाला उत्तर मध्यकालीन घाट है जिसका निर्माण लाखौरी ईंटों से हुआ है।

104 दक्षेश्वर तीर्थ, डाचर

दक्षेश्वर नामक यह तीर्थ करनाल से लगभग 31 कि.मी. दूर डाचर ग्राम में स्थित है। कुरुक्षेत्र के तीर्थों के पौराणिक वर्णन के अन्तर्गत वामन पुराण के अनुसार महात्म्य में दशेश्वर अर्थात् दक्षेश्वर तीर्थ का भी स्पष्ट नामोल्लेख उपलब्ध होता है।

इस तीर्थ में जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है दक्षेश्वर शिव विराजमान हैं। इस तीर्थ के धार्मिक महत्त्व का उल्लेख करते हुए वामन पुराण में कहा गया है कि जो मनुष्य इस स्थान पर दक्षेश्वर शिव का दर्शन करता है वह अश्वमेघ यज्ञ के फल को प्राप्त करता है।

ततो दक्षाश्रमं गत्वा दृष्ट्वा चं दक्षेश्वरं शिवम्।
अश्वमेधस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोति मानवः।

(वामन पुराण, 3[illegible]/2[illegible])

लोक प्रचलित जनश्रुति के अनुसार इसी स्थान पर शिव और सती का पाणिग्रहण संस्कार हुआ था। यहाँ पर प्रजापति दक्ष की राजधानी थी। महाभारत में ऐसा वर्णन मिलता है कि अपने वनवास के दौरान पाण्डव भी यहाँ आए थे।

शिव एवं सती का विवाह

इस तीर्थ में एक उत्तर मध्यकालीन मन्दिर की छत पर सुन्दर वानस्पतिक अलंकरण हैं। मन्दिर की भित्तियों पर हाथी पर सवार योद्धा, दधि मन्थन, नाभिकमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति, श्रवण कुमार, गोपियों के मध्य कृष्ण आदि अनेक प्रसंगों का चित्रण है।

105 गौतम ऋषि/गवेन्द्र तीर्थ-गोंदर

गौतम ऋषि/गवेन्द्र तीर्थ करनाल से लगभग 28 कि.मी. दूर गोंदर नामक गाम में स्थित है। इस तीर्थ का सम्बन्ध गौतम ऋषि से है। महर्षि गौतम की गणना सप्तर्षियों में होती है। इनका उल्लेख महाभारत और रामायण में हुआ है।

महर्षेः गौतमस्य आसीत् शरद्वान्नाम गौतमः।
पुत्रः किल महाराज जातः सहशरैर्विगो।।

(महाभारत, आदि पर्व 130/2)

गौतम की पत्नी अहिल्या थी जो गौतम के श्राप से शिला बन गई थी। उत्तर रामायण के अनुसार श्रीराम के अनुज लक्ष्मण ने गौतम ऋषि के आश्रम के समीप एक भव्य राजमहल बनवाया था।

महाभारत के विभिन्न पर्वों में महर्षि गौतम के प्रसंग उपलब्ध होते हैं। सभापर्व के अनुसार वह ब्रह्मा की सभा में उपस्थित होकर उनकी अर्चना करते हैं। द्रोणपर्व में उल्लेख है कि उन्होंने महाभारत युद्ध को समाप्त करने के लिए आचार्य द्रोण को परामर्श दिया था।

वामन पुराण में ब्रह्मोदुम्बर तीर्थ के प्रसंग में भी सप्तर्षियों के वर्णन में इनका उल्लेख आया है।

तीर्थ स्थित मंदिर की भित्तियों पर बकासुर वध, सूर्य का रथ, हाथियों को पाँव से दबाते हुए भीम, रासलीला, विष्णु एवं दुर्गा का चित्रण है।

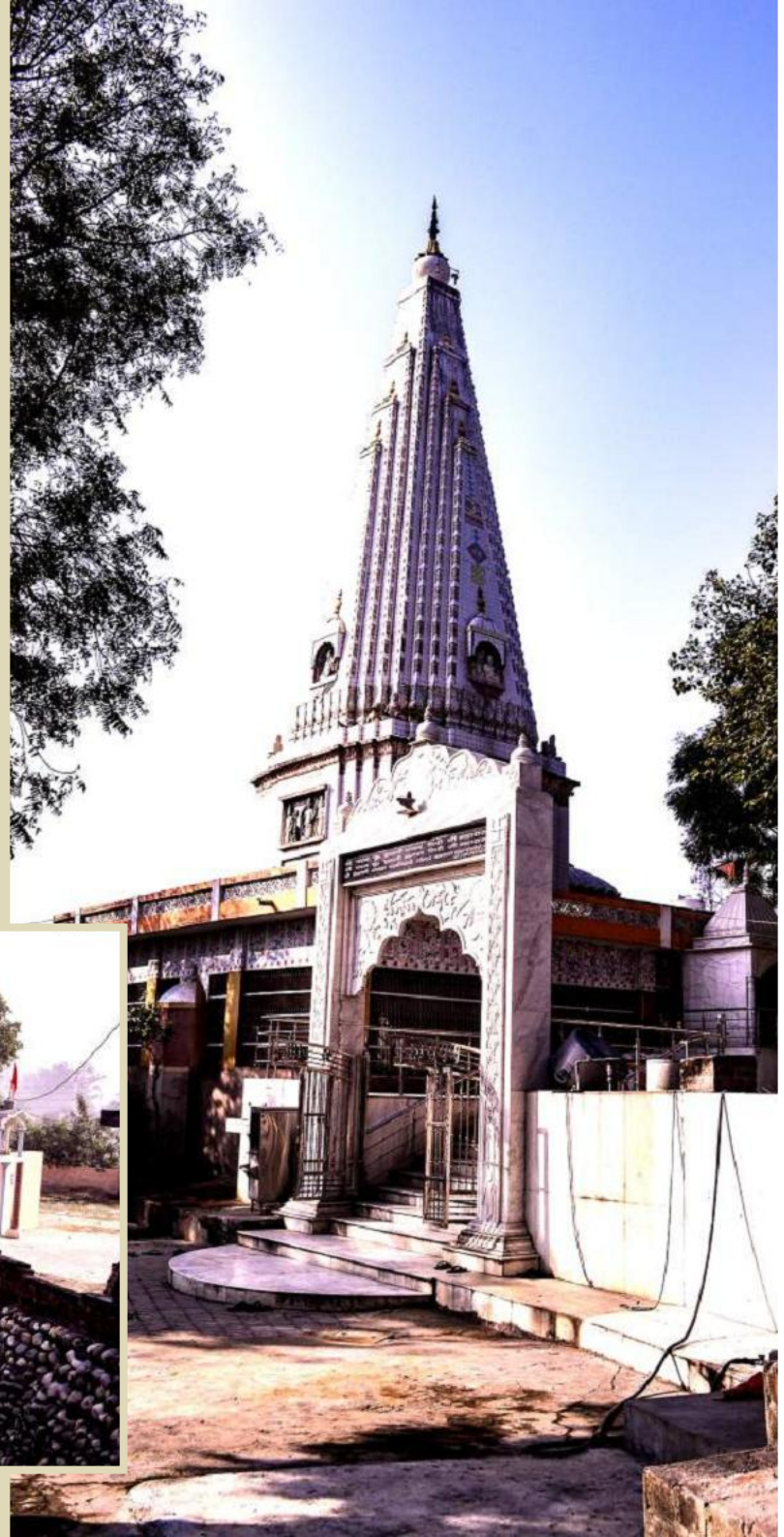

106 जमदग्नि कुण्ड, जलमाणा

यह तीर्थ करनाल से लगभग 31 कि.मी. दूर जलमाणा नामक ग्राम में स्थित है। इस तीर्थ का सम्बन्ध महर्षि परशुराम के पिता महर्षि जमदग्नि से है तीर्थ पर स्थित सरोवर जमदग्नि कुण्ड कहलाता है।

जनश्रुतियों के अनुसार यह स्थल महर्षि जमदग्नि का आश्रम है जहाँ वह अपनी पत्नी रेणुका एवं अपने पुत्रों के साथ निवास करते थे। इनके पुत्र परशुराम पिता के परम भक्त थे जिन्होंने एक बार पिता की आज्ञा का पालन करते हुए अपनी माता रेणुका को मार दिया था। पिता से वरदान पाकर पुनः उन्होंने माता को पुनर्जीवित करवा लिया था। कहा जाता है कि परशुराम ने अन्यायी क्षत्रियों के विरुद्ध अपना संघर्ष यहीं से शुरू किया था। तीर्थ में हर रविवार को विशेष पूजा होती है तथा दशहरे की दूज को मेला लगता है।

107 पंचदेव तीर्थ, पाढ़ा

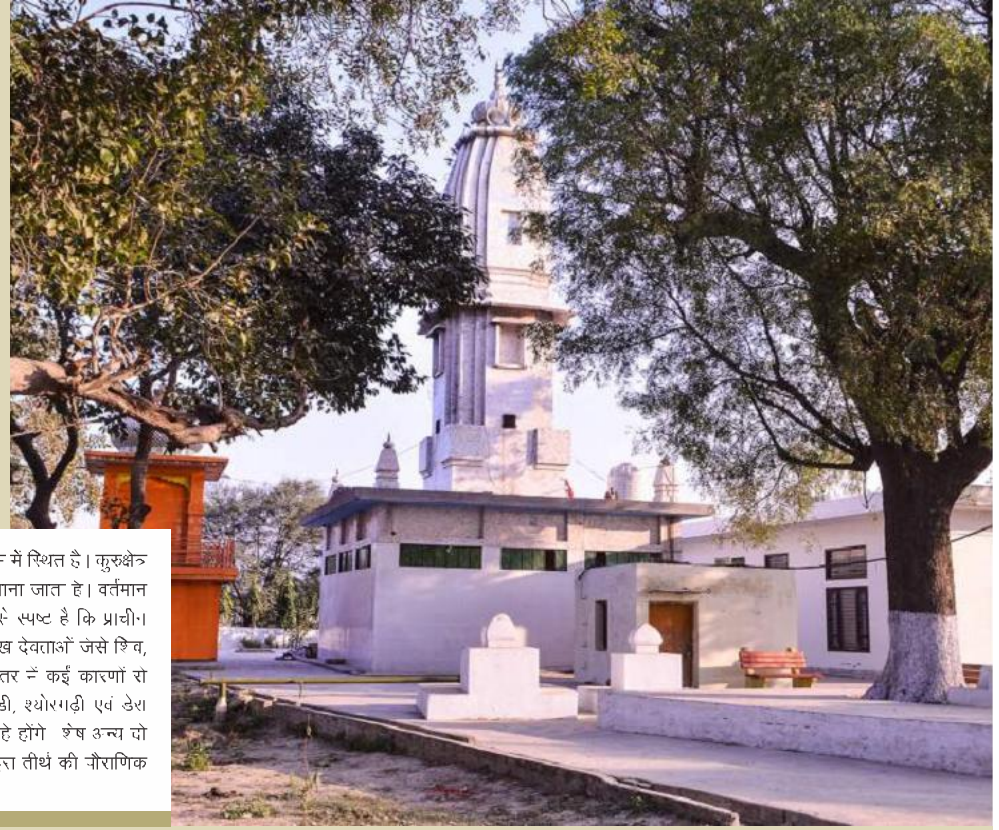

पंचदेव नामक यह तीर्थ करनाल से लगभग 29 कि.मी. दूर पाढ़ा ग्राम में स्थित है। कुरुक्षेत्र भूमि के तीर्थों का सम्बन्ध हिन्दु धर्म के पाँच प्रमुख सम्प्रदायों से माना जाता है। वर्तमान में इस तीर्थ में केवल एक शिव मन्दिर है। परन्तु जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि प्राचीन काल में इस तीर्थ में शैव, सौर, शाक्त, वैष्णव एवं गाणपत्य मतान्तरों के प्रमुख देवताओं जैसे शिव, सूर्य, शक्ति, विष्णु एवं गणेश के मन्दिर स्थापित रहे होंगे जो कि कालान्तर में कई कारणों से लुप्तप्राय हो गये होंगे। वर्तमान में यहाँ स्थित पंचदेव तीर्थों में से रामकुण्डी, श्योरगढ़ी एवं डेरा संतराम ही ज्ञात हैं जो कि कभी तीन प्रमुख देवताओं के उपासना स्थल रहे होंगे शेष अन्य दो स्थल लुप्तप्राय हो गए हैं। तीर्थ सरोवर की विशालता को देखते हुए भी इस तीर्थ की पौराणिक महत्ता प्रकट होती है।

108 कोटि तीर्थ, कुरलन

कोटि तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध यह तीर्थ करनाल से लगभग 33 कि.मी दूर कुरलन ग्राम में स्थित है। इस तीर्थ का पौराणिक साहित्य में भी कोटि कूट तीर्थ के नाम से भी उल्लेख है। इस तीर्थ का उल्लेख ब्रह्म पुराण में भी मिलता है जहाँ इसे कोटि कूट तीर्थ कहा गया है। लोक प्रचलित मान्यताओं में इसे करोड़ी तीर्थ भी कहते हैं। कहते हैं कि एक ऋषि ने करोड़ों तीर्थों का पानी अपने कमण्डल में डालने का संकल्प लिया था। इस तीर्थ के पानी की एक बूंद डालते ही उसका कमण्डल गिर गया तो ऋषि के मन में यह विचार आया कि इसी तीर्थ में कोटि तीर्थों का जल समाहित है तभी से यह तीर्थ कोटि तीर्थ के नाम से विख्यात हुआ।

109 दशाश्वमेध तीर्थ, सालवन

यह तीर्थ करनाल से लगभग 40 कि.मी. दूर सालवन ग्राम में स्थित है। महाभारत के वन पर्व में इस तीर्थ का उल्लेख शालूकिनी नाम से किया गया है। सम्भवतः शालूकिनी ही कालान्तर में सालवन नाम से प्रसिद्ध हो गया होगा। महाभारत के अनुसार यहाँ स्नान–दान करने से मनुष्य को दस अश्वमेध यज्ञों का फल मिलता है।

ततः शालूकिनीं गत्वा तीर्थसेवी नराधिप।
दशाश्वमेधे स्नात्वा च तदेव फलमाप्नुयात्।।

(महाभारत, वन पर्व, 83 / 14)

ब्रह्म पुराण में इस तीर्थ के सम्बन्ध में यह कथा मिलती है कि विश्वकर्मा का विश्वरूप नामक एक पराक्रमी पुत्र था। उसका पुत्र भौवन भी पराक्रमी था। सम्राट भौवन ने महर्षि कश्यप के साथ बृहस्पति के बड़े भाई संवर्त के पास जाकर ऐसे स्थान के बारे में पूछा जहाँ अश्वमेध यज्ञ निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हो सके। उनके आग्रह पर ब्रह्मा जी ने इस स्थान पर अश्वमेध यज्ञ करने को कहा क्योंकि यहाँ एक अश्वमेध यज्ञ करने से दस अश्वमेध यज्ञों का फल मिलता है।

ततः प्रभृति तत्तीर्थं दशाश्वमेधिकं विदुः।
दशानामश्वमेधानां फलं स्नानादवाप्यते।

(ब्रह्म पुराण 83 / 29)

वायु पुराण में कहा गया है कि दशाश्वमेध एवं पंचाश्वमेध नामक तीर्थ में श्राद्ध करने पर दस एवं पाँच अश्वमेध यज्ञों का फल प्राप्त होता है।

दशाश्वमेधिकेतीर्थे तीर्थे पंचाश्वमेधिके।
यथोद्दिष्टं फलं तेषां क्रतूनां नात्र संशयः।

(वायु पुराण 77 45)

ब्रह्म पुराण के अनुसार इस तीर्थ का उल्लेख कुरुक्षेत्र के पवित्र तीर्थों में मिलता है जिससे इस तीर्थ के कुरुक्षेत्र भूमि में होने की पुष्टि होती है।

तीर्थ स्थित मंदिर में चित्रित मूर्तियाँ एवं भित्ति चित्र बने हुए है तीर्थ सरोवर पर बने उत्तर मध्य कालीन घाटों का वर्तमान में जीर्णोद्धार किया गया है

110 ब्रह्म तीर्थ, रिसालवा

ब्रह्म तीर्थ नामक यह तीर्थ करनाल से लगभग 44 कि. मी. दूर रिसालवा ग्राम में स्थित है। यह तीर्थ भगवान ब्रह्मा स सम्बन्धित है। वामन पुराण के अनुसार एक बार ब्रह्मा जी से भयंकर पाप हो गया था। उन्होंने उसके प्रायश्चित हेतु भगवान शिव की श्रद्धा पूर्वक पूजा की। ब्रह्मा की भक्ति से संतुष्ट होकर शिव ने उन्हे यहाँ चार लिंगो की स्थापना करने का आदेश दिया। तब शिव के आदेशानुसार पाप मुक्त हुए ब्रह्मा न चार लिंगों की स्थापना की। प्रथम लिंग हरि के पास ब्रह्मसर था। द्वितीय ब्रह्मसदन की स्थापना उन्होंने अपने आश्रम में की। उसी के पूर्वी भाग में तीसरे लिंग की स्थापना हुई और चतुर्थ लिंग की स्थापना सरस्वती के तट पर की गई। ये सभी मिलकर ब्रह्म तीर्थ कहलाए जिनक दर्शन मात्र से व्यक्ति को परम गति प्राप्त होती है।

रिसालवा ग्राम में स्थित यह तीर्थ इन चार ब्रह्म तीर्थों में से एक है। तीर्थ परिसर में ही एक प्रस्तर निर्मित चौखट का भग्नावशेष पड़ा हुआ है जिससे यहाँ प्रतिहार कालीन (9–10वीं शती ई.) किसी प्रस्तर निर्मित मंदिर होने की पुष्टि होती है।

ब्रह्मा द्वारा सरस्वती के तट पर शिवलिंग की स्थापना

111 फल्गु तीर्थ, फफड़ाना

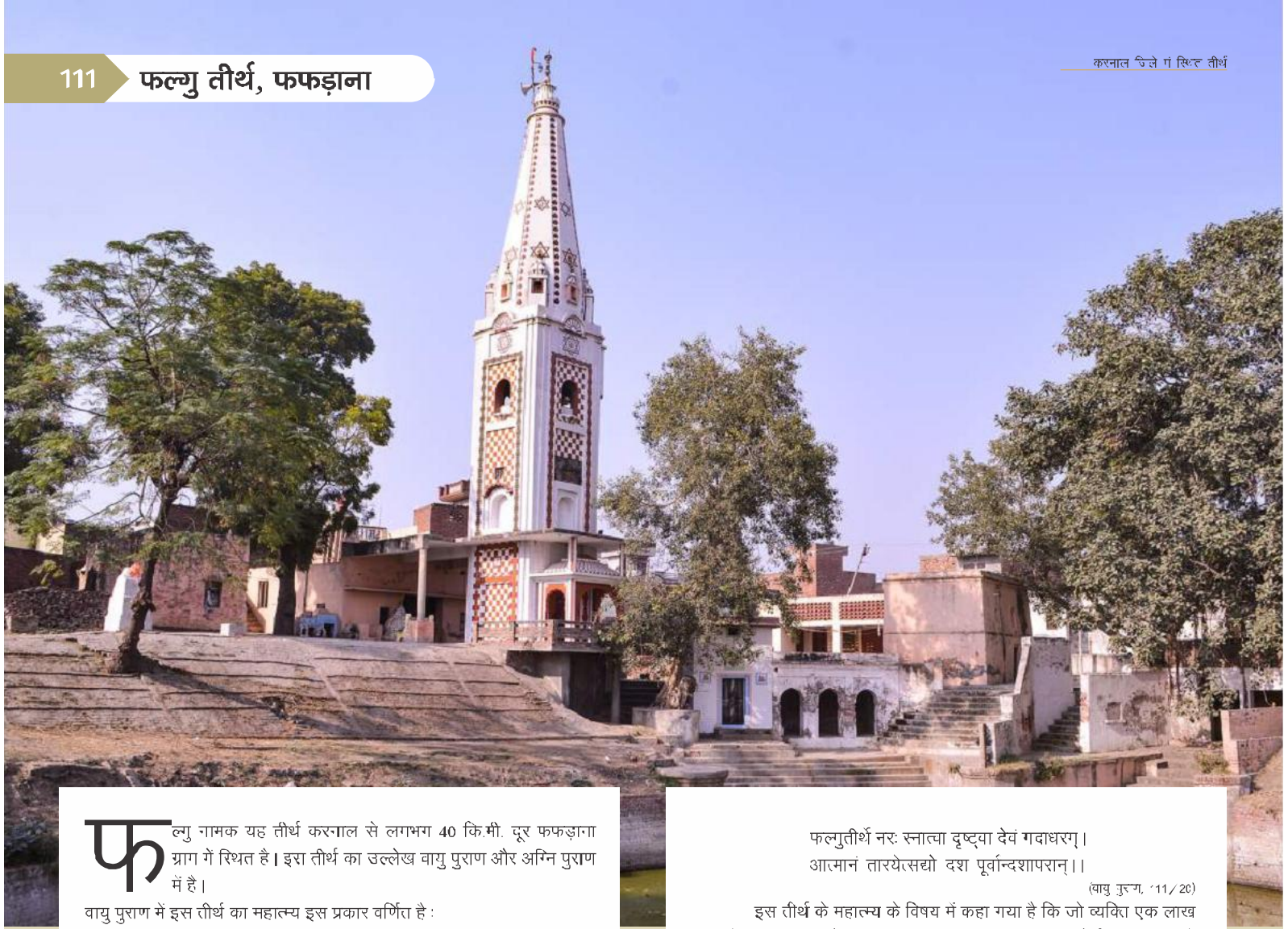

फल्गु नामक यह तीर्थ करनाल से लगभग 40 कि.मी. दूर फफड़ाना ग्राम में स्थित है। इस तीर्थ का उल्लेख वायु पुराण और अग्नि पुराण में है।

वायु पुराण में इस तीर्थ का महात्म्य इस प्रकार वर्णित है :

फल्गुतीर्थं व्रजेत्तस्मात्सर्वतीर्थोत्तमोत्तमम्।
मुक्तिर्भवति कर्तृणां पितृणां श्राद्धतः सदा।।
ब्रह्मणा प्रार्थितो विष्णुः फल्गुको ह्यभवत्पुरा।
दक्षिणाग्नौ हुतं तत्र तद्रजः फल्गुतीर्थकम्।

(वायु पुराण, 11/13-15)

अर्थात् तदनन्तर सभी तीर्थों में श्रेष्ठ फल्गु तीर्थ की यात्रा करनी चाहिए, वहाँ पर श्राद्ध करने वालों की एवं उनके पितरों की सर्वदा मुक्ति होती है। वहाँ पर ब्रह्मा की प्रार्थना पर प्राचीन काल में भगवान विष्णु स्वयं फल्गु रूप में प्रतिष्ठित हुए थे। वायुपुराण में उल्लेख है कि फल्गु तीर्थ में स्नान, दान और श्रद्धा पूर्वक तर्पण करने वाला श्रद्धालु अपने पूर्व की दस और भावी दस पीढ़ियों का भी उद्धार करता है।

फल्गुतीर्थे नरः स्नात्वा दृष्ट्वा देवं गदाधरम्।
आत्मानं तारयेत्सद्यो दश पूर्वान्दशापरान्।।

(वायु पुराण, 11/20)

इस तीर्थ के महात्म्य के विषय में कहा गया है कि जो व्यक्ति एक लाख अश्वमेध यज्ञ करता है वह भी इतना फल प्राप्त नहीं करता है जितना फल्गु में स्नान करने वाला पाता है। वायु पुराण में कहा गया है कि फल्गु तीर्थ में स्नान कर आदि गदाधर देव का दर्शन करने पर मनुष्य को उत्तम फल प्राप्त होता है।

इस तीर्थ में जो व्यक्ति आदि गदाधर देव को श्रद्धापूर्वक मंत्र से नमस्कार कर पंचामृत से उन्हें स्नान करा कर सुन्दर पुष्प एंव वस्त्रादि से अलंकृत कर उनकी पूजा करता है उसकी सारी श्राद्ध क्रिया सफल होती है। इस तीर्थ पर सूर्य ग्रहण के अवसर पर स्नान की प्राचीन परम्परा है तथा सोमवती अमावस्या को यहाँ विशाल मेला लगता है।

112 धनक्षेत्र तीर्थ, असन्ध

धनक्षेत्र नामक यह तीर्थ करनाल से लगभग 44 कि. मी. दूर असन्ध शहर में स्थित है। जनश्रुति के अनुसार इस तीर्थ का नाम धनक्षेत्र है जो कालांतर में अनेक ऋषि–मुनियों की तपस्थली रहा है। उन्हीं के आशीर्वाद से आज भी इसका महत्त्व कायम है। तीर्थ स्थित समाधि की परिक्रमा करने से अत्यन्त शुभ फल मिलता है और रुके हुए काम पूरे हो जाते हैं। यहाँ पर परिक्रमा करवाने से दूध देना बन्द करने वाले पशु पुनः दूध देना शुरु कर देते हैं।

113 जरासन्ध का टीला, असंध

जरासन्ध का टीला कहा जाने वाला यह पुरातात्त्विक स्थल असंध शहर में करनाल से लगभग 43 कि.मी. दूर स्थित है। असंध नगर को प्राचीन साहित्य में असंधिवात भी कहा गया है। कहा जाता है कि अरांधिवात नामक नगर पाण्डवों की दूसरी राजधानी थी। राजा परीक्षित के पुत्र महाराजा जनमेजय के समय असंधिवात एक धन–धान्य पूर्ण नगर था।

असंध स्थित जरासंध का टीला कहा जाने वाला यह पुरातात्त्विक स्थल वास्तव में एक विशाल बौद्ध स्तूप का निचला भाग है जिसके निर्माण में कुषाण कालीन ईंटों का प्रयोग हुआ है। अपने स्थापना काल में यह विशाल स्तूप बौद्ध धर्मावलम्बियों की श्रद्धा का केन्द्र रहा होगा। सम्भवतः इस स्तूप का निर्माण भगवान बुद्ध की कुरुक्षेत्र यात्रा के पश्चात् किया गया होगा। यह स्तूप हरियाणा से प्राप्त प्रमुख स्तूपों में से एक है। भगवान बुद्ध की कुरुक्षेत्र यात्रा के पश्चात् तथा कुरु देश के निवासियों को बौद्ध धर्म में दीक्षित करने के पश्चात् ही हरियाणा में स्तूपों एवं बौद्ध विहारों का निर्माण हुआ। जिनका उल्लेख ह्वेनसांग ने भी अपने यात्रा विवरणों में दिया है।

114 जम्बूनद तीर्थ, जबाला

जम्बूनद नामक यह तीर्थ करनाल से लगभग 38 कि.मी. दूर करनाल–असन्ध मार्ग पर स्थित जबाला ग्राम में स्थित है। पौराणिक साहित्य में सम्पूर्ण पृथ्वी को सात द्वीपों में विभक्त होने से 'राप्तद्वीप पृथ्वी' अथवा राप्तद्वीपवसुमती के नाम से उल्लिखित किया गया है। ये सात प्रमुख द्वीप जम्बू, प्लाक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शक एवं पुष्कर हैं। जम्बू नामक द्वीप सभी द्वीपों के मध्य में स्थित है।

महाभारत एवं पुराणों में जम्बूमार्ग तीर्थ का उल्लेख आता है। सम्भवतः यही जम्बूमार्ग तीर्थ कालान्तर में जम्बूनद नाम से प्रसिद्ध हुआ होगा। महाभारत में इस तीर्थ का महत्त्व इस प्रकार वर्णित है।

जम्बूमार्गं समाविश्य देवर्षिपितृसेवितम् ।
अश्वमेधमवाप्नोति सर्वकामसमन्वितः ।।
तत्रोष्य रजनीः पंचपूतात्मा जायते नरः ।
न दुर्गतिमवाप्नोति सिद्धिं प्राप्नोति चोत्तमाम्।।

(महाभारत, वन पर्व 82/41 42)

अर्थात् देवताओं, ऋर्षियों एवं पितरों द्वारा सेवित जम्बूमार्ग नामक तीर्थ में जाने पर मनुष्य अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त करता है और उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। जो मनुष्य उक्त तीर्थ में पाँच रात्रियों तक निवास करता है वह विशुद्धात्मा होकर श्रेष्ठ सिद्धियों को प्राप्त करता है।

महाभारत के अतिरिक्त इस तीर्थ का महत्व अग्नि पुराण, वायु पुराण तथा कूर्म पुराण में भी वर्णित है। अग्नि पुराण और कूर्म पुराण में इसका उल्लेख जम्बूकेश्वर नाम से है जहाँ ब्रह्मा देव ने भी इस तीर्थ को उत्तम मान कर इसका सेवन किया था।

115 पावन तीर्थ, उपलाना

पावन नामक यह तीर्थ करनाल से लगभग 36 कि.मी. दूर करनाल–अरान्ध मार्ग पर स्थित उपलाना ग्राम में है। इस तीर्थ का नाम एवं महत्त्व महाभारत वन पर्व के 83वें अध्याय में स्वस्तिपुर नामक तीर्थ के पश्चात् वर्णित है :

पावनं तीर्थमासाद्य तर्पयेत्पितृदेवताः।
अग्निष्टोमस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोति भारत।।

(महाभारत, वन पर्व, 83 175)

अर्थात् हे भारत! पावन तीर्थ में जाकर देवताओं एवं पितरों का तर्पण करने वाला मनुष्य अग्निष्टोम के फल को प्राप्त करता है।

महाभारत में ही अनुशासन पर्व के अन्तर्गत पावन की गणना विश्वदेवों में की गई है :

विश्वे चाग्निमुखादेवाः संख्याताः पूर्वमेव ते।
तेषां नामानि वक्ष्यामि भागार्हाणां महात्मनाम्।।
बलं धृतिर्विपापात्मा च पुण्यकृत्पावनस्तथा।
पार्षिक्षेमासमूहश्च दिव्यसानुस्तथैव च।।

(महाभारत, अनुशासन पर्व 29–30)

उपरोक्त श्लोक से स्पष्ट है कि पुण्यकृत पावन भी एक प्रमुख विश्वदेव है। लोक प्रचलित श्रुति इसे पाण्डवों के रामण का तीर्थ बताती है। यहाँ के लोगों में ऐसी मान्यता पाई जाती है कि यहाँ आने पर श्रद्धालुजनों की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। ग्रामीण निवासी इस तीर्थ को गोपालमोचन कहते हैं।

116 चुच्चुकारण्डव तीर्थ, चोरकारसा

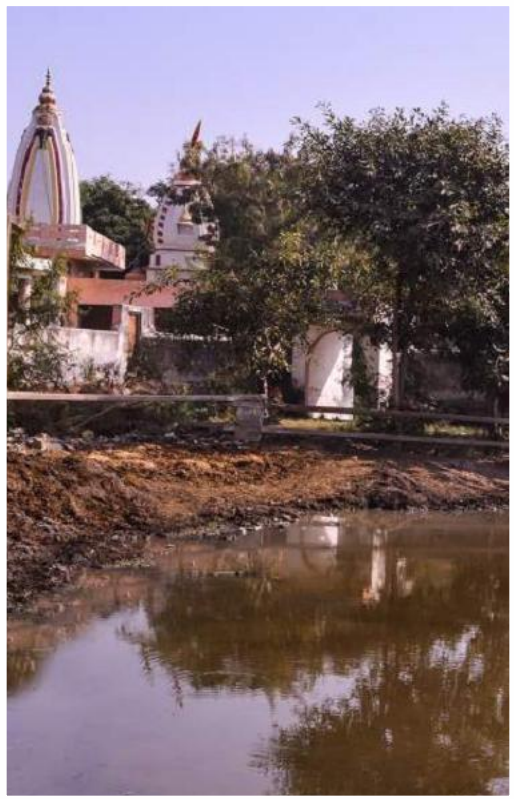

चुच्चुकारण्डव नामक यह तीर्थ करनाल से लगभग 35 कि.मी. दूर चोरकारसा ग्राम में स्थित है। इस तीर्थ का निर्माण पौराणिक काल के बाद हुआ प्रतीत होता है।

यह तीर्थ एक शांत तीर्थ है क्योंकि इस तीर्थ में आधुनिक मन्दिर के साथ लगता हुआ मन्दिर किसी शांत को समर्पित है। मन्दिर के गर्भगृह में स्थापित मूर्तियों के साथ एक प्रतिहार कालीन (9–10वीं शती ई.) विष्णु प्रतिमा भी है जिससे प्रतीत होता है कि मध्यकाल में यहां कोई मन्दिर रहा होगा। मन्दिर परिसर में अनेक नागा साधुओं की समाधियाँ है जिससे पता चलता है कि प्राचीन काल में यह तीर्थ नागा साधुओं की तपस्थली रहा होगा।

तीर्थ मन्दिर के दक्षिण–पूर्व में तीर्थ सरोवर है जिसके घाट उत्तर मध्यकालीन लाखौरी ईंटों से निर्मित है।

117 त्रिगुणानन्द तीर्थ, गुनियाना

त्रिगुणानन्द नामक यह तीर्थ करनाल से लगभग 31 कि.मी. दूर गुनियाना ग्राम में स्थित है। लौकिक आख्यान इस तीर्थ का सम्बन्ध सात प्रमुख महर्षियों भारद्वाज, जमदग्नि, कश्यप, विश्वामित्र, वशिष्ठ एवं अत्रि में से एक गौतम ऋषि से जोड़ते हैं।

प्रचलित जनश्रुति के अनुसार इसी स्थान पर महर्षि गौतम ने तपस्या की थी। महाभारत में उपलब्ध वर्णन के अनुसार महर्षि गौतम का अन्यान्य ऋषियों के साथ अर्जुन के जन्मोत्सव पर शुभागमन हुआ था। द्रोण पर्व में ऐसा उल्लेख मिलता है कि इन्होंने महाभारत युद्ध में भीषण नरसंहार को रोकने के लिए आचार्य द्रोण के पास जाकर उनसे युद्ध बन्द करने को कहा था। महर्षि गौतम ने पारियात्र नामक पर्वत पर साठ सहस्र वर्षों तक कठिन तपस्या की थी। रामायण में भी इन ऋषि का विशेष वर्णन है। इन्होंने अपनी पत्नी अहिल्या को शिला होने का श्राप दिया था जिसका बाद में श्रीराम के पवित्र चरणारविन्द के स्पर्श से उद्धार हुआ। महाभारत में शरद्वान एवं चिरकारी नामक इनके दो पुत्रों का उल्लेख है। रामायण एवं महाभारत में उल्लेखित यह तीर्थ 48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि के महत्त्वपूर्ण तीर्थों में से एक है।

द्रोणाचार्य से महाभारत युद्ध रोकने का आग्रह करते हुए महर्षि गौतम।

इस तीर्थ पर शिवरात्रि के अवसर पर भारी मेला लगता है। तीर्थ पर एक सरोवर है जिसके पश्चिमी तट पर एक सुन्दर लाखौरी ईंटों व मेहराबों से सुसज्जित प्रवेश द्वार है। प्रवेश द्वार से घाट की प्रथम सीढ़ी वाले तल पर दोनों ओर दो दो मेहराबी कक्षों का निर्माण हुआ है। सरोवर पर स्थित घाट में उत्तर मध्यकालीन अष्टकोण आकृति वाली बुर्जियाँ हैं।

118 व्यास स्थली, बस्थली

यह तीर्थ करनाल से लगभग 30 कि.मी. दूर करनाल कैथल मार्ग के समीप बस्थली ग्राम में स्थित है। व्यास स्थली नामक इस तीर्थ का सम्बन्ध महर्षि व्यास से है जो पराशर के पुत्र और महाभारत के रचयिता थे।

वामन पुराण और महाभारत के अनुसार महर्षि व्यास अपने पुत्र शुकदेव के गृहत्याग से बहुत दुखी हुए और उनके मन को अस्थिर कर दिया। इसलिए वे कैलाश पर्वत जाकर अपने पुत्र का नाम लेकर जोर-जोर से पुकारने लगे। शिव द्वारा शांत किये जाने से महर्षि व्यास इस स्थान पर आ कर रहने लगे। तभी से इसका नाम व्यास-स्थली पड़ा। यहाँ स्नान-दान करने से हजारों गऊओं के दान का फल मिलता है तथा इस तीर्थ के सेवन से व्यक्ति को कभी पुत्र शोक नही होता है। इस तीर्थ का वर्णन महाभारत एवं वामन पुराण दोनो में लगभग एक जैसा है। महाभारत में इस तीर्थ का महत्व इस प्रकार वर्णित है :

ततो व्यासस्थली नाम यत्र व्यासेन धीमता।
पुत्रशोकाग्नितप्तेन देहत्यागे कृता गतिः।
ततो देवैस्तु राजेन्द्र पुनरुत्थापितस्तदा।
अभिगत्वा स्थलीं तस्य गोसहस्रफलं लभेत्।

(महाभारत, वन पर्व 83/56 97)

वेदों का संकलन करते हुए महर्षि वेदव्यास

अर्थात् इस व्यास स्थली नामक तीर्थ में जाने पर व्यक्ति राजसूय गौ दान करने का फल प्राप्त करता है। वामन पुराण के अनुसार इस तीर्थ में जाने पर व्यक्ति पुत्र शोक को प्राप्त नहीं करता है।

अभिगम्य स्थलीं तस्य पुत्रशोकं न विन्दति।

(वामन पुराण 36/59)

तीर्थ परिसर में भगवान कृष्ण द्वैपायन व्यास को समर्पित एक मन्दिर है।

119 पृथ्वी तीर्थ, बालू

पृथ्वी तीर्थ करनाल से लगभग 18 कि.मी. दूर बालू नामक ग्राम में स्थित है। महाभारत के तीर्थों के क्रमिक वर्णन में पारिप्लव तीर्थ के तुरन्त पश्चात् पृथ्वी तीर्थ का नामोल्लेख मिलता है।

महाभारत में इस तीर्थ के धार्मिक महत्त्व को वर्णित करते हुए कहा गया है कि इस तीर्थ में जाने पर सहस्र गोदान का फल मिलता है।

पृथिव्यास्तीर्थमासाद्य गोसहस्रफलं लभेत्।

(महाभारत, वन पर्व 83/12)

वामन पुराण में भी इस तीर्थ की धार्मिक महत्ता का स्पष्ट रूप से वर्णन करते हुए कहा गया है कि यह तीर्थ सभी पापों का नाश करने वाला तथा पृथ्वी पर किए गए सभी पापों को स्नान मात्र से दूर करने वाला है।

धरण्यास्तीर्थमासाद्य सर्वपापविमोचनम्।
क्षान्तियुक्तो नरः स्नात्वा प्राप्नोतिपरमं पदम्।
धरण्यामपराधानि कृतानि पुरुषेण वै।
सर्वाणि क्षम्यते तस्य स्नातमात्रस्य देहिनः।

(वामन पुराण 34/19–20)

इस तीर्थ से सम्बन्धित प्रचलित एक अन्य जन कथा इस प्रकार है कि यहाँ पर वाल्मीकि ऋषि ने तपस्या की थी तथा यहाँ वाल्मीकि ऋषि के आश्रम में सीता जी ने अपना परित्यक्त जीवन बिताया था। लवकुश का जन्म भी यहीं हुआ था। सम्भवतः वाल्मीकि ऋषि के नाम पर ही इस गाँव का नाम बालू पड़ा है। तीर्थ पर कार्तिक मास की अमावस्या को मेला लगता है। इस तीर्थ सरोवर में स्नान करने से मनुष्य सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है।

120 पराशर तीर्थ, बहलोलपुर

पराशर नामक यह तीर्थ करनाल से लगभग 18 कि.मी. दूर बहलोलपुर ग्राम क उत्तर पूर्व में स्थित है। बहलालपुर नामक ग्राम में स्थित इस तीर्थ का नाम महर्षि वशिष्ठ के पोत्र तथा महर्षि शक्ति के पुत्र पराशर गुनि रो राम्बन्धित होने के कारण ही पराशर तीर्थ पड़ा। यही गहर्षि पराशर, महाभारत के रचयिता महर्षि व्यास के पिता थे।

महाभारता के आदि पर्व में महर्षि पराशर से सम्बन्धिता कथा के अनुसार यह बचपन से ही वेदाभ्यास करते थे। पराशर के जन्म से पूर्व ही कल्माषपाद नामक राजा जो कि महर्षि शक्ति के श्राप रो राक्षरा हो गया था, ने उनके पिता शक्ति का भक्षण कर लिया था। जब इन्हें अपनी माता से यह ज्ञात हुआ कि एक राक्षस ने इनक पिता का भक्षण कर लिया था तो इनक मन में सम्पूर्ण राक्षस जाति के प्रति अदम्य घृणा उत्पन्न हो गई। अतः पराशर ने राक्षसों के विनाश के लिए एक यज्ञ का आयोजन किया जिरामें राहग्रों राक्षरा जलकर नष्ट हो गए। तब वशिष्ठ एवं पुलस्त्य आदि महर्षियों ने इन्हें रोक कर इनके यज्ञ का निवारण किया। इन्हीं महर्षि पराशर ने बाद में सत्यवती से महर्षि व्यास को उत्पन्न किया जिन्होंने महाभारत एवं अठारह पुराणें की रचना की। लौकिक मान्यता के अनुसार इरी स्थान पर महर्षि पराशर ने कठोर तपरया की थी ।

तीर्थ स्थित मन्दिरों की बाह्य एवं आन्तरिक भित्तियों में भित्ति चित्रों की प्रधानता है जिनमें हनुमान, शेर से लड़ता हुआ योद्धा, गणश, शषशायी विष्णु,

दुर्गा, शिव, पार्वती, राधा–कृष्ण, विष्णु–लक्ष्मी, गीता उपदेश, संन्यासी, बीन बजाता कलाकार आदि के चित्र सम्मिलित हैं। यहाँ तीर्थ सरोवर पर अष्टकोण बुर्जी वाले लाखौरी ईंटों से निर्मित उत्तर मध्यकालीन घाट हैं।

121 विमलसर तीर्थ, सग्गा

विमलसर नामक यह तीर्थ, करनाल से लगभग 24 कि.मी दूर सग्गा ग्राम में स्थित है।

पोराणिक साहित्य में वामन पुराण के अन्तर्गत इस तीर्थ का धार्मिक महत्त्व बताते हुए रपष्ट रूप रो इराका नामोल्लेख मिलता है। वामन पुराण में ऐसा वर्णन मिलता है कि जो व्यक्ति इस तीर्थ में स्नान करता है, वह रुद्र लोक को प्राप्त करता है।

विमले च सरे स्नात्वा दृष्ट्वा च विमलेश्वरम्।
निर्मलं स्वर्गमायाति रुद्रलोकं च गच्छति।।

(वामन पुराण सरो. 13 18)

महाभारत वन पर्व में भी तीर्थयात्रा प्रसंग के अन्तर्गत इस उत्तम तीर्थ का नाम एवं महत्त्व स्पष्टतया वर्णित है :

ततो गच्छेत् धर्मज्ञ विमलं तीर्थमुत्तमम्।
अद्यापि यत्र दृश्यं ते मत्स्याः सौवर्णराजताः।
तत्र स्नात्वा नरः क्षिप्रं वासवं लोकमाप्नुयात्।
सर्वपापविशुद्धात्मा गच्छेत् परमां गतिम्।

(महाभारत, वन पर्व 82 / 87–88)

अर्थात् हे धर्मज्ञ ! तदन्तर विमल नामक उत्तम तीर्थ में जाना चाहिए, जहाँ स्वर्ण एवं रजत के रंग की मछलियाँ दिखाई देती हैं। इसमें स्नान करने से मनुष्य शीघ्र ही इन्द्रलोक को प्राप्त कर लेता है एवं सभी पापों से शुद्ध हो परमगति को प्राप्त करता है।

वर्तमान में इस तीर्थ पर आस्था रखते हुए यहां के निवासी अपने पितरों के निमित्त यहीं पिण्डदान करते हैं। यहां पर शिव एकादशी के दिन प्रतिवर्ष मेले का आयोजन किया जाता है। प्रत्येक रविवार को श्रद्धालु जन यहाँ पर दूध का दान करते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ होली के दिन मेला लगता है।

तीर्थ से लगते सग्गा ग्राम से एक उत्तर हड़प्पा कालीन कुँए के अवशेष तथा इसी काल के मृदभाण्ड, मणके एवं चूड़ियाँ भी प्राप्त हुई हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ से धूसर चित्रित मृदभाण्ड एवं आद्य एतिहासिक काल के मृद पात्र भी मिल हैं। इन पुरावस्तुओं के मिलने से इस तीर्थ की प्राचीनता स्वयं सिद्ध हो जाती है।

122 वेदवती तीर्थ, सीतामाई

वेदवती नामक यह तीर्थ करनाल से 25 कि.मी. दूर करनाल–पिहोवा मार्ग पर सीतामाई ग्राम में स्थित है।

वामन पुराण में इस तीर्थ का विस्तार से वर्णन है। रामायण में इस तीर्थ से सम्बन्धित कथा संक्षेपतः इस प्रकार है कि भगवान शंकर से वर प्राप्त करने के पश्चात् रावण सर्वत्र अत्याचार करता हुआ विचरण करने लगा। भ्रमण करते हुए एक दिन उसने एक तपरयारत कन्या को देख उससे तप करने का कारण पूछा। उस कन्या ने बताया कि वह राजा कुशध्वज की कन्या है तथा उसका नाम वेदवती है। उसके पिता उसका विवाह भगवान विष्णु के साथ करने के इच्छुक थे। इससे क्रोधित होकर शुम्भ नामक राक्षस ने उसके पिता का वध कर दिया जिससे दुखी होकर उसकी माता भी अग्नि में प्रवेश कर गई। विष्णु के विषय में पिता की संकल्प पूर्ति हेतु ही वह उनको प्राप्त करने के लिए यज्ञ कर रही है– विष्णु निन्दक रावण ये सुनते ही विष्णु की निन्दा करने लगा तथा उसने वेदवती को बताया कि वह पराक्रम में किसी भी प्रकार विष्णु से कम नहीं है। वेदवती ने रावण को विष्णु की निन्दा करने से रोका। इस पर रावण ने उसके केश पकड़ लिए। इस अपमान से वेदवती को इतनी अधिक आत्मग्लानि हुई कि उसने अग्नि में प्रवेश करने का निश्चय किया और रावण से कहा कि वह उसके वधार्थ पुनर्जन्म ग्रहण करेगी। तदुपरान्त उस कन्या ने अग्नि में प्रवेश किया तथा राजा जनक के यहां कन्या रूप में जन्म लिया :

एषा वेदवती नाम पूर्वमासीत्कृते युगे।
त्रेता युगमनुप्राप्य वधार्थं तस्य राक्षसः।
उत्पन्ना गैथिलकुले जनकस्य गहात्मनः।

(रामायण, उत्तरकाण्ड 17/38)

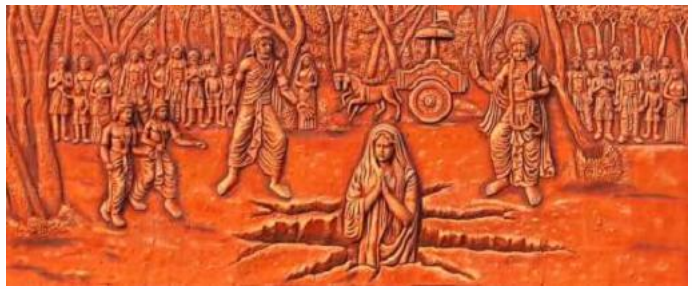

धरती में समाती हुई सीता

जनश्रुतियों के अनुसार सीता इसी स्थान पर धरती में समाई थी। इस तीर्थ के महत्त्व के विषय में वामन पुराण में कहा गया है कि यहां स्नान करने पर व्यक्ति कन्या यज्ञ के फल को प्राप्त करता है तथा सभी पापों से रहित होकर परमपद को प्राप्त करता है :

तास्यासीर्थनरः स्नात्वा कन्यायज्ञफलं लभेत्।
विमुक्तः कलुषैः सर्वैः प्राप्नोति परमं पदम्।

(वामन पुराण 37/13)

इस तीर्थ के पश्चिम में वेदेश्वर नामक सरोवर है जिसमें कार्तिक पूर्णिमा व फाल्गुन की अष्टमी को स्नान का विशेष महात्म्य है। तीर्थ स्थित मन्दिर का निचला भाग ढलाई युक्त ईंटों से निर्मित है जो कि कलायत स्थित मन्दिर जैसा ही है। कलायत मन्दिर की तरह यह मन्दिर भी 7–8वीं शती ई. में बनाया गया प्रतीत होता है।

123 कौशिकी तीर्थ, कोयर

कौशिकी नामक यह तीर्थ करनाल से लगभग 29 कि.मी. दूर कोयर ग्राम में स्थित है। यह तीर्थ कुरुक्षेत्र भूमि की नौ नदियों में से एक कौशिकी नदी के तट पर स्थित होने के कारण कौशिकी तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

वामन पुराण में कौशिकी नदी को पाप नाशिनी कहा गया है

सरस्वती नदी पुण्या तथा वैतरणी नदी।
आपगा च महापुण्या गंगामंदाकिनी नदी।
मधुस्रवा वासुनदी कौशिकी पापनाशिनी।
दृषद्वती महापुण्या तथा हिरण्यवती नदी।
वर्षाकालवहाः सर्वा वर्जयित्वा सरस्वतीम्।

(वामनपुराण 34/6 8)

लगभग 15 एकड़ में विस्तृत इस तीर्थ सरोवर में स्त्रियों और पुरुषों के स्नान के लिए अलग अलग घाट बने हुए है। सरोवर के घाटों पर बुर्जियों के ऊपर अलंकृत छतरियाँ बनी हुई है। तीर्थ स्थित मन्दिर के गर्भगृह की दीवारों पर कालियदमन, मत्स्यावतार, सूर्यरथ, आदि अनेक भित्ति चित्र हैं।

124 सुदिन एवं नर्वदा तीर्थ, ओंकार का खेड़ा

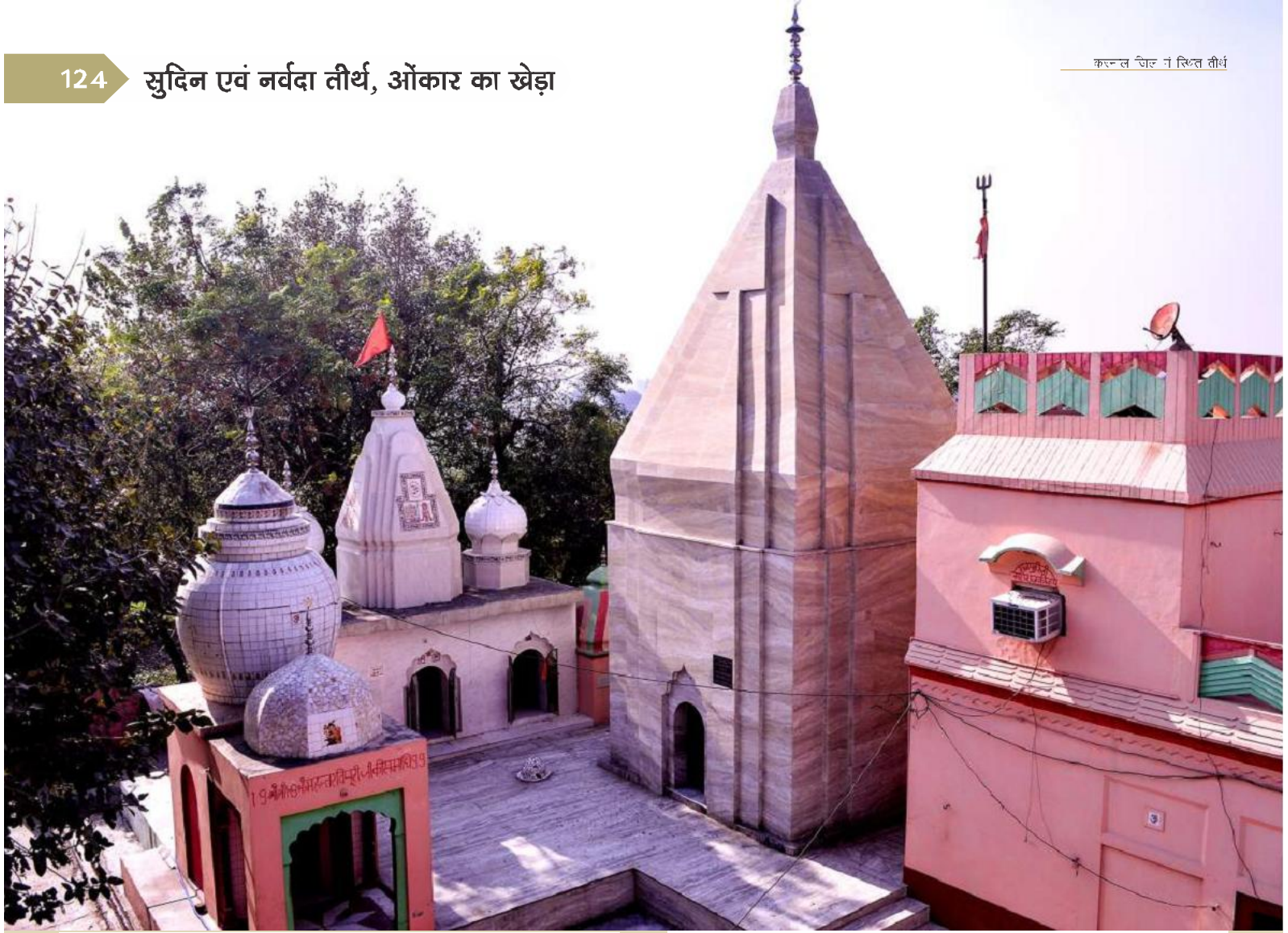

सुदिन एवं नर्वदा नामक यह तीर्थ करनाल से लगभग 32 कि.मी. दूर ओंकार का खेड़ा कहे जाने वाले एक प्राचीन टीले पर स्थित है। महाभारत और पौराणिक साहित्य में इस तीर्थ को दुर्लभ बताते हुए इसका सेवन करने वाले व्यक्ति के लिए स्वर्ग लोक की प्राप्ति बताई है।

यह टीला लगभग 15 एकड़ भूमि में फैला हुआ है जिसमें उत्तर हड़प्पा काल से लेकर गुप्त काल तक के अवशेष मिलते हैं। तीर्थ पर पूर्व पश्चिम अक्षीय पंचरथ आधार योजना वाला तथा पद्माकार नागर शिखर युक्त एक मन्दिर है। वर्गाकार आधार वाले इस मन्दिर की आन्तरिक भित्तियों पर शेषाशायी विष्णु, मत्स्यावतार, नृसिंह, वराह, परशुराम, कालियमर्दन, शिव पार्वती के दृश्यों के अतिरिक्त शेर का शिकार करते योद्धा के चित्र एवं छत पर वानरपतिक अलंकरण हैं। तीर्थ सरोवर मन्दिर के पूर्व में स्थित है।

125 आह्न तीर्थ, निगदू

आह्न तीर्थ नामक यह तीर्थ करनाल से लगभग 39 कि.मी. दूरी पर निगदू ग्राम में स्थित है। ऋग्वेद, महाभारत और वामन पुराण में इसका अह्ग नाम से उल्लेख है।

नितदधे–इडायारपदे रुदिनत्वे अह्नाम्।

(ऋग्वेद 3 23–4)

सम्भवतः यही अह्न कालांतर में आह्न कहा जाने लगा।

महाभारत में इस तीर्थ के नाम एवं महत्त्व के विषय में वर्णित है कि अह्न एवं सुदिन नामक दो तीर्थ पृथ्वी पर विख्यात है। इनमें स्नान करने वाला व्यक्ति सूर्य लोक को प्राप्त करता है।

अह्नश्चसुदिनश्चैव द्वैतीर्थे लोकविश्रुते।
तायोःस्नात्वा नरव्याघ्र सूर्यलोकमवाप्नुयात्।

(महाभा. वन पर्व 83/109)

वामन पुराण में भी इस तीर्थ का ऐसा ही महत्त्व बताया गया है।

अह्नश्च रुदिनं चैव द्वैतीर्थे भुवि दुर्लभे।
तयोः स्नात्वा विशुद्धात्मा सूर्यलोकमवाप्नुयात्।

(वामन पुराण 36/61)

उक्त श्लोक से स्पष्ट होता है कि महाभारत एवं वामन पुराण में वर्णित इस तीर्थ का गहत्व लगगग एक जेसा है।

126 प्रोक्षणी/प्रणीता तीर्थ, पत्नपुरी

प्रोक्षणी/प्रणीता नागक यह तीर्थ करनाल से लगभग 36 कि.गी. दूरी पर पत्नपुरी ग्राम में स्थित है। यहाँ एक सरोवर है और उसके पास ही लाखौरी ईंटों से निर्मित एक मन्दिर है जिस माता का मन्दिर कहते हैं। सरोवर के पास गौसाई बाबा की समाधि है जिन्होंने यहाँ जीवित रागाधि ली थी। इसलिए इरा तीर्थ को रांत तीर्थों की कोटि में रखा जाता है। मान्यता है कि दुधारू पशुओं के दूध न देने पर तीर्थ पर नहलाने स वह पुनः दूध देना शुरु कर देरो है।

प्राचीन काल में किसी सिद्ध पुरुष नें इस स्थान को अपनी तपस्थली बनागा था और इरा स्थान को यज्ञ के प्रोक्षणी पात्र की भाँति मानकर तीर्थ का रूप प्रदान किया। इसलिए इसे प्रोक्षणी तीर्थ कहते हैं।

127 ब्रह्म तीर्थ, सावंत

करनाल जिले में स्थित तीर्थ

ब्रह्म नामक यह तीर्थ करनाल से लगभग 39 कि.मी. दूर सावंत ग्राम में स्थित है। कुरुक्षेत्र के सभी तीर्थ ब्रह्मा, विष्णु और महेश आदि देवों में आस्था के प्रतीक हैं। इस तीर्थ का वर्णन भी महाभारत और पौराणिक साहित्य में मिलता है। इस तीर्थ में स्नान करने से ब्राह्मणेतर मानव ब्राह्मणत्व को प्राप्त हो जाता है।

ततो गच्छेत् राजेन्द्र ब्रह्मणस्तीर्थमुत्तमम्।
तत्र वर्णावरः स्नात्वा ब्राह्मण्यं लभते नरः।।
ब्राह्मणश्च विशुद्धात्मा गच्छेत् परमांगतिम्।

(महाभारत, वन पर्व 83/113)

ब्रह्मपुराण में इस तीर्थ की गणना समन्तक पंचक तीर्थ के साथ दी गई है।

रामन्तपंचकं तीर्थं सुदर्शनम्।
सततं पृथिवीसर्व्व पारिप्लवपृथूदको।।

(ब्रह्म पुराण 25/35)

कौरवों और पाण्डवों के युद्ध में स्वयं को तटस्थ बनाए रखने के लिए बलराम ने तीर्थ यात्रा पर जाने का निश्चय किया और इसी प्रसंग में भागवत पुराण इस तीर्थ पर बलराम की यात्रा वर्णन करता है जहाँ उन्होंने समुद्र वाहिनी नदी की ओर यात्रा की। यात्रा के बीच में इरा तीर्थ पर निवास करने का उल्लेख है।

स्नात्वा प्रभासे सन्तर्प्य देवर्षिपितृमानवान्।
सरस्वती प्रतिस्त्रोतं ययौ ब्राह्मणसंवृतः।।
पृथूदकं बिन्दुसररित्रतकूपं सुदर्शनम्।
विशालं ब्रह्मतीर्थं च चक्रं प्राचीं सरस्वतीम्।।

(भागवत पुराण 10/78/18-19)

इसी श्रृंखला में वह पृथूदक तीर्थ के दर्शनीय कूपों, ब्रह्मतीर्थ, चक्रतीर्थ, प्राचीतीर्थ पर भी गए। कूर्म पुराण और ब्रह्म पुराण के अनुसार इस तीर्थ पर पूजा अर्चना करने पर मनुष्य को ब्रह्मलोक की प्राप्ति तथा भुक्ति और मुक्ति मिलती है।

तीर्थेभ्यः परमं तीर्थं ब्रह्मतीर्थमिति श्रुतम्।
ब्रह्माणमर्चयित्वा तु ब्रह्मलोके महीयते।।

(कूर्म पुराण 36/26)

ब्रह्म पुराण में इस तीर्थ को देवताओं के लिए भी दुर्लभ तथा मनुष्यों के लिए भोग, ऐश्वर्य एवं मोक्ष देने वाला बताया गया है।

इदमप्यपरं तीर्थं देवानामपि दुर्लभम्।
ब्रह्मतीर्थमिति ख्यातं भुक्तिमुक्तिप्रदं नृणाम्।।

(ब्रह्म पुराण 113/1)

तीर्थ स्थित मन्दिर के पास एक उत्तर मध्यकालीन भवन तथा अष्टकोण बुर्जियों वाले उत्तर मध्यकालीन लाखौरी ईंटों से निर्मित घाट हैं।

128 ज्येष्ठाश्रम तीर्थ, बोड़श्याम

यह तीर्थ करनाल से लगभग 34 कि.मी. दूर बाड़श्याम नामक ग्राम में स्थित है। इस तीर्थ का निर्माण पौराणिक युग में ही हुआ हैं क्योंकि महाभारत में इसका कोई उल्लेख नहीं है। इसका सम्बन्ध भगवान विष्णु से जोड़ा गया है और कहा गया है कि ज्येष्ठाश्रम और विष्णु पद सरोवर में श्राद्ध, दान, व्रत नियम पूर्वक करने से निःसंन्दह अक्षय फल की प्राप्ति होती है और इसे सर्वपाप विनाशक कहा गया है।

ज्येष्ठाश्रमे महापुण्ये तथा विष्णुपदे ह्रदे।
ये च श्राद्धानि दास्यन्ति व्रतं नियममेव च।।
क्रिया कृता च या काचिद् विधिना अविधिना अपि वा।
सर्वं तदक्षय तस्य भविष्यति न संशयः।

(नारद पुराण, 31/82–83)

अर्थात् ज्येष्ठमास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को उपवास रख द्वादशी के दिन तीर्थ में स्नान करने से मनुष्यों को उत्तमगति प्राप्त होती है। इस स्थान पर चार तीर्थों की (ज्येष्ठाश्रम, विष्णुह्रद, कोटि तीर्थ एवं सूर्य तीर्थ) उपस्थिति बताई गई हे। इसके समीप एक टीला है जहाँ से हड़प्पा संस्कृति, धूसर चित्रित मृद्भाण्ड, मौर्य, शुंग, कुषाण एवं गुप्त काल की संस्कृतियों के प्रमाण प्रचुर मात्रा में मिले है जिससे इस तीर्थ प्राचीनता स्वतः सिद्ध हो जाती है।

129 कोटि तीर्थ, बोड़श्याम

कोटि नामक यह तीर्थ भी ज्येष्ठाश्रम के समीप ही बोड़श्याम गांव में स्थित है। इस तीर्थ का सम्बन्ध भगवान शिव से है ।

वामन पुराण में इस तीर्थ का महत्व इस प्रकार वर्णित है

तत्रैव कोटितीर्थं च त्रिषुलोकेषु विश्रुतम्।
तस्मिन् तीर्थे नरः स्नात्वा कोटियज्ञफलं लभेत्।।
कोटिश्वरं नरो दृष्ट्वा तस्मिन् तीर्थे महेश्वरम्।
महादेव प्रसादेन गाणपत्यमवाप्नुयात्।।

(वामन पुराण, 36/72–73)

अर्थात इस तीर्थ में स्नान करने वाला मनुष्य कोटि यज्ञों के फल को प्राप्त करता है। तीर्थसेवी साधक कोटीश्वर महादेव के दर्शन करके गणनायक की उपाधि प्राप्त करता है।

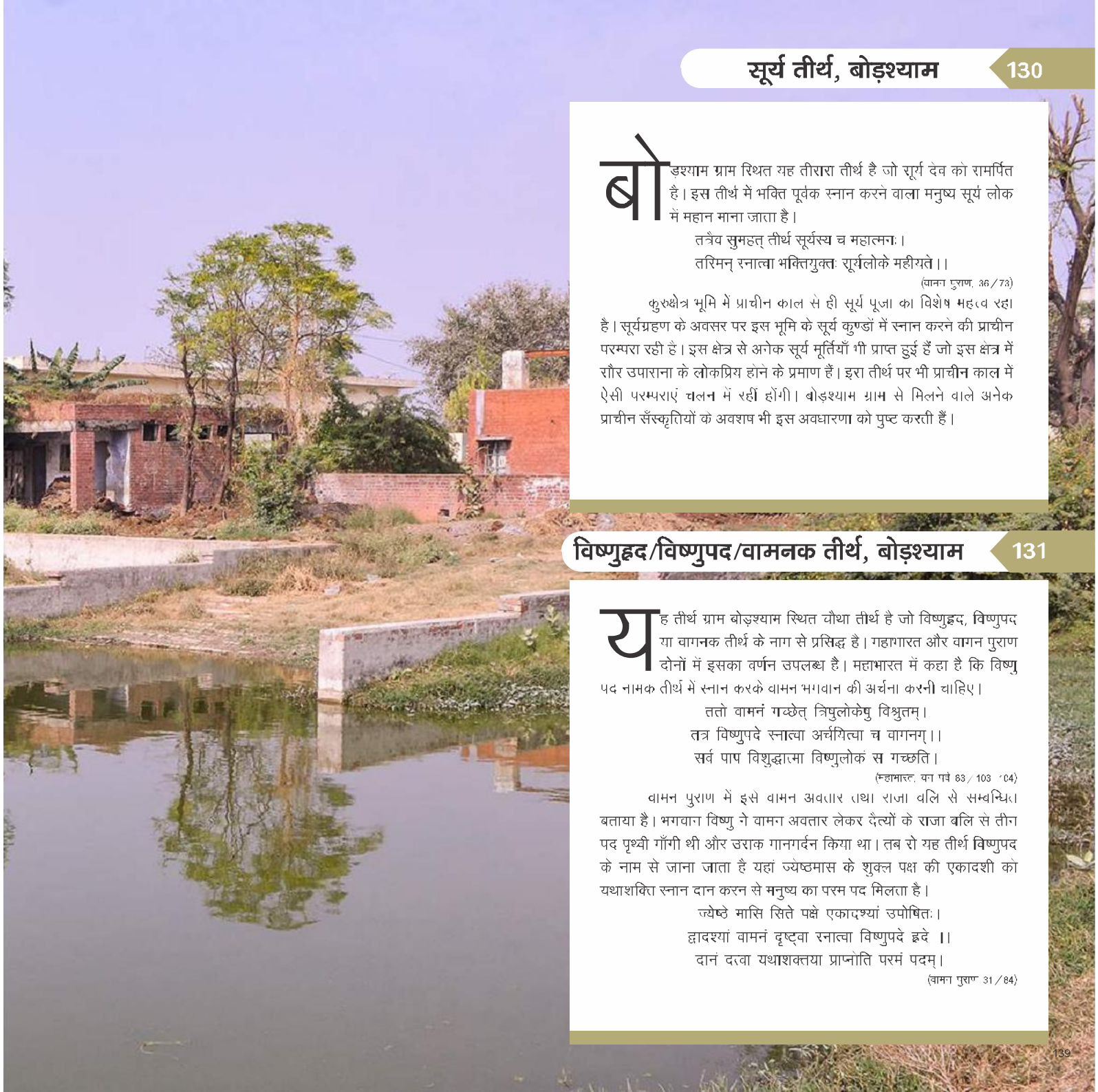

सूर्य तीर्थ, बोड़श्याम 130

बोड़श्याम ग्राम स्थित यह तीसरा तीर्थ है जो सूर्य देव को समर्पित है। इस तीर्थ में भक्ति पूर्वक स्नान करने वाला मनुष्य सूर्य लोक में महान माना जाता है।

तत्रैव सुमहत् तीर्थं सूर्यस्य च महात्मनः।
तस्मिन् स्नात्वा भक्तियुक्तः सूर्यलोके महीयते।।

(वामन पुराण, 36/73)

कुरुक्षेत्र भूमि में प्राचीन काल से ही सूर्य पूजा का विशेष महत्व रहा है। सूर्यग्रहण के अवसर पर इस भूमि के सूर्य कुण्डों में स्नान करने की प्राचीन परम्परा रही है। इस क्षेत्र से अनेक सूर्य मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं जो इस क्षेत्र में सौर उपासना के लोकप्रिय होने के प्रमाण हैं। इस तीर्थ पर भी प्राचीन काल में ऐसी परम्पराएं चलन में रहीं होंगी। बोड़श्याम ग्राम से मिलने वाले अनेक प्राचीन सँस्कृतियों के अवशेष भी इस अवधारणा को पुष्ट करती हैं।

विष्णुह्रद/विष्णुपद/वामनक तीर्थ, बोड़श्याम 131

यह तीर्थ ग्राम बोड़श्याम स्थित चौथा तीर्थ है जो विष्णुह्रद, विष्णुपद या वामनक तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। महाभारत और वामन पुराण दोनों में इसका वर्णन उपलब्ध है। महाभारत में कहा है कि विष्णु पद नामक तीर्थ में स्नान करके वामन भगवान की अर्चना करनी चाहिए।

ततो वामनं गच्छेत् त्रिषुलोकेषु विश्रुतम्।
तत्र विष्णुपदे स्नात्वा अर्चयित्वा च वागनग्।।
सर्व पाप विशुद्धात्मा विष्णुलोकं स गच्छति।

(महाभारत, वन पर्व 83/103 '04)

वामन पुराण में इसे वामन अवतार तथा राजा बलि से सम्बन्धित बताया है। भगवान विष्णु ने वामन अवतार लेकर दैत्यों के राजा बलि से तीन पद पृथ्वी माँगी थी और उसका मानमर्दन किया था। तब से यह तीर्थ विष्णुपद के नाम से जाना जाता है यहां ज्येष्ठमास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को यथाशक्ति स्नान दान करने से मनुष्य का परम पद मिलता है।

ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे एकादश्यां उपोषितः।
द्वादश्यां वामनं दृष्ट्वा स्नात्वा विष्णुपदे ह्रदे ।।
दानं दत्वा यथाशक्तया प्राप्नोति परमं पदम्।

(वामन पुराण 31/84)

132 सोम तीर्थ, समाना बाहु

सोम नामक यह तीर्थ करनाल से लगभग 29 कि.मी. दूर समाना बाहु ग्राम में स्थित है। महाभारत और वामन पुराण में इसका उल्लेख कई स्थानों पर मिलता है।

महाभारत में इस सोम लोक प्रदाता कहा है

ततो गच्छेत् नरश्रेष्ठ सोमतीर्थमनुत्तमम्।
तत्र स्नात्वा नरो राजन सोमलोकमवाप्नुयात्।
(महाभारत, वन पर्व 83 14–15)

ततो जयन्त्यां राजेन्द्र सोमतीर्थं समाविशेत्
स्नात्वा फलमवाप्नोति राजसूयस्य मानवः।।
(महाभारत, वन पर्व 83/19 20)

वामन पुराण में स्नान करने का महत्त्व महाभारत के समान ही कहा है इससे स्पष्ट है कि यह तीर्थ अति प्रतिष्ठित था।

ततो गच्छेत् विप्रेन्द्राः सोमतीर्थमनुत्तमम्।
यत्र सोमस्तपस्तप्त्वा व्याधिमुक्तो अभवत्पुरा।।
तत्र सोमश्वरं दृष्ट्वा स्नात्वा तीर्थवरे शुभे।
राजसूयस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोति मानवः।।
व्याधिभिश्च विनिर्मुक्तः सर्वदोषविवर्जितः।
सोमलोकमवाप्नोति तत्रैव रमते चिरम्।।
(वामन पुराण, 34/33 35)

कहा जाता है कि इस सोम तीर्थ में स्नान करने से चन्द्रमा को व्याधि से मुक्ति मिली थी। अतः इसे सोम तीर्थ की संज्ञा प्राप्त हुई। सोम तीर्थ में स्नान करने से राजसूर्य यज्ञ के फल की प्राप्ति होती है और रोग और दोष नष्ट हो जाते हैं। यहाँ स्नान करने वाला व्यक्ति सोम लोक को प्राप्त करके चिरकाल तक वहाँ निवास करता है। जनश्रुति है कि प्राचीन काल में यहाँ तरह तापस्वी साधुओं ने एक श्वान के साथ जीवित समाधि ली थी। पृथ्वी में समाधि लेने के कारण ही इस ग्राम का नाम समाना प्रसिद्ध हुआ।

133 अंजनी तीर्थ, अंजनथली

अंजनी नामक यह तीर्थ करनाल से लगभग 22 कि.मी. दूर अंजनथली नामक ग्राम में स्थित है। तीर्थ का सम्बन्ध हनुमान की माता अंजनी से है। कहा जाता है कि माता अंजनी ने इस स्थल पर तपस्या की इसलिए इसका नाम अंजनथली पड़ गया। लोक कथनानुसार यहाँ हर दूसरे साल मंगलवार को एक वानर स्नान करने आता है और चला जाता है जबकि इस गाँव के आस–पास कहीं भी बन्दर नहीं हैं। श्रद्धालुजन उसे हनुमान का रूप मानते हैं। लोक मान्यताओं के अनुसार यदि इस तीर्थ के पानी का उपयोग खेती के लिए किया जाए तो फसल सूख जाती है।

तीर्थ परिसर में ही एक प्रस्तर निर्मित चौखट के भग्नावशेष मिले हैं जिससे यहाँ प्रतिहार कालीन (9–10वी शती ई) प्रस्तर निर्मित मन्दिर के होने की पुष्टि होती है।

कुंटिया के बाहर माता अंजनी एवं हनुमान

134 अक्षयवट तीर्थ, बड़थल

अक्षय वट नामक यह तीर्थ करनाल से लगभग 27 कि.मी. दूर बड़थल ग्राम में स्थित है। इस तीर्थ का वर्णन महाभारत, अग्निपुराण, पद्मपुराण, वायुपुराण और ब्रह्मपुराण में मिलता है। इस तीर्थ पर पितरों के निमित्त दिया हुआ दान अक्षय होता है इसलिए इसे अक्षयवट तीर्थ की संज्ञा दी गई है। वायु पुराण में इस तीर्थ का महत्त्व इस प्रकार वर्णित है।

तथा अक्षयवटं गत्वा विप्रान्संतोषयिष्यति।
ब्रह्मप्रकल्पितान् विप्रान् हव्यकव्यादिनाऽर्चयेत्।।
तैरतुष्टैरतोषिताः सर्वाः पितृभिः सह देवता।

(वायु पुराण 105 45)

अर्थात् अक्षयवट तीर्थ जाकर जो व्यक्ति ब्राह्मणों को संतुष्ट करता है तथा उनकी अर्चना कर उन्हें हव्य, कव्य प्रदान करता है उसके पितरों सहित सारे देवता संतुष्ट हो जाते हैं।

ब्रह्म पुराण में इसे पुलस्त्य मुनि की तपस्थली कहा है। यहाँ इस तीर्थ की महिमा इस प्रकार वर्णित की गई है।

तत्रैव कल्पितो यूपो मया विन्ध्यस्य वोत्तरे।
विसृष्टो लोक पूज्योऽसौ विष्णुरासीत्सगाश्रयः।।
अक्षयश्चाभवच्छीमान् अक्षयाऽसौ वटोऽभवत्।
नित्यश्च कालरुपोऽसौ स्मरणात्क्रतु पुण्यदः।।

(ब्रह्मपुराण 161/66–67)

इस श्लोक से स्पष्ट है कि अक्षयवट विष्णु का एकमात्र स्थान होने से लोकपूज्य हुआ तथा नाश रहित होने के कारण अक्षय वट के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मनुष्य इस तीर्थ का सेवन करने और इसका स्मरण करने से यज्ञ के फल को प्राप्त करते हैं।

48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि के मेले एवं पर्व

तीर्थों पर प्रायः किसी पर्व विशेष के अवसर पर मेले एवं उत्सवों के आयोजनों की प्राचीन परम्परा रही है। तीर्थ इन्ही पर्वों एवं उत्सवों के लिए जाने जाते हैं। कुरुक्षेत्र भूमि स्थित तीर्थों पर भी प्राचीन काल से ही अनेक पर्वों एवं उत्सवों के अवसरों पर स्नान, दान एवं श्राद्ध आदि की परम्परा रही है। सूर्यग्रहण पर्व के अवसर पर कुरुक्षेत्र में स्नान की परम्परा के कारण ही यहाँ देश–विदेश से श्रद्धालु आते रहे हैं। कुरुक्षेत्र के सूर्य ग्रहण मेले की गणना भारत के विशाल मेलों में होती है। श्रीमद्भागवत् पुराण के अनुसार एक सूर्य ग्रहण के अवसर पर भगवान श्रीकृष्ण भी द्वारका से यहाँ स्नान हेतु आये थे। इसी प्रकार कुरुक्षेत्र भूमि स्थित फल्गु तीर्थ पर आश्विन माह के पितृ पक्ष की सामवार का आने वाली अमावस्या पर भारी संख्या में श्रद्धालु अपने पितरों को पिण्डदान करने हेतु आते हैं। इस दिन श्राद्ध के लिए प्रसिद्ध गया (बिहार) में कोई पिण्डदान नहीं होता है। कुरुक्षेत्र के पावनतम तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध पृथूदक तीर्थ पर प्रेत चतुर्दशी (चैत्र चौदश) के अवसर पर लगने वाले मेले का इतिहास भी अति प्राचीन है। इस मेले का उल्लेख पिहोवा से प्राप्त सन् 882 ई0 के प्रतिहार कालीन अभिलेख में भी हुआ है। इसी प्रकार रोगवती अगावरया के अवसर पर रोगतीर्थ, पाण्डु पिण्डारा तथा रागराय तीर्थ (जींद) पर लगने वाले मेले भी हरियाणा के बड़े मेलों में गिने जाते हैं। 48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि के तीर्थों पर विभिन्न अवसरों पर लगने वाले मेले इस क्षेत्र के समृद्ध सॉस्कृतिक अतीत के साक्षी हैं। हरियाणा सरकार इस क्षेत्र के मेले एवं उत्सवों का लगातार प्रोत्साहित करती रही है जिससे विभिन्न तीर्थों पर लगने वाले मलों एवं उत्सवों का स्वरुप निखर रहा है। सरकार द्वारा तीर्थों पर यात्रियां को अनेक प्रकार की सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। कुरुक्षेत्र में गीता जयन्ती के अवसर पर आयोजित होने वाले उत्सव को सरकार के प्रयासों द्वारा वर्ष 2016 से अन्तर्राष्ट्रीय स्वरुप दिया गया है जिससे हर वर्ष कुरुक्षेत्र आने वाले तीर्थयात्रियों एवं पर्यटकों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हो रही है।

48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि स्थित तीर्थों के मेले एवं पर्व

मेला / पर्व	मेला स्थल
वसंत नवरात्रि मेला	भद्रकाली मन्दिर (कुरुक्षेत्र)
चैत्र सप्तमी मेला	कुकृत्यनाशन तीर्थ, कौकत (कैथल)
चैत्र अष्टमी मेला	नव दुर्गा तीर्थ देवीगढ़ (कैथल)
चैत्र शुक्ल दशमी मेला	पुण्डरीक तीर्थ पुण्डरी (कैथल)
श्री वल्लभाचार्य जयन्ती	कुबेर तीर्थ, कुरुक्षेत्र
वैसाखी मेला	सप्त सारस्वत तीर्थ मांगना (कुरुक्षेत्र)
सोमवती अमावस्या मेला	ब्रह्मसरोवर, सन्निहित सरोवर (कुरुक्षेत्र), सोम तीर्थ- पाण्डु पिण्डारा, लोकोद्धार तीर्थ- लोधार (जीन्द), मचक्रुक यक्ष- सींख (पानीपत), सूर्य कुण्ड हाबड़ी, रसमंगल तीर्थ- जाखौली (कैथल), फल्गू तीर्थ- फफड़ाना (करनाल)
रविवारीय शुक्ल सप्तमी	काम्यक तीर्थ, कमोदा (कुरुक्षेत्र)
वैसाख पूर्णिमा मेला	रामह्रद तीर्थ, रामराय (जीन्द)
ज्येष्ठ पूर्णिमा मेला	रसमंगल तीर्थ जाखोली (कैथल)
आषाढ शुक्ल द्वादशी मेला	वराह तीर्थ, बराह कलां (जीन्द)
श्रावण अष्टमी मेला	गंधर्व तीर्थ, गोहरां खेड़ी (कैथल)
श्रावण शिवरात्रि मेला	अरुणाय तीर्थ- अरणाय, अदिति तीर्थ- अमीन, स्थाण्वीश्वर महादेव मंदिर (कुरुक्षेत्र), भूतेश्वर तीर्थ, सोम तीर्थ- पाण्डु पिण्डारा (जीन्द), खटवांगेश्वर तीर्थ खडालवा, ग्यारह रूद्री तीर्थ (कैथल)

मेला / पर्व	मेला स्थल
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी मेला	नाभिकमल तीर्थ (कुरुक्षेत्र), पवनह्रद तीर्थ- पबनावा, श्रीतीर्थ- कसाण, ऋणमोचन तीर्थ- रसीना (कैथल), तरन्तुक यक्ष- सींख (पानीपत)
भाद्रपद कृष्ण एकादशी मेला	देवी तीर्थ कलशी (कैथल)
भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी मेला	आपगा तीर्थ, गादली (कैथल)
रविवारीय शुक्ल सप्तमी मेला	काम्यक तीर्थ, कमोदा (कुरुक्षेत्र)
भाद्रपद शुक्ल एकादशी मेला	देवी तीर्थ, कलशी (कैथल)
वामन द्वादशी मेला	सन्निहित सरोवर (कुरुक्षेत्र)
भाद्रपद पूर्णिमा मेला	ब्रह्मोदुम्बर तीर्थ, शीला खेड़ी (कैथल)
शारद नवरात्रि मेला	भद्रकाली मन्दिर कुरुक्षेत्र
आश्विन अष्टमी मेला	कुकृत्यनाशन तीर्थ, कौकत (कैथल)
कार्तिक अमावस्या मेला	पृथ्वी तीर्थ बालू (करनाल)
छट पूजा	ब्रह्म सरोवर, कुरुक्षेत्र
कार्तिक पूर्णिमा मेला	ब्रह्म सरोवर, सन्निहित सरोवर (कुरुक्षेत्र) रामह्रद तीर्थ- रामराय (जीन्द), मचक्रुक यक्ष- सींख (पानीपत), कपिलमुनि तीर्थ- कलायत, रसमंगल तीर्थ- जाखौली (कैथल)
गीता जयंती (मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी)	कुरुक्षेत्र

48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि स्थित तीर्थों के मेले एवं पर्व

मेला / पर्व	मेला स्थल
सरस्वती पूजा	सरस्वती तीर्थ, पिहोवा
भीष्म द्वादशी मेला	श्रीतीर्थ कसाण (कैथल)
जयन्ती देवी मेला	जींद
फाल्गुन शिवरात्रि मेला	अरुणाय तीर्थ-अरणाय, अदिति तीर्थ- अमीन, त्रिपुरारि तीर्थ- तिगरी, स्थाण्वीश्वर महादेव मंदिर (कुरुक्षेत्र), भूतेश्वर तीर्थ, सोम तीर्थ- पाण्डु पिण्डारा (जीन्द), खटवांगेश्वर तीर्थ- खडालवा, बिंदुसर तीर्थ- बरोट, ग्यारहरूद्री तीर्थ कैथल, गौतम ऋषि तीर्थ- गोंदर (करनाल)
फाल्गुन शुक्ल द्वादशी मेला	वराह तीर्थ बराह कलाँ (जीन्द)
होली मेला	विमलसर तीर्थ, सग्गा (करनाल)
चैत्र चौदस मेला	सरस्वती तीर्थ पिहोवा (कुरुक्षेत्र)
कुरुक्षेत्र की अष्टकोशी परिक्रमा	नाभिकमल तीर्थ से प्रारंभ होकर कार्तिक मंदिर स्थाण्वीश्वर महादेव मंदिर, भद्रकाली मंदिर, कुबेर तीर्थ, सरसस्वती- खेड़ी रामनगर, रंतुक यक्ष- पिपली, शिव मंदिर- पलवल, बाणगंगा- दयालपुर, भीष्म कुण्ड- नरकातारी से होकर अन्त में नाभिकमल मंदिर- थानेसर में सम्पन्न।

तीर्थ विकास के लिए प्रतिबद्ध कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड

कुरुक्षेत्र भूमि की तीर्थ धरोहर के सरक्षण, संवर्धन एवं विकास के लिए भारत रत्न श्री गुलजारीलाल नन्दा द्वारा सन् 1968 में कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड की स्थापना की गई थी। अपनी स्थापना के समय से ही कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड 48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि अर्थात् कुरुक्षेत्र की पवित्र परिक्रमा में स्थित तीर्थों के विकास के लिए प्रतिबद्ध रहा है। गत 50 वर्षों में बोर्ड द्वारा इस क्षेत्र के अनेक तीर्थ स्थलों को विकसित किया गया है। अन्य अनेक तीर्थ स्थलों के विकास कार्य प्रगति पर हैं। आज तक बोर्ड द्वारा 134 तीर्थ स्थलों को चिह्नित कर उनका दस्तावेजीकरण किया जा चुका है और कुछ अन्य तीर्थ स्थलों के सर्वेक्षण का कार्य चल रहा है।

हरियाणा सरकार द्वारा तीर्थों के विकास के लिए विगत कई वर्षों से विशेष प्रोत्साहन मिल रहा है। सरकार के प्रयासों द्वारा ही कुरुक्षेत्र के अनेक तीर्थों को कृष्ण सर्किट स्कीम के अन्तर्गत विकसित किया जा रहा है ताकि यह तीर्थ अपने पुरातन गौरव को प्राप्त कर सकें।

कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में माननीय मुख्यमंत्री, हरियाणा ने 48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि स्थित कई तीर्थों का दौरा कर तीर्थों के विकास के लिए पर्याप्त धन राशि उपलब्ध कराई है जिस कारण कुरुक्षेत्र भूमि स्थित कई तीर्थों के विकास के कार्यों को गति मिली है। आज हरियाणा सरकार के इन्हीं सकारात्मक एवं प्रशंसनीय प्रयासों के कारण कुरुक्षेत्र में पर्यटकों की संख्या में निरन्तर अभिवृद्धि हो रही है। हरियाणा सरकार द्वारा गीता जयन्ती महोत्सव को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाने से कुरुक्षेत्र की तीर्थ महिमा का प्रचार एवं प्रसार विश्व स्तर पर हुआ है। सरकार द्वारा 48 कोस कुरुक्षेत्र के कई प्रमुख तीर्थों पर गीता जयन्ती महोत्सव के अनेक कार्यक्रम आयोजित करवाए जा रहे हैं जिससे इन तीर्थों के तीर्थाटन तथा ग्रामीण पर्यटन को एक नई दिशा मिलना निश्चित है। सरकार के इन प्रयासों से निश्चय ही इस क्षेत्र में संस्कृति एवं अध्यात्म पर आधारित अनेक कल्पों एवं प्रकल्पों के उद्भव एवं विकास की सम्भावनाएं बनती हैं जिनसे निश्चित ही विश्व मानव को कुरुक्षेत्र से शान्ति, प्रेम, सदभाव, समरसता एवं विश्वबन्धुत्व का संदेश मिलेगा।

हरियाणा सरकार द्वारा तीर्थाटन के उत्थान हेतु किए जा रहे प्रयास

48 कोरा कुरुक्षेत्र भूमि के तीर्थों की गरिमा बढ़ाने एवं इन्हें विकसित करने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए माननीय मुख्यमंत्री हरियाणा ने स्वयं 48 कोस कुरुक्षेत्र भूमि के अनेक तीर्थों का भ्रमण कर उनके विकास के लिए खास कार्यनीति बनाई है जिसके अन्तर्गत तीर्थ स्थित घाटों का नवीनीकरण, तीर्थयात्रियों के लिए आवश्यक सुविधाएं प्रदान करना एवं तीर्थों की भूराज्जा सम्मिलित है। इस वर्ष पितृपक्ष के अवसर पर हरियाणा सरकार द्वारा 15 दिनों तक 48 कोस स्थित तीर्थों पर तीर्थयात्रियों को श्राद्ध एवं पिंड दान आदि करने के लिए हरियाणा सरकार द्वारा कुरुक्षेत्र से एक निःशुल्क बस चलाई गई जिससे तीर्थयात्रियों को कुरुक्षेत्र के प्रमुख तीर्थों पर पिण्ड दान श्राद्ध करने का अभूतपूर्व अवसर मिला। सरकार के इस प्रयासों से भविष्य में निश्चय ही तीर्थ यात्रा पर्यटन को नए आयाम मिलेंगे। इस प्रकार के प्रयासों से जहां एक ओर लोग अपनी संस्कृति से जुड़ेंगे दूसरी ओर तीर्थाटन एवं ग्रामीण पर्यटन से स्थानीय युवाओं को रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे। इस क्षेत्र में तीर्थयात्रा पर्यटन के विकास से स्थानीय संस्कृति एवं धरोहरों का विकास होना सुनिश्चित है।

कुरुक्षेत्र के पर्यटक स्थल

ब्रह्म सरोवर

इस सरोवर का नाम सृष्टि निर्माता भगवान् ब्रह्मा क नाम पर पड़ा है। इस विशाल सरोवर का उसी भूमि पर निर्मित किया गया जहाँ ब्रह्मा ने अपना पहला यज्ञ किया था। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार इसका पहला जीर्णोद्धार राजा कुरु द्वारा किया गया था। यह कुरुक्षेत्र के सर्वाधिक पवित्र तीर्थों में से एक है। सूर्य ग्रहण के अवसर पर इसके पवित्र जल में किया गया स्नान हज़ारों अश्वमेध यज्ञों के फल के तुल्य माना जाता है। यह सरोवर एशिया का सबसे बड़ा मानव निर्मित सरोवर है। इस विशाल जलाशय को देखकर अक़बर के दरबारी इतिहाराकार अबुल फ़ज़ल ने इसे लघु रागुद्र कहा था। 3.5 किलोगीटर की परिधि वाला यह सरोवर दो भागों गें विभक्त है। इसके बीच गें एक द्वीप है जिस पर महाभारत युद्ध के पश्चात् युधिष्ठिर द्वारा एक विजय स्तम्भ निर्मित किया गया था। इस द्वीप पर अभी एक विशाल गीतोपदेश (कृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए) की काँस्य प्रतिमा स्थापित की गई है जिसका भार लगभग 35 टन है। सूर्य ग्रहण के अवसर पर यहाँ लाखों तीर्थयात्री एक साथ स्नान करते हैं।

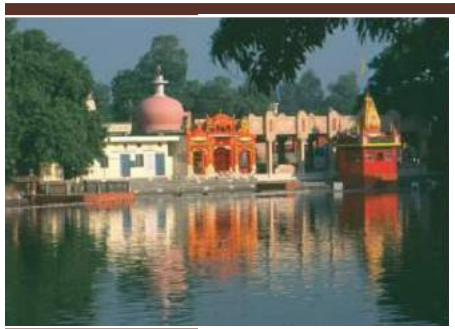

सन्निहित सरोवर

सन्निहित सरोवर कुरुक्षेत्र के प्राचीनतम सरोवरों में से एक है। सन्निहित शब्द का अर्थ है एकत्रीकरण। ऐसा विश्वास किया जाता है कि अमावस्या के दिन पृथ्वी पर स्थित सभी तीर्थों का जल सन्निहित सरोवर में आ जाता है। इस दिन यहां विशेष प्रार्थना और तर्पण करन से मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। सूर्यग्रहण के अवसर पर इसके जल में स्नान परम फलदायी माना गया है। श्रीमद्भागवत् पुराण के अनुसार एक बार एक पूर्ण सूर्य ग्रहण के अवसर पर भगवान श्रीकृष्ण ने द्वारिका और मथुरा क्षेत्र के अपने रागबन्धियों के साथ कुरुक्षेत्र के इसी सरोवर पर स्नान किया था। सूर्य ग्रहण के अवसर पर इस सरोवर में किया गया स्नान एवं दान हजारों अश्वमेध यज्ञों के फल के बराबर माना जाता है।

माँ भद्रकाली शक्तिपीठ

यह तीर्थ देश भर में फैले 52 शक्तिपीठों में से एक है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि भगवान् विष्णु के चक्र से कटकर माता सती का दायाँ टखना यहाँ स्थित कुँए में गिरा था जिसे देवीकूप के नाम से जाना जाता है। मंदिर के सम्मुख इस घटना की स्मृति स्वरूप कुँए के ऊपर एक संगमरमर का दाँयां टखना स्थापित किया गया है। इस पीठ की देवी सावित्री और भैरव स्थाणु हैं। कहा जाता है कि बलराम और कृष्ण का मुंडन संस्कार भी यहीं पर किया गया था। महाभारत युद्ध से पूर्व पाण्डवों ने श्रीकृष्ण के साथ यहाँ देवी की पूजा कर माँ भद्रकाली से महाभारत युद्ध में विजयी होने का वरदान प्राप्त किया था। युद्ध के बाद विजयी पाण्डवों नें पुनः इस मंदिर में आकर अपने सर्वश्रेष्ठ घोड़ों को देवी माँ की सेवा में अर्पित किया था। आज भी लोगों द्वारा अपनी मनोकामना पूर्ण होने क बाद यहाँ मिट्टी और धातु से बने घोड़ों का दान किया जाता है।

स्थाण्वीश्वर महादेव मंदिर

कुरुक्षेत्र का यह प्राचीन मन्दिर भगवान शिव को समर्पित है। यह वर्तमान में थानेसर के नाम से ज्ञात पुरातन नगर के इष्टदेव हैं। लोक कथाएं इसका सम्बन्ध महाभारत काल से भी जोड़ती हैं। ऐसा कहा जाता है कि भगवान कृष्ण ने पाण्डवों के साथ यहाँ भगवान शिव की पूजा की थी और महाभारत युद्ध में विजयी होने का आशीर्वाद लिया था। इस तीर्थ मन्दिर की यात्रा के बिना कुरुक्षेत्र की यात्रा अपूर्ण और निष्फल मानी जाती है। थानेसर के वर्धन साम्राज्य क संस्थापक पुष्पभूति ने स्थाण्वीश्वर महादेव क नाम पर ही अपनी राजधानी का नामकरण किया था। वर्तमान मंदिर का निर्माण मराठा सेना के प्रधान सेनापति सदाशिव राव भाऊ ने पानीपत की तीसरी लड़ाई से पूर्व कुंजपुरा में अहमदशाह अब्दाली पर विजय की स्मृति में करवाया था।

ज्योतिसर

गीता की जन्मस्थली ज्योतिसर कुरुक्षेत्र का सर्वाधिक पूजनीय स्थल है। यह वही स्थान है जहाँ महाभारत युद्ध के पूर्व भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को श्रीमद्भगवद्गीता का शाश्वत उपदेश दिया था। कहा जाता है कि आदि शंकराचार्य ने हिमालय जाते समय इस स्थान को खोजा था। 1850 ई० में काश्मीर के राजा ने इस तीर्थ पर एक शिव मंदिर का निर्माण करवाया था। 1924 में दरभंगा के राजा ने भगवद्गीता के साक्षी पवित्र वट वृक्ष के चारों ओर पत्थर का चबूतरा बनवाया। सन् 1967 में कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य ने चबूतरे के ऊपर गीतोपदेश के स्थल को स्थापित करवाया और चबूतरे के नीचे आदि शंकराचार्य का मंदिर बनवाया। तीर्थ पर मन्दिरों के साथ के सामने एक सुन्दर सरोवर है। यहां पर प्रतिदिन सूर्यास्त के बाद 55 मिनट का प्रकाश एवं ध्वनि शो आयोजित किया जाता है।

भीष्म कुण्ड, नरकातारी

यह तीर्थ महाभारत से सम्बद्ध है। स्थानीय किंवदन्ती के अनुसार युद्ध के 10वें दिन कौरवों के प्रधान सेनापति भीष्म युद्ध के मैदान में धराशायी हो गए थे। उनके शरीर में इतने बाण धुसे हुए थे कि उनका शरीर भूमि को स्पर्श ही न कर सका। बाण ही उनकी शैय्या बन गए थे। भीष्म ने यहाँ एकत्रित कौरवों और पाण्डवों से प्यास बुझाने के लिए पानी की याचना की। कौरवों ने उन्हें पानी दिया लेकिन उन्होंने इसे पीने से मना कर दिया। पितामह की इच्छा को समझ कर अर्जुन ने पर्जन्यास्त्र नामक बाण से पृथ्वी को बेधा। परिणामस्वरूप पृथ्वी से शीतल जल की धारा फूट पड़ी और इस जल से भीष्म ने अपनी प्यास बुझाई। जो स्थान अर्जुन ने बाण से बेधा था वह स्थान भीष्म कुण्ड कहलाता है। यह स्थान अब एक प्राचीन बावड़ी के रूप में है। भीष्मकुण्ड के निकट एक मंदिर में पाण्डवों से घिरी शरशैय्या को दिखाया गया है। युद्ध के अन्त में भीष्म पितामह द्वारा इसी स्थल पर युधिष्ठिर को राजधर्म एवं अनुशासन की शिक्षाएं दी गई थी।

बाण गंगा तीर्थ, दयालपुर

इस तीर्थ के विषय में कई स्थानीय किंवदन्तियां प्रचलित हैं। इनमें से एक के अनुसार जयद्रथ से युद्ध के लिए प्रस्थान करने से पूर्व अर्जुन ने कुछ समय के लिए यहाँ विश्राम किया था एवं पर्जन्यास्त्र द्वारा धरती से पानी निकाल कर रथ के अश्वों की प्यास बुझाई थी। एक अन्य किंवदंती के अनुसार यहीं पर कर्ण ने ब्राह्मण वेशधारी श्रीकृष्ण को अपना स्वर्ण मण्डित दाँत दान स्वरूप भेंट किया था। कहा जाता है कि दाँत को दान करने से पूर्व कर्ण ने पर्जन्यास्त्र द्वारा धरती से निकल पानी से अपने दाँत को धोया था। यहाँ एक मध्यकालीन ईंटों से बनी एक बावड़ी और घाट है। तीर्थ सरोवर पर उत्तर से दक्षिण की ओर ईंटों से निर्मित एक धनुषाकार आकृति बनी हुई है।

शेख चहेली का मकबरा

यह मकबरा शेख चहेली के नाम से विख्यात सूफी सन्त अब्दुर रहीम बन्नूरी को समर्पित है जिसे अब्दुल करीम या अब्दुल रज्जाक भी कहा जाता है। शेख चहेली मुगल शहजादे दारा शिकोह के आध्यात्मिक गुरु भी कहे जाते हैं। संगमरमर से बने मकबरे का गुम्बद नाशपाती के आकार का है। मकबरे के पीछे राजा हर्ष का टीला नाम से विख्यात एक पुरास्थल है। इस टीले के उत्खनन से कुषाण काल (प्रथम–द्वितीय शताब्दी ई०) से लेकर उत्तर मुगल कालीन संस्कृतियों के अवशेष मिलते हैं। टीले के मध्य भाग से वर्धन और राजपूत काल के विशाल भवनों का पता चलता है। मकबरे के मदरसा परिसर में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा बनाए गए संग्रहालय में टीले की खुदाई से प्राप्त वस्तुओं को यहां स्थित पुरास्थलीय संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया है।

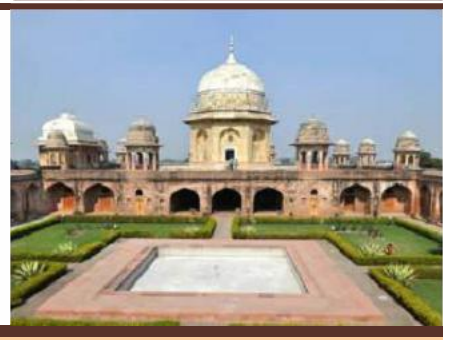

कुरुक्षेत्र के पर्यटक स्थल

श्रीकृष्ण संग्रहालय

श्रीकृष्ण रांग्रहालय की स्थापना रान् 1987 में हुई थी जो कृष्ण विषय पर स्थापित भारत का एकमात्र रांग्रहालय है। बाद में रान् 1991 में इसे वर्तमान भवन में स्थानान्तरित किया गया तथा सन् 1995 में इसमें नया खण्ड जोड़ा गया। वर्ष 2012 में संग्रहालय में महाभारत और गीता दीर्घा को जोड़ा गया। वर्तमान संग्रहालय में कुल नौ दीर्घाएं हैं। कुरुक्षेत्र, हरियाणा, मथुरा, द्वारका तथा देश से अन्य भागों स प्राप्त पुरावस्तुओं एवं मूर्तियों को पुरातत्त्व दीर्घा में पदर्शित किया गया है। अन्य दीर्घाओं में कृष्ण से सम्बन्धित काष्ठ, हाथी दाँत और धातु से निर्गित वस्तुओं को दिखाया गया हे। कृष्ण और गहागारत कथा से सम्बन्धित पट्टचित्र, पिछवईयाँ, तंजौर चित्रकला और कांगड़ा शैली एवं कुछ दुर्लभ पाण्डुलिपियां रांग्रहालय के अन्य आकर्षण हैं। कृष्ण और महाभारत कथा को दिखाती हुई झाँकियां, रांग्रहालय की पुरातात्विक एवं महाभारत दीर्घा संग्रहालय के मुख्य आकर्षण हैं।

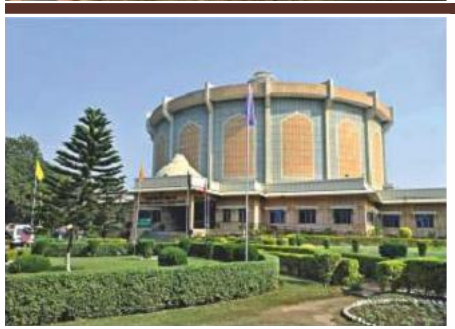

कुरुक्षेत्र पैनोरमा और विज्ञान केन्द्र

यह केन्द्र श्रीकृष्ण रांग्रहालय के परिसर मे ही स्थित है। राष्ट्रीय विज्ञान रांग्रहालय परिषद् द्वारा रांचालित इरा पैनोरमा परियोजना का मुख्य विषय महाभारत का महासंग्राम है। विशाल और भव्य भवन में चल रहे केन्द्र में महाभारत युद्ध को विशेष ध्वनिक प्रभाव से जीवन्त किया गया है। गीता पाठ और दूर से आती युद्ध की चीख पुकारों के साथ प्रकाश के सम्मिश्रण से एक सजीव व दर्शनीय वातावरण बन जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें एक और आकर्षण 4500 वर्ष पुरानी वैज्ञानिक पृष्ठभूमि के मुख्य अंश और प्राचीन भारत की वैज्ञानिक धरोहर को केन्द्र में रखता हुआ विज्ञान खण्ड है।

हरियाणा धरोहर संग्रहालय

हरियाणा की स्थानीय संस्कृति और समृद्ध परम्पराओं से वर्तमान पीढ़ी का अवगत करवान के उद्देश्य स 2006 में हरियाणा धराहर संग्रहालय की स्थापना की गई। धरोहर संग्रहालय कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय परिसर में स्थित है। 28 अप्रैल 2006 में उद्घाटन के बाद इसे जनसामान्य के लिए खोल दिया गया था। संग्रहालय में पूरे हरियाणा राज्य से कृषि व घरेलू उपकरण कला, शिल्प, परिधान, संगीत उपकरण, अस्त्र–शस्त्र, जनजीवन एवं योद्धाओं के चित्र आदि अनेक तरह की वस्तुएं सुसज्जित कर प्रदर्शित की गई हैं। धरोहर के द्वितीय चरण में हरियाणा की लोक सांस्कृतिक परम्पराओं से निर्मित अनेक शिल्प दर्शाए गए हैं।

कल्पना चावला स्मृति तारामंडल

हरियाणा की बहादुर बेटी अन्तरिक्ष यात्री और वैज्ञानिक कल्पना चावला के नाम पर 'कल्पना चावला स्मृति तारामंडल', पिहोवा मार्ग पर ज्योतिसर के निकट स्थित है। इसे जनसाधारण में खगोल विद्या की अनौपचारिक शिक्षा के विषय से अवगत करवाने हेतु विकसित किया गया है। इसमें उच्च स्तरीय डिजिटल और दृष्टि यांत्रिक प्रणाली द्वारा उत्कृष्ट कार्यक्रम प्रदर्शित किए जाते हैं। साथ ही अंतरंग और बहिरंग में प्रदर्शनियाँ लोगों और विशेषतः विद्यार्थियों को विज्ञान का यह पक्ष सीखने और ब्रह्माण्ड के विषय में रागग्र सूचनाओं के साथ जिज्ञासु मन को संतुष्ट करने में सहायक होती हैं। तारामंडल का मुख्य आकर्षण खगोल विज्ञान शो, दीर्घा प्रदर्शनी और खगोल उद्यान हैं।

लघु चिड़िया घर

कुरुक्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्ग पर 27 एकड़ भूमि में विस्तृत लघु चिड़िया घर पिपली बस स्टैंड के निकट स्थित है। वन्यप्राणी विभाग, हरियाणा द्वारा संचालित इस चिड़िया घर में अनेक प्रकार के वन्य जीव हैं। इसमें पौधों की भी कई प्रजातियां हैं। यहां काले हिरण का प्रजनन केन्द्र भी है।

कुरुक्षेत्र एवं आसपास के पुरातात्त्विक स्थल

- राजा हर्ष का टीला, थानेसर, कुरुक्षेत्र
- सरस्वती घाट झाँसा मार्ग, थानेसर
- बौद्ध स्तूप, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय परिसर
- राजा कर्ण का टीला, मिर्ज़ापुर, कुरुक्षेत्र
- पुरातात्त्विक स्थल और भार सैयदां से उजागर हुआ सरस्वती तट
- बीबीपुर कलाँ, पिहोवा में रारस्वती नदी के किनारे पर पुरातात्त्विक स्थल
- पुरातात्विक स्थल, जोगना खेड़ा, कुरुक्षेत्र
- पुरातात्त्विक स्थल, अगीन, कुरुक्षेत्र
- पुरातात्विक स्थल, दौलतपुर, कुरुक्षेत्र

यात्रा सम्बन्धी सूचना

कुरुक्षेत्र दिल्ली–अम्बाला राष्ट्रीय राजमार्ग पर दिल्ली से 160 किलोमीटर, चंडीगढ़ से 112 किलोमीटर और पिपली से 5 किलोमीटर दूरी पर स्थित है।

वायु मार्ग

निकटतम हवाई अड्डे : दिल्ली और चंडीगढ़। यहाँ से कुरुक्षेत्र के लिए उत्कृष्ट सड़क सम्पर्क है।

रेल मार्ग

निकटतम स्टेशन : कुरुक्षेत्र जंक्शन। यह देश के सभी प्रमुख नगरों और कस्बों से अच्छी प्रकार से जुड़ा हुआ है।

राड़क मार्ग

हरियाणा परिवहन व अन्य राज्यों की बसं कुरुक्षत्र स होकर गुज़रती हैं और दिल्ली, चंडीगढ़ और अन्य प्रमुख स्थानों से संपर्क है। टैक्सी सेवाओं से भी अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

आवास सुविधा

- हरियाणा पर्यटन विभाग द्वारा निम्न पर्यटक स्थलों का संचालन किया जाता है–
- नीलकंठी यात्री निवास, कुरुक्षेत्र
- पैराकीट पर्यटक परिसर, पिपली–कुरुक्षेत्र
- अंजन पर्यटक परिसर, पिहोवा
- बड़ी संख्या में मंदिरों, धर्मशालाओं और गुरुद्वारों में भी आवासीय सुविधाएं उपलब्ध हैं।

पांसवोऽपि कुरुक्षेत्रे वायुना सगुदीरिताः।
अपि दृष्कृतकर्माणं नयन्ति परमां गतिम्।।

महाभारत, वन पर्व 83/3

वायु द्वारा उड़ाकर लायी हुई कुरुक्षेत्र की धूल भी शरीर पर पड़ जाए
तो वह महापापी मनुष्य को भी परमगति प्राप्त करा देती हैं।